श्रीजगदम्बायै नमः ।

कहावतरत्नाकर ।

न्यायावली और सुभाषितावली सहित ।

हिज़ हाइनेस श्रीमान् महारावल
साहब डूँगरपुर राज्याधिपति
की आज्ञानुसार

भारतधर्म्म सिण्डिकेट लिमिटेड (काशी)
के द्वारा प्रकाशित ।

श्रीजगदम्बायै नमः ।

कहावतरत्नाकर ।

न्यायावली और सुभाषितावली सहित ।

हिज़ हाइनेस श्रीमान् महारावल
साहब डूँगरपुर राज्याधिपति
की आज्ञानुसार

भारतधर्म्म सिण्डिकेट लिमिटेड (काशी)
के द्वारा प्रकाशित ।

केसरीदास सेठ द्वारा
नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में मुद्रित
सन् १९२६ ई०

अकुण्ठं सर्वकार्य्येषु धर्मकार्य्यार्थमुद्यतम्।
वैकुण्ठस्य हि यद्रूपं तस्मै कार्य्यात्मने नमः॥

विज्ञापन

कई वर्षोंके परिश्रमके अनन्तर 'कहावतरत्नाकर' साहित्यसेवी सज्जनों की सेवाके निमित्त प्रकाशित होरहा है। इसमें कई भाषाओं की कहावतें, संस्कृत न्यायावली और संस्कृत सुभाषितावलीका भी जितना सम्भव होसका संग्रह हुआ है। हिन्दी साहित्यमें इस प्रकारके ग्रन्थ प्रकाशनमें किसी ने परिश्रम नहीं किया था।

आर्षभाषा से जगत् की समस्त भाषाएँ निकली हैं इसमें किसीको सन्देह नहीं है। वैदिक भाषा आर्य भाषाओंको जननी है। वैदिक संस्कृत भाषा ही ऐसी भाषा है, जिसे हम सब भाषाओं का मूलस्थान मान सकते हैं। उस भाषा से कई भाषाएँ निकलीं, यथा—वर्त्तमान संस्कृत, अरबी, लैटिन, फारसी तथा उर्दू या हिन्दी। लैटिन की शाखा अंग्रेज़ी है।

कहावतें भाषा का मर्म है। जिसने भाषा का यह मर्म नहीं समझा, उसने कुछ नहीं समझा। भाषाओंके मर्मको समझानेके लिये ही यह परिश्रम किया गया है।

हिन्दी साहित्यके परम प्रेमी, संस्कृत विद्याके परम रसिक, अंग्रेज़ी भाषा के अतिविद्वान्, स्वदेशानुरागी, धार्मिकप्रवर स्वर्गवासी हिजहाइनेस भारतधर्म्म सुधाकर श्रीमहारावलजी साहब सर विजयसिंहजी बहादुर के. सी. आई. ई. डूंगरपुर राज्याधिपति महोदयने अपने उर्दूके अध्यापक मौलवी साहबसे तथा कई एक संस्कृत विद्वानोंसे कुछ कहावतें संग्रह की थीं और स्वयं नरपति होने पर भी इस गुरुतर कार्य्यमें परिश्रम किया था। तदनन्तर संगृहीत कहावतोंको श्रीभारतधर्म्म महामण्डलके शास्त्र प्रकाश

विभागमें इस शुभ कार्य्यको पूर्ण करनेके लिये भेज दिया था। श्रीमहा-मण्डलके विद्वानोंके द्वारा यह शुभ कार्य्य पूर्ण होकर अब इसको प्रकाशित करनेका सौभाग्य भारतधर्म सिण्डिकेट को प्राप्त हुआ है।

इस ग्रन्थ का खाका भर स्वर्गीय नरेश ने तैयार कर दिया था। इसे पूरा करने की कृपा श्रीनरेशके श्रीगुरुदेवने की है जिनकी प्रेरणासे सैकड़ों नयी कहावतें और न्यायावली संग्रहीत हुई हैं।

अनेकगुणालंकृत स्वर्गवासी श्रीमान् महारावल बहादुरने रामगीताको प्रकाशित कराके धर्म प्रेमी सज्जनों और हिन्दी साहित्य सेवियोंका बहुत कुछ उपकार किया है। इस ग्रन्थरत्नके प्रणयन और प्रकाशित होनेसे साहित्य-जगत्का जो कल्याण होगा उसे पाठक ही समझ सकते हैं।

श्रीमान् स्वर्गीय नृपवरके सुयोग्य पुत्र डूंगरपुर राज्यके वर्त्तमान अधिपति, हिज हाइनेस महारावल श्रीमान् लक्ष्मणसिंह बहादुर ने तथा उनकी धार्म्मिका मातृदेवी ने इस ग्रन्थके प्रकाशित करनेमें पूर्ण उत्साह दिया है तथा राज्य ने उत्साहके साथ इसको छपवा कर, स्वर्गीय नृपवरकी कीर्त्ति को चिरस्थायी किया है और पवित्र जीवन स्वर्गीय नृपवर के चित्र सहित इस ग्रन्थ रत्न को प्रकाशित करके यह स्वजातीय सिण्डिकेट भी कृतकृत्य होता है। विज्ञापनमिति।

गोविन्दशास्त्री दुगवेकर

अध्यक्ष, शास्त्रप्रकाशन विभाग भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड,
स्टेशन रोड, जगत्गंज, बनारस।

———०———

श्रीजगदम्बायै नमः ।

कहावतरत्नाकर

की

आद्य अक्षरानुक्रमणिका ।

	विषय	पृष्ठ से पृष्ठतक
(१)	अंग्रेज़ी भूमिका	१—८
(२)	हिन्दी भूमिका	१—१०
(३)	अ	११—१६
(४)	आ	१६—२८
(५)	इ	२६—२६
(६)	ई	३०—३०
(७)	उ	३०—३३
(८)	ऊ	३३—३५
(९)	ए	३५—३९
(१०)	ऐ	३९—४०
(११)	ओ	४०—४०
(१२)	औ	४०—४१
(१३)	अं	४१—४३
(१४)	क	४३—६१
(१५)	ख	६१—६६
(१६)	ग	६६—७४
(१७)	घ	७४—८०
(१८)	च	८०—८७
(१९)	छ	८७—८८
(२०)	ज	८९—१०८
(२१)	झ	१०८—१०९
(२२)	ट	१०९—११०
(२३)	ठ	११०—११२

	विषय					पृष्ठ से पृष्ठतक
(२४)	ड	...	...	...	...	११२—११३
(२५)	ढ	...	...	...	...	११३--११४
(२६)	त	...	...	...	...	११४--१२०
(२७)	थ	...	...	...	...	१२०—१२२
(२८)	द	...	...	...	...	१२२—१३१
(२९)	ध	...	...	...	...	१३१—१३३
(३०)	न	...	...	...	...	१३३--१४१
(३१)	प	...	...	...	...	१४१—१५२
(३२)	फ	...	...	...	...	१५२—१५४
(३३)	ब	...	...	...	...	१५४—१६६
(३४)	भ	...	...	...	...	१६६—१७४
(३५)	म	...	...	...	...	१७४—१८६
(३६)	य	...	...	...	...	१८६--१८६
(३७)	र	...	...	...	...	१८६--१९३
(३८)	ल	...	...	...	...	१९३—१९८
(३९)	व	...	...	...	...	१९८--२००
(४०)	श	...	...	...	...	२००--२०२
(४१)	स	...	...	...	...	२०२--२१५
(४२)	ह	...	...	...	...	२१५—२२२

न्यायावली
की
आद्य अक्षरानुक्रमणिका।

	विषय	पृष्ठसे पृष्ठतक
(१)	अं	२२३—२३४
(२)	आ	२३४—२३६
(३)	इ	२३६—२३७
(४)	उ	२३७—२३९
(५)	ऊ	२३९—२३९
(६)	ऋ	२३९—२३९
(७)	ए	२४०—२४१
(८)	औ	२४२—२४२
(९)	क	२४२—२५२
(१०)	ख	२५२—२५३
(११)	ग	२५३—२५६
(१२)	घ	२५६—२५७
(१३)	च	२५७—२६०
(१४)	छ	२६०—२६०
(१५)	ज	२६०—२६३
(१६)	ट	२६४—२६४
(१७)	त	२६४—२६९
(१८)	द	२६९—२७३
(१९)	ध	२७४—२७५
(२०)	न	२७५—२८०
(२१)	प	२८०—२८६
(२२)	फ	२८७—२८७
(२३)	ब	२८७—२९०
(२४)	भ	२९०—२९३
(२५)	म	२९३—२९७
(२६)	य	२९७—३०१
(२७)	र	३०१—३०४
(२८)	ल	३०५—३०५
(२९)	व	३०६—३१३
(३०)	श	३१३—३१६
(३१)	ष	३१६—३१७
(३२)	स	३१७—३२६
(३३)	ह	३२६—३२६

सुभाषितावली

की

आद्य अक्षरानुक्रमणिका।

——:o:——

	विषय	पृष्ठसे पृष्ठतक
(१)	अ	३२७—३३१
(२)	इ	३३१—३३१
(३)	उ	३३२—३३३
(४)	ऋ	३३३—३३४
(५)	ए	३३४—३३५
(६)	क	३३५—३४०
(७)	ख	३४०—३४०
(८)	ग	३४०—३४१
(९)	च	३४२—३४२
(१०)	ज	३४२—३४३
(११)	त	३४३—३४५
(१२)	द	३४५—३४६
(१३)	ध	३४७—३४८
(१४)	न	३४८—३५५
(१५)	प	३५५—३५९
(१६)	ब	३५९—३६०
(१७)	भ	३६०—३६१
(१८)	म	३६२—३६५
(१९)	य	३६५—३६८
(२०)	र	३६८—३६९
(२१)	ल	३६९—३६९
(२२)	व	३७०—३७४
(२३)	श	३७४—३७६
(२४)	ष	३७६—३७७
(२५)	स	३७७—३८४
(२६)	ह	३८४—३८४

——:o:——

Preface.

(English translation of the author's Hindi Preface.)

O Mother of the universe, O Great Goddess Maya, O Shivay, Thou assuming the form of womanhood possessing the qualities of goddesses of Gouri and Durga, ever preservest the Arya race. Thou art the cause of creation, preservation and destruction of the world. In the shape of native land, thou art the source of redemption as well as material prosperity. In the shape of mother-tongue, Thou impartest to mankind the four-fold objects of human pursuit, *viz*, Dharma (spiritual prosperity), Artha (material prosperity), Kama (desire), and Moksha (final beatitude). In the shape of heroism, wisdom, fortune, and lore, thou conferrest blessings upon the world, I bow to Thee.*

Like mother-land, the mother-tongue is the image of the mother of the universe. No improvement of a nation can be rendered wholly perfect, unless the mother-tongue is improved. Nay, religion of a nation cannot be fully developed, prosperity cannot quickly crown a nation, knowledge cannot fully manifest itself in the country, national sentiments cannot be preserved intact, the glory of the native land cannot be magnified, man cannot attain to the full stature of humanity, originality of a nation cannot be preserved, nor can he speedily attain temporal advancement, spiritual elevation as well as redemption, unless the mother-tongue be preserved and improved. As the Sutras (aphorisms) of the holy Scriptures are intimately connected with the intellect, so are the popular sayings (proverbs) of a language closely associated with the mind. As many profound ideas relating to the domain of intellect are expressed by the small aphorisms, so are the profound ideas relating to the domain of mind expressed by proverbs current in the language.*

Taking allegorically popular saying is the conveyance of the Goddess mother-tongue. This, indeed, is the correct interpretation of the matter.

At this time, the pure Hindi language ought to be regarded as the mother-tongue of the Hindus, the *lingua franca* of the Indian Continent. The slightest effort on the part of the Indians will enable this sweet language to be the universal mother-tongue of the Aryas, and thus contribute to their welfare in every way. Although several languages

---

* Translation of the Sanskrit slokas given in the beginning of the Hindi Preface.

are at this time spoken from the Himalayas in the North to Cape Comorin in the South, from the shores of the Brahmaputra in the East to the shores of the Indus in the West, nevertheless it has been settled to a demonstration that the Hindi language alone which is written in the eternal and incorruptible Deva-nagri characters can aptly be called the universal tongue of India.

It is unanimously recognised and even admitted by western savants boastful of their knowledge that Sanskrit is the oldest of all languages. The Hindu Scriptures furnish copious evidence to show that this Divine language has been prevailing in the world from time immemorial. In the days of the Rishis this sacred language was spoken by the whole of India. Afterwards, when there was a slight drawback in the instruction of the Rishis, the Prakrit language, which is a corruption from the Sanskrit, obtained currency among the masses. At that time, the Brahmins, kings, and the educated class of people used to speak Sanskrit : and the vulgar people, women, children, etc., used to speak the corrupted language (Prakrit). To prove this point, we need not, indeed, go too far. Reference to Sanskrit poems, dramas, etc., can fully bear out the above fact. As, in course of time, the currency of Sanskrit, as a spoken language subsisted barely in name, and the instruction of the holy Rishis almost wholly disappeared, the Pali language was evolved out of Prakrit. But like Prakrit the Pali was not confined to the illiterate masses. It was also accepted by the learned community and used as a language of the Court. Even in the present days, many works on science, philosophy, history, and poetry are in evidence in the Pali language. The religious books of Buddhism which commands a wider sway in the world than any other religion have been wholly written in the Pali language. These works bear ample testimony to the fact that the Pali language was at its zenith.

Afterwards it so appears that the Brahmins rallied again and set themselves to work to reform the eternal system of the Vedas. At this time there was a mighty revolution in politics brought about by the constant change of ruling kings. In the midst of these changes the sweet Hindi was ushered into existence, and since that time up to the modern period, it has been prevalent in India, giving glowing proof of the genius of its illustrious founders, the Aryas. Although many other vernaculars, *viz.*, Urdu, Punjabi, Mahrathi, Gujrati, Bengali, Uriya, etc., after having passed through a series of vicissitudes and modifications have been evolved into existence out of this melodious tongue (Hindi) and gradually attained a laudable and exalted condition, never-

theless the Hindi pre-eminently maintains its foremost place in the estimation of Indian scholars. Whatever degree of eminence the above vernaculars (the outcome of Hindi) may attain, none of them possesses the features of a *lingua franca* (universal language) for India. These vernaculars are only serviceable to the provinces wherein they are spoken: but they are of no service to other provinces. For instance, if a Bengali Pandit goes to Gujrat, his language will not be understood by the people of Gujrat. Nor will the language of a Mahrathi or Gujrati be understood in the Punjab, supposing he were to go to that Province, for he will not be able to express his ideas to a Punjabi with facility and ease, in his own tongue. But a Hindi-knowing person may go to any place in India without encountering the sort of difficulty as shown above. The reason is this, that people of all provinces understand Hindi, more or less. The mystery underlying the point consists in the fact that the Hindi is the mother of all those languages (vernaculars) spoken, it is best adapted to be the universal national language of this country. We illustrate the changes which languages undergo, as follows:

All rivers take their rise from mountains: and as they advance, their currents increase. Slabs of rocks, coming down from different directions, are carried away by the said currents and flow along with the currents to a certain distance, great or small. This natural action of streams takes place almost every day. In this way, the slabs of rocks, acting and reacting upon one another, and being thus liable to constant friction undergo a considerable modification so much so that they eventually adopt a new aspect altogether.

In the same way, the slabs as represented by *words* undergo a considerable modification in the currents of spoken language as represented by *use*. That is to say, words, being constantly used and slurred over in the course of speech, considerably modify their forms, and, indeed, to such a great extent that it is impossible to identify them after the lapse of a long period. In the beginning, the Sanskrit was the current language. As long as training was conducted on proper lines, the knowledge of the purity of Sanskrit words was strictly maintained. Hence the correct pronunciation of words was scrupulously adhered to. But when the system of education gradually relaxed, the Sanskrit was modified, and assumed the aspect of the Prakrit, and, later on, the Pali. *Pali* is that language wherein several Bouddha works, *viz.*, the *Lalit-Vistar* and the Kananda-Vyuha have been written. Inscriptions on stones of the time of the great Emperor Asoka and other monarchs of India show that such inscriptions were also written

in Pali. For a while, this language improved a great deal. All proceedings relating to royal courts were conducted in this language : and even the savants of the time wrote out their works in Pali. But excessive use of Pali speedily brought about a transfiguration in this language also : words also were considerably transformed. The language which was thus produced (as the result of the transformation) was termed "corrupt" (afableraush). In a huge country like India, the permanence of a language is impossible. A language which has no Grammar to protect its purity cannot maintain its uniformity of character for a long time. Although there are many Grammars in the Pali or the Prakrit, nevertheless they are not Grammars in the true sense of the term. For the object of such Grammars is merely to show, from the degeneration of *which* particular Sanskrit, a particular Pali or Prakrit word has been formed. The ulterior aim of such Grammar is to trace out Sanskrit Etymology of a degenerate Prakrit term. The last named language, in course of time, assumed four distinct forms, Magdhi, Surseni, Paisachi, and Maharashtri. Satubandha, Halsaptasati, Vrihatkatha and Gomada-Sara and various other works are illustrations of the above transformation. It will not be out of place to add here that there is a vast difference between the current Maharatti of the present days and the Mahratti as specified above.

According to the law of nature these languages in their turn, could not also maintain their stability for a long time. Eventually they degenerated into other languages, Ardha Magadhi, Deshi Hindi, Thet Hindi, etc. Hitherto the change was uniform. But in course of time, when the Mahomedan incursion set in from the west : and when the intercourse by means of words was carried on between the Hindus and the Muslems, on a considerable scale, the words of the language used by the latter promiscuously mingled with the language used by the former. This promiscuous mixture of words gave birth to the Urdu language. But the Urdu is by no means an acceptable language : for it is a new language mixed up with a foreign language. If in these days there is any language which ought to be acceptable as mother-tongue to the children of the Aryas it is most emphatically the Hindi, the ulterior corruption of Sanskrit. This melodious language should by all means be styled the *lingua franca* of India.

Of all the languages, the outcome of Sanskrit, which are current in the provinces of India, Bengali may be regarded as the best. Although this language is the direct offshoot of Ardha-Magdhi or Thet Hindi (a fact which may well be demonstrated by the perusal of the works of Chandidas and Vidyapati), nevertheless, Bengali has

nowadays made greater headway than even the Hindi, its original. All the features of perfection which a language ought to possess are found in the modern Bengali. In the course of even so short a time this new language has improved so much as to leave nothing to be desired. Through the endeavours of many a learned man of Bengal this language has made strides at such a rapid pace as to leave the Hindi effectually far behind in the race of progress. It is a matter of great regret that a very modern language which is spoken in a corner of India should be so much advanced through the exertions of savants, whereas the Hindi which has been current in India from antiquity and which is still the mother-tongue of the Pandits of this country should be relegated to the background in the field of progress through the inattention and indifference of our dear countrymen ! ! !

Literature is the ornament of language : and poetry is the ornament of literature. Whatever might be the case, the above reflection prompted the Rishis of antiquity, our venerable ancestors, to compose nearly all their works in poetry. Composition in prose did not appeal powerfully to the genius of the Rishis. Hence the preceptors of the Hindi language, following the wake of the Rishis, composed their works in verses Surdas, Tulsidas and Keshav-Das were the best Hindi writers : but nowadays poets manifest themselves in clusters like fire-flies. Such goes the Hindi saying.

The writers above-named, however, have written their works in verses : for the spirit of the times was, that if there be poetry at all, it should subsist in verses. If there happened to be any work in prose on the Vedas, Astronomy or Sectarianism, it was composed in rotten Hindi. It was due to the defect in the system itself that the Hindi language could not advance in a particular manner. Now along with the spread of English education, there has been growing an idea in the mind of the people that no language can ever prosper or conduce to general utility or development of the faculty of reason, without works in prose. This view has led to the production of such works as Prem-Sagar, story of Rani Ketaki, etc. But the melody of the dialect, enchanting and unmixed Hindi language, never reached the ears of the Indians, until Bharatendu Babu Harish Chandra (the moon of India) wielded his pen with a view to reform the Hindi language. It is the fruit of the diligence of this illustrious promoter and scholar of the Hindi language that the Indian now witnesses beautiful compositions of Hindi in prose. It is the fruit of the disinterested aspirations of this great poet that people versed in the Hindi language have come to realise what a

newspaper is, and in what a melodious language can even prose be written. The circle of learned and educated men now know it full well, to what a great extent has Babu Harish Chandra sacrificed his self-interest to bring about the advancement of the Hindi language, which will ever remain indebted to this true lover of his country.

The children of the Aryas are themselves to blame, if the Hindi language has not fully advanced up to this time.

The Brahmans who know the paternal language (Sanskrit) and carefully preserve it—from whom the mother-tongue Hindi expects a good deal—do not think it worth their while to minister to its needs or strive for its advancement. Our personal experience shows that some of the greatest scholars of Sanskrit cannot even write in Hindi and, what is worse, consider it disgraceful to peruse books in Hindi. At the same time we also find that many savants cultured by English education do not care to focus their attention upon the improvement of their mother-tongue. Indeed, their glance has been detracted from this subject to such a great extent that they even converse, and correspond by letters, with their friends and relations, in English. The rapid progress which Bengali has made in the course of so short a time will, on a shifting enquiry, be found to be due to the fact that not only Sanskrit-knowing prominent Brahmins have been always attempting with their whole head and heart to bring about its advancement, but the English-knowing public of Bengal, also have been fully co-operating with them in this respect. On the same lines, so long as the affectionate glance of the learned men of both the English-knowing and Sanskrit-knowing communities is not directed towards Hindi, the mother-tongue of the Aryas, the complete development of this language is quite out of the question.

There are two kinds of propensities in the human heart: one, leading to the spiritual affairs, and the other, to temporal affairs. The first is mainly associated with intellect and is characterised by the predominence of knowledge and Bhava, *i. e.*, inner light. The second is mainly associated with mind and is particularly concerned with the social world and attractions of the heart. The function of the first class of propensities is the discrimination of ego and non-ego (spirit and matter), the determination of God and Jiva, this world and the next world, virtue and vice, as well as disquisition on other metaphysical points of a similar nature. The function of the second class of propensities is the experience of social enjoyments by maintaining connexion of the mind with the external world, transmission of the feelings of one human being into the heart of another human being, etc., etc. The sutras (aphorisms)

of the Darshans (Hindu philosophy) are serviceable in the discriminations assigned to the first class of propensities : the proverbs of the mother-tongue are still more helpful in matters relating to the world of sense. As the Shastric aphorisms, equal in force with the mantras, enable the intellect to comprehend the mysteries which are beyond the scope of mind, language, and reason, so the proverbs as embodied in a language are helpful in enabling the mind to transmit to the external world, subtle feelings and sentiments, and likewise to understand and expound in a nut-shell, a high and comprehensible idea.

The proverbs current in a certain language are, indeed, so very helpful to persons to enter into one another's feelings as to render it simply useless for them to expect so much help from any other quarter. For every proverb embodies in a condensed form so many sentiments that a detailed description of them may well form the subject-matter of a beautiful treatise.

As according to the esoteric shastras, a single mantra, pronounced or heard accurately brings home to the mind of an adept, the image, virtues and aspect of the presiding deity of the mantra, as the perusal of an aphorism of any of the Darshans (Hindu philosophy) immediately brings home to the mind of a philosopher the doctrine relating to the connexion of the soul and matter (ego and non-ego) which the said sutra suggest, so the proverbs current in a language, as soon as they are heard or read, produce in the mind (by association of ideas) a legion of corresponding sentiments current in the said language and unfold before the eye of imagination the mysteries of the psychology constituting the ground-work of human society. This corresponding train of ideas is suggested by the use of the words embodied in the popular sayings. In fact, the popular sayings are a powerful factor in feeling the pulse of the nation. They constitute, as it were, an artery by pressing which the beat of the heart may be discovered. This is why the great savants of modern Europe and America have discovered a very close affinity of the popular sayings to the current languages and human race. They have likewise demonstrated that solely through the help of popular sayings a person may get a clue to the ancient condition of the human race to the idiosyncracies and salient features of a nation and to the particular genus to which a particular human species belongs. The popular sayings are to a language what pillars are to a building: the word suggests the meaning, the meaning suggests the propensity of the heart, and the propensity engenders emotion—the inner light. Conversely, as soon as the word is pronounced, the emotion of the mind awakens, the propen-

sity rouses the feelings and brings before the mind a host of corresponding ideas and a train of analogous feelings suggested by the word. This is why one word is an open sesame to the talismanic gate of the treasure-house of many sympathetic ideas and sentiments linked up with the word in question and roused by association of ideas. Although very few words are embodied in a particular saying, still they thrill the heart of the audience as soon as they are uttered and bring in their train an imagery of connected thoughts suggested by the words in question. Herein consists the extraordinary greatness of the proverbs.

This work, "Kahawat Ratnakar," has been published with a view to serve the mother-tongue, Hindi. These sayings have been collected through the assistance of many savants. The number of these sayings will be increased in the next edition. Sayings in Hindi (our mother-tongue) are the main factor in this work; and as matters of subsidiary importance sayings have likewise been culled from Sanskrit (the father-tongue) or rendered into Sanskrit in several instances. For the sake of convenience, sayings have also been culled from English (the sovereign language) or Urdu or translated in either of these languages. Care has been taken to gleen, as far as possible, corresponding proverbs from the Arabic and Persian also. In the end, the extraordinary Nyayavalis of Sanskrit have also been inserted with their commentaries. Some Sanskrit sayings have also been added to the work in its later pages We shall consider our labour amply rewarded if this work is at all serviceable to those who are conversant with the mother-tongue.

THE AUTHOR.

His Highness the Late Maharawal Bharat
Dharma Sudhakar
Sri Bejai Singh Bahadur of Dungarpur.

THE INDIAN ART SCHOOL
BOWBAZAR STREET, CALCUTTA

श्रीजगदम्बायै नमः ।

कहावतरत्नाकर

की

भूमिका ।

शिवे ! गौरीदुर्गात्मकमिह जगन्मातरनिशं
महामाये ! ह्यार्य्यानवसि दधती स्त्रीवपुरहो ।
विधत्से सृष्टे रक्षणभवलयान्भोगमपि च
भवत्यां सत्यां जन्मभुवि भवमुक्तिं वितरसि ॥
मनुष्येभ्यो मातर्वितरसि चतुर्वर्गमखिलं
स्वमातुर्भाषारूपत इह सदा धर्म्मप्रमुखम् ।
त्वमेवाहो विद्याऽर्थबलमतिरूपेण सततं
कृतार्थाल्लोकाँस्ताञ्जननि ! कुरुषे नौमि भवतीम् ॥

हे जगज्जननि ! हे महामाये ! हे शिवे ! आप गौरी और दुर्गारूप में नारी शरीर धारण करके आर्य्यजाति की निरन्तर रक्षा करती हैं । आपही इस जगत् के सृष्टि स्थिति और लय को करनेवाली हैं । जन्मभूमि रूप से आपही भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाली हैं । मातृभाषा रूप में आपही मनुष्य समाज को धर्म अर्थ काम और मोक्षरूपी चतुर्वर्ग प्रदान किया करती हैं । आपही बल बुद्धि धन और विद्यारूप से मनुष्यों को कृतकृत्य करती हैं आपको प्रणाम है ।

जैसे जन्मभूमि जगदम्बा का स्वरूप है वैसेही मातृभाषा भी जगदम्बा का स्वरूप है । विना मातृभाषा की उन्नति के किसी जाति की पूर्ण उन्नति नहीं होसक्ती । विना मातृभाषा की उन्नति के स्वधर्म्मका पूर्ण विकाश नहीं होसक्ता । मातृभाषा की उन्नति के विना कोई मनुष्यजाति शीघ्र सफलता लाभ नहीं करसक्ती । विना मातृभाषा की उन्नति के देश में ज्ञान का पूर्णरूप से विस्तार होना असम्भव है । विना मातृभाषा की उन्नति के देश का गौरव कदापि वृद्धि को प्राप्त नहीं होसक्ता । विना मातृभाषा की उन्नति के कोई जाति भी अपने स्वजाति भाव की रक्षा करने में समर्थ नहीं होसक्ती । विना मातृभाषा की रक्षा में सफलकाम हुए कोई मनुष्य कदापि पूर्ण मनुष्यत्व को प्राप्त नहीं करसक्ता और न अपनी ऐहलौकिक उन्नति, पारलौकिक उन्नति और मुक्तिप्राप्ति में शीघ्रता से सफलता प्राप्त करसक्ता है । जिस प्रकार बुद्धिराज्य के साथ शास्त्रीय सूत्रों का सम्बन्ध है ठीक उसी प्रकार मनोराज्य के साथ भाषा की कहावतों का सम्बन्ध है । बुद्धिराज्य के बड़े बड़े गभीरभाव जिस प्रकार छोटे छोटे सूत्रों के द्वारा प्रकाशित होते हैं ठीक उसी प्रकार मनोराज्य के बड़े बड़े भाव छोटी छोटी कहावतों के द्वारा प्रकाशित हुआ करते हैं। मातृभाषा देवी का कहावतरूपी वाहन है ऐसा समझना उचित है ।

इस समय भारतवासियों की मातृभाषा के स्थान में विशुद्ध हिन्दीभाषा को ही मानसक्ते हैं । इस समय भारतवासियों के थोड़े से ही प्रयत्न द्वारा यह मधुरभाषा भारतवर्ष की सार्वभौम भाषा और आर्य्यजाति की परमहितकारिणी मातृभाषा रूप से स्थापित होकर भारतवर्ष और आर्य्यजाति के सब प्रकार के मङ्गल साधन में समर्थ होसक्ती है । उत्तर में हिमालय के पवित्र प्रदेशों से ले दक्षिण में भारत-समुद्र के तट पर्य्यन्त, और पूर्व्व में ब्रह्मपुत्र के तीरवर्ती प्रदेशों से ले पश्चिम में सिन्धुनदी तक, इस विशाल देवभूमि के विभिन्न प्रदेशों में यद्यपि अब बहुत प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, तथापि विचार से यही सिद्धान्त होता है कि यदि अब भी कोई सार्व्वभौमिक भाषा हो तो वह हिन्दी भाषा ही है, जोकि अनादि और अभ्रान्त देवनागरी अक्षरों में लिखी जाती है ।

यह तो सर्ववादिसम्मत है और इसको ज्ञानाभिमानी पश्चिमीय वैज्ञा-

निक विद्वानों ने भी स्वीकार करलिया है कि, सब से प्राचीन भाषा संस्कृत है; और हमारे शास्त्रों में तो अनेक ही प्रमाण मिलते हैं कि यह देववाणी अनादिकाल से प्रचलित है । ऋषिकाल में तो समस्त भारतवासी ही इस श्रेष्ठ भाषा को बोलते थे । पश्चात् जब ऋषिशिक्षा की कुछ न्यूनता होने लगी तब साधारण लोगों में संस्कृत की अपभ्रंश "प्राकृत" भाषा प्रचलित हुई; उस समय ब्राह्मण और नृपति आदि शिक्षित लोग तो संस्कृत बोलते थे और साधारण जन एवं स्त्री, बालक आदि इस नवीन भाषा को बोलते रहे । इसका प्रमाण अधिक ढूंढने की आवश्यकता नहीं है, केवल काव्य और नाटकों के देखने सेही यह भलीभांति सिद्ध होजाता है । पुनः जब संस्कृत का प्रचार बहुतही थोड़ा रहगया और ऋषिशिक्षा प्रायः जाती ही रही तब प्राकृत भाषा से "पाली" भाषा की सृष्टि हुई । परन्तु प्राकृत भाषा की नाई पाली भाषा अशिक्षित लोगों में ही नहीं रही किन्तु इसको विद्वानों ने भी ग्रहण किया और राजकाज में भी यह भाषा प्रचलित हुई, अब भी बहुत से वैज्ञानिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक और काव्य-ग्रन्थ इस भाषा में देख पड़ते हैं । बौद्ध-धर्म्म जिसका कि विस्तार पृथिवी के सकल धर्म्मों से अब अधिक है, उसके धर्म्म-पुस्तक इस पाली भाषा में ही लिखित हैं । ग्रन्थों के देखने से प्रतीत होता है कि इस भाषा ने भी किसी समय बड़ी उन्नति पाई थी ।

तदनन्तर ऐसा विचार होता है कि जब ब्राह्मणगण पुनः सम्हले और सनातन वैदिकमार्ग को सुधारने लगे, उस समय शासक राजाओं के परिवर्तन से एक बड़ाही राजनैतिक उलटफेर हुआ था, उसी समय में मधुर हिन्दी-भाषा की सृष्टि हुई; और तबसे अभीतक यह भाषा अपने प्रवर्त्तक आर्य्यों का नाम रखती हुई इस भारतभूमि में प्रचलित है । यद्यपि अन्य भाषाओं के उलटफेर और संसर्ग के कारण इसी मधुर भाषा से उर्दू, पंजाबी, मराठी, गुजराती, बङ्गाली, उड़िया आदि बहुत प्रकार की भाषाओं की सृष्टि हुई है और वे शनैः शनैः उन्नत होकर बहुत प्रशंसनीय दशा पर पहुँचगई हैं, तथापि इस भाषा का आदर अब भी पंडितों में पूर्णतः बना हुआ है । हिन्दी-भाषा से उत्पन्न हुई उपरोक्त भाषाओं की उन्नति कितनी ही क्यों न हो परन्तु उनमें भारतवर्ष की सार्वभौमभाषा बनने का भाव

कदापि स्थापित नहीं होसक्ता; कारण उन पृथक् २ प्रादेशिक भाषाओं से उन उनके प्रदेशों में ही कार्य चलसक्ता है, परन्तु दूसरे प्रदेशों में उन भाषाओं से कोई कार्य नहीं चलसक्ता । जैसे यदि कोई बङ्गभाषाका पण्डित गुर्ज्जर देश में जाय तो उसकी भाषा को वहां के लोग नहीं समझ सकेंगे; इसीभांति कोई मराठी वा गुजराती भाषा का बोलनेवाला पञ्जाब प्रदेश में चला जावे तो उसको बातचीत करना वा अपने इच्छित भाव दूसरों पर सुगमता से प्रदर्शित करना महाकठिन होगा; परन्तु यदि कोई हिन्दी भाषा का जाननेवाला इन प्रदेशों में से चाहे जहां चला जावे उसको सम्भाषणादि करने की कठिनता नहीं होगी, क्योंकि प्रत्येक प्रदेश के लोग थोड़ा या बहुत हिन्दी भाषा को समझही सकते हैं; और इसका मूल हेतु यही है कि हिन्दी भाषा ही भारतवर्ष की इन आधुनिक सब भाषाओं की जननी है । इस कारण हिन्दी भाषा ही भारतवर्ष की सार्वभौमभाषा होने के उपयुक्त है इसमें सन्देहमात्र नहीं ।

नदियाँ पर्वतों से निकलती हैं; और जैसे जैसे आगे बढ़ती हैं उनका प्रवाह भी बढ़ता जाता है । इधर उधर के पाषाण जब प्रवाह में आ गिरते हैं तो वेग के अनुसार वे थोड़ी बहुत दूर तक बहते हैं और प्रायः यह क्रिया प्रतिदिन हुआ करती है, इस कारण आपस की रगड़ से उन पाषाणों का आकार बदलताही जाता है, यहांतक कि घिसते घिसते उनका आकार एक नूतन भाव को धारण करलेता है; इसीभांति सब भाषाएं भी रूपान्तर को धारण करती रहती हैं । व्यवहाररूपी प्रवाह में शब्दरूप पाषाण भी रगड़ खाकर रूप बदलते जाते हैं; इसलिये अधिक काल में उन शब्दों का पहचानना कठिन हो जाता है । आदि में संस्कृतभाषा का प्रचार था; जबतक नियमानुसार पठन पाठन होता रहा लोगों को शब्दों की शुद्धाशुद्धि का ज्ञान बने रहने के कारण शब्दों का उच्चारण यथावत् बना रहा, परंच जब शिक्षा का प्रचार शिथिल होने लगा संस्कृत भाषा का भी रूपान्तर होकर प्राकृतभाषा और क्रमशः प्राकृत भाषा से पाली भाषा बन गई । यह वह भाषा है जिसमें "ललितविस्तर" तथा "कारण्डव्यूह" इत्यादि बौद्धों के ग्रन्थ लिखे गये हैं; और भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रदेशों में अशोक राजा के जो शिला-लेख देखने में आते हैं वे भी इसी भाषा में

हैं। कुछ कालतक इस भाषा की विशेष उन्नति हुई; राजकीय सब व्यवहार इसी भाषा द्वारा होते रहे और उस समय के पण्डितों ने भी प्रायः सबही विषयों के ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे। परंच अधिक व्यवहार में आने के कारण इसका रूपान्तर बहुत शीघ्रता के साथ होनेलगा; शब्दों के आकार और भी अधिक भावान्तर को धारण करने लगे। इस रीति से जो भाषा प्रकट हुई उसका नाम अपभ्रंश हुआ। भारतवर्ष जैसे विशाल देश में एक भाषा का स्थिर रहना असंभव था क्योंकि जिस भाषा की रक्षा करने वाला व्याकरण नहीं होता वह भाषा बहुत कालतक एक रूप में नहीं रह सकी। यद्यपि पाली वा प्राकृत भाषा के कई व्याकरणग्रन्थ विद्यमान हैं तथापि वे यथार्थ व्याकरण नहीं हैं; क्योंकि इन प्राकृत व्याकरणों का यह उद्देश्य है; कि अमुक प्राकृत शब्द किस संस्कृत शब्द का अपभ्रंशहै अर्थात् किस संस्कृत शब्द के बिगड़ने से यह प्राकृत शब्द बना है इसका पता लग जाय। तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द को देखकर उसके मूलरूपी संस्कृत शब्द का निश्चय करलेना यही प्राकृत व्याकरणों का उपयोग है। इस पिछली भाषा के चार मुख्य भेद हुए; मागधी, सूरसेनी, पैशाची और महाराष्ट्री। सेतुबंध, हालसप्तशती, बृहत्कथा, गोमदसार इत्यादि ग्रंथ इनके उदाहरण हैं। यहां यह कहदेना उचित है कि आजकल की महाराष्ट्री (मरहठी) भाषा से उस पूर्व महाराष्ट्री भाषा में बहुत अन्तर था, वह कुछ औरही भाषा थी।

नियमानुसार ये भाषा भी स्थिर न रहसकीं और अर्द्धमागधी, देशी वा ठेठ हिन्दी इत्यादि भाषाओं की सृष्टि हुई। यहांतक जो परिवर्तन हुआ वह एकही प्रकार का था; परंतु जब पश्चिम से मुसलमान जातियों का भारतवर्ष पर आक्रमण होना आरम्भ हुआ और उन लोगों से भारतवासियों की बोल चाल का व्यवहार होने लगा तो उनकी भाषाओं के शब्द भी इस देश की भाषाओं में मिश्रित होने लगे और यों क्रमशः उर्दू भाषा की सृष्टि हुई। परन्तु उर्दू भाषा अपने ग्रहण योग्य नहीं है; क्योंकि वह यवन-भाषामिश्रित एक नवीन भाषा है। आजदिन यदि आर्यसन्तानों के ग्रहण करने योग्य कोई भाषा हो तो वह संस्कृत भाषा की अन्तिम अपभ्रंश रूपी हिन्दी भाषा ही है। इस मधुर भाषा कोही आजदिन भारतवर्ष में सार्व-

भाँम भाषा समझ सकते हैं ।

संस्कृत-अनुयायी जितनी भाषाएँ अब भारतवर्ष के प्रदेशान्तरों में प्रचलित हैं उन सबों में से बङ्गभाषा आज दिन सर्वोत्तम गिनी जासकी है। यदिच इस भाषा की सृष्टि अर्द्धमागधी वा ठेठ हिन्दी भाषा से ही हुई थी, क्योंकि बङ्गभाषा के आदिकवि चण्डीदास विद्यापति आदि के ग्रन्थ देखने से स्पष्ट सिद्ध होता है कि बङ्गभाषा आदि भी हिन्दी भाषा से ही निकली थीं, परन्तु अब बङ्गभाषा ने हिन्दी भाषा से भी बहुत अधिक उन्नति पाई है; भाषा के सम्पूर्ण होने के जो जो लक्षण हैं वे सब ही वर्तमान बङ्गभाषा में पाये जाते हैं। देखते देखते थोड़े ही दिनों में इस नवीन भाषा ने ऐसी उन्नति पाई है कि अब उसमें कुछ अधिक अभाव देख नहीं पड़ता। बङ्ग-देशीय अनेक विद्वानों के प्रयत्न से अति शीघ्रही इस भाषा की ऐसी उन्नति हुई है कि हिन्दी भाषा को उस उन्नत अवस्था तक पहुँचने में अभी बहुत देर है। बड़े ही दुःख का विषय है कि एक अतिनवीन भाषा जो कि भारतवर्ष के एक कोने में ही बोली जाती है उसने थोड़ेसे ही विद्वानों के परिश्रम से इतनी उन्नति पाई, परन्तु हिन्दी भाषा जो कि एक प्राचीन काल से भारतवर्ष में प्रचलित है और अब भी समस्त भारतवर्ष की पण्डित-मण्डली की मातृभाषा है तिस पर भी हमारे प्रिय भाइयों की रुचि इसकी उन्नति की ओर नहीं होती !!!

भाषा की शोभा साहित्य और साहित्य की शोभा काव्य है; हो न हो इसी विचार के वशवर्ती होकर हमारे पूर्वपुरुष ऋषियों ने जितने ग्रन्थ बनाये थे वे प्रायः पद्य में ही लिखे गये थे। गद्य-ग्रन्थों के बनाने की परि-पाटी ऋषियों में थोड़ी थी; इसी कारण हमारे हिन्दी भाषा के आचार्य्यों ने भी गद्यरचना पर मन नहीं लगाया था। हिन्दी भाषा के ये श्रेष्ठ आचार्य्य हुए हैं, यथा—

"सूर सूर तुलसी शशी, उडुगन केशवदास।
अबके कवि खद्योतसम, जहँ तहँ करहिं प्रकास" ॥

इन सब महाशयों ने जो कुछ लिखा सो सब पद्य में ही लिखा; क्योंकि उस समय की परिपाटी ही यही थी कि 'काव्य हो तो पद्य में ही हो'।

यदि कहीं कोई गद्य-ग्रन्थ वैदिक, ज्योतिष अथवा साम्प्रदायिक मिलते भी हैं तो सड़ीगली हिन्दी में लिखे हुए मिलते हैं, यह इसी परिपाटी का ही दोष था कि हिन्दी-भाषा की विशेष उन्नति न होसकी। अब अंग्रेज़ी-शिक्षाप्रचार के साथ साथ यह भाव लोगों के हृदय में उदय हुआ कि बिना गद्यपद्यात्मक ग्रन्थों के भाषा की पूर्ण शोभा नहीं; और न वह सर्वसाधारण के बोध-उपयोगी और उपकारी होसक्ती है; इसी विचार से प्रेमसागर, रानी केतकी की कहानी आदि ग्रन्थों का दर्शन हुआ। परन्तु अतिमधुर, सुन्दर और अमिश्रित हिन्दी भाषा भारतवासियों के कर्णगोचर तबतक नहीं हुई जबतक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी ने भाषा के सुधारने में लेखनी नहीं चलाई। यह इन्हीं भाषा के श्रेष्ठ आचार्य्य महाशय का परिश्रम है कि जिस से भारतवासियों ने मधुर हिन्दी भाषा के गद्यकाव्य देखे; उन्हीं कविश्रेष्ठ के निःस्वार्थ भाषानुराग का फल है कि जिससे हिन्दीभाषाज्ञों ने जाना कि समाचारपत्र क्या है और गद्यमय मधुर भाषा कैसे लिखी जाती है। सब विद्वन्मण्डली इस बात को भलीभांति जानती है कि बाबू हरिश्चन्द्रजी ने प्रिय भारतवासी और हिन्दी भाषा की उन्नति के अर्थ कितने स्वार्थ त्याग किये थे। इस स्वदेशहितैषी महाशय के निकट हिन्दी भाषा सदाही ऋणी रहेगी।

यह आर्य्यसन्तानों काही दोष है कि हिन्दी भाषा की उन्नति अभीतक सम्पूर्ण न होसकी। आर्य्यों की पितृभाषा संस्कृत की सुरक्षा करनेवाले और उसके जाननेवाले ब्राह्मणगण जिनसे कि हमारी मातृभाषा हिन्दी बहुत कुछ आशा रखती है वे तो मातृभाषा की सेवा करने की अथवा उस की उन्नति करने की आवश्यकता ही नहीं समझते। यहां तक देखने में आया है कि संस्कृत के बड़े बड़े विद्वान् हिन्दी तो लिखना जानतेही नहीं अधिकन्तु हिन्दी पुस्तक पढ़ने में अपना अपमान मानते हैं। दूसरी ओर अंग्रेजी भाषा की शिक्षा में उन्नति प्राप्त किये हुए आधुनिक विद्वान्गण की रुचि अपनी मातृभाषा की उन्नति की ओर अभी तक आकर्षित हुईही नहीं। इस ओर से उनकी दृष्टि ऐसी फिरी हुई देखने में आती है कि अपने स्वजनों से वार्त्तालाप और पत्रव्यवहार करने में भी वे अंग्रेज़ी भाषा को ही काम में लाते हैं। बङ्गला भाषा की इतने थोड़े समय में इतनी उन्नति

होने का कारण ढूंढ़ने से यही प्रतीत होगा कि बङ्गदेश के बड़े बड़े संस्कृतज्ञ ब्राह्मणों ने बङ्गलाभाषा की उन्नति करने में जैसा प्रयत्न किया है और कर रहे हैं वैसेही वहां के अंग्रेज़ी शिक्षित विद्वन्मण्डली ने चित्त से प्रयत्न किया है और वह अभी भी कररही है। अस्तु जब तक इन दोनों सम्प्रदाय के विद्वानों की समानरूप से प्रेमदृष्टि हमारी मातृभाषा हिन्दी की ओर नहीं खिंचेगी तब तक आर्य्यजाति की मातृभाषा हिन्दी की पूर्ण उन्नति होना सम्भव नहीं है।

अन्तःकरणकी दो प्रकारकी वृत्तियां होती हैं एक आत्मभावको लिये हुई और दूसरी विषय भाव को लिये हुई। पहली वृत्तियाँ बुद्धि से विशेष सम्बन्ध रखती हैं और वे ज्ञान और भाव प्रधान होती हैं। और दूसरी श्रेणी की वृत्तियां मनसे अधिक सम्बन्ध रखती हैं और वे लौकिक जगत् से और चित्तकी आसक्ति से अधिक सम्बन्ध रखती हैं। आत्मा अनात्मा का विचार, ईश्वर जीव का विचार, इहलोक परलोक का विचार, धर्म्म और अधर्म्म का विचार आदि और उनका वैज्ञानिक रहस्य अनुसन्धान करना पहली श्रेणी की वृत्तियों का काम है। और जगत् के साथ मनका सम्बन्ध रखकर लौकिक आनन्द अनुभव करना, एक मनुष्य के चित्तवृत्ति के भाव को दूसरे मनुष्य तक पहुँचाना, इत्यादि दूसरी श्रेणी की वृत्तियों का काम है। दार्शनिक सूत्र पहली श्रेणी के विचार के सहायक हैं; ठीक उसी प्रकार दूसरी श्रेणी की वृत्तियों के लिये कहावतें परम सहायक हैं; अन्तर्राज्य के लिये दार्शनिक सूत्र जैसे उपकारी हैं, बहिर्राज्य के कार्य्य के लिये अपनी मातृभाषा की कहावतें भी उससे अधिक उपकारी हैं। शास्त्रीय सूत्र मन वाक् और बुद्धि से अगोचर दार्शनिक रहस्यों के विचार करने में मन्त्ररूप होकर बुद्धि में प्रेरणा करते हैं; ठीक उसी प्रकार लौकिक जगत् में भाव के विस्तार करने और बड़े भाव को संक्षेप से समझने और समझाने के लिये अपनी मातृभाषा की कहावतें मनोराज्यको बड़ी भारी सहायता देती हैं। किसी भाषा में प्रचलित कहावतें एक दूसरे के चित्त के भावसमूह के समझाने के लिये इतनी सहायता देती हैं कि ऐसी सहायता और किसी प्रकार से प्राप्त नहीं होसक्ती; क्योंकि प्रत्येक कहावत में इतना भाव भरा रहता है कि जिसको यदि विस्तार से प्रकाशित किया जाय तो एक सुन्दर प्रबन्ध बन सक्ता है।

जिस प्रकार मंत्रशास्त्र के अनुसार किसी शुद्ध मंत्र के सुनने पर अथवा उस मंत्र के ध्यान में आने पर उस मंत्र के अधिष्ठातृ देवता के स्वरूप, गुणावली और विज्ञान का ठीक ठीक पता साधक को लग जाया करता है, जिस प्रकार किसी दर्शनशास्त्र के एक सूत्र को पढ़ते ही अथवा सुनते ही उस सूत्र द्वारा इङ्गित किया हुआ आत्मा और अनात्मा के सम्बन्ध का विज्ञान, उसका गूढ़ रहस्य और उस विज्ञान का विस्तारित और वचन से अतीत स्वरूप दार्शनिक पण्डित की समझ में सुगमता से आ जाता है; ठीक उसी प्रकार किसी भाषा की प्रचलित कहावतों के पढ़ते ही अथवा सुनते ही उस भाषा में प्रचलित उस प्रकार की भावराशि और उस मनुष्यसमाज में प्रकाशित उस मनोविज्ञान का रहस्य जितना कुछ प्रचलित उन शब्दों से हुआ है, सब ही उन थोड़े शब्दों से समझ में आ जाता है। इसी कारण आधुनिक यूरोप और अमेरिका के बड़े बड़े विद्वानों ने कहावतों के साथ प्रत्येक प्रचलित भाषा और मनुष्यजाति का बड़ाभारी सम्बन्ध आविष्कार किया है। उन्होंने यह भी सिद्ध करके दिखाया है कि केवल कहावत के द्वारा ही किसी मनुष्यजाति की प्राचीन दशा, प्राचीन स्वरूप और किस श्रेणी की वह मनुष्यजाति है, इसका पता भी लग सक्ता है। किसी भाषा की प्रचलित कहावतें उस भाषारूपी वृहद्भवन की स्तम्भरूप हैं, ऐसा भी कह सक्ते हैं। शब्द से अर्थ, अर्थ से वृत्तियां और वृत्तियों से भाव का उदय होता है। दूसरी ओर शब्द प्रकट होते समय भाव को आश्रय करके अन्तःकरण की वृत्तियां और अन्तःकरण की वृत्तियों से प्रेरित होकर वृत्तियों के स्वरूप-द्योतक और उनके भावार्थव्यञ्जक शब्द प्रकट होते हैं। इसी कारण एकही शब्द कई वृत्तियुक्त अर्थों का प्रकाशक हो सक्ता है। किसी भाषा के प्रचलित कहावतरूपी थोड़े शब्दों में उस भाषा में प्रकाशित अनेक भावराशि उक्त कहावत के थोड़े ही शब्द के कान में पहुँचतेही श्रोता के हृदय में विकसित हो जाते हैं। यही कहावतों का अपूर्व महत्त्व है।

मातृभाषा हिन्दी की सेवा के लिये यह कहावतरत्नाकर प्रकाशित किया जाता है। अनेक विद्वानों की सहायता से ये हिन्दी की कहावतें संगृहीत हुई हैं। अगले संस्करण में इनकी संख्या भी बढ़ सकेगी। मातृभाषा हिन्दी की कहावतों को मुख्य रखकर पितृभाषा संस्कृत की कहावतें भी संग्रह की गई हैं,

और अनेक स्थलों में बना दी गई हैं । सुबिधा के लिये राजभाषा अंग्रेज़ी का भी और प्रचलित उर्दू का भी ऐसाही संग्रह या अनुवाद किया गया है । फ़ारसी और अरबी का भी संग्रह जहांतक सम्भव है किया गया है । संस्कृत-भाषा की अपूर्व्व "न्यायावली" भी गाथासहित दीगई है और अन्त में कुछ सुभाषित भी दिये गये हैं । इस पुस्तक के द्वारा मातृभाषाज्ञ व्यक्तियों की सहायता होने पर मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा ।

ग्रन्थकर्त्ता ।

श्रीजगदम्बायै नमः ॥

कहावत रत्नाकर।

अ

अति का फूला सैंजना डाल पात से जाय।

(सं) पतनान्ताः समुच्छ्रयाः (अं) Too quick growth lasteth not. (उ) جو چڑھیگا وہ گریگا—ہر کمال کو زوال ہے

(फ़ा) ہر بہارے را خزانے—ہر کمالے را زوالے

अति सब में बुरी होती है।

(सं) अति सर्वत्र वर्जयेत् (अं) Golden means between two extremes. (उ) جو سادی چال رکھتا ہے وہ ہمیشہ خوشحال رہتا ہے

(फ़ा) درہمہ کارمیانہ رو باش

अधजल गगरी छलकत जाय।

(सं) अत्यन्तं श्लाघते क्षुद्र आत्मानं न गुणी जनः। शब्दायतेऽपूर्णघटो निरन्तरम्। (अं) Empty vessel sounds much.

(उ) تھونا چنا—باجے گھنا (फ़ा) صداے دھل ازخالی بودن شکم است

(अ) رب صلف تحت الراعدة

अधर में घर बनाना।

(सं) अनागतवतीं चिन्तामसम्भाव्यां करोति यः। स एव पाण्डुरः शेते सोमशर्मपिता यथा (अं) Building castles in the air.

(उ) دھول کی رسی بٹنا—ہوائی قلعہ تعمیر کرنا (फ़ा) باد بہ مشت پیمودن

(अ) لا يدخل الجمل في سم الخياط

अनाड़ी बंज भारी।

(सं) व्यापारे ह्यपटुः सम्यक् महावाणिज्यनायकः (अं) Knows little, attempts much. (उ) عیب کرنے کو بھی ہنر چاہیئے

(फ़ा) عیب کردن را ہنرے باید (अ) الحکمت مفتاح السعادة

अपना पूत पराया डंगर।

(सं) ममता स्वेषु सर्वेषाम् (अं) Every cook praises his own broth. (उ) اپنے دہی کو کوئی کھٹا نہیں کہتا

(फ़ा) کس نگوید کہ دوغ من ترش است (अ) یحسب کل احد ذا کمال و ولده ذاجمال

अपना हाथ जगन्नाथ का भात।

(सं) स्वीयं कस्मै न रोचते (अं) Self-done is done best.
(उ) اپنا کام اپنے ھی سے خوب ھوتا ھے (फ़ा) دست خود دھان خود

अपनी अपनी खाल में सभी जीव खुशहाल।

(सं) अनेकदोषदुष्टोऽपि कायः कस्य न वल्लभः (अं) Every one loves his own skin. (उ) اپنے حال مھن سب مست
(फ़ा) بادشاھان مال مست و ماگدایان حال مست

अपनी ओर निहारो।

(सं) स्वात्मानमवलोकय (अं) Look at thyself! Physician, heal thyself! (उ) ھون لاکھہ خطا و جرم ھمسے - گذرے ھے کریم کب کرم سے
(फ़ा) بومن منگر جو کرم خویش نگر

अपनी करनी अपने आगे।

(सं) यादृशाचरणं यस्य स तादृग् विन्दते फलम् (अं) As you sow, so you shall reap. (उ) جیسا بوؤگے ویسا کاٹوگے جیسي کرني ویسي بھرني
(फ़ा) کردني خویش آمدني پیش (अ) کماتدین تدان

अपनी करनी परमान, क्या हिन्दू क्या मुसलमान।

(सं) स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः (अं) You shall be judged by your act, not creed.
(उ) تجھے اور کي کیا پڑي ھے تو اپني تو نباہ (फ़ा) ھر کسے آن درود عاقبت کار کہ کشت (अ) لنا اعمالنا و لکم اعمالکم

अपनी करनी पार उतरनी।

(सं) स्वकर्म्मणैव संसारात् पारं गच्छन्ति मानवाः (अं) As they brew, so let them drink. (उ) قاضي جي کیوں دبلے شہر کے اندیشہ سے
(फ़ा) نیکي نیک را و بدي بد را (अ) لنا اعمالنا و لکم اعمالکم

अपनी गांठ पैसा, तो पराया आसरा कैसा।

(सं) स्वात्मावलम्बस्य कुतः पराशा (अं) Why seek help when you have means? (उ) پیسہ گانٹھہ کا ھتھیار ساتھہ کا
(फ़ा) زریکہ ازتست ھمانست کہ درمشت (अ) القبض دایل الملک

अपनी टेंट सूझे नहीं और की फूली निहारे।

(सं) खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति। आत्मनो बिल्वमात्राणि

पश्यन्नपि न पश्यति (अं) Does not see the beam in one's own eyes but sees the mote in other's.

(उ) اپنی آنکھہ کا شہتیر نہیں سوجھتا—اوروں کا تنکا سوجھتا ہے

(फ़ा) عیب خود هر کسے نمي بیند (अ) یکسوالناس ستة عاریة

अपनी डाढ़ी का मचरका।

(सं) सदोषो वाऽसि निर्दोषो दण्डार्हस्त्वं न संशयः

(अं) Plough or not plough, you must pay your rent.

(उ) اڑکا روئے بالونکو نائي روئے منڈائي کو (फ़ा) سلام روستائي بیغرض نیست

अपनी नरमी दुश्मन को खाय।

(सं) मृदुना दारुणं हन्ति (अं) A soft word turneth away wrath. Love disarms opposition. (उ) ٹھنڈھا لوھا گرم کو کاٹتا ہے

(फ़ा) دواے غضب خاموشی است (अ) اللین تطفي الغضب

अपने अपने ओसरे कुए भरे पनिहार।

(सं) अपेक्ष्यते स्वावसरो ध्रुवं जनैः (अं) Every dog has his day.

(उ) کبھي گھورے کے بھی دن پھرتے ھیں (फ़ा) هر کسے پنج روز نوبت اوست

(अ) المریض یشفی و الفقیر یغني

अपने जामे में सभी नंगे।

(सं) वसनाभ्यन्तरे नूनं नग्नाः सर्वे न संशयः (अं) Every one is naked under his clothes. (उ) بندہ بشر ہے چوک ھی جاتا ہے

(फ़ा) درجامہ حیوان همہ بر هنہ

अपने मन से पूछिये मेरे मन की बात।

(सं) सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः

(अं) Love begets love. True hearts beat in unison.

(उ) دل کو دل سے راہ ہے (फ़ा) دل را بدل رھیست (अ) القلب یھتدي الے القلب

अपने मुँह से धन्ना बाई।

(सं) स्वात्मानं श्लाघते मूढः (अं) Self-praise is no praise.

(उ) اپنے منھہ سے میان مٹھو مشک کو عطار کي تعریف کي حاجت نہیں

(फ़ा) مشک آنست کہ خود بوید نہ کہ عطاربگوید

अपनो है फिर आपनो यामें फेर न सार। गोड़ नमत निज उदर को कहत सकल संसार।

(सं) स्वजना उपकुर्व्वन्ति स्वजनानेव निश्चितम्। प्रकृत्या नमतः पादाबुदराऽभिमुखं यथा (अं) Near is my shirt, but nearer my skin.
(उ) گھٹنے پیٹ ھي کو جھکتے ھیں (फ़ा) دگر دگر است جگر جگر است

अब सतवन्ती बनी लूट खायो संसार।

(सं) वृद्धा वेश्या तपस्विनी (अं) After a life of sin turns a holy ascetic. (उ) نو سے چوھے کھاکے بلي حج کو چلي
(फ़ा) من خوب میشناسم پیران پارسارا (अ) انا اعرف باسرارک

अभी सेर में पौनी भी नहीं कती।

(सं) पदमेकं न चलितं क्रोशेष्वद्यावधि ध्रुवम् (अं) The task is not yet one-fourth done. (उ) رات بہر پیسا فجر چنکي بھر اٹھایا— پہاڑ کھود کر چوھا نکالنا (फ़ा) کوہ کندن و کاہ برآوردن

अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है।

(सं) कृतन्निवेदनं देव यदिच्छसि तथा कुरु (अं) We can but pray, fulfilment rests with you.
(उ) هم نیک و بد حضور کو سمجھائے جاتے ھیں * پر مانو یا نہ مانو تمھیں اختیار ھے
(फ़ा) اختیار بدست مختار

अरे जौहरी बावले सुन मेरे दो बोल। बिन गाहक जनि खोल तू गठरी रतन अमोल।

(सं) अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख
(अं) Don't scatter pearls before swine.
(उ) جب کوئي سنتا ھے تب بات کہتا ھے (फ़ा) پیش کسے روکہ طلبگار تست

अलख अखण्ड आदि अविनाशी।

(सं) अखण्डं विभु ब्रह्म नित्याविनाशि समस्तादिरूपादिहीनं प्रशान्तम्
(अं) The Formless, the Indivisible, the One without Beginning, One without End. (उ) خدا کي ذات بےنظیر ھے
(फ़ा) ذات خدا لایزال هست قدیم و بیمثال

अपना दूर से सूझता है।

(सं) सर्वः स्वतां पश्यति दूरतो हि (अं) One's own is ever evident to one. (उ) اپنا کام دور سے سوجھتا ھے (फ़ा) کار خویش از دور نظر مي آید

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।

(सं) न ह्येकं चणकं कुर्यात् खण्डशो भर्जनं सखे। (अं) United you can what singly you can't. (उ) اکیلا چنا بھاڑ نہیں پھوڑتا
(फ़ा) از یکے چہ بر آید

अशरफ़ी लुटें कोयलों पर मुहर।

(सं) रत्नं चौरा हरन्त्येव शीताङ्गारे महादरः (अं) Penny wise pound foolish. (उ) اشرفیون کی لوٹ کویلون پر مہر
(फ़ा) اشرفی ضایع شوند مہر بر انکشت نہند

अपने स्वार्थ को गधा चराते।

(सं) स्वार्थिनः किं न कुर्वन्ति। (अं) One is slave to one's own interest. The selfish stick at nothing. (उ) غرضمند باؤلا
(फ़ा) برائے مطلب خود خران می چرانیم

अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दिखाई देता है।

(सं) अन्यस्य वित्तं स्वमतिश्च नैकगुणं प्रपश्यन्ति जना जगत्याम्।
(अं) Intelligence of self and wealth of others look bigger.
(उ) اپنی عقل اور دوسرے کی دولت سب کو بڑی معلوم ہوتی ہے
(फ़ा) عقل خود و مال دیگران بکمال می نماید

अवसर चूकी डोमिनी गावे ताल बेताल।

(सं) व्यतीते समये कार्य्यं व्यर्थतां वहते खलु। (अं) There is time for every work and work for every time.
(उ) ہر کام کے لئے وقت ہوتا ہے
(फ़ा) مشتے کہ بعد از جنگ یاد آید بر کلہ خود باید زد

अरहर की टट्टी गुजराती ताला।

(सं) अल्पस्य हेतोर्बहुलः प्रयासः। (अं) Laying a battery for killing a mosquito. (उ) ٹاٹ پر ریشم کی بخیہ
(फ़ा) قفل گجراتی بدریچہ نباتی

अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना।

(सं) स्वतन्त्रस्य निजाधीनं शयनं जागृतिस्तथा। न स्वातन्त्र्यसमं सुखम्।
(अं) Do as you need, not as you are told. (उ) اپنی نیند سونا اپنی نیند جاگنا
(फ़ा) آزاد باش قماش کہ نہ غم خواب نہ تلاش معاش

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े।

(सं) प्रणाशयन्ते शकुनं परेषां छित्वाऽपि स्वीयां किल नासिकां वै।

(अं) To cut one's nose to spite other's face. (उ) دوسرے کے برے شگون کے لئے اپنی ناک کٹانا (फ़ा) براے نحس دیگران بینی خود برانیدن

अपने घर में कुत्ता भी सिंह होजाता है।

(सं) स्वगृहे कुक्कुरोऽपि सिंहायते। स्वस्थाने बलवन्तः स्युः क्षुद्रा जीवगणा अपि। (अं) A cur is a lion in his own kennel.

(उ) اپنی گلی میں کتا بھی شیر ہوتا ہے (फ़ा) بمسکن خود سگے ہم شیر باشد

अर्क तरुन की डार तें कहुँ गज बाँधे जाहिं?

(सं) गजो नैवाऽर्कवृक्षेषु बद्धः क्वचन दृश्यते। (अं) To lean upon a broken reed. (उ) مدار کی ڈال سے ہاتھی کا باندھنا ناممکن ہے

(फ़ा) پیلے بمیلے نہ توان بست

अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग।

(सं) अनैक्ये यान्ति संसारे व्यक्तिस्वाधीनतां जनाः। (अं) Dancing to one's own pipe. (उ) اپنی دھن میں سب مگن ھین

(फ़ा) ہر کس بخیال خویش خبطے دارد

अमरौती खाकर कौन आया है।

(सं) मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्। नाऽस्ति कोऽप्यमरो लोके।

(अं) Every creature is mortal, die it must. (उ) موت سب کو لازم ہے

(फ़ा) جہان فانی است از پنجۂ موت کسے بیرون نیست

अनमांगे मोती मिले मांगे मिले न भीक।

(सं) अयाच्ञया लभेन्मुक्तां याच्ञया न लभेत्तृणम्। (अं) Lots you get without begging, by begging you don't get a petty dole.

(उ) بنا مانگے موتی ملتا ہے مانگے سے بھیک بھی نہیں ملتی (फ़ा) بے طلب گوہر بگیر با طلب درغم بمیر

अमानत में ख़यानत।

(सं) आशावतां श्रद्दधतां च लोके किमर्थिनां वञ्चयितव्यमस्ति।

(अं) Treachery played where trust reposed.

(उ) امانت میں خیانت (फ़ा) خیانت امانت

अपना दाम खोटा तो परखनेवाले का क्या दोष ?

(सं) परीक्षकस्य को दोषो मुद्रा चेद्दोषदूषिता ? (अं) What blame to fault-finder, when there is fault to find?

(उ) اپني خطا کا دوسرے کو ذمہدار بنانا- (फ़ा) براے ناپاکي خود شيطان را مطعون نبايد کرد-

अयाना जाने हिया स्याना जाने किया।

(सं) विदन्ति हृदयं बाला निपुणाः कार्यकौशलम् (अं) The wise look to deeds, the foolish to appearances.

(उ) معصوم دل پہچانتا ہے دانا کام- (फ़ा) معصوم دل ميشناسد دانا کارمي بيند-

अस्सी की आमद चौरासी का ख़र्च।

(सं) आयादपि व्ययोऽधिकः (अं) Earning five, spending ten.

(उ) چادر سے پير بڑا- (फ़ा) خرچ از آمد افضل-

अभी तो बेटी बाप की है।

(सं) दानात्पूर्व्वं दातुरेवाऽधिकारः (अं) (Literally) Before marriage the daughter is in her father's hands. (उ) ابھي تير ترکش ميں ہے

(फ़ा) هنوز تير از کمان نه جسته است—هنوز آب از سر نگذشته است-

अति भक्ति चोर के लक्षण।

(सं) अत्यन्तं विनयो ज्ञेयं महावञ्चकलक्षणम (अं) Too much piety is suspicious. (उ) زيادہ وفاداري دغا کي دليل ہے-

(फ़ा) عصمت بيکران علامت بے ايمان-

अटका बनियाँ दे उधार।

(सं) ऋणं पौर्व्विकमादातुमृणं दत्ते पुनर्वणिक् (अं) Rules relax when times go hard. (उ) اٹکا بنيا سودا کرے- (फ़ा) غرضمندراعي ميشود

अपना वही जो आवे काम।

(सं) काले सहायकः स्वीयः (अं) A friend in need is friend indeed. (उ) دوست کي پہچان مصيبت ميں هوتي ہے- (फ़ा) شعر—دوست

آن دانم که گير ددست دوست * در پريشان حالي و در ماندگي-

अपना अपना कमाना अपना अपना खाना।

(सं) स्वयमाहृत्य भुञ्जानाः प्राणिनो हि स्वभावतः। स्वार्थे सक्ता हि जन्तवः (अं) (Lit)—Earned by self, enjoyed by self.

(उ) خود کهانا خود کمانا- (फ़ा) دست خود دهان خود-

अपनी फूटी न देखे दूसरे की फूली निहारे।

(सं) स्वदोषसङ्घं न विलोकयन्ते पश्यन्ति दोषश्च परस्य स्वल्पम्
(अं) Sees the mote in other's eyes, but not the beam in one's own eyes. (उ) دوسرے کا عیب بڑا معلوم ہوتا ہے۔
(फ़ा) عیب دیگران افضل می نماید۔

अन्नदान महादान।

(सं) सर्वेभ्योऽपि हि दानेभ्यश्चान्नदानं विशिष्यते (अं) No charity like feeding the starving. (उ) پیٹ بھرنا سب سے بڑی خیرات ہے۔
(फ़ा) گرسنہ را لقمہ دادن بہترین از ہمہ خیرات۔

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।

(सं) आत्मानं श्लाघते मूढः (अं) Beating one's own drum. Blowing one's own trumpet. (उ) خودستائی عیب ہے۔
(फ़ा) ثنائے خود بخود گفتن نزیبد۔

अपनी जाँघ उघारिये आपन मरिये लाज।

(सं) स्वगुप्तदोषानुद्घाट्य स्वयमेव हि लज्जते (अं) One is taken at one's own valuation. (उ) اپنا بھید کہنا خود شرمندہ ہونا ہے۔
(फ़ा) راز خود برهنه کردن گوئی خود شرمنده شدن است۔

अभी होठों का दूध नहीं छूटा है।

(सं) अहो शिशुत्वं तव खण्डितञ्च स्मरस्य सख्या वयसाप्यनेन
(अं) Still in swaddling clothes. Yet in leading strings.
(उ) ابھی دودھ پیتے ہیں۔
(फ़ा) ہنوز شیر میخوری۔

अब के बचे तो सब घर रचे।

(सं) लौकिकी बत गाथेयं कल्याणी प्रतिभाति मे। एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षशतादपि॥ जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत् (अं) The crisis on which the whole future hangs. The crux of the situation.
(उ) بچینگے تو پھر لڑینگے۔ (फ़ा) زندگی بہتر از ہمہ شے۔

अब की बार बेड़ा पार।

(सं) वारेऽस्मिन् सफलं ध्रुवम् (अं) On the last rung of success.
(उ) ابکے بیڑا پار ہے۔ (फ़ा) این بار سعی آخری است۔

अब की अब के साथ, जब की जब के साथ।

(सं) यूयं वयं वयं यूयं इत्यासीन्मतिरावयोः । अधुना मित्र ! किं जातं ? यूयं यूयं वयं वयम् (अं) Do to-day what is to-day's, leave to to-morrow what is to-morrow's. Leave nothing for the morrow what can be done to day. (उ) آج کا کام کل پر مت ٹال-
(फ़ा) کار امروز بفردا مگذار-

अच्छे भये अटल, प्राण गये निकल।

(सं) दीपमुद्योतयेद्यावन्निर्वाणस्तावदेव सः (अं) The flaring up of the lamp before extinguishment. The fool's stand before the inevitable. (उ) موت سب کو قیام دیتی ہے-(फ़ा) موت همرا قیام میدهد-

अधेला न दे अधेली दे।

(सं) रक्षत्यल्पं यच्छति बहुलम् (अं) Penny-wise, pound-foolish.

आ

आई थी मिलने बिठाली दलने।

(सं) किङ्कर्तुमागतः कस्मिन्नासक्तः
(उ) ضیافت کیا ہوئي آفت ہوئی-(फ़ा) صلاشد بلاشد-
(अ) ادعوت هی ام عداوة

आई बहू आयो काम गई बहू गयो काम।

(सं) यावद्गृहिणी तावत्कार्य्यम् । न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते
(अं) Keep no more cats than will catch mice.
(उ) ضرورت سے زیادہ سامان نہ رکھو (फ़ा) حرص قانع نیست بیدل ورنہ اسباب معاش * آنچہ ما درکار داریم اکثرے درکار نیست-(अ) الحریص محروم-

आकाश बाँधू पाताल बाँधू घर की टट्टी खुली।

(सं) परोपदेशे पाण्डित्यम् (अं) An unjust judge preaches justice. The devil quoting scriptures.
(उ) مشعلچي آپ اندھا—چراغ کے تلے اندھیرا-
(फ़ा) خودرا فضیحت و دیگران را نصیحت (अ) یکسوالناس واستہ عاریۃ-

आँख लजियाई बेटी पराई।

(सं) मौनम् स्वीकारलक्षणम् (अं) Silence gives consent.
(उ) خاموشي نيم رضا-(फ़ा) خاموشی علامت رضامندي است

आँखों देखी परशुराम, कभी न झूठी हो ।

(सं) प्रत्यक्षस्य प्रमाणं किम् (अं) Seeing is believing.

(उ) آنکھ اور کان میں صرف چار انگل کا فرق ہے۔

(फ़ा) مکن باور تو بر سخن شنیده * شنیده کے بود مانند دیده۔

आग को आग मारती है ।

(सं) विषस्य विषमौषधम् (अं) Diamond cuts diamond.

(उ) ہاتھی کی ٹکر ہاتھی ہی سہتا ہے۔ (फ़ा) سنگ را سنگ میشکند۔

आग फूस का बैर है ।

(सं) तस्माद् घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद्बुधः (अं) (Lit.) Fire is enemy of dried straw.

(उ) آگ اور روئی کی کیا دوستی۔

(फ़ा) آب و آتش راچہ آشنائی۔

आग बिना धुआँ नहीं ।

(सं) पर्वतो वह्निमान् धूमात् (अं) No smoke without fire.

(उ) بات ہوگی تو بتنگڑ اٹھیگا۔

(फ़ा) تا نبا شد چیز کے مردم نگویند چیزھا۔

आग लगन्ते झोपड़ी जो निकसे सो लब्ध ।

(सं) सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः (अं) Better lose half than lose all. Half a loaf is better than no bread. Something is better than nothing.

(उ) نا دھندے جو کچھ ہاتھ لگے سو غنیمت۔

(फ़ा) از خرس موئے بس است۔ (अ) خذ القلیل من اللیم

आग लगाय तमाशा देखे ।

(सं) अग्निमुद्दीप्य कौतुकं पश्यति (अं) Nero fiddles while Rome burns.

(उ) آگ لگاکے جمالو الگ—دوڑے پانی کو ہیں کیا آگ لگانے والے۔

(फ़ा) آتش زدن و برائے آب دویدن۔

आगे नाथ न पीछे पगहा ।

(सं) रज्जुर्न पश्चान्न पुरोऽधिपाता (अं) Nothing before, nothing behind.

(उ) چولہے آگ نہ گھڑے پانی۔

(फ़ा) خانہ بدوش بیک بینی و دو گوش۔

आगे पग से पत बढ़े पाछे से पत जाय ।

(सं) पुंसां प्रतिष्ठा स्वकरे विराजते (अं) Where there is a will there is a way.

(उ) ہمت کے آگے سب کچھ آسان ہے۔

(फ़ा) بہر کارے کہ ہمت بستہ گردد * اگر خارے بود گلدستہ گردد۔

आज कल तो तुम्हारे नाम कमान चढ़ती है।

(सं) त्वन्नामश्रवणान्मित्र ! कुरुते भ्रूकुटिभ्रमम् (अं) Rolling in wealth. (उ) پانچون انگلی گھي مين هين- (फ़ा) دلاخوش باش که نان مابروغن افتاد- (अ) العميان قد تلتقط-

आज कल तो ख़ूब छक्के पंजे उड़ाते हो।

(सं) स्वैरं वर्त्तयसेऽधुना (अं) To live in clover. (उ) گل چهرے اڑاتے هو- (फ़ा) دلا خوش باش که نان مابروغن افتاد- (अ) العميان قد تانقط

आज के थपे आज़ ही नहीं जलते।

(सं) सर्वं कालमपेक्षते (अं) Done in haste is really waste. Haste is waste. (उ) کهين هتهيلی پر بهی سرسون جمتی هے- (फ़ा) که تعجيل کارشياطين بود-

आठौ गाँठ कुम्मैत।

(सं) वाच्येव शूरो न तु कार्यकाले (अं) Unready with hand, too ready with tongue. (उ) کام چور نوالے حاضر- (फ़ा) روستايان گيلان- (अ) ابن هبنقه-

आँत भारी तो माथ भारी।

(सं) अन्तःसारो बहिर्भाति (अं) Still waters are deep. Sobriety, temperance and tranquility are Nature's best physicians. (उ) کم کهانيسے انسان کو نقصان نهين هوتا هے- (फ़ा) که گه خورو کم کم خورو سيز مخور- (अ) البطنة تاقن الفطنة

आत्मा में पड़े तो परमात्मा की सूझे।

(सं) तुष्टात्मा परमात्मानं द्रष्टुमर्हति पूरुषः (अं) A hungry man is an angry man. (उ) دل ٹهکانے هو تو سب کچهه هو سکے- (फ़ा) پرا گنده روزي پراگنده دل- (अ) من قل ديناره دل مقداره-

आदमी आदमी में अन्तर, कोई हीरा कोई पत्थर।

(सं) विविधाः पुरुषा लोके क्वचित्काचः क्वचिन्मणिः (अं) Human nature varies as the human figure.- (उ) سب انسان انسان نهين هوتے (फ़ा) هر مار مهره ندارد- (अ) ماکل سوداء تمرة و بيضاء شحمة-

आदमी का तोल एक बोल में पिछानिये।

(सं) स्वल्पसँल्लापमात्रेण पुंसां परिचयो भवेत् (अं) One word of a man shows his worth. (उ) آدمی کی بولی سے خبر پڑتی ہے-
(फ़ा) سخن آدمی بوئے آدمی است-(अ) المرء مخفي طي لسانه لا في طيلسانه-

आदमी की पैठ पुजती है।

(सं) पुंसां गौरवहेतुः स्यात् सदा लोकेऽत्र प्रत्ययः (अं) Rank lends dignity to words. (उ) تو کہے سو سچ بڑا کہے سو سچ-
(फ़ा) قلندر ہرچہ گوید دیدہ گوید-

आदमी को ओछी पूँजी मत जानो।

(सं) माऽवगच्छ नरं तुच्छं मानवं बलमुत्तमम् (अं) Man is a worm, man is God. (उ) آدم کو خدا مت کہو آدم خدا نہیں * لیکن خدا کے نور سے آدم جدا نہیں-(फ़ा) مفروش خویش ارزان کہ تو بس گرانبہائی-

आदमी भूल चूक का पुतला बना है।

(सं) सदोषाः खलु मानवाः (अं) To err is human.
(उ) ع ہے سہو و خطا بشر کا شیوہ—ع بشر شر سے خالی نہیں ہے کوئی-
(फ़ा) آدمی آخر شیر خام خوردہ است-

आधी छोड़ सारी को धावे आधी रहे न सारी पावे।

(सं) यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते। ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेवहि॥

(अं) Grasp all lose all. (उ) گئے نماز بخشوانے روزے گلے پڑے-
(फ़ा) صباح برخاستم خضرے ببینم خرسے دو چار شد-(अ) طلب الکل فوت الکل-

आप काज महा काज।

(सं) यत् यत् आत्मवशं कर्म तत् तत् सेवेत यत्नतः (अं) Master's eye makes horses fat. (उ) اپنا کام اپنے ہی سے خوب ہوتا ہے-
(फ़ा) مارہم از دست خود باید کشت-

आपको जो चाहे उसे चाहिये हजार बार, आपको न चाहे वाके बाप को न चाहिये।

(सं) यस्त्वामिच्छति तन्त्वमपीच्छ यस्त्वान्नेच्छति तं कदाचिदपि नेच्छ
(अं) Do as you would be done by.
(उ) جھکتے کے سامنے جھکنا رکتے کے ساتھ رکنا
(फ़ा) کسیکہ با تو کند لطف خاک پایش باش * وگر خلاف کند دردو چشمش آگن خاک-

आप डूबे तो जग डूबा।

(सं) आत्मवत् सर्वभूतेषु सदा पश्यति वै नरः (अं) A man judges by his own standard. (उ) جان ہے تو جہان ہے۔
(फ़ा) من مردم جہان مردہ۔

आप न जावे सासरे औरन को सिख देय।

(सं) परोपदेशे पाण्डित्यम् (अं) An unjust judge preaches justice. (उ) قاضي جي پہلے اپنا آگا ڈھانکو پھر نصیحت کرنا۔
(फ़ा) او خویشتن گم است کرا رہبری کند۔ (अ) یامرون الناس و ینسون انفسہم۔

आप न जोगी गीदड़ी कागे न्यौतन जाय।

(सं) नास्ते कपर्दिका गेहे द्वारे नृत्यति नर्त्तिका (अं) A mangy slut, a rich coat. (उ) آپ ھي میاں مانگتے باہر کھڑے درویش۔
(फ़ा) یوسف کجاو دسترس پیرزن کجا۔ (अ) مافي بیتک دقیق — فاین تبتاع الرقیق۔

आप मिले सो दूध माँगे मिले सो पानी वह रक्त जामें खैंचा तानी।

(सं) पानीयं वा निरायासं स्वाद्वन्नं वा भयोत्तरम्। विचार्य्य खलु पश्यामि तत्सुखं यत्र निर्वृतिः॥ (अं) Priceless is the gift unbegged.
(उ) بے طلب دیں تو مزہ اسمیں سوا ملتا ہے *
جس گدا کو کہ انہو خوے سوال اچھا ہے * (फ़ा) درحضرت کریم تقاضاچہ حاجت است

आपा तजे तो हर को भजे।

(सं) अहंत्यागी हरिं लभेत् (अं) "Give thine all away and come unto me." Crosses are ladders that lead to heaven.
(उ) خود فنا ہو کے ذات میں ملنا * یہ تماشا حباب میں دیکھا۔
(फ़ा) بے فنائے خود بسر نیست دیدار شما۔

आभ चमके बीजली गधे मरोडे कान।

(सं) रासभश्चरति क्षेत्रं तन्तुवायस्तु ताड्यते
(अं) The fool is subject to fancied terrors.
(उ) تیلي کا تیل جلے مشعلچي کا دل جلے۔ (फ़ा) مدعي سست گواہ چست۔
(अ) الشاهد حاضر یسعی و صاحب الحق غائب یغفی۔

आम टूट मस्तक पर पड़े, याको जतन कहा कोउ करे।

(सं) प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः
(अं) No warding off unknown dangers.
(उ) کر تو ڈر اور نکر تو خدا کے غضب سے ڈر۔ (फ़ा) طوفان شیطان الله نگہبان۔
(अ) اعوذ بالله من شر ما صنعت و من شر ما لم اصنع۔

आम फले नीचो नमे एरँड (एरण्ड) ऊँचो जाय ।

(सं) आम्रा नमन्ति फलिन एरण्डा उच्छ्रयन्त्याधिकम् (अं) Towers are measured by their shadows. The talented are humble, fools vain (उ) بھاري ھي ڈاله جهكتا هے– (फ़ा) نهد شاخ پر ميوه سر بر زمين–

आम बोओ आम खाओ, इमली बोओ इमली खाओ ।

(सं) अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् (अं) As you sow, so shall you reap. (उ) جيسا بووگے ويسا كاٹوگے–جيسا تخم ويسا ثمر–

(फ़ा) گندم از گندم برويد جو ز جو (अ) كما تدين تدان–

आया है सो जायगा का राजा का रंक ।

(सं) मृत्युर्जन्मवतां वीर ! देहिनां सह जायते (अं) Man is mortal.

(उ) ايک دن سبكو مرنا هے–موت كسيكی رعايت نهيں كرتي–

(फ़ा) گرتا قيامت زندهٔ آخر فنا آخر فنا– (अ) الموت حق–

आये वीर भागे पीर ।

(सं) तारा नैव प्रकाशन्ते भानौ भातीह भास्वरे

(अं) Stars are not seen by sunshine.

(उ) كالے كے آگے چراغ نهيں جلتا– (फ़ा) چراغ راپيش آفتاب فروغ نباشد–

आरती वक्त सोवै बालभोग वक्त जागे ।

(सं) नीराजनायां स्वपिति जागर्त्यहो द्रुतं मोदकभक्षणे पुमान्

(अं) Sleeping at devotions, waking to share offerings.

(उ) كهانيكو اونت كمانے كو مجنون– (फ़ा) ووستايان گهلان–

आलसी सदा रोगी ।

(सं) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः (अं) The idle are inclined to mischief. An idle brain is the devil's worship.

(उ) بيكار مباش كچھه كيا كر– (फ़ा) مرد بيكار شود دزديا شود بيمار–

आव पड़ोसन लड़ैं ।

(सं) कलहङ्कुरुते निरुद्यमः (अं) A bad workman quarrels with his tools. The irritable ever pick quarrels.

(उ) آ بلا گلے پڑ—مصيبت مول لي– (फ़ा) سرود بمستان يادداها نيه ن–

आव बैल मुझे मार ।

(सं) विपत्तिं स्वयमीहते (अं) Do not whip the old sores.

(उ) سوتي بهڑ جگانا اچها نهيں– (फ़ा) فتنه خفته رامكن بيدار *

आशा जिये निराशा मरे।

(सं) आशा जीवनहेतुः स्यान्निराशा मृत्युकारणम् (अं) Hope is the anchor of the soul. Hope is life, despair death.

(उ) اميد بڑي چيز هے- (फ़ा) دنیا باميد قايم است-

आश पराई जो तके जीवतही मर जाय।

(सं) रोगी चिरप्रवासी परान्नभोजी परावसथशायी। यज्जीवति तन्मरणं यन्मरणं सोऽस्य विश्रामः (अं) Trust your own right arm.

(उ) انتظار بڑا آزار هے- (फ़ा) انتظاربد تراز مرگ ست-

(अ) الانتظار اشد من الموت

आहारे व्यवहारे लज्जा न कारे।

(सं) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् (अं) Business is business.

(उ) شروع مين شرم کيا-

(फ़ा) از خدا شرم دار و شرم مدار-

आँखों के अन्धे नाम नयनसुख।

(सं) अन्धकारमयः सूर्यः (अं) Bishop in name, thief in deed.

(उ) (۱) نام کروڑي مل پاس ٹکه نهين-- (۲) آنکهه کے اندهے نام نينسکهه

(फ़ा) برعکس نهند نام زنگي کافور-

आस्मान का थूका मुँह पर आता है।

(सं) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (अं) To spit at the moon.

(उ) (۱) بڑون کي عيب جوئي کرنا خود ذليل بننا هے— (۲) آفتاب پر تهوکو تو اپنے هي منهه پر پڑتا هے (फ़ा) عيب جوئي عاقلان دليل جهالت است-

आँधरी घोड़ी फोफले चना।

(सं) सुलभं मूर्खवञ्चनम् (अं) Cheap and nasty.

(उ) بيوقوف کے لئے سبهي کرشمه هے-

(फ़ा) پيش جاهل کرشمهٔ بس است-

आगे दौड़ पीछे चौड़।

(सं) गुरोरधीतं गुरवे समर्पितम् (अं) More haste, less speed.

(उ) جو دوڑ کر چلتا هے وه ٹهوکر کهاتا هے (۲) عجلت کا کام شيطان کا هوتا هے-

(फ़ा) (۱) که تعجيل کارشيا طين بود* (۲) مطالعهٔ زودبازي در حافظه نماند

आदमी का आदमी ही शैतान।

(सं) जीवो जीवस्य भक्षकः (अं) Man is the worst enemy of man.

(उ) انسان کا سب سے بڑا دشمن انسان هي هے

(फ़ा) آدمي را آدمي دشمن بود-

आती बहू जनमता पूत सब को अच्छा लगता है ।

(सं) वध्वा आगमनं तद्वत्पुत्रोत्पत्तिमहोत्सवः । सर्वेभ्यो रोचते ह्येषा लोक-रीतिः सनातनी (अं) Expectancy lends enchantment to what is coming. (उ) جو مزہ انتظار میں دیکھا * وہ نہیں وصل یار میں دیکھا *
(फ़ा) (۱) انتظار مزہ دار (۲) مستقبل خوشگوار باشد–

आम के आम, गुठलियों के दाम ।

(सं) एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा (अं) Eat the fruit and sell the seed. (उ) آم کے آم گٹھلی کے دام–
(फ़ा) چہ خوش بود کہ بر آید بیک کر شمہ دوکار *

आम खाने कि पेड़ गिनने ।

(सं) प्रकृतमनुसरामः किं वृथा पल्लवितेन (अं) Gather in the harvest, why count the stalks? (उ) مطلب پھل کھانے سے ہے نہ کہ پیڑ گننے سے–
(फ़ा) مطلب از ثمار است نہ از شمار اشجار–

आती लक्ष्मी को लात मारना ठीक नहीं ।

(सं) क्व वा निधिर्निर्धनमेति किश्च तं स वाक्कपाटं घटयन्निरस्यति
(अं) Take the tide at the flood. Take time by the forelock.
(उ) آنیوالی دولت کا دروازہ مت بند کرو– (फ़ा) بر دولت آیندہ درمبند–

आप करे सो काम पल्ले हो सो दाम ।

(सं) पुस्तकेषु च या विद्या परहस्ते गतं धनम् । प्राप्ते परीक्षासमये न सा विद्या न तद्धनम् (अं) Expected money is of no worth until obtained– (उ) کتاب کا علم اور دوسرے کے ھاتھہ کا پیسہ وقت پر کام نہیں دیتے–
(फ़ा) کار خود زدست خود—سیم خود بہ‌یانی خود بہتر باشد–

आठ कनौजिया नौ चूल्हे ।

(सं) कान्यकुब्जा द्विजाः सर्वे चुल्लीपाकविभेदकाः
(अं) Sectarianism run riot. (उ) آٹھہ قنوجیوں میں نو چولہے–
(फ़ा) فرقہ بندی علامت بیرا گندگی ست–

आओ बे पत्थर पड़ मेरे पाँव ।

(सं) शलभतां भजतेऽर्चिषि मूढधीः (अं) To court trouble.
(उ) (۱) آبلا گلے پڑ (۲) آبیل مجھے مار– (फ़ा) مصیبت را مدعونباید کرد–

आदमी में नउवा जानवरों में कउवा ।

(सं) नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः (अं) (Lit.) The barber is the cleverest amongst men, and the crow amongst animals. (उ) آدمیوں میں حجام اور چڑیوں میں کوا مکار ہوتے ہیں–
(फ़ा) در مردمان حجام و در مرغان زاغ بسیار مکار میباشد–

आदमी जानिये बसे सोना जानिये कसे।

(सं) सहवासी विजानीयाच्चरित्रं सहवासिनः। हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा (अं) Trial tests worth.

(उ) سونا کسنے اور آدمی کام پڑنے پر پہچانا جاتا ہے۔

(फ़ा) خبث نفس بے امتحان معلوم نشود۔

आग खाय तो अंगारा उगले।

(सं) कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते (अं) Sow the wind and reap the whirlwind.

(उ) جیسی کرنی ویسی بھرنی۔

(फ़ा) کردنی خویش آمدنی پیش۔

आप बीती कि जग बीती।

(सं) स्वतः प्रमाणं परतः प्रमेयम् (अं) Self-experience is the best proof. (उ) اپنا قصہ جہان کا قصہ ہے۔ (फ़ा) قصہ خود قصہ جہان۔

आप लिखे खुदा पढ़े।

(सं) स्वयमपि लिखितं स्वयं न वाचयति (अं) Illegible scrawl.

(उ) خود لکھے خدا پڑھے (फ़ा) تحریر عیسیٰ برائے خوا دن خداست۔

आग लगी तब कुआँ खुदा।

(सं) प्रोद्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः

(अं) To shut the stable-door after the horse has fled.

(उ) آگ لگنے پر کنواں کھودنا۔ (फ़ा) چاہ کندن بعد از آتش زدگی۔

आमों की कमाई निबुओं में गमाई।

(सं) एकत्रार्जितमपि वस्तु हारितमन्यत्र लोभेन (अं) Won by the right hand, lost by the left. Lightly got, lightly spent.

(उ) حرام کا مال حرام میں خرچ ہوتا ہے۔ (फ़ा) مال حرام بود بجاے حرام رفت۔

आँख का अन्धा गांठ का पूरा।

(सं) लोकव्यवहृतिविमतिः कुटिलजनैर्वञ्च्यते धनिकः (अं) Empty of brains but plenty in pelf.

(उ) آنکھ کا اندھا گانٹھ کا پورا۔ (फ़ा) توانگر بیدماغ افضل از زاغ۔

आँख बची माल दोस्तों का।

(सं) असावधाना विपदां सखायः (अं) What is lost to sight is lost to hand.

(उ) نظر چھپی اور مال دوستوں کا۔

(फ़ा) مال بچشم زدن ھضم کردن۔

आँखें हुईं चार तो दिल में आया प्यार, आँखें हुईं ओट तो दिल में हुआ खोट।

(सं) परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् । वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् (अं) Love at first sight. Out of sight, out of mind. (उ) نگاهیں چار هوتی هیں مروت آهی جاتی هے-

(फ़ा) دیده سے دور تو دل سے دور چار چشمی مروت می آرد از دیده دور از دل دور-

आँख कान में चार अंगुल का फ़रक़ है।

(सं) कर्णौ च तृप्तौ न तु चक्षुषी मे (अं) There is great difference between hearing and seeing. (उ) سنا اور دیکھا برابر نہیں-

آنکھ اور کان میں چار انگل کا فرق هے-(फ़ा) شنیده کے بود مانند دیده-

आस्मान से गिरा खजूर में अटका।

(सं) प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः

(अं) Swallowing a camel, straining at a gnat.

(उ) آسمان سے گرا تو کھجور پر اٹکا- (फ़ा) از آسمان رست بر شجر به نشست-

आधे माघे कँबली कान्धे।

(सं) रोगे व्यपगते मित्र ! भिषजः किं प्रयोजनम्

(अं) 'Of what use a gun' when the fight is done ?

आदर न भाव झूठे माल खाव।

(सं) प्रदत्तमपमानेन भोजनं विषसन्निभम् (अं) Swift to promise, slow to fulfil.

(उ) بے محبت کی دعوت عداوت سے بدتر هے-(फ़ा) دعوت بے حب بدتر از عداوت باشد-

आधा तजे पण्डित सरबस तजे गँवार।

(सं) अर्द्धं जहति विद्वांसः सर्वं मुञ्चन्ति बालिशाः

(अं) Better to lose half than lose all.

(उ) کل گنوانے سے آدھا چھوڑنا بہتر هے-(फ़ा) نصف دادن بہتر از همه گذاشتن-

आधा तीतर आधा बटेर।

(सं) अर्द्धेन तित्तिरो भाति अर्धेनास्ति च वर्तकः (अं) Neither fish nor flesh, nor good red herring. (उ) آدھا تیتر آدھا بٹیر-

(फ़ा) گونا گون بو قلمون-

आधे गाँव दिवाली आधे गाँव फाग।

(सं) अर्द्धदुःखसुखमभ्यनयस्त्वं साश्रुभानुविहसद्विधुनेत्रः।

(अं) Half the face smiling, half in tears. Part in sunshine and part in shade.

इ

इन नयनन का यही विशेष वह भी देखा यह भी देख।

(सं) दुःखमापतितं सेव्यं सुखमापतितं तथा। चक्रवत् परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च (अं) It is a world of change, of sunshine and rain. (उ) کبھي کي دن بڑے اور کبھي کي راتيں بڑي
(फ़ा) دنيا بيک قرار نيست (अ) وتلک الايام نداولها بين الناس

इन तिलों में तेल नहीं।

(सं) तिलपिञ्जा इमे कस्मादेतेषु तैलसम्भवः (अं) Sucked orange. Life without Love. (उ) پتھر نچوڑنے سے عرق نہيں نکلتا
(फ़ा) عرق از سنگ بر نيايد

इस हाथ दे उस हाथ ले।

(सं) अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते (अं) Lit.—Given with one hand and taken by the other.
(उ) کيا خوب سودا نقد ہے اس هاتهہ دے اوس هاتهہ لے (फ़ा) کن بدستے دگري گير بدستے دگري

इक लख पूत सवा लख नाती ता रावण घर दिया न बाती।

(सं) दुर्गं त्रिकूटं परिखा समुद्रो रक्षांसि योधा धनदश्च बन्धुः। सञ्जीविनी यस्य मुखाग्रविद्या स रावणः कालवशाद्विनष्टः (अं) It is all a vanity of vanities. Pride goeth before destruction. (उ) غرور کا سر نیچا
(फ़ा) هر فرعونے را ياثمالي است

इधर न उधर यह बला किधर।

(सं) कौतस्त्येयं विपन्मित्र! न जाने किं करिष्यति (अं) Lit.—Bewildered by terror. Vagueness lends terror.
(उ) اِدھر نہ اُدھر يہ بلا کدھر (फ़ा) نہ چپ نہ راست اين بلا از کجاست

इल्लत जाय धोय धाय आदत कभी न जाय।

(सं) स्वभावो दुरतिक्रमः (अं) Habit is second nature.
(उ) عيب جائے عادت نہ جائے (फ़ा) خصلت خلقت دويمي ست

इल्म का परखना और लोहे के चने चबाना बराबर है।

(सं) अशक्यैव गुणज्ञता (अं) There is no plummet for sounding the depth of learning. (उ) علم کا پرکھنا اور لوہے کے چنے چابنا برابر ہے
(फ़ा) قدر گوهر شاه داند يا بداند جوهري

ई

ईश्वर की गति ईश्वर जाने।

(सं) अहिरेव विजानाति पादक्रममहेः स्वयम् (अं) Inscrutable are the ways of providence. (उ) غیب کی خبر خدا جانے
(फ़ा) کارهائی خدا خداداند

ईर्ष्या द्वेष कभी ना कीजे आयू घटे और तन छीजे।

(सं) ईर्ष्याद्वेषौ न कर्त्तव्यौ शरीरायुर्विनाशकौ (अं) No fever consumeth as envy and hate. (उ) حسد بری بلا ہے
(फ़ा) حسد باهل حسد کار میکند صائب * چنانکہ آتش سوزندہ میخورد خود را
(अ) الحسد یاکل الحسنات کمایاکل النار الحطب

ईंट का घर मिट्टी कर दिया।

(सं) कृतं सर्वं विनाशितम् (अं) Lit.—Reduced a brick building into dust. (उ) سب گو گوبر کر دیا
(फ़ा) خرمن را آتش زد

ईद के चांद हो गये।

(सं) द्वितीयाचन्द्रवन्मित्र ! दुर्लभं दर्शनं तव। (अं) Made himself scarce. (उ) عید کے چاند هو گئے (फ़ा) هلال عید

उ

उज्ज्वलता मन उज्ज्वल राखैं वेद पुराण सकल अस भाखैं।

(सं) शुचि भूषयते वपुर्मनः इति वेदादिपुराणसम्मतम्
(अं) Cleanliness is next to godliness.
(उ) صفائی اچھی چیز ہے (फ़ा) بدن و جامہ خویشتن پاک دار

उठि प्रभात सुमिरिये श्रीगणेश देवा।

(सं) ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय चिन्तयेत्परमेश्वरम् (अं) Early to bed and early to rise makes man healthy, wealthy and wise.
(उ) فجر کا اوٹھنا بہت مفید ہے (फ़ा) سحر خیزی نشان فیروزی

उठ मुंवा भतीजी आई।

(सं) निद्रां जहीहि भो मूढ भ्रातृजेयं समागता (अं) Lit—Awake

O fool ! niece is come. Note.—This is a proverb showing incongruousness. (उ) کالے کے آگے چراغ نہیں جلتا

(फ़ा) جائیکہ شاہین چنگ زند آید پاے کبک دررقص نخیزد

उठि पैंठ आठवें दिन।

(सं) प्रतीक्षते जातु न काल आर्त्तम् (अं) Time and tide tarry for no man. (उ) گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں

(फ़ा) وقت راغنیمت دان (अ) الوقت یمرہ مرا اسحاب

उतर गई मोह (लाज) की लोई तो क्या करेगा कोई।

(सं) एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत् (अं) Lit.—Nothing can shame the shameless.

(उ) اپنی اُتار بغل میں رکھی پھر دوسریکی اُتارتے کیا شرم

(फ़ा) یکے کردہ بے آبروی بسے-چہ غمدارد از آبروی کسے

उतरा घांटी हुआ मांटी।

(सं) नाशो हि पतनाद्भवम् (अं) Slipping down is falling down.

(उ) سب زبان کا ذایقہ

(फ़ा) چون از گلو فرورفت چہ حلوا چہ زہر

उतावला सो बावला।

(सं) सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् (अं) Do in haste repent at leisure. More haste less speed.

(उ) کاتے کاتے کلاونت ہوتا ہے (फ़ा) شاگرد رفتہ رفتہ باوستاد میرسد

उद्यम के शिर लक्ष्मी पंखा कीसी ब्यार।

(सं) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः (अं) Where there is a will there is a way. Energy brings prosperity.

(उ) ہاتھہ پیر تو ہلا دینے والا خدا ہے (फ़ा) از تو حرکت از ما برکت

उद्यम से दारिद्र घटे।

(सं) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्य्याणि न मनोरथैः (अं) Where energy comes poverty disappears. (उ) مار مار تو کے جافتح‌دان آہی ہے

(फ़ा) کارکن پس تکیہ بہ جبار کن

उधार देना बैर बिसाहना।

(सं) ऋणदानं शत्रुताक्रयः (अं) To lend to a friend is to lose a friend.

(उ) ملاحي كي ملاحپ گئي بانس كے بانس كهائے

(फ़ा) زرداں و دردسر خریدن (अ) القرض مقراض المحبت

उन धारी है देह वृथा जग में, जिन नेह के पन्थ में पांव न दीन्ह्यो।

(सं) तेषां वृथा जन्म गतं जगत्यां प्रेम्णो न पन्था अवलोकिता यैः

(अं) God is love. Lit.—Vain is the life which has not trodden the path of love. (उ) جسكو نهوئے عشق وه انسان هي نهيں

(फ़ा) اگرچه عشق مردم خواراست و لے مردم بے عشق خواراست

(अ) المجاز قنطرة الحقيقة

उलटा चोर कोतवाल को डांड़े।

(सं) गृहे परिधृतश्चौरः प्रत्युताधिपतिं क्षिपेत् (अं) Lo! the thief cries shame on the thief-catcher. (उ) چوري و سيفه زوري

(फ़ा) چه دلاوراست دزدیکه بکف چراغ دارد

उंगली पकड़कर पहुंचा पकड़ना।

(सं) सूचीप्रवेशे मुसलप्रवेशः (अं) Give an inch and will take an ell. Entree of the nose followed by the whole body of the camel.

(उ) اُنگلی پکڑتے پهونچا پکڑا

(फ़ा) دعوي بكاه و قبضه بكوه

उधार का खाना फूस का तापना।

(सं) अभ्रच्छाया खलप्रीतिर्नवसस्यमृणानि च। किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च (अं) Better do without than run into debt.

(उ) اودهار كا كهانا اور بهوس تاپنا برابر هے

(फ़ा) آتش كاه بدير نپايد

उत्तम खेती मध्यम बंज निकृष्ट चाकरी भीख निदान।

(सं) लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये तदर्द्धं कृषिकर्म्मणि तदर्द्धं। राजसेवायां भिक्षायां नैव नैव च (अं) Lit.—The best occupation is agriculture, medium trade, next service and the last and worst mendicancy.

(उ) زراعت تجارت سے اور تجارت ملازمت سے بهتر هے

(फ़ा) تجارت به از زراعت و زراعت به از ملازمت

उघरे अन्त न होय निबाहू कालनेमि जिमि रावण राहू।

(सं) कपटं न निगुह्यते (अं) The thief has his day till caught. (उ) مکر تھوڑي هي دير كام ديتا هے (फ़ा) مکر تا دير پوشيده نماند

उखली में सिर दिया तो मुसलों का क्या डर ?

(सं) मनस्वी कार्य्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् (अं) Why fear wetting when in for a swim (उ) اوکھلی مين سر ديا تو موسلون كا كيا ڈر (फ़ा) هرچه باداباد ماكشتي در آب اندا ختيم

उधार दीजे दुश्मन कीजे।

(सं) यदि चेद्विपुला प्रीतिस्त्रीण्येतानि न कारयेत्। वाग्वादो ह्यर्थसम्बन्धः पश्चाद्दाराभिभाषणम् (अं) Lit.—Indiscrimenate giving on credit ruins custom. (उ) دين لين كا آغاز دوستي كا خاتمه هے (फ़ा) القرض مقراض المحبت

उधार दिया ग्राहक खोया।

(सं) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्। (अं) Do. (उ) اودهار ديا گاهک كهويا (फ़ा) القرض مقراض المحبت

उगले तो अन्धा खाय तो कोढ़ी।

(सं) विघ्नस्योभयथोदयः (अं) On the horns of a dilemma. (उ) ادهر گرے تو كنوان أدهر گرے تو كهايئں (फ़ा) نه اين نه آن جان درهيجان

ऊ

ऊंघते को ठेलते का बहाना।

(सं) कृतापराधः परानाक्षिपति (अं) Lit.—Excuses come readily to the lips of the lazy. (उ) نه كرنے كے سو بهانے (फ़ा) دل بيزار بهانه بسيار (अ) المعوج يعوج السوے-

ऊंची दूकान फीका पकवान।

(सं) अन्तःसारविहीनस्य बहिराडम्बरं बहु (अं) Great cry and little wool. Sounding brass. (उ) دور كے ڈهول سهاونے (फ़ा) نامش كلان ودهش ويران (अ) اسمع جعجعت ولاري طحنا

ऊधो जी ! रैन को सुपनो भयो।

(सं) सखि ! मे स्वप्नवज्ञातः प्राणेशस्य समागमः। (अं) Lit.—

O Udho ! it has become a night's dream. (उ) انسان بڑا غافل ہے
(फ़ा) درکوی کی پستی ودرجوانی مستی

ऊधो वो ए द्वार का जाने।

(सं) किं किरातो विजानीयान्मौक्तिकस्य महर्घताम् (अं) Lit—O Udho ! what can he know about this gate.

(उ) یہ دانؤں پیچ کی باتیں اوس سے کرو جو تمکو نہیں جانتا ہو (फ़ा) ہرکس بخیال خویش خبطے دارد (अ) انااعرف باسرارک

ऊधो बन आये की बात।

(सं) समय एव करोति बलाबलम् (अं) Nothing succeeds like success. (उ) جو کام ہوا ہم سے وہ رستم سے نہوگا
(फ़ा) گاہ باشد کہ کود کے نادان * بہ غلط برھدف زند تیرے (अ) الکذب قدیقدق

ऊषर खेत में केसर।

(सं) शिलायां कमलोद्भवः (अं) Hair does not grow on the palm. (उ) ھتھیلی میں بال نہیں اگتے (फ़ा) از بیضہ خالی جوزہ نزاید
(अ) ینبت الشعر علے الکف

ऊँट के मुँह में जीरा।

(सं) समुद्रे पृषतः पातो रवये दीपदर्शनम् (अं) A drop in the ocean. (उ) اونت کے منھہ میں زیرہ—ھاتھی کے منہہ میں الایچی دانہ
(फ़ा) قطرہ در دریا ، جودی ندارد

ऊधो का लेना न माधो का देना।

(सं) उदासीनो हि पुरुषो निश्चलं सुखमश्नुते (अं) Lit.—So indifferent as to be interested in nothing.

(उ) کسی کا دینا نہ کسی کا لینا (फ़ा) نہ مقروض محمود نہ بخشندۂ احمد

ऊंट की चोरी निहुरे निहुरे।

(सं) आमादः पिहितस्यापि लशुनस्य विसर्पति (अं) Lit.—Going to lift a camel, but crouching to escape observation.

(उ) اونت کی چوری نہیں چھپتی (फ़ा) رازاهم پوشیدہ نماند

ऊंट के गले में बिल्ली।

(सं) गजमपि त्रसयन्ति पिपीलिकाः (अं) Lit.—Cat at the throat of a camel. (उ) اونت کے گلے میں بلی (फ़ा) گربہ بگردن شتر

ऊजड़ खेड़ा नाम निवेड़ा।

(सं) अक्षरशत्रुर्नाम्ना विद्याधरः (अं) Cripple christened Armstrong. (उ) پڑھے لکھے خاک نہیں نام محمد فاضل
آنکھوں کے اندھے نام نین سکھ (फ़ा) برعکس نہند نام زنگی کافور

ऊंट बहे गदहा थाह ले।

(सं) गजा यत्र विलीयन्ते गर्दभानां कथैव का (अं) Fools rush in where angel's fear to tread. (उ) اونٹ ڈوبے گدھا تھاہ لینے جاے
(फ़ा) شتر غرقاب وے خر پایاب

ए

एक आवत एक जात हैं या घर यही रीति।

(सं) जातस्य हि ध्रुवं मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। (अं) Old order changeth giving place to new. (उ) تو چل میں آیا
(फ़ा) یکے آمد—یکے رفت—ابدا سلیمان کجا تخت

एक और एक ग्यारह।

(सं) सङ्घशक्तिः कलौ युगे (अं) Union is strength.
(उ) اتفاق بڑی چیز ہے (फ़ा) آرے با تفاق جہان میتوان گرفت
(अ) یدالله فوق الجماعت

एक कहो न दस सुनो।

(सं) परोद्वेगकरं वाक्यं नोच्येत हितकांक्षिभिः (अं) Least said soonest mended. Silence is golden. (उ) ہے یہ گنبد کی صدا
جیسی کہے ویسی سنے (फ़ा) سخن بد آواز گنبد است (अ) کماتقول تقال

एक को पानी एक को कींच।

(सं) विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया (अं) What is food to one is poison to another.
(उ) ذرا سی مانی اسمیں بھی آنا کانی (फ़ा) دریک دیگ دوشکم نباشد

एक खजेली कुतिया सौ कुत्तों को खजेला करे।

(सं) एकेनैव स्फुलिङ्गेन दह्यते सकलं वनम् (अं) A diseased sheep infects the whole flock. One bad woman can be the undoing of a host of men. (उ) ایک گندی مچھلی سارے تالاب
کو گندہ کر دیتی ہے (फ़ा) افسردہ دل افسردہ کندا نجمنےرا
(अ) راے علیل علیل میباشد

एक खाय मलीदा एक खाय भूंस।

(सं) भाग्यं फलति सर्वत्र (अं) Inequalities of fortune.

(उ) اپنی اپنی قسمت (फ़ा) هنر بکار نه آید چو بخت بد باشد

(अ) الفضل لاینفع اشقي

एक तो मियां बावले दूजे खाई भंग।

(सं) मर्कटस्य सुरापानं तत्र वृश्चिकदंशनम् (अं) A mad man drunk.

(उ) ایک کریلے کی بیل دوسرے نیب چڑھی

(फ़ा) تاریکي شب واشارۂ ابرو (अ) ظلمات مدت بماه

एक थैली के बट्टे।

(सं) हर्म्येष्टकानि सर्वाणि समानानि भवन्त्यहो (अं) Chip of the old block.

(उ) ایک توے کی روٹي کیا چھوٹی کیا موٹي

(फ़ा) سگ زرد برادر شغال (अ) السامع للغيبت احد لمغتابين

एक दिन पाहुना दूसरे दिन अनभावना।

(सं) दिवसादेकात्परं परस्य गेहे भवति निवासान्निरादरोऽतिथीनाम्

(अं) A chronic guest overstays his welcome.

(उ) مان نه مان میں تیرا مہمان (फ़ा) مہمان عزیز است مگرتا سه روز

(अ) لا ضیافت الا بالاذن

एक नयन अमृत झरे एक नयन में विष बसे।

(सं) विषकुम्भं पयोमुखम् (अं) Breathing hot and cold from the same mouth.

(उ) ایسی نه رهنا چاهئے طبع حلیم سے * غصه اگر هوا تو منایا نه جائیگا

(फ़ा) همه ترسند از اغیار ومن از یار میترسم (अ) ایاک و غضب الحلیم

एक पड़े लोटते हैं दूसरे चोखी मांगते हैं।

(सं) व्यसनोन्मत्तो व्यसनी जन्मान्ध इव परदुःखमपश्यन् कष्टं व्यसनस्य याचते भूरि (अं) Lit.—One drunkard rolls on the ground another calls for more drinks.

(उ) چلو میں الو

(फ़ा) شراب خوار همیشه خوار مے خوار مدام خوار باشد

(अ) لایجتمع الخمر و العقل فی جوف امرء ابداً ابداً

एक पापी नाव को डुबाता है।

(सं) एकेनैव कुपुत्रेण नाश्यते कुलमुत्तमम् (अं) Lit.—One sinful

passenger is sufficient to bring disaster on a whole boat-load of fellow-travellers. Beware of evil company.

(उ) کرے موچھوں والا پکڑا جاے داڑھی والا (फ़ा) بلاے طویله بسر میمون
(अ) العبد یسرق والمولی یضمن

एक बेल के तूंबड़े।

(सं) समानानि फलान्येकवृक्षजान्यखिलान्यहो (अं) Birds of the same feather.
(उ) ایک ترکش کے تیر
(फ़ा) سگ زرد برادر شغال (अ) السامع غیبت احد المغتابین

एक मरता सौ पर भारी।

(सं) प्राणैः पणतो वद किं न कुर्य्युः। (अं) Lit —One man is more than a match for a hundred if bent on fighting till death.
(उ) مرتا کیا نکرتا (फ़ा) وقت ضرورت چو نماند گریز – دست بگیرد سر شمشیر تیز

एक माला के मनके।

(सं) समाना एव वर्त्तन्ते सूत्रे मणिगणाः स्रजः। (अं) A bead of the same rosary.
(उ) ایک چنے کی دو دال
(फ़ा) سگ زرد برادر شغال (अ) السامع الغیبت احد مغتابین

एक म्यान में दो खड़ग दीठा सुना न कान।

(सं) मृगेन्द्रद्वयमेकस्मिन् वने दृष्टं श्रुतं न च (अं) Two kings can't rule one kingdom.
(उ) ایک میان میں دو تلوار نہیں سما سکتی
(फ़ा) دریک نهام دو شمشیر نگنجد

एक रोता सौ को रुलावै।

(सं) दुःखार्त्तः सूयते भूरि दुःखमेव समन्ततः (अं) A gloomy man sheds gloom on the whole company.
(उ) ایک کرے اور سب بدنام – ایک گندی مچھلی سب تالاب کو گندہ کرتی ہے (फ़ा) راے علیل علیل میباشد

एक हंसता भला न एक रोता भला।

(सं) जगति हर्षविषादविकाशनं सहचरेण विना न विभाव्यते
(अं) Laughing by oneself and weeping by oneself are both

unnatural. (उ) اکیلا چنا کیا بھاڑ پھوڑ سکتا ہے (फ़ा) از یک تن چہ آید
(अ) از یک گل بہار نیاید

एक हाथ से ताली नहीं बजती।

(सं) न तालिकैकैककरेण ताड्यते (अं) No clapping with one hand. (उ) تو مجھکو میں تجھکو (फ़ा) از یک دست صدا برنیاید

एते पांव पसारिये जेती लांबी सौर।

(सं) चेष्टितं सकलैः सर्व्वं स्वानुरूपं प्रशस्यते (अं) Cut your coat according to your cloth. (उ) چادر دیکھکر پانون پھیلاو
(फ़ा) طاقت دیدہ پادراز باید کرد

एरे ताड़वृक्ष एतो बढ़ के कहा कियो।

(सं) किन्तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यत्र स्थिताश्च तरवस्तरवस्त एव। मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण जम्बीरनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः (अं) Lit.— O Palm tree! what good thy growing so tall. (उ) بے فیض اگر یوسف ثانی ہے تو کیا ہے
(फ़ा) در ختے کہ ازو بھی نرسد بہ بے آبی خشک شود

एकनारी सदा ब्रह्मचारी।

(सं) स पुमान् ब्रह्मचार्य्यैव एकनारीव्रतो हि यः (अं) Lit.— A man who is true to one woman may be called a brahmachari (*i. e.* one under the vow of chastity).

(उ) ایک ناری برھمچاری (फ़ा) قناعت بونے بہتر از خرمنے

एक मछुली तमाम पानी को गदला कर देती है।

(सं) एकेन शुष्कवृक्षेण दग्धं हि सकलं वनम् (अं) Lit.—One fish dirties the whole pond. (उ) ایک مچھلي تمام تالاب گندہ کر دیتي ہے
(फ़ा) چو از قومے یکے بیدانشي کرد — نہ کہ را منزلت ماندنہ مہ را

एक पंथ दो काज।

(सं) एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा (अं) Killing two birds with one stone. (उ) ایک پنتھ دو کاج
(फ़ा) چہ خوش بود کہ برآید بیک کرشمہ دوکار

एक तवे की रोटी क्या मोटी क्या छोटी।

(सं) क्षुद्रं वाऽथ विशालं वा पावनं तुलसीदलम् (अं) Coin of the

same mintage. (उ) ایک ٹکسال کے ڈھلے ھین

(फ़ा) بیضۂ مرغ همه برابر

एक अनार सौ बिमार।

(सं) एकिकैव सगुणा दमयन्ती सर्व्वे एव विबुधाः कमितारः

(अं) One vacancy and innumerable candidates.

(उ) ایک انار سو بیمار (फ़ा) یک انار صد بیمار

एक से दो भले।

(सं) अपेक्ष्यैकस्य द्विकौ वरिष्ठौ (अं) Two heads better than one head (in making a decision). (उ) سایہ کا ساتھہ بھی غنیمت ھے

(फ़ा) سایه هم یاري مي کند

एकान्तवासा झगड़ा न झांसा।

(सं) एकान्ते सुखमास्यतान्तु कुटिलैर्वादः परित्यज्यताम् (अं) Remote from cities livid a swain, Unvexed with any cares of gain.

(उ) هیچ آفت نه رسد گوشهٔ تنهای را

(फ़ा) وحده لاشریک پاک از شرک ریک

एक दम हज़ार उम्मैद।

(सं) अल्पशक्तेस्तु जीवस्य खल्वसंख्या मनोरथाः (अं) All hopes hanging by a single thread. (उ) ایک سر لاکھون بلائین

(फ़ा) ایک دم هزار امید

एक दर बंद हज़ार दर खुले।

(सं) गुप्तं प्रयत्नादपि निन्द्यकर्म्म प्रकाशमायाति यथेक्षुदण्डः

(अं) Lit.— If one door is shut thousand are open.

(उ) ایک در بند تو هزار در کھلے (फ़ा) یک در بند هزار دروا

ऐ

ऐसी करनी ना करे जो करके पछताय।

(सं) अपरीक्ष्य न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं सुपरीक्षितम् (अं) Look before you leap. Do in haste repent at leisure. (उ) کنوان اور کھای دیکھکر چلو

(फ़ा) چرا کاری کند عاقل که باز آید پشیماني

ऐसो को प्रकट्यो जगमाहीं प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं।

(सं) धनमदो मदयन्ति न कं नरम् (अं) Pride and power go together. (उ) دولت و حکومت آدمی کو اندھا اور بہرا بنا دیتی ہے
(फ़ा) بقدر مال باشد سرگرانی (अ) سکر الحکومت اسکر من سکر الخمر

ओ

ओछे के घर खाना जनम जनम का ताना।

(सं) दुःखदा खलसङ्गतिः (अं) No misery like owing obligation to the mean-minded. (उ) سچ ہے اوچھے کا بھی احسان برا ہوتا ہے
(फ़ा) اصالت تاب بیحرمتی ندارد

ओझ भरे न रोग बढ़े।

(सं) यावद्भैषज्यबाहुल्यं तावद्रोगो विवर्द्धते। (अं) No overfeeding, no sickening. (उ) کم کھانے سے انسان کو نقصان نہیں ہوتا
(फ़ा) کہ کم خورو کم خورو بسیار مخور (अ) البطنة تاقن الفطنة

ओछे की प्रीत बालू की भीत।

(सं) सङ्गतानि कुबुद्धीनां तडिद्विलसितान्यपि। क्षणद्वयं न तिष्ठन्ति घनारब्धान्यपि स्वयम्। (अं) Love of the base has no base.
(उ) کم ظرف کی محبت پائدار نہیں ہوتی (फ़ा) محبت ناکسان دیوار رنگ است

ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती।

(सं) कपर्दिकाप्रदानेन भूपतिर्न प्रसीदति। (अं) Toy gun to kill Tiger! Dame Partington putting back the Atlantic Ocean with her mop and pail. (उ) شبنم سے پیاس نہیں بجھتی
(फ़ा) از قطرۂ شبنم تشنگی نرود

ओछों के ढिग बैठकर अपनी भी पत जाय।

(सं) संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति (अं) Society of the mean demeans. (उ) بروں کی صحبت سے تنہائی بہتر
(फ़ा) صحبت سگان به از صحبت ناکسان

औ

औगुन (अवगुण) चित न धरौ।

(सं) दुर्गुणा दूरतस्त्याज्याः। क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः]

श्रीमहादेव शम्भो। (अं) Save me from temptation! (Lit.)— Keep my mind off from evil. (उ) هے سہو و خطا بشر کا شیوہ
(फ़ा) هیچ نفس بشر خالی از خطا نبود

औगुन (अवगुण) ऊपर गुण करे ताको नाम सपूत।

(सं) उपकारपरो नित्यमपकारपरेऽप्यरौ। (अं) Returning good for evil. Noble revenge. (उ) گالیاں کہاتے ہیں اور بیٹھے دعا کرتے ہیں
(फ़ा) بدي را بدی سہل باشد جزا * اگر مردي احسن الی من اسا

औघट (अवघट) चले न चौपट गिरे।

(सं) दत्तावधानस्य कुतः पराजयः। (अं) Follow the straight path! (Lit.) No following a bad road, no courting a bad fall.
(उ) اسي کي آمدنی چوراسي کا خرچ (फ़ा) خرج باندازہ دخل کن

और को औषध है सजनी पै स्वभाव को औषध है न कछु।

(सं) स्वभावो मूर्द्धनि वर्त्तते। (अं) Habit is second nature.
(उ) علت جاے عادت نہ جاے (फ़ा) خوے بد در طبیعتے کہ نشست * نرود جز بوقت موگ از دست (अ) العادت لاترد الا بالموت

औलाती का पानी मँगरे पर नहीं चढ़ता।

(सं) त्वं नेत्रनीचपथेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं क्षमः। (अं) (Lit.) Water in the valleys can never climb up to hill tops. How can the low and mean appreciate what is high and noble? (उ) دریاکا پاني پہاڑپر نہیں چڑھایا جاسکتا (फ़ा) آب دریا بکوہ نمیرود

अं

अन्तकाल सुधरा तो सब सुधरा।

(सं) यं यं वाऽपि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय! सदा तद्भावभावितः। (अं) All is well that ends well.
(उ) هو بخیر انجام مدبهہ غم ناک کا (फ़ा) خاتمہ بالخیر باشد یا کریم

अन्त बुरे का बुरा।

(सं) कथाऽपि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः। (अं) He who sows thorns will never reap grapes. (उ) نتیجہ کار بد کا بد هے
(फ़ा) بدکرداري رابد انجامے (अ) وجزاء سئیت سئیت مثلها

अन्त भला सो भला।

(सं) अन्ते वरं चेत्सकलं वरिष्ठम्। (अं) Right at the last is ever right. (उ) انجام بخیر ہوالہی (फ़ा) آلہی عاقبت محمود گردان

अन्त मता सो मता।

(सं) अन्ते मतिः सा गतिः। (अं) Faith at the end alone availeth. (उ) سچ ہے انسان کسی دھیان سے جب سوتا ہے * جاگتا ہے تو وہی پیش نظر ہوتا ہے (फ़ा) چومیرد مبتلا میرد چو خیزد مبتلا خیزد

अन्त राम सो काम।

(सं) एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः। (अं) God at the last. (उ) ہرن کتنا ہی اونچا کودے آخر زمین ہی پر آکر گرے گا (फ़ा) آخر گذر پوست بدیا جان است

अन्धा तब पतियाए जब दो आँखें पाए।

(सं) विनैव चक्षुषोर्लाभं कथमन्धस्य प्रत्ययः। (अं) (Lit.)—The blind will only believe when he can see with both eyes.

(उ) خالی چکنی چپڑی باتوں سے پیٹ نہیں بھرتا (फ़ा) بگفتن آتش دہن نسوزی

अन्धों में काना राजा।

(सं) निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते। (अं) One eyed leading the blind. (उ) اندھوں میں کانا راجہ ریگستان میں ارنڈ کا سایہ غنیمت ہے (फ़ा) یک چشم مجلس دار کوران

अन्धेर नगरी अनबुझ राजा।

(सं) अबला यत्र प्रबला बालो राजा निरक्षरो मन्त्री। नहि नहि तत्र धनाशा जीवित आशाऽपि दुर्लभा भवति। (अं) Reign of Lawlessness. (Lit.)—The King an idiot and his Kingdom a chaos. (उ) اندھیر نگری چوپٹ راجہ (फ़ा) حاکم نادان در اقلیم حماقت حکمران

अन्धी पीसे कुत्ते खायँ।

(सं) धर्म्मान्धो वञ्च्यते धूर्तैर्बडिशे मत्स्यवत् सदा। (अं) (Lit.) When the blind grinds the handmill, dogs eat the flour.

(उ) اندھے کمائیں آنکھ والے کھائیں—بیوقوف دولتمند ہو تو عقل والے بھوکوں نہ مریں (फ़ा) کریم را فہم ہم باید شد

अन्धा क्या चाहे ? दो आंख ।

(सं) सर्वः स्वार्थं समीहते । (अं) Wish is father to the thought. (Lit.) The blind only yearns for her two eyes.

(उ) اندھا کیا چاھے دو آنکھیں (फ़ा) نابینا چشم میخواهد

अन्धे के हाथ बटेर ।

(सं) दैवाद्दरिद्रेण निधिर्यथाऽऽप्तः । (अं) What good is fortune to one who can't use it ? (उ) اندھے کے هاتھہ بٹیر

(फ़ा) گاه باشد که کودکے نادان * بغلط برهدف زند تیرے

अन्धा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे ।

(सं) स्वार्थं हि साधयत्यन्धो निजान्धत्वप्रकाशनात् । (अं) The blind moving in a circle. (उ) خیرات بدوستان محدود

(फ़ा) خیرات بدوستان محدود

क

कछुए का काटा कटौती से डरे ।

(सं) रज्जौ यथाहेर्भ्रमः । न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम् । (अं) A burnt child dreads the flame tint. (उ) دودھه کا جلا چھاچھه کو پھونک پھونک پیتا ھے (फ़ा) مارگزیده از ریسمان میترسد

कजिया को कालो मोहड़ो ।

(सं) युधि शरेण कृतव्रणविग्रहो न कुसुमैरपि विग्रहमिच्छति ।

(अं) You must expect blows if you go into a fight.

(उ) لڑائي میں لڈو نهیں بٹتے (फ़ा) در جنگ حلوا بخش نمی کنند

कड कपूर कपास एक मोल है ।

(सं) सर्वार्थवित् पाणिनिरेकसूत्रे श्वानं युवानं मघवानमाह ।

(अं) Chalk and cheese at an equal price.

(उ) گدھے گھوڑے سب برابر (फ़ा) آواز خرونغمه داؤدیکے است (अ) بیع الشکر والرمل بسعر واحد

कण कण जोड़े मण (मन) जुड़े ।

(सं) यथा बिन्दुप्रपातेन क्रमशः पूर्य्यते घटः । सा रीतिः सर्वविद्यानां धर्म्मस्य च धनस्य च । (अं) Little Little makes a mickle.

(उ) بوند بوند تالاب بھرتا ھے (फ़ा) قطره قطره دریا میشود

कतवारी को सुधरे बतवारी को बिगड़े।

(सं) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्य्याणि न मनोरथैः। (अं) The worker works and wins, the talker talks and talks. The critics will criticise, and writers will write. (उ) شکاري شکار کرین احمق ساتهه پهرین (फ़ा) کار بکثرت است نه بحسرت

कदकी तेलन कदका पाला।

(सं) पञ्चवर्षीयबालायाः पुत्रो द्वादशवार्षिकः। (अं) A thing of yesterday. (उ) کل کي دوکان اور کدر ساگر (फ़ा) کے آدمي کے پیر شدي

कपड़े का नाहर।

(सं) यथा चर्ममयो मृगः। (अं) A bogey. Donkey in lion's skin. A figure of straw. (उ) بچهيا کا باوا (फ़ा) کندهٔ ناتراش
(अ) ابن هبنقه

कपूर खिलाये सत नहीं चढ़ता।

(सं) द्युतिं सैंहीं किं श्वा धृतकनकमालोऽपि लभते? (अं) The King's uniform does not make a soldier of a coward.
(उ) مرد کهنے سے بهي نا مرد هوا هے کبهی وه (फ़ा) به مخنث سلاح جنگ چه سود

कभी घी घणा और कभी मुट्ठी चणा।

(सं) कचिच्छाकाहारी कचिदपि च दध्योदनरुचिः। (अं) Life is full of ups and downs. (उ) انسان کي حالت کبهي یکسان نهین رهتي
(फ़ा) بیک ساعت بیک لحظه بیک دم * دگرگون می شود احوال عالم
(अ) احوال الانسان یتغیر فی کل آوان

कमला काहू की न भई।

(सं) चञ्चला कमला सदा। (अं) Riches have wings.
(उ) یه دولت کسی پاس رهتي نهین * سدا ناؤ کاغذ کي بهتی نهین
(फ़ा) دولت دنیارا بقاے نیست (अ) المال ظل دایل

कमानी न पहिया गाड़ी जोत मोरी मैया।

(सं) प्रातराशो गृहे नास्ति ब्राह्मणानां निमन्त्रणम्। (अं) All show, no substance. (उ) پهاوڑانه کدال بڑا ڈهیت همار (फ़ा) آب ندیده موزه کشیده
(अ) نم لعمو القریته وکدجا السارقون

कमावै टोपीवाला उड़ावै धोतीवाला।

(सं) ये कुमार्गगता नित्यममितव्ययकारिणः । अर्थोपार्जकचिन्तानां वृत्तीर्नैव विदन्ति ते । (अं) (Lit.) The hat-wearer earns and the dhoti-wearer spends. *Note.*—This note refers to the days when Bengalees (dhotee-wala) held most of the fat posts under English officers (topi-wala) in British India.

(उ) کماوے خانخانہ لٹاوے میاں فہمیم (फ़ा) کوہ زافرهاد کندولعل راپرویز یافت

करकी नाड़ी करही जाने।

(सं) विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्। (अं) (Lit.) The wrist only knows of the pulse within the wrist.

(उ) ھانھہ کو ھاتھہ پہچانتا ھے (फ़ा) دست رادست آشناشود (अ) یکسب الوالدویا کل الولد

कर गुज़रान गरीबी से।

साधारणयेन वर्तेत। (अं) Simple life is happy life.

(उ) خاک آبرو سمجھنا اکسیرھے تو دیکھ (फ़ा) خاک شویش ازان کہ خاک شوی

करजदार, पत्थर खाय हरवार।

(सं) अधमर्णः सदा दुःखं भुज्यते जन्मजन्मनि। (अं) He that goes a-borrowing goes a-sorrowing. (उ) قرض بری بلا ھے (फ़ा) قرض شوھر مردان است

करम (कर्म्म) न दे यारी ताको मैं कहा करूं।

(सं) प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।

(अं) It is vain fighting against fate. (उ) جو ندے مولا تو کیا دے آصف الدولہ (फ़ा) خداندھد سلیمان کے دھد (अ) اللہم لا مانع لما اعطیت

करम विना नर कौड़ी न पावे।

(सं) भाग्यात्परं नैव ददाति किञ्चित्। (अं) No success without luck. (उ) جو ندے مولا تو کیا دے آصف الدولہ (फ़ा) خداندھد سلیمان کے دھد (अ) اللہم لامانع لما اعطیت

कर्म्म रेख अमिट है।

(सं) यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्ज्जितुं कः क्षमः। भाविनी कर्म्मरेख अं) No one can withstand the decrees of Fate.

(उ) همنے قسمت کے نوشتہ کو نہ ٹلتے دیکھا
(फ़ा) آنچہ برلوح نوشتہ است همان خواهد بود (अ) جف القلم بما هو کائن

कर्म्महीन खेती करे बैल मरे या सूखा पड़े।

(सं) प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः। (अं) The unlucky wight never wins in the fight. All my swans have turned into geese. (उ) کرمہین کی بلیا بکائی کھیر ہو گیا دلیا
(फ़ा) چقندر کا شتم زردک بر آمد (अ) زرع الشقي نمسک المطر

करलिया सो काम भजलिया सो राम।

(सं) यत्नतः कुरु कर्त्तव्यं हरिस्मरणमेव च। क्षणादूर्ध्वं न ज्ञायेत विधाता किं करिष्यति। (अं) Do not leave for to-morrow the work for to-day. (उ) آج کا کام کل پر نہ چھوڑو
(फ़ा) کار امروز بفردا مگذار (अ) لاتوخر شغل اليوم الى الغد

कर से कंघना खूटे।

(सं) उपायेन हि यत् सिद्धं न तत् सिद्धं पराक्रमैः। (अं) Strength is useless without skill. (उ) جو کام کل سے ہو وہ بل سے نہیں ہوتا
(फ़ा) کار بتدبیر است نہ بزور (अ) سہولۃ الامر بالتدبیر لا بالتزویر

करी भलाई आपनी चित सों दे बिसराय। मानो डारी कूप में काहू सों न जनाय॥

(सं) मय्येव लीनतां यातु यन्मयोपकृतं हरे! नरः प्रत्युपकारार्थी विपत्तिमभिवाञ्छति। (अं) "Do not let thy left hand know the good thy right hand does." (उ) نیکی کر اور دریا میں ڈال
(फ़ा) نیکی کن وبہ دریا انداز

करे कोई भरे कोई।

(सं) क्षेत्रशस्यं खरो भुङ्क्ते तन्तुवायस्तु ताड्यते। (अं) One is to blame, others bear the shame. (उ) نانی خصم کرے دوھتی ڈنڈ بھرے
(फ़ा) دیگے از بام اوفتاد و گردن دیگری شکست (अ) العبد یسرق والمولی یضمن

करेगा सेवा तो पावेगा मेवा।

(सं) सर्व्वां गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति। (अं) No sweat no sweet. (फ़ा) هر کہ خدمت کردا ومخدوم شد (उ) خدمت سے عظمت ہے

करे सो डरे।

(सं) यः करोति बिभेति सः। (अं) Guilty conscience.

(उ) پاک رہ بیباک رہ (फ़ा) آن اکہ حساب پاک است ازمحاسبہ چہ باک

(अ) الامین امن والخائن خائف

कलियुग का पहरा है।

(सं) हा कष्टं खलु वर्त्तते कलियुगे धन्या नरा ये मृताः। (अं) Evil times breed evil thoughts. (उ) روز بروز ابتری کا زمانہ ہے

(फ़ा) مشکل آن است کہ ہر روز بتری بینم

कहत बड़े जन सांच है बात हवा ले जात।

(सं) षट्कर्णों भिद्यते मन्त्रः। दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं रात्रौ नैवच नैव च। धूर्ताः सर्वत्र तिष्ठन्ति वटे वररुचिर्यथा। (अं) Walls have ears.

(उ) دیوار کے بھی کان ہوتے ہیں (फ़ा) دیوار ہم گوش دارد

कहबे को अबला बोलबे को सबला।

(सं) योषितः कलहप्रियाः। (अं) (Lit.) In name the weaker sex, in talking the strongest. "One tongue is sufficient for the woman" (उ) عورتون کا مکر اور خدا کی پناہ

(फ़ा) واحدا نفسهٔ بردم روزنند آفاق را وای گر چشم دگر بنمود قوم سان را

कहां कहां मन रुच करे दियो सो तन छुन भंग।

(सं) अनन्तशास्त्रं बहुला च विद्या स्वल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।

(अं) " Art is long but time is fleeting."

(उ) رات تھوڑی اور سوانگ بہت (फ़ा) شب کو تاہ وقصہ بسیار است

(अ) اللیل قلیل والسمر طویل

कहां राजा भोज कहां गांगू तेली।

(सं) क सूर्य्यप्रभवो वंशः क चाल्पविषया मतिः। (अं) Comparisons are odious. (उ) گو گڑھی ہے شکر شکرھی ہے

(फ़ा) ذرہ را بآفتاب چہ نسبت

कहां राम राम कहां टांय टांय।

(सं) वयं क वर्णाश्रमरक्षणोचिताः क जातिहीना मृगजीवितच्छिदः।

(अं) (Lit.) The pet parrot cries 'Ram, Ram,' and also

"screeches tain, tain", but Ram Ram, is one thing and 'tain, tain' another thing. (उ) کہاں فیرنی اور کہاں فالودہ
(फ़ा) کجا آسمان کجا زمین

कहीं डूबे भी तिरे हैं।

(सं) गतायुर्नैव जीवति। (अं) Crows are never the whiter for washing. (उ) گدھا پیٹنے گھوڑا نہیں ہوتا (फ़ा) خر عیسیٰ اگر بہ مکہ رود
جون بیاید ہنوز خر باشد (अ) اذا کان الطباع طباع سوء فلیس بنافع ادب الادیب

कहे कुछ सुने कुछ।

(सं) कर्णस्पर्शे कटिचालनम्। (अं) I ask for a fork and you bring me cake. (उ) کہیں ہولی کی سنے دیوالی کی
(फ़ा) سوال دیگر جواب دیگر

कहे दिन की सुने रात की।

(सं) अम्रान् पृष्टः कोविदारानाचष्टे। (अं) (Lit.) Says about day, but is heard to say about night. (उ) کہیں ہر دے پہرا
(फ़ा) سوال ازآسمان و جواب از ریسمان

कहें रणधीर भाग जात पात खरके सों।

(सं) वीरम्मन्यो भेरिशब्दाद्बिभेति। (अं) Sounding brass.
(उ) پتا کھڑکا بندہ سرکا (फ़ा) بر عکس نہند نام زنگی کافور
(अ) صلت علی الاسد بلت عن النقد

कमाऊ पूत किसको अच्छा नहीं लगता।

(सं) कस्मै न रोचते पुत्रो यो धनार्ज्जनकृद्गुणी। (अं) Who resents the kick of the milch cow? (उ) کماؤ بیٹا کسے برا لگتا ہے
(फ़ा) گاؤ پرارنشیر لگدکوب بہ

कभी नाव गाड़े पर कभी गाड़ा नाव पर।

(सं) कदाचिन्नावि शकटं कदाचिच्छकटेऽपि नौः। (अं) Horse drawing the cart and the cart drawing the horse. (उ) کبھی گاڑی
ناو پر اور کبھی ناو گاڑی پر (फ़ा) گاہی کشتی بر آب و گاہے در آب

करघा छोड़ तमाशे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय।

(सं) दुःखमाप्नोति सततं स्वकर्त्तव्यपराङ्मुखः। (अं) (Lit.) He who

leaves his work for play suffers. Do with a will the work to hand. (उ) کرگہا چہوڑ تماشے جاے ناحق چوٹ جولاہا کہاے
(फ़ा) هرکسے راکار خویش باید کرد

कमज़ोर मारखाने की निशानी।

(सं) दौर्बल्यं कष्टदं सदा। (अं) All troubles are for the weak.
(उ) کمزوری بدنصیبی کی دلیل هے—سب کے لئے سبھی مارتے خان هیں
(फ़ा) کمزوری دلیل، کم نصیبی ست

करे तो डर न करे तो भी डर।

(सं) पृष्ठे जलं पुरो वह्निः किं करोतु पिपीलिका। (अं) On the horns of a dilemma. (उ) کر تو ڈر نہ کر تو بھی ڈر
(फ़ा) از مکافات عمل غافل مشو

करनी करे तो क्यों डरे करके क्यों पछताय। बोवे बीज बबूल के आम कहां से खाय।

(सं) पुमान् भुङ्क्ते फलं लोके स्वकर्त्तव्यानुसारतः। (अं) As you sow, so you reap. If you sow the wind you must reap the whirlwind. (उ) جیسی کرنی ویسی بھرنی—اپنا کیا سامنے آتا هے
(फ़ा) کردنی خویش آمدنی پیش

करनी खाक की और बात लाख की।

(सं) कर्त्तव्यशून्यो वचनेऽतिशूरः। (अं) Empty vessels sound much.
(उ) پاس ٹکہ نہیں بات لاکھہ ٹکے کی (फ़ा) کارخوب به ازگفتار مرغوب

करनी न करतूत चलियो मेरे पूत।

(सं) अकर्त्तव्यं न कर्त्तव्यम्। (अं) (Lit.) An improper thing must not be done: Come away, my son. (उ) کام میں مرے ناتی کہائینگے بریانی (फ़ा) هیچکاره را حلوه خوش آید

करनी न करतूत लड़ने को मौजूद।

(सं) कार्य्यें शिथिलतामेति योद्धुं समुपतिष्ठते। (अं) (Lit.) Small in work, great in dispute. Incompetent in work, blatant in talk.
(उ) کام میں کہیں اور بات میں شیر (फ़ा) هیچکاره بجنگ تیار

कडुआ स्वभाव डूबती नाव।

(सं) क्रोधी व्यसनमश्नुते। (अं) Sweet word turneth away

wrath. A bitter tongue makes many enemies.

(उ) بد مزاج کا کوئی ساتھی نہیں (फ़ा) ترش مزاجی دلیل تلخکلامی ست

कल का लीपा देउ बहाय आज का लीपा देखो आय।

(सं) गतस्य शोचना नास्ति प्रस्तुतं परिचिन्तय। (अं) Trust no future however pleasant, Let the dead past bury its dead, work, work in the living present, Heart within and God o'erhead. (उ) کل کو جانے دو آج کو دیکھو

(फ़ा) گذشت انچہ در گذشت موجودہ بہ ازسرنوشت

कसाई का खूंटा और खाली रहे।

(सं) यमकार्य्यं न रुद्ध्यते। (अं) Every bullet has its billet.

(उ) قصائی کا کھونٹا اور خالي رهے (फ़ा) دام صیاد خالي نماند

कहे तो मा मारी जाय और न कहे तो बाप को कुत्ता खाय।

(सं) गृहीत्वा भयमाप्नोति त्यक्त्वा न सुखमश्नुते। (अं) Between the Scylla and the Charibdes. (उ) گویم مشکل و گر نہ گویم مشکل

(फ़ा) گویم مشکل وگرنگویم مشکل

कहे से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता।

(सं) आज्ञापितस्तु रजको नैवारोहति गर्द्दभम्। (अं) It is vain to request the mean. (उ) کہنے سے دھوبی گدھے پر نہیں چڑھتا

(फ़ा) گازر بعوض ، منت بہ خرنمی نشیند

का

काकड़ी के चोर को लाकड़ी।

(सं) यष्ट्याघातः कर्कटीचौरपृष्ठे। (अं) The fall of dew is tempest to the ant. Great fuss over a little thing.

(उ) جیسي خطا ویسی سزا (फ़ा) بقدر جرم میباشد سزاے (अ) الغرم غرايم

काजर की कोठरी में कैसहू सयानो जाय एक रेख काजर कै लागि है पै लागि है।

(सं) मलिनयति चतुरपुंसामपि सुयशः कुत्सितं कर्म्म। (अं) No one can touch dirt without soiling one's fingers.

(उ) صحبت بدسے کنارا اچھا (फ़ा) هر کجا تهمت بود انجا نرود

काजल सब कोई दे चितवन भांति भांति।

(सं) प्रकर्षमाधारवशं गुणानाम्। (अं) Tastes differ.

(उ) سب چيزون کا ذايقہ جدا ھے (फ़ा) ھر گلے را رنگ وبوي ديگر است

(अ) لكل مطعوم طعمة

काटने को आई चारा खेत पर इजारा।

(सं) भृत्यत्वं कर्त्तुमायातः स्वयं राजायते वृथा। (अं) Given an inch, demands an ell. (उ) انگلي پکڑتے پهونچا پکڑتے ھين

(फ़ा) يکےرا بگيرو ديگرے رادعوئ کن

कांटा कांटे से निकलता है।

(सं) कण्टकेनैव कण्टकम्। (अं) Diamond cuts diamond. Dog's hair for dog bite. (उ) لوھا لوھے کو کاٹتا ھے

(फ़ा) آھن باھن نرم تو انکرد

काठ की घोड़ी पावों नहीं चलती।

(सं) सत्यमेव जयति नानृतम्। (अं) A lie has no legs to stand upon. Wooden horse. (उ) جهوٹھ کے پانون کهان

(फ़ा) دروغے رافروغے نباشد

काणी को सराहे काणी का बाप।

(सं) वात्सल्यं बलवत्तरम्। (अं) The Crow thinks his own mate the fairest creature on earth. Every dealer praises his own wares. (उ) اپني مان کو کوئي ڈاين نهين کهتا

(फ़ा) ليلى را بچشم مجنون بايد ديد (अ) يحسب كل احد عقله ذاكمال و ولده ذاجمال

कांधे डाली झोली चमार छोड़ा न कोली।

(सं) न जातिदोषं गणयन्ति भिक्षुकाः। एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत्। (अं) The beggar has no choice.

(उ) اپني اتار بغل مين رکهي پهر دوسرے کي اتارتے کيا شرم (फ़ा) کے کوده بے ابروئي بسے * چه غم داردار آبروي کسے (अ) اذالم تستحي فاصنع ماشئت

काबुल में मेवा रच्यौ व्रज में रच्यौ करील।

(सं) नीचमाश्रयते लक्ष्मीरकुलीनं सरस्वती। अपात्रे भजते नारी गिरौ वर्षति वासवः। (अं) Literally. Cabul noted for fruits and

Brij for thorns ! N. B.—Proverb relating to contrariety and perverseness. (उ) هنرمندون سے پوچھے جاتے ہیں وان بے ہنر پہلے
(फ़ा) بہ نادان آن چنان روزي رساند * کہ دانا اندران حیران بماند
(अ) حلاوت الدنیا للجہلا و مرارتہا للعقلا

काम का न काज का दुश्मन अनाज का।

(सं) साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः। (अं) The wise man of Gotham. A carpet knight. (उ) کھانے کو اونٹ کمانے کو مجنون
(फ़ा) روستایان گیلان

काम पड़े ते जानिये जो नर जैसो होय।

(सं) व्यवहारेण मित्राणि ज्ञायन्ते रिपवस्तथा। कार्य्यैरेव परीक्ष्येत नरो यो यादृशो भवेत्। (अं) A man knows his companion in a long journey or a small inn. A man is known by his deeds.
(उ) آدمي کام سے معلوم ہوتا ہے (फ़ा) مرداز معاملہ شناختہ میشود

काम पड़े मूर्ख से तो मौन गहे रहिये।

(सं) मौनं मूर्खान्तिके वरम्। मूर्खस्य नास्त्यौषधम्। (अं) (Lit.) Keep your own counsel in dealing with a fool. (उ) ایک جھوٹھا سو کو ہراوے (फ़ा) پیش دروغگو ہر شخص لا جواب ست

कामिनी मोहिनी रूप है।

(सं) स्मरणमपि कामिनीनामलमिह मनसो विकाराय। (अं) Woman the charmer ! (उ) زلف کا دام جہان خال کا دانہ ہوگا
(फ़ा) زلف خوبان زنجیر پاے عقل ست

कारज पीछे कीजिये पहिले जतन विचारि।

(सं) सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः। सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य्य यत्कृतं सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्।
(अं) Look before you leap. (उ) دور اندیشي بڑي چیز ہے
(फ़ा) مرد آخربین مبارک بندہ است

काल के हाथ कमान बूढ़ा छोड़े न जवान।

(सं) मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवम्। (अं) Death's shaft flies for young and old alike. Death makes no distinction.
(उ) موت کا کوئي علاج نہین (फ़ा) مرت موضے است کہ علاجے ندارد
(अ) ان الموت الذی تفرون منہ فانہ ملاقیکم

कांसा दीजिये वासा न दीजिये।

(सं) अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्। (अं) Familiarity breeds contempt. (उ) سب سے بہتر ہے میاں صاحب سلامت دور کی
(फ़ा) یارشاطرم نه بار خاطر

काला अक्षर भैंस बराबर।

(सं) निरक्षरो भट्टाचार्य्यः। अर्द्धाङ्गुलपरीणाहजिह्वाग्रायासभीरवः। सर्वाङ्गीणपरिक्लेशमबुधाः कर्म्म कुर्वते। (अं) (Lit.) Utterly illiterate.
(उ) جاہل مطلق

काल करे सो आज कर आज करे सो अब। पल में परलय होयगी फेर करोगे कब।

(सं) शुभस्य शीघ्रम्। श्वःकर्त्तव्यानि कार्य्याणि कुर्य्यादद्यैव बुद्धिमान्।
(अं) Never leave till to-morrow what can be done to-day.
(उ) آج کا کام کل پر نہ ڈال (फ़ा) کار امروز بفردا مگذار

काठ की हण्डी एकही वार चढ़ती है।

(सं) वैयाजिको न लोकेऽस्मिन् व्यवहारश्चिरं सरेत्। (अं) The false can deceive but once. (उ) کاٹھ کی ھانڈی دوسری بار نہیں چڑھتی
(फ़ा) دیگ چوبین نبود بار دگر

कागा चले हंस की चाल।

(सं) आबद्धकृत्रिमसटाजटिलांसभित्तिरारोपितो मृगपतेः पदवीं यदि श्वा। मत्तेभकुम्भदलपाटनलम्पटस्य नादं करिष्यति कथं हरिणाधिपस्य।
(अं) Jackdaw in peacocks' feathers.

(फ़ा) زاغی بپوشاک بلبل باغی

काले के आगे दिया नहीं जलता।

(सं) समीपे कृष्णसर्पस्य दीपो नैव प्रकाशते। (अं) (Lit) Light goes out before a black snake. It refers to a popular belief. It means that vain is wise counsel to a black heart.

(उ) کالے کے سامنے چراغ نہیں جلتا (फ़ा) بمیرد شمع به پیش افعی

काम जो आवे कामरी का लै करे कमाच।

(सं) वरं क्षारः कूपः पिबति सलिलं यस्य सततं, अये किं स्यात्तेनानधि-

गतपयःक्षीरनिधिना। (अं) A bird in hand is worth two in the bush. (उ) بهوک میں باجره بهی پکوان هے ۔
(फ़ा) چون کار از کلوخ برآید حریر بچه شاید

काली भली न सेत दोनों मारौ एकै खेत।

(सं) कृष्णा वा श्वेतगात्री वा हन्तव्ये वासने सह। (अं) Necessity has no law. (उ) ضرورت اندهی هوتی هے (फ़ा) زن سیم‌تن یا سیه فام باشد
بمرد مجرد گنه کم باشد

काबुल में गदहे नहीं होते।

(सं) काश्यामपि निशाचराः। (अं) There are flies in paradise.
(उ) کیا کابل میں گدهے نہیں هوتے (फ़ा) درکابل هم خر باشد

काजी जी क्यों लटे ? शहर के अन्देशे से।

(सं) अकार्य्यचिन्ताकरणं वृथा तापाय कल्पते। (अं) Officious busybody. (उ) قاضی دبلے کیوں شہر کے اندیشه سے
(फ़ा) قاضي از اندیشه شهر مے کاهد

काले के काटे का यन्त्र न तन्त्र।

(सं) कृष्णसर्पेण दष्टस्य नार्हाः केऽपि विमोचने। (अं) No medicine for mortal malady. (उ) موت کی دوا لقمان کے پاس نہیں
(फ़ा) دواي موت عديم الوجود

काम को काम सिखाता है।

(सं) जलावगाहनं त्यक्त्वा न कोऽपि तरणक्षमः। (अं) Work teaches how to work. (उ) کام کرنے سے کام آتا هے
(फ़ा) تجربه هر کسے را پخته کار مے کند

काम प्यारा है चाम प्यारा नहीं।

(सं) गुणैर्हि सर्वत्र पदं निधीयते। (अं) (Lit.) One's worth is according to one's work, not one's complexion (beauty).
(फ़ा) کردار به خواهم نه که ناز گفتار — کردار به از گفتار

काम रहे तो काजी नहीं तो पाजी।

(सं) गृहीतदक्षिणा विप्रास्त्यजन्ति यजमानकम्। रोगाक्रान्तो भिषग्भक्तो निर्मुक्तो द्वेष्टि तं नरः। (अं) An empty mind is the workshop of Satan. (उ) بیکاري بدکاري سکهاتي هے — بیکار مباش کچه کیا کر
(फ़ा) وقت معزولي مرابا توجه کار

काल गया पर कहावत रह गई।

(सं) दिवमप्युपजातानामाकल्पमनल्पगुणगणा येषाम्। रमयन्ति जगन्ति गिरः कथमिव कवयो न ते वन्द्याः। (अं) Time passes away but memory remains. (उ) مردون کا آسمان کے تلے نام رهگیا (फ़ा) رو ـ رفت و نام نهان در گذاست

काठ की तलवार क्या करेगी वार।

(सं) दारुशस्त्रप्रहारेण मृगेन्द्रो नैव हन्यते। (अं) (Lit.) How can a wooden sword cut ? A paper army. (उ) کاتهه کي تلوار میدان مین کام نهین دیتي (फ़ा) که شمشیر چو بین نقابد بکار

काजी के घर के चूहे भी स्याने।

(सं) जगुर्गृहेऽभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः ससारिकैः पञ्जरवर्तिभिः शुकैः। निगृह्यमाणा वटवः पदे पदे यजूंषि सामानि च यत्र शङ्किताः।
(अं) Surroundings influence character. (उ) قاضي کے گهر کے چوهے بهي سیانے (फ़ा) چوزه هاے خانه قاضي هم بازک میدهند

का वर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछताने।

(सं) व्यतीतेऽवसरे लोके दीर्घोद्योगोऽपि निष्फलः। (अं) Strike while the iron is hot. (उ) گیا وقت پهر هاتهه آتا نهین (फ़ा) وقت از دست رفته باز نیاید

कि

किस बिरते पर तत्ता पानी ?

(सं) किं निमित्तं विकत्थनम्। (अं) (Lit.) What great thing you have done that you want hot water. (उ) گره مین کوڑي نهین بازار کي سیر (फ़ा) زشت باشد روے نازیبا و ناز

किसी को बैंगन बावरे किसी को पथ्य समान।

(सं) विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया। (अं) One man's food is another man's poison. (उ) کسي کو بیگن مضر کسی کو مفید (फ़ा) کسےرا منافع کسے را مضر

की

कीड़ी को तिनका भारत।

(सं) पिपीलिकायै गोधूमो नितरां पर्वतायते। (अं) (Lit.) A bit of straw is a great load for the ant. (उ) مرغي كو تنكے كا گهاربس هے
(फ़ा) مورچهرا قطرهٔ شبنم طوفان ست (अ) طوفان النملة بالقطرات

कीड़ी संचे तीतर खाय पापी को धन परले जाय।

(सं) दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य। यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति। (अं) (Lit.) The earnings of sin are never enjoyed by the earner. (उ) مال موذي نصيب غازي
(फ़ा) نه خود خوردنه به كس دهد گنده كند بسگ دهد

कु

कुछ खोके सीखते हैं।

(सं) वञ्चितः पाटवं व्रजेत। (अं) Never lose never win.
(उ) تجربه عقلمندي كي جڑ هے (फ़ा) پيش طبيب مرو پيش تجربه كاربرو
(अ) الحكمت بالتجربة

कुत्ता चौक चढ़ाइये चाकी चाटन जाय।

(सं) यः स्वभावो हि यस्य स्यात्तेनाऽसौ दुरतिक्रमः। (अं) (Lit.) Allow the dog to enter the kitchen and it will take to licking the bread pan. It means, never be too kind to the undeserving. (उ) كمينه كو منهه لگانا اچها نهين
(फ़ा) سگےرا نشاني به تخت بلند * بليسيدن آسياموورد (अ) كل شے يرجع الي اصله

कुत्ता टेढ़ी पोंछुरी कभी न सीधी होय।

(सं) अहर्निशं वर्षति वारिवाहस्तथापि पत्रं त्रिदलं पलाशे।
(अं) (Lit.) the curled tail of a dog cannot be made straight.
(उ) كتے كي دم موئے پر بهي تيڑهي هے (फ़ा) ريسمان بسوخت ليكن كجي نرفت
(अ) العادت لاترد الابالموت

कुत्ते तेरा मुँह नहीं तेरे साईं का मुँह।

(सं) स्थाने स्थितः कापुरुषोऽपि शूरः। (अं) Borrowed courage.
(उ) تيرا منه نه كه تيرے ميان كا منه (फ़ा) اسپ داروغه جونميخورد

कुब्जा वे दिन क्यों न सम्भारे ?

(सं) समये जागरूको यो स एव चतुरो नरः। (अं) Missed opportunity seldom returns. Opportunity comes but once.

(उ) اپنی اوقات سے باہر نہو ' (फ़ा) ایاز قدر خویش بشناس (अ) لاتعد قدرک

कुल्हिया में गुड़ नहीं फूटता।

(सं) यादृशः पशुस्तादृशं बन्धनम्। (अं) The whale cannot be caught in a fishe's net. (उ) اوکہلي میں سر دیا تو دھمکوں سے کیاڈر

(फ़ा) چو آب ازسر گذشت چہ یک نیزہ چہ یکدست (अ) الغریق لایخاف من القعر

कुसंग से इकन्त भली।

(सं) वरं वासोऽरण्ये न पुनरधमानां सह गणैः। (अं) A man is known by the company he keeps. Shun evil company.

(उ) بری صحبت سے تنہائی بہلی (फ़ा) از صحبت بد خلوت بہتر

(अ) الوحدت خیر من تقاریب الجلیس السوء

कुआर का सा झल्ला आया बरसा चला।

(सं) जीवनं शरदभ्रवत्। (अं) (Lit.) Like October showers, no sooner came than gone. (उ) کیا آگ لینے آئے تہے کیا آگ لیچلے

(फ़ा) دیر آمدن وشتاب رفتن (अ) ماابطا ایابک و ما اسرع ذہابک

कुए की मिट्टी कुए में लगती है।

(सं) इक्षो रसः पच्यत इन्धनैः स्वैः। (अं) Stewed in its own juice.

(उ) جتنی آمد اتنا ہی خرچ

(फ़ा) نفع کاری ہمچو اخراجات اوست

कुंजड़ी अपने बेरों को खट्टा नहीं बताती।

(सं) स्वीयं कस्मै न रोचते। (अं) Every tradesman praises his own wares.

(उ) اپنے دہی کو کسے کہتا کہا ہے

(फ़ा) کس نگوید کہ دوغ من ترش است

कुछ दाल में काला है।

(सं) हेतुरत्र भविष्यति। (अं) There is a cloud on the horizon.

(उ) کچھ دال میں کالا ہے

(फ़ा) دریں مہم ہیچ رازی ست

कुए की मेड़की कहा जाने समन्दर का फांट।

(सं) वराकी कूपमण्डूकी वेत्ति किं वारिधेर्जलम्? (अं) Frog in the well. How can golden fish in a glass globe know the vastness of the ocean? (उ) اونٹ پہاڑ کے نیچے آتا ھے جب اپنے کو چھوٹا سمجھتا ھے (फ़ा) به هیچ یار مده خاطر به هیچ دیار (अ) قل سیروا فی الارض

के

केसर की करि हैं कहा कीमत, है न परख जहां हरदी की।

(सं) यथा किराती करिकुम्भमुक्तां विहाय मुक्तां विचिनोति गुञ्जाम्।

(अं) How can the blind judge of colour?

(उ) بندر کیا جانے ادرک کا سواد (फ़ा) چه‌داند بوزنه لذات ادرک

(अ) لاتطرح الدر فی اعناق الکلاب

कै

कै बसे गुजर कै रहे उजर।

(सं) सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्य्येताथवा वने। (अं) Better to rule in hell than to be a slave in Heaven. A bull is among the cows or at the butcher's. (उ) سر نہیں یا سروھی نہیں

(फ़ा) تخته تخت یا تخته تا بوت (अ) اللحد اوالمهد

कै हंसा मोती चुगे कै लंघनही मर जाय।

(सं) किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी। (अं) (Lit.) Either the hansa (the swan of Hindu mythology) feeds on pearls or dies of hunger. (उ) یا بھینسا بھینسوں میں یا قصائی کے کھونٹے پر

(फ़ा) یا سرخ کنم روے زتو یا گردن

कै सोवै राजा के पूत कै सोवै योगी अवधूत।

(सं) यश्च मूढतमो लोके यश्च बुद्धेः परं गतः। द्वावेतौ सुखमेधेते क्लिश्यत्यन्तरितो जनः। (अं) Nothing before nothing behind. Literally:—Care-free sleep is for the Raja's son or the

wandering beggar. (उ) اپنی نیند سونا اپنی نیند اٹھنا * گھر والے کا ایک گھر بے گھرے کے سو گھر (फ़ा) خانه بدوش یک بنیی دوگوش * غم نداری بزبخر (अ) فقیر اللهعتیق في الارض

को

कोई रोवै कोई मलार गावै ।

(सं) कचिद्वीणानादः कचिदपि च हाहेति रुदितम् । (अं) One laments, another rejoices, such is the world. (उ) کہیں خہر خوبی کہیں ہاے ہاے (फ़ा) یکے کامران و یکے مستمند * یکے شادمان و یکے دردمند (अ) منہم من یبکے و منہم من یضحک

कोठी जितनी धोवोगे उतना ही कीचड़ निकलेगा ।

(सं) अङ्गारो बहुधौतोऽपि काष्र्ण्यमेव प्रसूयते । (अं) Positive men are often in error. (उ) جتنا چہانو اتنا کرکرا (फ़ा) اے روشنی طبع تو بر من بلاشدي (अ) الجواد قدیعثر

कोमल डार ज्यों नमावो त्यों नमे ।

(सं) नूतने भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत् । (अं) The tender twig may be bent as you choose, not the hard trunk. (उ) علم تو لڑکپن ھی میں آتا ھے (फ़ा) چوب تر راچنانکه خواھي پیچ (अ) التعلم فی صغر لافي کبر

क्यों अन्धा न्योता क्यों दो बुलाये ।

(सं) अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म्म शुभाशुभम् । (अं) Inviting a blind man is inviting two men (*i. e.* one, who leads the blind.) (उ) اپنے پانون میں آپ کلہاڑي ماري * اپنے راستے میں آپ کانٹے بوئے مصیبت مول لي (फ़ा) خود کردہ را علاجي نیست (अ) ذالک بما قدمت یدک

कोरो रह्यो रे सदिड़ा सदा तेल के सङ्ग ।

(सं) शुष्कः कम्बुरिवाम्बुधौ । (अं) Uncorrupt in the midst of corruption. (उ) ساري زلیخا پڑھگیا اور یہہ نہیں جانا کہ زلیخا عورت تھي یا مرد (फ़ा) گوزاله ماپیرشد و گاؤنشد (अ) کبرت فمارشدت

कोयले की दलाली में हाथ काले ।

(सं) दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिश्चापि न कारयेत् । उष्णो दहति चाङ्गारः

शीतः कृष्णायते करम्। (अं) Can't trade in dirt and keep the hands unsoiled. (उ) کوئلے کي دلالي مين هاتهه هي کالے هوتے هين
(फ़ा) در تجارت انگشت بجز سیاهی دست چه حاصل

कोढ़ी मरे सँगाती चाहे।

(सं) स्वयमपि नष्टः परान्नाशयति। (अं) The evil friend drags down in his fall. (उ) خود هي نه جائين بلکه اورون کو بهي گهسيٹتے جائين (फ़ा) آدم بد تنها نمیرود بلکه همصحبتان راهم بگیرد

कौ

कौन जाने किस विधि राजी राम।

(सं) को जानाति कथं रामः सन्तुष्टो भविता सखे!। (अं) Who knows the ways of Providence. Who knows what is pleasing to the gods. (उ) ایسا هنر نه آیا جس سے که یار ملتا
(फ़ा) تا یار کراخواهد و میلش بکه باشد (अ) ما اكتسبنا حيلة نجد به الحبيب الحرب له طريقان

कौन सिखावत है कहो राज हंस को चाल।

(सं) न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते। (अं) The kitten catches mice by instinct. (उ) بڑے گهر کی بڑهي بلي * قاضي کے گهر کے چوهے بهي سيانے (फ़ा) بچه بط اگر شبینه بود * آب دریاے تابسینه بود
(अ) ابن الفقيه نصف الفقيه

कौड़ी नहीं गांठ में चलो बाग की सैर।

(सं) वित्तेनैव विना कार्य्यारम्भो हि मूर्खलक्षणम्। (अं) To cut the coat according to the cloth. (उ) ساري سير پيسے کی هے
(फ़ा) تهیدستے را مستے نشاید

कौड़ी नहीं हो पास तो मेला लगे उदास।

(सं) सर्वशून्या दरिद्रता। (अं) Poverty poisons every enjoyment. (उ) مفلس کے سب طرف خالي هے
(फ़ा) تنگدستی جلاد مستي است

कौन किसी के आवे जावे दाना पानी लावे।

(सं) विवाहार्थौं च मरणमन्नं जननमेव च। कण्ठे बद्ध्वा दृढं सूत्रं यत्रस्थं

तत्र नीयते। (अं) The decree of fate.

(फ़ा) دوشے میکشد (उ) آب و دانه اور مرے کي جگه آدمي کو کهينچتي هے
آدمي را بزور * یکے آب و دانه دویم خاک گور

ख

खरा खेल फ़र्रुखाबादी।

(सं) स्पष्टवक्ता सदा सुखी। (अं) (Lit.) Happy is the man who is plain-spoken. (उ) کیا خوب سودا نقد هے اس هاتهه دے اس هاتهه لے (फ़ा) از سوداے نقد بوے مشک مي آید * النقد خیر من النسیة

खरादी का काठ काटे ही कटे।

(सं) गजानां पङ्कमग्नानां गजा एव धुरन्धराः। (अं) (Lit) Defer not till the evening what the morning may accomplish.

(उ) کل کسنے دیکهي (फ़ा) مہر نام فردا که فردا که دید * لاتوخر شغل الیوم الی الغد

खरी मजूरी चोखो काम।

(सं) यथा दक्षिणा तथा प्रदक्षिणा। (अं) (Lit.) Good remuneration, good labour. (उ) دام کراوے کام

(फ़ा) که مزدور خوشدل کند کار بیش * نقده و حر...

खरे माल के सौ गाहक।

(सं) न किञ्चिदप्राप्यतमं गुणानाम्। (अं) Good wine needs no brush (to allure customers.) (उ) اچهي چیز کے هزار خریدار

(फ़ा) متاع نیک را خریدار بسیار * حسن الامتعه یکثر المشترین

खलक का हलक किसने बन्द किया है।

(सं) लोकापवादो बलवान्मतो मे। (अं) (Lit.) Public voice cannot be throttled. (उ) مارتے کا هاتهه پکڑتے هیں بولتے کي زبان نهیں پکڑي جاتي هے (फ़ा) دهن مخالفان نتوان بست (अ) مانجی الهه و الرسول معا * بلسان الوری فکیف انا *

खली गुड़ एक भाव है।

(सं) बिभेति मूर्खात् सदसद्विवेकः। (अं) (Lit.) Good and bad at

equal value. (उ) گدھے گھوڑے سب برابر
(फ़ा) آواز خر ونغمۂ داؤد یکیست * بیع السکر والرمل بسعر واحد

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

(सं) संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति। (अं) A man is known by the company he keeps. (उ) جیسی سنگت ویسے گن

खा

खाड़ खने जो और को वाको कूप तयार।

(सं) परापकारनिरतः स्वयमायाति दुर्गतिम्। (अं) Harm set, harm get. (उ) جو کسی کے کانٹے بھوکتا ہے اوسکے لئے سولی طیار ہے
(फ़ा) چاہ کن را چاہ در پیش (अ) من حفر بیراً لاخیہ فقد وقع فیہ

खांड़ खड़ी का एक भाव है।

(सं) सर्वधान्यं द्विविंशातिशेटकामितम्। (अं) Cheese and chalk at the same rate. (उ) شکر اور شورہ ایک بھاو ہے
(फ़ा) نرخ شکر و شورہ جداگانہ باشد

खाना शराकत रहना फराकत।

(सं) वरीयान् सहभोजोऽस्ति सहवासो न कर्हिचित्। (अं) (Lit.) Better dine at the same table but never live together.
(उ) کھانا ایک ساتھہ حساب الگ الگ (फ़ा) دستر خوان مشترک خوب لیکن بود و باش غیر مشترک محبوب

खाय तो घी से नहीं जाय जी से।

(सं) अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्। (अं) Better to rule in Hell than to be a slave in Heaven. (उ) شیر بھوکوں مر جائیگا پر گھاس نہ کھا ئیگا (फ़ा) شیر شکار کند و یا فاقہ کشد

खाक डाले चांद नहीं छिपता।

(सं) धूलिप्रक्षेपतो नैव चन्द्रज्योत्स्नाऽवरुध्यते। (अं) (Lit.) Moonlight cannot be darkened by dust thrown at it.
(उ) چاند پر دھول ڈالکر کوئی اسکو میلا نہیں کر سکتا (फ़ा) از گرد و غبار مہ نشود تیرہ و تار

खाली बनियां क्या करे इस कोठी का धान उस कोठी धरे।

(सं) कार्य्यरहितो हि पुरुषो वृथा कर्म्म प्रकुर्व्वते। (अं) Ploughing the sand. (उ) بیکاری مهوب کا گهر هے
(फ़ा) مردم بیکار برادر شیطان

खावे बकरी की तरह और सूखे लकड़ी की तरह।

(सं) दुर्बला भोजने शूरा निन्द्यन्ते जगतीतले। अजवत्खलु भुञ्जानः क्षयरोगीव शुष्यति। (अं) (Lit.) Blameworthy are the men who are clever in eating, but slow in getting fat. (उ) کهائیں بکری سا اور سوکهیں لکڑی سا (फ़ा) چنین قحط جوشن باین خورد و نوش

खाली चना बजे घना।

(सं) वाचालता मूर्खजनैर्निषेव्यते। (अं) Empty vessels sound much. (उ) زیادہ بولنا کم عقلي کی دلیل هے
(फ़ा) گفتگو بسیار دلیل کم عقلي است

खि

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरा।

(सं) प्रथमग्रासे मक्षिकापातः। (अं) Stumbling at the first step. (उ) واه میان کالے خوب رنگ نکالے * مارا‌زین‌گیاه ضعیف این‌گمان نبود
(फ़ा) الکناس استکره مزریم الزبلة

खिलाये का नाम नहीं डाल देने का नाम।

(सं) अदातरि समृद्धेऽपि किं कुर्य्युरुपजीविनः। (अं) (Lit.) Miserly master, miserly attendants. (उ) نیکي برباد گنهه لازم
(फ़ा) نیکی برباد گنه لازم

खी

खीज के पचायबे को हाथ जोड़ आगे खड़ो।

(सं) प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम्। (अं) A fault confessed is half-redressed. (उ) اپنے قصور کي معافي چاهو
(फ़ा) اقرار جرم اصلاح جرم * الندم توبه

खु

खुदा की बातें खुदा ही जाने।

(सं) अचिन्तनीयो महिमा परेशितुः। (अं) Inscrutable are the ways of Lord. (उ) خدا اپني قدرت خود هي جانتا هے
(फ़ा) قدرت خدا خدا داند

खुशामद से आमद होती है।

(सं) सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं त्रयश्चिन्वन्ति मानवाः। शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्। (अं) (Lit.) Flattery succeeds in winning one's end. (उ) سچ تو يه هے كه خوشامد سے خدا راضي هے
(फ़ा) آمد از خوشامد

खुदा गञ्जे को नाखून न दे।

(सं) खल्वाटस्य नखो रिपुः। (अं) (Lit.) The bald is providentially deprived of nails. (उ) خدا گنجے كو ناخن نه دے
(फ़ा) خدا گنجهرا ناخن نمي دهد

खू

खून सिर पर चढ़कर बोलता है।

(सं) स्वयं पापं प्रकाशते। (अं) (Lit.) The wrong is sure to come to light. (उ) خون سر پر چڑهكر بولتا هے
(फ़ा) خون صدا ميدهد

खूंटे के बल बछड़ा नाचे।

(सं) अजा सिंहप्रसादेन वने चरति निर्भयम्। (अं) (Lit.) Patron is the strength of the weak. (उ) بچهڑا كهونٹے كے زور پر ناچتا هے
(फ़ा) بزور ميخ گوساله مي رقصد

खे

खेती हो चुकी हल खूटी ऊपर।

(सं) उत्तीर्णे तु नदीपारे नौकायाः किं प्रयोजनम्। (अं) (Lit.) The tree ascended, the ladder is kicked away.

(उ) بس هو چکي نماز مصلا اٹهائیے (फ़ा) اے ترک من مغاز کہ ترکي تمام شد
(अ) تمت المرام فقط والسلام

खेल खिलाड़ियों के घोड़े असवारों के।

(सं) यो यस्य जानाति गुणप्रकर्षं सदा स तस्मिन् रमते मनुष्यः।
(अं) (Lit.) Merit is appreciated by the meritorious.
(उ) تخم تاثیر صحبت اثر (फ़ा) کاربوزینہ، نیست نجاری (अ) کل میسرلما خلق لہ

खेती खसम सेती।

(सं) अवश्यं विफला याति कृषिः स्वेनानवेक्षिता। (अं) (Lit.) No supervision, no work, or no pains, no gain.
(उ) اپنا کام اپنے هي سے بنتا هے (फ़ा) کار خودازدست خود خوب برآید

खेले कूदे होय खराब पढ़े लिखे तो होय नवाब।

(सं) विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। विद्यावाल्लँभते लक्ष्मीमविद्यस्य कुतो धनम्।
(अं) (Lit) No work but all play would make a fool of one.
(उ) علم سب سے بڑي دولت هے کهیلوگے کودوگے هو گے خراب * پڑهوگے لکهوگے هوگے نواب (फ़ा) بے علم بے مایہ با علم[؟]با پایہ

खो

खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समय पर काम आता है।

(सं) सतां कार्य्यं कदाचित्तु दुर्जनेनाऽपि सिध्यति। तृणेन कार्य्यं भवतीश्वराणाम्। (अं) (Lit.) Even the trifles come to use if properly handled. (उ) خدا نے کوئي شے بیکار نهین بنائی
(फ़ा) هر کسے رابهر کاري ساختند

खोदा पहाड़ और निकली चूहिया।

(सं) बह्वारम्भो फलं लघु। अयं रत्नाकराम्भोधिरित्यासेवितवानहम्। धनं दूरेऽस्तु वदनमपूरि क्षारवारिभिः। (अं) (Lit.) Mountain in labour, producing a mouse. (उ) پهاڑ کهود کر چوها نکالا
(फ़ा) کوہ کندن وکاہ برآوردن

खौ

खौड़ही कुतिया मखमली झूल।

(सं) पङ्गुपादे सुपादुका। (अं) (Lit.) Shoes for the cripple. (उ) گنجے سر پر زمردي تاج (फ़ा) خارشتي را لحاف مخملی نزیبد

ग

गई को जान दे राख रही को।

(सं) गतस्य शोचना नास्ति वर्तमानं समाचर। (अं) (Lit.) Let the dead past bury its dead. (उ) پیچھے نہ دیکھہ آگے دیکھہ (फ़ा) گذشتہ را صلوات و آیندہ را احتیاط (अ) تدارک فی العمر مافات فی اوله

गढ़े कुम्हार बरते संसार।

(सं) एकेन सृष्टं बहुभिश्च भुज्यते। (अं) (Lit.) The potter makes and the world uses. (उ) کماوے رحمان لٹاوے لقمان (फ़ा) کہ گوئی کردو کہ خورد (अ) یکسب الوالد و یا کل الولد

गणेश को बुद्धि कौन दे?

(सं) कः शिक्षयेत्पण्डितराजसिंहम्। (अं) (Lit.) Who can teach wisdom to the god of wisdom. (उ) کیا سکھایئگا سکھانا کوئي مجھہ سے سیکھہ جائے (फ़ा) بہ لقمان حکمت آموزی چہ سود (अ) التعلم الطب الجالینوس

गति जानत है दरदी दरदी की।

(सं) समदुःखी विजानीयात् दुःखं हि समदुःखिनः। (अं) The wearer only knows where the shoe pinches.

(उ) موزے کا گھاؤ میان جانے یا پانؤں دردمند درد کو جانتا ھے (फ़ा) دردرا پیش دردمند بگو (अ) لم یصب بمصیبتے

गधा पीटे धूल उड़े।

(सं) नीचताडनतो नूनं स्वयं श्रान्तो भवेन्नरः। (अं) (Lit.) Beat the ass and raise the dust. (उ) کسي بیکس کو اے بیداد گر مارا تو کیا مارا * جو آپ ھی مر رھا ھو اوسکو گر مارا تو کیا مارا (फ़ा) خاک از تودہ کلان بردار (अ) کل صیدفی جوف الفرا

गधा मरे कुम्हार का और धोबन सत्ती होय।

(सं) अहो! खलभुजङ्गानां विचित्रोऽयं वधक्रमः। अन्यस्य स्पृशति श्रोत्रमन्यः प्राणैर्विमुच्यते। (अं) The cause is here, the effect elsewhere. (उ) یہاں نہ کودا کودي گون یہ تماشہ دیکھے کون (फ़ा) نرگاؤ نہ جست جست خروار (अ) الشاهد حاضر بسعي و صاحب الحق غائب الحقي

गधों के गले में गजरा।

(सं) कपेः करे यष्टिरहो हिरण्मयी। (अं) Fortune's favourite or (Lit.) A necklace of pearl round a monkey's neck. (उ) اصیل مرغے تکے تکے (फ़ा) اسپ تازے شدہ مجروح بزیر پالان * طوق زرین همه در گردن خرمي بینم—زمانہ سفلہ پرور است (अ) حلاوت الدنیا للجہال و مرارتہا للعقلاء

गये को सबने सराहा है।

(सं) गतं सर्वे प्रशंसन्ति। (अं) (Lit.) One is valued when gone, or The past is always golden. (उ) اگلے جیسے بزرگ اب کہاں ہیں (फ़ा) حریفان بادہا خوردند و رفتند (अ) السلف سلف

गये गुजरे लोगन की निन्दा अजोग है।

(सं) वृद्धास्ते न विचारणीयचरिता येऽस्माच्चिरं स्वर्गताः।
(अं) (Lit.) It is useless repenting the past, or Let by-gones be by-gones. (उ) گڑے مردے مت اکھاڑو (फ़ा) مردا بہ بدي یاد مکن کہ سودے ندارد (अ) لاتسبوا الاموات فانہم قد افضوا الي ما قدموا

गरज बावली है।

(सं) तृणाल्लघुतरस्तूलस्तूलादपि च याचकः। वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं याचयेदिति। (अं) Necessity has no law. (उ) حاجت بري بلا ہے ضرورت میں سب روا ہے (फ़ा) گر ضرورت بود روا باشد انچہ شیرانرا کند روبہ مزاج * احتیاج است احتیاج است احتیاج (अ) صاحب الحاجت اعمی

गरीब का बेली राम।

(सं) निर्धनानां धनं प्रभुः (अं) (Lit.) God is the friend cf the

friendless. (उ) غریبوں کا اللہ مددگار ہے
(फ़ा) صبر مفتاح کارھا است (अ) الصبر مفتاح الفرج

गरीब की जोरू सब की भाभी।

(सं) भ्रातृजाया हि सर्वेषां दीनानां वामलोचना। दैवो दुर्बलघातकः।
(अं) The weakest go to the wall. (उ) مرے کو سب کوئی مارے
مرے کو مارے شاہ مدار (फ़ा) نرم چوبرا کرم می خورد (अ) المادة الفاسدة
تنزل على عضوضعیف

गल सेली लगी न नवेली लगी।

(सं) आवासः क्रियते गाङ्गे पापहारिणि वारिणि। स्तनमध्ये तरुण्या वा मनोहारिणि हारिणि। (अं) Between two stools and you come to the ground. (उ) نہ خدا ہی ملا نہ وصال صنم
نہ ادھر کے ہوے نہ ادھر کے ہوے (फ़ा) دو دل بودن بجز بیحاصلی نیست
(अ) مذبذ بین بین ذلک

गँवार की अकल गुद्दी में।

(सं) मूर्खा नैवाग्रशोचिनः। (अं) (Lit.) A fool cannot judge beforehand. (उ) گنوار کو مارنا آسان سمجھانا مشکل
گنوار پہلی دے پیچھے نہیں دے (फ़ा) روستائی راعقل از پس می آید
(अ) عقل الاحمق في قفاه

गँवार गँव का यार।

(सं) मूढः स्वार्थप्रियो नरः। (अं) Fools are ever selfish.
(उ) اپنے مطلب کی سب سمجھتے ہیں (फ़ा) دیوانہ بکار خویش ہشیار دیوانہ بکار
خویش عاقل (अ) الحمار یعرف طریق العلف

गहनो वस्त्र पर को कभी न धरिये अङ्ग।

(सं) उपवीतमलङ्कारं स्रजं करकमेव च। उपानहौ च वासश्च धृतमन्यैर्न धारयेत्। (अं) Borrowed ornaments never fit well.
(उ) مانگے کے کپڑے کبھی ٹھیک نہیں بیٹھتے (फ़ा) کہن جامہ خویش آراستن
بہ از جامۂ عاریت خواستن (अ) بئس المال العاریہ

गरीब की हाय सरबस खाय।

(सं) दीनानां पीडनं तात ! कुलक्षयकरं मतम्। (अं) The curse

of the helpless is as the burning fire.

(उ) مظلوموں کی آہ میں خداکے قہر کی تاثیر ہوتی ہے (फ़ा) آہ مظلومان قہر خدا

गधों को गुलकन्द गँवार को पापड़ खुश्क।

(सं) अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख।

(अं) To cast pearls before swine. (उ) سگ کے سامنے خستہ

(फ़ा) حلوا خوردن داروی باید

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।

(सं) प्रत्यायान्ति पुनर्गता न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः। (अं) Past time can never be recalled. (उ) گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں

(फ़ा) وقت از دست رفتہ باز نہ آید

गद्हा धोने से बछड़ा नहीं होता।

(सं) अङ्गारः शतधौतोऽपि श्वेतो नैव भविष्यति। (अं) Leopard cannot change its spots. (उ) گدھا دھونے سے بچھڑا نہیں ہوتا

(फ़ा) خرار اطلس بپوشد خراست باچی بطواف کعبہ حاجی نشود

गधा गिरे पहाड़ से और मुरगी के टूटे कान।

(सं) भूपानां कलहो जातो म्रियन्ते सैनिका रणे। वैद्यवृत्तिः कुवृत्तिर्हि परदुःखेन दुःखितः। अहारि सीतादशकन्धरेण बद्धः पयोधी रघुनन्दनेन। न दृश्यते कुत्र विचित्रमेतत् परापराधेन परस्य दण्डम्। (अं) One doth the act, another suffereth the consequence.

(फ़ा) ببین تفاوت رہ از کجا است تابکجا

गधे का जीना थोड़े दिन भला।

(सं) विपर्य्यस्तमनश्चेष्टैः शिलाशकलवर्ष्मभिः। मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा। (अं) The life of a drudge, the shorter the better. (उ) بیوقوف زیادہ دن نہ جئے تو بہتر

(फ़ा) زندگی ابلہ بقلت بہتر

गरजता बादल बरसता नहीं बरसता है सो गरजता नहीं।

(सं) गर्जति शरदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः।

(अं) Loud thunder little rain or Rain-cloud comes quietly on. (उ) جو گرجتا ہے وہ برستا نہیں

(फ़ा) کردار بہ از گفتار

गगरी दाना सूत उताना।

(सं) ओष्ठे तैलं तरौ चास्ते सुपक्कं पणसं फलम्। (अं) To count one's chickens before they are hatched.

(उ) چهوتا بوتن جلد بهر چهلکتا هے (फ़ा) سفله به ل قلیل هم مغرو. گردد

गये कटक रहे अटक।

(सं) मथुरायां गतः कृष्णो रुद्धस्तत्रैव कुब्जया। (अं) Give not to return.

(उ) گئے سودا خریدنے خودهی گرو هو گئے

(फ़ा) رفتن بهازارو گرویدهشدن به دوکاندار

गंगा किसकी खुदाई है।

(सं) गङ्गा केन विनिर्म्मिता। (अं) (Lit.) By whom is the bed of the Ganges dug ?

(फ़ा) این کار مردان نیست بلکه کار یزدان

गा

गागर भर सागर ले जाना मूरख होकर जगत हंसाना।

(सं) तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्। प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्वाहुरिव वामनः। (अं) To laddle the sea into a pit-hole.

(उ) اُلٹے بانس بریلي لے جانا (फ़ा) آب بدریا انداختن

(अ) لایرجع الذهب اے معادنه

गाड़ी कुत्ते के बल नहीं चलती।

(सं) शकटं श्वा न कर्षति। इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्।

(अं) (Lit.) A dog cannot draw a carriage.

(उ) جہان مرغ نهین هوتا کیاوهان فجر نهین هوتي (फ़ा) منه ـ منهی که خدمت سلطان همیکني منت شناس ازو که بخدمت بداشتت (अ) لایشکو الهمن لایشکر الناس

गाड़ी देख लाड़ी के पांव फूले।

(सं) आदातुं सकृदीक्षितेऽपि कुसुमे हस्ताग्रमालोहितं, लाक्षा रञ्जनवार्तयाऽपि सहसा रक्तं तलं पादयोः। (अं) One feels unable to walk when a carriage is available.

(उ) شکر ملے تو گڑ کون کهاے

(फ़ा) جو که خردید کاه نمي خورد (अ) لایا کل الشعیرمن عنده خبزالحنطة

गाम गया सोता जागे।

(सं) ग्रामं गते जाग्रति सर्व्वं एव। (अं) (Lit.) A new arrival in a village attracts everyone's notice. (उ) سویا اور موا برابر

(फ़ा) خفته مثال مرده (अ) النوم اخوالموت

गाय न बच्छी नींद आवे अच्छी।

(सं) वैराग्यमेवाभयम्। शेते सुखं निःस्पृह एव लोके। (अं) (Lit.) The poor man sleeps sound. (उ) کہاں چین وه بادشه کو نصیب

که جس بے غمی سے هیں سوتے غریب (फ़ा) بے زر بآرام و بازر بالام

गालवाला जीते श्रार मालवाला हारे।

(सं) विरोधिवचसो मूकान् वागीशानपि कुर्वते। जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः। (अं) Gift of the gab is the high road to success. (उ) منهه زور کی سب کہیں جیت هے

(फ़ा) کلاه دراز فتح یاب

गाडर राखी ऊनको बैठी चरे कपास।

(सं) अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढो विबुधैर्निगद्यते।

(अं) Sheep are kept for fleece but are fed on cotton crops, (cotton is supposed to be dearer than wool.)

(फ़ा) گاه باشد که از اشیاء سود مند هم زیان میرسد

गाडी का नाम उखली।

(सं) गोपाल इति कृष्ण! त्वां प्रचुरक्षीरवाञ्छया। श्रितो मातृस्तनक्षीरमप्यलभ्यं त्वया कृतम्। (अं) To give the spade a different name.

(उ) پلے نہیں چهدام کروڑی مل نام (फ़ा) برعکس نهند نام زنگی کافور

गि

गिरे जैसे संभल गये।

(सं) पतन्नपि समुत्थितः। (अं) Hairbreadth escape.

(उ) صبح کا بهولا شام کو گهر آئے اسے بهولا نهیں کہتے (फ़ा) هرچه عیوض دارد

گله ندارد (अ) السیأت تسمى بالکفارات

गिरे तो देव के पगों में पड़े।

(सं) दिष्ट्या धूमावरुद्धदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता

(अं) It is not lost what a friend gets. (उ) پھسل پڑے تو ھر گنگا
(फ़ा) خطا شد چه بجاشد (अ) الخطا فاصاب

गिने पूये सम्हाल खाये।

(सं) मितव्ययी सदा सुखी। (अं) To spend prudently what is limited, or Economy is a good policy.
(उ) کفایت شعاري دولتمندي کي کنجي هے (फ़ा) کفایت شعاري دلیل بیداري

गिरगिट के से रंग बदलना।

(सं) क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे। (अं) Changing colours like a chameleon. (उ) گرگٹ کي طرح رنگ بدلنا
(फ़ा) نیر نگي زمان وبو قلموني آسمان

गु

गुड़ न दे तो गुड़की सी बात तो कहै।

(सं) वचने का दरिद्रता। (अं) Conciliatory manners command esteem. (उ) زبانِ شیرین ملک گیري
(फ़ा) اگر نان گندمي نیست داري زبان گندمي راچه شد (अ) الکلام المحبوب صیاد القلوب

गुणवान् सब जगह पूजा जाता है।

(सं) गुणैर्हि सर्वत्र पदं निधीयते। विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। (अं) He who has an art, has everywhere a part or A sage is honoured everywhere. (उ) هنرمند کبهي محتاج نهين رهتا
(फ़ा) هنر سر چشمهٔ دولت است (अ) الصناعت کنز لاینفی

गुदड़ी में गोलक।

(सं) जीर्णशीर्णककन्थायां वैचित्र्यं धनसंस्थितिः। (अं) Hidden solomon in the straw. (उ) گدڑی مین لعل
(फ़ा) یلے گنجینه در ویرانه باشد (अ) رفعت علي الرفعت

गुर गुर विद्या सिर सिर अकल।

(सं) मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना विद्या चैव गुरौ गुरौ। (अं) Many men, many minds. (उ) حقارت سے نه دیکهو تم کسیکو * کسي کو
چهوٹا نه سمجهو (फ़ा) جاے استاد خالی است (अ) وفوق کل ذي علم علیم

गुरु कहै सो करो करै सो न करो ।

(सं) महतां वचनं कार्यं नत्वेवाचरितं क्वचित् । (अं)(Lit.) Follow the precept and not the practice. (उ) پیر کي پیروي سے کام یا اُسکے فعلوں سے (फ़ा) بگفت ملا برو وبفعلش مرو (अ) انظرالي ما قال ولاتنظرالی من قال

गुरु गुड़ही रहे चेला शक्कर होगये ।

(सं) प्रकर्षमाधारवशं गुणानाम् । (अं) (Lit.) A meritorious pupil in the long run goes far ahead of his master.

(उ) بارہ هاتهہ کي ککڑي اور تیرہ هاتهہ کا بیج (फ़ा) آفتابہ خرچ لحم (अ) کراء المال ازیدعلے راس المال

गुड़ खाय गुलगुलों से आन ।

(सं) दिवा काकरवाद्भीता रात्रौ तरति नर्मदा । (अं) A barrister but hating cross question. (उ) گڑ کهائیں گلگلونکا پر هیز (फ़ा) شکر خوردن و از نیشکر پرهیز کردن (अ) فتلواسبط البني وحرمواقل البعوضة

गुरु कीजै जान और पानी पीजे छान ।

(सं) दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिवेज्जलम् । शास्त्रपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत् । (अं) Look before you leap.

(उ) چهدام کی هانڈي بهي ٹهونک بجا کر لیتے هیں (फ़ा) چراکاري کند عاقل که باز آید پشیمانے (अ) ندم الخروج قبل الولوج

गू

गूंगे की सैन गूंगा जाने ।

(सं) समानशीलव्यसनेषु सख्यम् । सहधर्मीविजानाति संकेतं सहधर्मिणाम् ।

(अं) One is very well-known to his constant companion.

(उ) چور کو چور خوب پهچانتا هے (फ़ा) بدي همسایہ همسایہ داند

(अ) یقوس المرء علي نفسه

गे

गेहूं की रोटी और पोलाद का पेट ।

(सं) फलमुत्पादयेत्पूर्णमधिकारगता क्रिया । (अं) Hand of steel

in a velvet glove. (उ) صورت انگور کی سیرت زنبور کی
(फ़ा) صورت انگور و سیرت زنبور

गै

गैर का सिर पसेरी बराबर।

(सं) निर्दयः पुरुषो लोके परदुःखमुपेक्षते। (अं) The other fellow's jewel is but glass. (उ) دوسرے کا سر پھل برابر
(फ़ा) بادرد کسے رسد کہ دردی دارد (अ) لم یصیب بمصیبتے

गो

गोहरा के पाप से पीपला जले।

(सं) रावणस्यापराधेन दग्धा लङ्का हिरण्मयी। (अं) One doth the blame another bears the shame, *or* One doth the scath, and another hath the scorn. (उ) طبیلے کی بلا بندر کے سر
(फ़ा) بلاے طبیلہ برسر میمون (अ) العبد یسرق والمولی یضمن

गों निकली आंख बदली।

(सं) लब्धविद्यो गुरुं द्वेष्टि। (अं) When the object is won all thanks is done. (उ) غرض نکلی آنکھ بدلی
(फ़ा) چون مصیبت رسد بحق نالد (अ) اذامسکم الضرفالینا یراجعون

गं

गंगा आनहार भागीरथ के सिर पड़ी।

(सं) यद्येनाक्षिप्यते तस्य तत्रैवान्वय उच्यते। (अं) A man is but a tool in the hand of nature. (उ) یہ جہان عالم اسباب ہے
(फ़ा) مارابغمزہ کشت و قضارابہانہ ساخت (अ) العالم سلسلة الانظام

घ

घड़ी घड़ी की खैर मांगो।

(सं) क्षणादूर्ध्वं न जानामि विधाता किं करिष्यति। (अं) (Lit.) Always pray to God for welfare. (उ) خدا محفوظ رکھے ہر بلاسے
(फ़ा) طوفان شیطان اللہ نگہدان (अ) اعوذباللہ من شرما صنعت ومن شرمالم اصنع

घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध।

(सं) गृहस्थां देवतां हित्वा बहिश्चैत्यस्य पूजनम्। (अं) No man is a hero to his valet, *or* A prophet is not honoured in his own country. (उ) گهر کی مرغی دال برابر (फ़ा) گو هردرکان بیقدر است و دربازار بقیمت (अ) المرءلایعزفي قریته

घर का परोसनियां और अन्धेरी रात।

(सं) स्वार्थसिद्धिरनायासमानुकूल्ये नृणां भवेत्। (अं) To live in clover. (उ) یون نه هو گر ستره‌سیر

(फ़ा) دلا خوش باش که مابروغن افتادیم (अ) العمیان قدتلتقط

घर की खांड़ किरकिरी लगे पड़ोसी का गुड़ मीठा।

(सं) अप्राप्ये ह्यादरो महान्। (अं) Difficulty of attainment increases the value of a thing. (Lit.) Sugar or molasses in possession does not taste so sweet as that belonging to a neighbour. (उ) مفت کی شراب قاضی کو بهي حلال هے

(फ़ा) شراب مفت قاضي هم خورد (अ) اللقطت ملتقطت

घर की दाही वन गई वन में लागी आग।

(सं) निर्वाप्यते मन्दिरदाहकोऽग्निर्निर्वाप्यते नैव वनं दहन् सः।

(अं) Out of frying pan into the fire. (उ) آسمان سے گرا تو کهجور میں اٹکا (फ़ा) از دام چوآزاد شدم درقفص افتیم (अ) فرمن المطر وقف تحت المیزاب

घर की धुनियानी धुनै आग पानी।

(सं) असङ्गताज्ञा विफला हि जायते। (अं) Trem. An impracticable order cannot be carried out. (उ) گهر بارسب تمهارا کوتهیلے میں هاتهه مت لگانا (फ़ा) صاحب خانه و بیگانه (अ) ملکوني ومااطوني

घर घर मटिया चूल्हे हैं।

(सं) त्रिभुवनवसतां कस्य दोषो न जातः। (अं) There is no one without defect. (उ) بے عیب ذات خدا کی هے

(फ़ा) ناکرده گناه درجهان کیست بگو (अ) کل عارفي لهاسة

घर घर मित्र न करसको तो गांव गांव में एक।

(सं) यानि कानि च मित्राणि कर्त्तव्यानि शतानि च। (अं) Acquaintance is sometimes useful. (उ) جان پہچان بڑے کام کی ھے کبھی تو کام یہ صاحب سلامت آھی جاتی ھے (फ़ा) سگ گزیدہ همان بہ کہ آشنا باشد (अ) لمعرفت یقفع ولو بالکلب العقور

घर घर शादी घर घर चैन।

(सं) नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलम्। (अं) Where there is prosperity there is amusement and delight. (उ) شیر اور بکری ایک گھات پانی پیتے ھین (फ़ा) گرگ و میش باھم آب می خورند (अ) لکم دینکم ولي دین

घर में ब्याह बहू पीपलियां।

(सं) वियति घनाघनरणितं दूरे दयिता किमेतदापतितं। हिमवति दिव्यौषधयः शीर्षे सर्पः समाविष्टः। (अं) The patient is in a critical state but the doctor is far away from the place.
(उ) گھر میں گھوڑا نخاس میں مول (फ़ा) ملاح در چین است و کشتی درفرنگ
(अ) ام تعمر القریة و قدجاء السارقون

घर मेरो दूर गागर सिर भारी।

(सं) पिपासाव्याकुलः पान्थः कूपः क्रोशचतुष्टये। (अं) (Lit.) The way-farer is dying of thirst, but the well at a distance of many miles. (उ) گھر دور بوجھ بھاری
(फ़ा) برسرم بارگران ست و منزل دور است (अ) سفر طویل و زاد قلیل

घर रहे न तीरथ गये मूंड़ मुड़ा के योगी भये।

(सं) इतो भ्रष्टस्ततो नष्टः। (अं) (Lit.) Deprived of this, and robbed of that. (उ) تیری وہ مثل ھوئی اي رضي نہ الی الذي نہ اولے الذي
(फ़ा) دریک خانہ دو مہمان نہ گنجند (अ) مذبذبین بین ذلک

घर सब से उत्तम पूरब हो कि पच्छिम।

(सं) वासः काञ्चनपिञ्जरे प्रतिदिनं राज्ञः करैर्मार्जनं। आस्वाद्यश्च सुधासमं सुमधुरं द्राक्षारसं चाऽनिशम्॥ पेयश्चाऽमलगन्धवारि सरसं सर्वं सुखं हा! मया। शाखानीडसुखं तथाऽपि विपिने नाऽद्यापि विस्मर्यते॥
(अं) (Lit.) One's own home is the happiest land to him

wherever it may be situated. (उ) سب کو اپنا وطن عزیز ہے
(फ़ा) حب الوطن از ملک سلیمان خوشتر (अ) حب الوطن من الایمان

घर की मुरगी साग बराबर।

(सं) मलये भिल्लपुरन्ध्री चन्दनतर्विन्धनं कुरुते। (अं) Familiarity breeds contempt. (उ) گھر کی مرغی دال برابر
قدر کھو دیتا ہے ھر وقت کا ملنا جلنا (फ़ा) برات عاشقان بر شاخ آھو
(अ) المرءلایعزفی قریة

घर खीर तो बाहर खीर।

(सं) क भोग्यमाप्नोति न भाग्यभाग् जनः। (अं) (Lit.) When home is sweet all is sweet. (उ) گھر کھیر تو باھر کھیر

घर का भेदी लङ्का ढावे।

(सं) अहो दुरन्तः स्वजनैर्विरोधः। (अं) (Lit.) No foe more dreaded than the kindred turned enemy.
(उ) گھر کا بھیدی لنکا ڈھائے (फ़ा) دوست جانی دشمن لاثانی

घर में महुवा की रोटी बाहर लम्बी धोती।

(सं) अन्तःसारविहीनस्य बहिराडम्बरं बहु। (अं) Beggar on horseback. (उ) ڈیوڑھ پاؤ آٹا پل پر رسوئی
(फ़ा) درخانه آرد نے و درکوچه دوتنور (अ) مافی بیتک دقیق فابن تبتاع الرقیق

घड़ी भरे की बेशरमी सब दिन का आराम।

(सं) क्षणं निर्लज्जतायां मे स्वीकृतायां महत्सुखम्। (अं) Bitter at first, and sweet in the long run.
(उ) گھڑی بھر کی بیشرمی سب دن کا آرام

घर में सूत नहीं कोयरी से लठालठी।

(सं) हस्ते कपर्दिका नास्ति राज्यं क्रेतुं विरुध्यते। क्षेत्रे शस्यं गृहे तस्य विवादः पाचनाय हि। (अं) Without a farthing's capital, going to launch a bank. *or* A penniless man bidding for a kingdom. (उ) سوت نه کپاس جولاھے سے لٹھم لٹھا
(फ़ा) قبل از مرگ واویلا
(अ) لم یعتبرالقریة و قدجاء السارقون

घर के पीरों को तेल का मलीदा।

(सं) अतिपरिचयादवज्ञा। (अं) A prophet is not honoured in his own country. (उ) گھر کے پیروں کو تیل کا ملیدہ
لعل قیمت کو پہونچتا ھے بدخشان چہوڑ کر (फ़ा) گوھر درکان بیقدر و درد کان باقدر
(अ) المرء لایعرف فی قریتہ

घर आये नाग न पूजिये बांबी पूजन जाय।

(सं) गृहस्थां देवतां हित्वा वहिश्चैत्यस्य पूजनम्। (अं) Worshipping a new god while the family deity is not even taken notice of. (उ) گھر آے ناگ نہ پوجے بانبی پوجن جاے

घर में भूंजी भांग नहीं बाहर करता नाच।

(सं) गृहे कपर्दिका नास्ति बहिरस्ति महोत्सवः। (अं) Hardly gets a dry crust but talks of giving banquets.
(उ) جیب میں نہیں دانے بڑھیا چلی بھنانے (फ़ा) درخانہ آردنے و درکوچہ دوتنور
(अ) مافی بیتک دقیق فاین تبتاع الرقیق

घर का द्वार खसम के हाथ।

(सं) गृहस्वामिन एव गृहाधिकारः शोभते। (अं) The wife makes home but the husband keeps it.
(उ) گھر کا دوار خصم کے ھاتھ (फ़ा) اختیار بہ خان سامان بہ دست زنان

घर ही में वैद्य मरे कैसे।

(सं) पार्श्वस्थवैद्यो हि कथं म्रियते। (अं) (Lit.) The doctor at hand, how would death be possible. ?
(उ) گہر میں وید مرے کیسے

घर ही में औलिया घरही में भूत।

(सं) कारणसत्त्वेऽपि कार्य्याभावः। (अं) He has made the poison and the antidote. (उ) گھری میں اولیا اور گھری میں بہوت

घा

घायल की गत घायल जाने।

(सं) समदुःखी विजानाति विपत्तिं समदुःखिनः। (अं) He jests at

scars who never felt wounds. (उ) جانے بیچارہ قلندر جسکا بِیوئے کملوس (फ़ा) سیرراچہ غم گرسنہ (अ) لم یصب بمصیبتی

घायल दुश्मनों में सांस ले तो मरे न ले तो मरे।

(सं) विलाद्बहिर्बिलस्यान्तःस्थितमार्जारसर्पयोः । मध्ये चाखुरिवाभाति ह्याहतो वैरिमण्डले ॥ (अं) On the horns of a dilemma. *Or* To be between the Scylla and Charybdes.

(उ) کہون تو ماں ماري جاے نہین تو باپ کتا کہاے (फ़ा) نہ روے رہائی نہ راہ گریز
(अ) ان اقل امت وان اسکت یمت

घी

घी गिर गया मुझे रूखी भाती है।

(सं) प्राप्तेन सन्तुष्यताम्। (अं) The grapes are sour.
(उ) انگور بہي کہٹے ہین (फ़ा) اے حسن توبہ انکہ کردي * کہ ترا طاقت گناہ نماند
(अ) یشتہي بقلب ویذکر بلسانہ

घी गिरो वैंसादर में (खिचड़ी में)

(सं) भोगे व्ययो न व्ययः। (अं) It is not lost what a friend gets. (उ) گہي دہلکا کہچڑی میں (फ़ा) کرد خطاے و خطاے نہ کرد
(अ) اخطانا صاب

घी सुधारे सालना बड़ी बहू का नाम।

(सं) सेनाः कुर्वन्ति संग्रामं नायकेनाप्यते यशः। (अं) God cures and doctor takes fees. (उ) لڑے سپاهی نام سردار کا
(फ़ा) کوہ رانرهاد کندامل راپرویزیافت (अ) بکسب الوالدیا کل الولد

घी खाना शक्कर से दुनियां ठगिये मक्कर से।

(सं) सम्पूज्यन्ते कलौ धूर्त्ताः। (अं) Cleverness secures praise.
(उ) گهي کہانا شکر سے اور دنیا ٹهگنا مکر سے (फ़ा) دنیا جاے فریب است
(अ) الدنیا مقام المکر

घु

घुसिया हाकिम मुसिया चाकर।

(सं) रक्षको भक्षको नेष्टो भृत्यश्चोत्तरदायकः। (अं) (Lit.) The bribe

taking Judge and an insubordinate servant, both undesirable.
(उ) چاکر چور حاکم رشوت خور
(फ़ा) از حاکم راشي وچاکر دزد امید حفظ مدار

घो

घोड़ा चाहिये विन्नायक को फिरते से आना।

(सं) यावत्ते श्रुतिगं वृत्तं तावन्मे मरणं भवेत्। (अं) (Lit.) It would be all over with the patient before the medicine is applied.
(उ) خاک ہوجائینگے ہم تمکو خبر ہونے تک
(फ़ा) تاتریاق از عراق آوردہ شود مار گزیدہ مردہ شود (अ) الملدوغ یموت حتے یرکب الترياق

घोड़ों को घर कितनी दूर।

(सं) किं दूरं व्यवसायिनाम्। (अं) Where there is a will there is a way.
(उ) ہمت سے کوئي شے دور نہیں
(फ़ा) از ہمت چیزي دور نیست

घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या।

(सं) तृणानामुपरि कियान् स्नेहः स्यादाशुशुक्षणेः। भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम्। (अं) Be prudent in your mercy.
(उ) گھوڑا گھاس سے دوستي کرے تو کھائے کیا (फ़ा) رحم را نیز حدے ست

घोड़े का गिरा सम्हल सकता है नज़र का गिरा नहीं।

(सं) न हि पुनर्घटते विमनस्कता। उत्तिष्ठतेऽश्वात्पतितो न विश्वासात् कदाचन। (अं) Honour lost all lost. (उ) گھوڑے سے گرکو اوٹھتے ہیں نظر سے گر کو نہیں (फ़ा) نام بلند بہ از بام بلند (अ) الاعتبار خیر من القنطار

च

चतुरन की बलिहार समझ जात एक सैन मों।

(सं) अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः। (अं) A word is enough to the wise.
(उ) عاقل کو اشارہ بس ہے
(फ़ा) عاقلے را اشارۂ کافي است (अ) العاقل تکفیہ الاشارہ

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।

(सं) शरणं किं प्रपन्नानि विषवन्मारयन्ति चेत्। न त्यज्यन्ते न भुज्यन्ते कृपणेन धनानि यत्। (अं) A miser prefers putting up with miseries to spending money. *or* A miser's wealth, to be hoarded and not to be spent. (उ) دینے کے نام گھر کے کیواڑ بھی نہیں دیتے (फ़ा) چربي ازروے حوض میگیرد (अ) ابخل البخلاء

चमारों की देवी को जूतियों का हार।

(सं) यस्य देवस्य यद्रूपं तथा भूषणवाहनम्। यादृशी शीतलादेवी तादृशो वाहनः खरः। (अं) Like master, like man.

(उ) چمار کو چمڑے کا سکہ (फ़ा) از انگشت راست روغن برنمي آید

(अ) لایعذر من یقتل

चलती का नाम गाड़ी।

(सं) विपरीता जगद्रीतिः। (अं) Destitute of eyes, but called lotus-eyed. (उ) اترا شدہ مردک نام

(फ़ा) نا سزاي را چوبيني بختيار * عاقلان تسليم كردند اختيار (अ) رایت الناس قد ذهبوا * الي من عنده ذهب

चतुर को चौगुनी मूरख को सौ गुनी।

(सं) विज्ञोऽल्पेनैव जानाति मूर्खस्तु बहुबोधितः। (अं) A hint is enough for the wise. (उ) عاقل کو اشارہ بس ہے

(फ़ा) عاقلے را اشارتے کافي ست (अ) العاقل تكفية الاشارة

चना और चुगल मुंह लगे अच्छे नहीं।

(सं) चणकः सूचकश्चैव द्वावेतौ मुखलग्नकौ। त्यज्यमानौ न त्यज्येते भवेताञ्च क्षतिप्रदौ। (अं) Beware of the backbiter.

(उ) چغلے کو منھ لگانا اچھا نہیں

चा

चाकर है तो नाचाकर ना नाचे तो ना चाकर।

(सं) आदेशपालकत्वं हि केवलं भृत्यलक्षणम्। (अं) (Lit.) A servant is to carry out the command of his master.

(उ) چاکر هے تو ناچاکر نا ناچے تو نا چاکر * نوکري مين نخره کها
(फ़ा) نوکر راچه عذر (अ) المامور معذور

चाकरी चौदहवां रत्न है ।

(सं) भृत्यत्वमतिगर्हितम् । (अं) Slavery is a curse.
(उ) نوکري کهميا هے (फ़ा) گل بے اذيت خاربدست نيايد (अ) من خدم خدم

चाकरी में आकरी कैसी ।

(सं) पराधीनो हठं त्यजेत् । (अं) Service requires submission.
(उ) نوکری هي کي بهائي بندي (फ़ा) معامله نوکري مجبوري است
(अ) المامور معذور

चातुर तो वैरी भलो मूरख भलो न मित्र ।

(सं) पण्डितो हि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः । (अं) (Lit.) A learned enemy is preferable to a foolish friend. (उ) نادان دوست سے دانا دشمن اچها (फ़ा) دشمن دانا به از دوست نادان (अ) عدوعاقل خير من صديق جاهل

चाहे मार चाहे तार ।

(सं) दुःखं देहि सुखं वापि यथेच्छसि तथा कुरु । (अं) (Lit.) Keep or kill, do as you please. *or* Life or death, depends on God. (उ) سر تسليم خم هے جو مزاج يار مين آئے
(फ़ा) مرده بدست زنده (अ) امرک علي الراس و العين

चार दिना की चांदनी फेरि अन्धेरी रात ।

(सं) विहरस्व कियत्कालं पुनस्तद्गह्वरं व्रज । (अं) (Lit.) Bright fortnight does not last long. (उ) بهار دنيا چند روزه هے
(फ़ा) اين بهار باغ دنيا چند روز

चि

चिकने मुंह को सब चूमते हैं ।

(सं) सौन्दर्य्यं कस्य न प्रियम् । (अं) (Lit.) Who is not fond of beauty? *or* Beauty is liked by everyone. (उ) خوشبودار گل هر شخص کو قبول (फ़ा) شاخ گل هر جاکه رويدهم گل است (अ) حسن الامة يکثر المشترين

चिकना मुंह पेट खाली।

(सं) नोदरेऽन्नकणा भाति मुखे ताम्बूलचर्बणम्। (अं) A smiling face hiding a heavy heart. (उ) چکنا مہنہ پیٹ خالي

चिराग़ तले अन्धेरा।

(सं) तमोऽधस्तात्प्रदीपस्य। कोऽपि वेत्तुं न शक्नोति स्वाधिकारं स्वतो जनः।

(अं) Darkness under the lamp. (उ) چراغ کے تلے اندھیرا

مشعلچي آپ اندھا (फ़ा) پاے چراغ تاریک میباشد (अ) یکسیوالناس واسة عاریة

चिकने घड़े पर पानी।

(सं) सच्छिक्षया न मूर्खान्तः स्पृश्यते वारिणाऽब्जवत्। (अं) Water on duck's wings. (उ) چکنے گھڑے پر بوند نہیں ٹھہرتي

(फ़ा) هیچ تاثیرے ندارد پند بر نالایقے (अ) یہدے فلایہتدے

चिड़ियों के शिकार में शेर का सामान।

(सं) स्वल्पेऽपि कार्य्ये सुमहान् प्रयत्नः। (अं) Levelling a gun to kill a mosquito. (उ) گیدڑ کا شکار کرنے جاو تو شیر کا سامان کرو

(फ़ा) عاقل آنست کہ اندیشہ کند پایان را (अ) من اورى الفکرفي العواقب امن من سهام القدم

ची

चील के घर क्या पारस होता है?

(सं) भूतगृहे का वरिवार्त्ति सम्पत्। (अं) (Lit.) Can you expect a philosopher's stone from the nest of a hawk?

(उ) بلي کے گھر ہیںھس نہیں لگتي (फ़ा) بلے گنجینہ درویرانہ باشد

(अ) رفعتہ علي الرفعت

चीज़ न रखावे आपनी चोरे गाली दे।

(सं) अव्यवस्थितचित्तानां विनिपातः पदे पदे। (अं) The door kept unlocked invites the thief. (उ) اپنا دروازہ بند نہ رکھے پڑوسي کو چور سمجھے

चींटी के मरते समय पर आते हैं।

(सं) विनाशकाले विपरीतबुद्धिः (अं) The ant grows wings

but to die. (उ) گیدڑ کی جب موت آتی ہے تو گاؤں کی طرف دوڑتا ہے
(फ़ा) اجل سگ که آید در مسجد خواب کند
(अ) اذا جاء اجل البعیر حام حول البیر

चु

चुन्नी कहै मोहि घी से खावो।

(सं) दुर्जनः साधुसङ्गेन साधुर्भवितुमर्हति। (अं) Empty vessel makes much noise. (उ) بادل جو گرجتے ہیں وہ برسا نہیں کرتے
(फ़ा) صدای دهل از خالی بودن شکم است (अ) رب صلف تحت الراعدة

चुपको रह चन्दन यहां करीलन को वन है।

(सं) विद्वत्सभासु मूर्खेण विदुषा मूर्खमण्डले। तूष्णीमेव सदा स्थेयं नोचेद्भवति दुर्गतिः। (अं) In an assembly of fools the wise must hold his tongue, *or* Do not cast pearls before swine.
(उ) بھینس کے آگے مردنگ کا بجانا (फ़ा) باسیه دل چه سود گفتن وعظ * نرود میخ آهنی درسنگ (अ) انک لاتسمع الموتی ولاتسمع الصم الدعاء

चू

चूहे का जना बिलही खोदता है।

(सं) पयसा पोषितः सर्पः स्वभावान्न निवर्तते। (अं) Blood tells.
(उ) سانپ کے بچے سپولے ہی ہوتے ہیں (फ़ा) بچه بط اگر چه بیضه بود * آب دریای تابسینه بود (अ) ابن الفقیه نصف الفقیه

चो

चोर जाने चोर की सार।

(सं) खगस्य भाषां खग एव वेत्ति। सहवासी विजानीयाच्चरित्रं सहवासिनः।
(अं) A soothsayer must laugh when he meets another.
(उ) ریچھ کی بولی تو قلندر ہی خوب جانتے ہیں (फ़ा) بدهمه را بدمی بیند
(अ) یقیس المرء علی نفسه

चोर न प्यारी चांदनी जैसी कारी रात।

(सं) चौराणां चन्द्रमा रिपुः। न ज्योत्स्ना रोचते तद्वच्चौरेभ्यस्तामसी यथा।

(अं) (Lit.) A moon-lit night is unpleasant to a thief.
(उ) مطلب کے وقت مصیبت بھی راحت معلوم ہوتی ہے (फ़ा) تاریکی سرمہ چشم کور موش است (अ) الزینة دون المرام نعمت الراحت

चोर बन्दीखाने तलवार सिरहाने।

(सं) कारागारे गतश्चौरः खड्गस्य किं प्रयोजनम्। (अं) (Lit.) The thief confined, the sword has no use. (उ) بس ہو چکی
نماز مصلا اوٹھایئے (फ़ा) قلم انیجارسید وسر بشکست (अ) تم المرام فقطارالسلام

चोरों कुतियां मिल गईं पहरा दे अब कौन।

(सं) मिथो विरोधिनां मेलः सदाऽमङ्गलहेतुकः। (अं) (Lit.) No thief can be detected should the guard join hands with him.
(उ) چوٹی کتیا جلیبیون کی رکھوالی (फ़ा) پاسبان اگر دزدی کند پاسبانی از که آید (अ) من استرعی الذئب الغنم فقد ظلم

चोरी और मुंहजोरी।

(सं) चौर्य्यं कृत्वाऽपि कत्थसे। (अं) (Lit.) Doing harm and still being in temper. (उ) الٹا چور کوتوال کو ڈانٹے * چوری اور سینہ زوری
(फ़ा) چه دلاور است دزدی که بکف چراغ دارد (अ) لایقضي الخصم على القاضی

चोर गये कि अन्धियारी।

(सं) गता तमोमयी रात्रिः किंवा चौरोऽगमद्द्रुतम् (अं) (Lit.) A thief does not like a moon-lit night, *or* A thief likes darkness. (उ) چور گئے که اندھیاری

चोर की दाढ़ी में तिनका।

(सं) स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः। (अं) A guilty mind is always in dread. (उ) چور کی داڑھی میں تنکا
(फ़ा) هر که خیانت ورزد دستش از محاسبه بلرزد (अ) الامین امن والخائن خائف

चोर से कह तू चोरी कर और शाह से कह तू घर पै रह।

(सं) दत्त्वैव शिक्षां हि मनोऽनुकूलां सर्वाञ्जनान्मोहयतीह धूर्त्तः।
(अं) Hunting with the hound and running with the hare.
(उ) چور سے کہنا چوری کرو اور ساہوکار سے کہنا جاگتے رہو

चोर चोर मौसाइते भइया।

(सं) समानशीलव्यसनेषु सख्यम्। (अं) Birds of a feather flock together.
(उ) چور کا بھائی گرہ کترا
(फ़ा) سگ زرد برادر شغال (अ) السامع للغیبۃ احد المغتابین

चोर चोरी से गया तो क्या हेरा फेरी से गया?

(सं) स्वभावो दुरतिक्रमः। (अं) (Lit.) Habit is a sting to be given up, *or* Black will take no other hue.
(उ) علت جاے عادت نجاے (फ़ा) جبل گردد جبلی نگردد
(अ) العادت لاترد الا بالموت

चोर का माल चण्डाल खाय।

(सं) अन्यायार्ज्जितवित्तानां कुमार्गेषु व्ययो भवेत्। (अं) Ill got, ill spent.
(उ) پاپی کی کمائی پانی میں جاتی ہے
(फ़ा) مال حرام بود بجاے حرام رفت (अ) الخبیثات للخبیثین

चौ

चौधरी हो या राव अपने काम न आवे तो ऐसी तैसी में जाव।

(सं) किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यत्र स्थिताश्च तरवस्तरवस्त एव। (अं) (Lit.) A great man too is no better than worthless, should he be of no service.
(उ) جو بندہ نوازی کرے جان اوسپہ فدا ہے * بے فیض اگر یوسف ثانی ہی تو کیا ہے (फ़ा) آتش زن در آن خانہ کہ دودش کسے نہ بیند (अ) خیر الناس من ینفع الناس

चौबे गये छब्बे होने दूबे हो आये।

(सं) प्रदीपं द्योतयेद्यावन्निर्वाणस्तावदेव सः। (अं) All grasp, all lose.
(उ) گئی نماز بخشوانے روزے گلے پڑے
(फ़ा) طمع راسہ حرفست و ہر سہ تہی (अ) طلب الکل فوت الکل

चं

चन्द देखे चन्दमुखी याद आवे।

(सं) पङ्कजं पश्यतस्तस्या मुखं मे गाहते मनः। (अं) (Lit.) The moon reminds the lover of his sweetheart.

(उ) گٹھلیاں دیکھہ آم یاد آتے ہیں (फ़ा) سخن از سخن بر می خیزد

(अ) الشیء بالشیء یذکر

चन्दन की चुटकी भली गाड़ा भरा न काठ ।

(सं) वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि । (अं) (Lit.) A little of what is useful is more valuable than a heap of trifles. (उ) سپوت ایک اچھا کپوت سو بُرے

(फ़ा) از پسر ناخلف دختر بہتراست (अ) الخلف خلف والخلف حلف

छ

छटांक भर चून चौबारे रसोई ।

(सं) बह्वारम्भो लघुक्रिया । अन्तःसारविहीनस्य प्रायेणाडम्बरो महान् । (अं) Much cry little wool. (उ) چاہے بھر کی کوٹھری میاں محلدار

(फ़ा) در خانہ آردنے و درکوچہ دوتفور (अ) مافي بیتک دقیق فاین بتاع الرقیق

छप्पर पर फूस नहीं ड्योढ़ी में नक्कारा ।

(सं) गृहे कपर्द्दिका नास्ति द्वारे नृत्यति नर्तकी । (अं) An ounce of meal and a kitchen upstairs. (उ) ڈیرہ لگائیں میاں باغ میں

(फ़ा) یوسف کجا ودسترس پیرزن کجا (अ) مافی بیتک دقیق فاین تبتاع الرقیق

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल ।

(सं) मुक्ताहारः कपेर्हस्ते । (अं) (Lit.) A necklace of pearl in a monkey's neck, *or* To cast pearl before swine.

(उ) چھچھوندر کے سر پر چمیلی کا تیل (फ़ा) زشت باشد روي ناز یعاونار

(अ) وجہہا وجہ الغول وتطلب لباس العور

छठी का दूध जवाँ पर आगया ।

(सं) षष्ठीदुग्धस्मृतिर्मेऽद्य जायतेऽत्यन्तक्लेशतः । (अं) Strong enough to recall the forgotten days. (उ) چھٹی کا دودھ زبان پر آگیا

چھٹی کا دودھ یاد آگیا

छज्जे की बैठक बुरी पड़छाहीं की छांह ।

(सं) अमार्गे गमनं पुंसामस्थाने स्थितिरेव च । उभौ भयङ्करौ लोके सर्वथा धर्म्मनाशकौ । (अं) (Lit.) It is dangerous to dwell in a building on sand. (उ) نا پایدار کا کیا بھروسہ

छीं

छींके कोई नाक कटावे कोई।

(सं) अपराधे कृतेऽन्येन दण्डोऽहोऽन्येन भुज्यते। (अं) One doth the scath another hath the scorn, *or* One doth the blame another bears the shame. (उ) بهوي كرے باندي پكڑي جاے
(फ़ा) گناه كنندگانوان ورئيس ده دهن تاوان (अ) العبد يسرق والموے يضمن

छींकते ही नाक कटी।

(सं) काकेह्युपविशत्येव तालपातोऽभवद्द्रुतम्। (अं) (Lit.) Nose is cut in cleansing the nostrils. (उ) چهينكتے هى ناك كٹى

छु

छुरी पेठे पै गिरे तो पेठे का ज्यान और पेठा छुरी पर गिरे तो पेठे का ज्यान।

(सं) उभयतः पाशारज्जुः। (अं) (Lit.) Do this way or that the result would be the same. (उ) آسمان كا تهوكا منهه كوآتاهے
(फ़ा) هركه بافولادبازو پنجه كرد ساعدسيمين خودرا رنجه كرد (अ) من نفل الى السماء رجع الى فمه

छो

छोड़ी तेरी आंगी घर जान दे नांगी।

(सं) आत्मानं सततंरक्षेद्दारैरपि धनैरपि। (अं) Let me bear the cost and save my life. (उ) چهڑي تيرى چهاچهه كئون ے بچا
(फ़ा) مرابخير تو اميد نيست بدمرسان (अ) رضيتامن نوالك بالرحيل

छोटे मुंह बड़ी बात।

(सं) अत्युच्चैर्भवति लघीयसां हि धार्ष्ट्यम्। (अं) A minnow talking like a whale. (उ) چهوٹے منهه بڑي بات * رتي سى جان سو گز كي زبان
(फ़ा) امور مصلحت ملك خسروان دانند (अ) انى انت وانن كلامك

छोड़े गांव से नाता क्या ?

(सं) का चिन्ता त्यक्तवस्तुनः। (अं) Why glance back at what has been renounced ? (उ) چهوڑے گانون سے كيا رشته

ज

जड़ काटें वा डार की बैठे जाही डार।

(सं) न ह्यात्मनीनं क्रियते मदान्धैः। (अं) (Lit.) Laying are at the joint of the branch whereon seated.

(उ) جس هانڈي مين كهاؤن اُسى مين چهيد كرين (फ़ा) نمک خوردن و نمكدان شكستن (अ) كفران النعمت اشد من الكفر

जड़ से बैर पत्तों से यारी।

(सं) स्वामिना क्रियते वैरं भृत्यैः सार्द्धन्तु मित्रता। (अं) (Lit.) To be friends with the son and in enmity with the father.

(उ) گڑ كهايئں گلگلون سے پرهيز (फ़ा) شكر خوردن و از نيشكر پرهيز كردن

(अ) قتلوا سبط النبي و حرموا قتل البعوضه

जनती न ढोल बजते।

(सं) पुत्रे प्रजायमाने वै श्रूयते ढोलनिस्वनः (अं) (Lit.) A great fool. (फ़ा) روستايان گلبدن (उ) كاٹهه كا اُلو

(अ) ابن هبنقه

जनम न देखो बोरिया सुपने आई खाट।

(सं) आजन्म काकिणी येन नेक्षिता जगतीतले। सौवर्णपेटिका तेन स्वप्ने दृष्टेति कौतुकम्। (अं) Honey is not for the ass.

(उ) يه مونهه اور مسور كي دال (फ़ा) حلوا خوردن را روے بايد (अ) لباس الحرير لا يليق بالفقير

जने कोई गोंद मखाने खाय कोई।

(सं) विश्वासं स्त्रीषु वर्जयेत्। (अं) God cures and doctor takes fees. (उ) انڈے سيوين بى فاخته كوے ميوے كهايئں

(फ़ा) كوه را فرهاد كندو لعل را پرويز يافت (अ) يكسب الوالد يا كل الولد

जब आवे बरसन को चाव पुरवा गिने न पछुवा बाव।

(सं) अनवः सनवश्चैव सानुकूले विधातरि। भाग्यं फलति सर्वत्र।

(अं) (Lit.) Fortune favouring, everything becomes favourable. or, Lucky men need little counsel.

(उ) خدا دیتا ھے تو چھپر پھاڑ کے دیتا ھے (फ़ा) با هر كه راست آید از چپ و راست آید (अ) فضل الله یوتیه من یشاء

जब तब दिल्ली तँवरों की ।

(सं) यदा कदा क्षत्रियाणां राज्यं स्याद्भारते भुवि । (अं) (Lit.) Sometimes the kshatriyas reigned in Delhi.
(उ) هرن کتنا هي اونچا کودے آخر زمین پر هی آکر گریگا (फ़ा) آخر گذر پوست بد باغان است (अ) انا لله وانا الیه راجعون

जब नटनी बांस पर चढ़ी घूंघट क्या ?

(सं) युद्धे किं दुन्दुभेर्भयम् । (अं) (Lit.) A Dancing girl, but hiding the face under a veil ! (उ) عشق میں تیرے کوہ غم سر پہ لیا جو ہو سو ہو (फ़ा) هرچه بادا باد ماکشتی در آب انداختیم (अ) المیت یخاف من القبر

जब बोलो जब रामही राम ठाली जिह्वा कौने काम ।

(सं) रामनामाख्यपीयूषं पिव जिह्वे निरन्तरम् । (अं) (Lit.) Always think about God. or, Vain is the tongue not uttering the name of God (उ) یاد مولیٰ میں شاد رہ هردم (फ़ा) هردم خدا را یاد کن دل را ز غم آزاد کن (अ) اذکرو نی اذکرکم

ज़बरदस्त के बीसो बिस्वे ।

(सं) समर्थों यो नित्यं स जयतितरां कोऽपि पुरुषः । (अं) Might is right. (उ) جسکي لاٹھی اُسکی بھینس (फ़ा) دست زور بالا (अ) الملک لمن غلب

ज़बरदस्त के दो भाग ।

(सं) भाग्यं प्रभूणां बलवत्तरं हि । (अं) (Lit.) The powerful have the lion's share. (उ) جسکی تیغ اُسکی دیگ (फ़ा) دست زور بالا (अ) الملک لمن غلب

जबलग सनहकी में भात तब लग तेरो मेरो साथ ।

(सं) लोकः स्वार्थानुगः सदा । (अं) (Lit.) A bee haunts the flower so long as it has honey. or, Prosperity gains

friends. (उ) آتا نبڑا بوچا سگّا (फ़ा) هرکرا دیدم بعالم آشناے مطلب است
(अ) اللهم اغفرلی

जबलग सांसा तब लग आशा।

(सं) वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्। (अं) (Lit.) While there is life, there is hope.
(उ) امیدهی سے آدمی جیتا ہے (फ़ा) تاریشتہ در آب است امید ثمر هست
(अ) المامول خیرمن الماکول

जब भये सौ तो भाग गया भौ।

(सं) सङ्घशक्तिः कलौ युगे (अं) There is strength in numbers.
(उ) سوت بٹنے پر رسا هوتا هے (फ़ा) دو دل یک شود بشکند کوه را * پرا گندگی آرد انبوه را (अ) یدالله فوق الجماعت

ज़बान से ही बेटा बेटी पराये हो जाते हैं।

(सं) स्वकन्यापुत्रयोः पितृवाग्दानादेव जायते। विवाहो निश्चितो लोक इयं धर्म्मव्यवस्थितिः। (अं) (Lit.) A word is as good as a contract, or, A promise of marriage is as good as the marriage itself. (उ) وعدہ آسان هے وعدہ کی وفا مشکل هے
(फ़ा) اے من غلام آنکه دلش بازبان یکے است (अ) الكريم اذا وعدوفى

ज़बान से निकली अम्बर चढ़ी।

(सं) षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः। (अं) Once out always out.
(उ) بات کہی اور پرائی هوئی (फ़ा) رازخود رابکسے مگوي
(अ) كل سرجاوزا لاثنين شاع

ज़र है तो नर है नहीं पंछी बे पर है।

(सं) यस्यार्थाः सपुमान् लोके। ऽन्यथाऽपक्षो विहङ्गमः।(अं) A man withuot money is like a bow without arrow. (उ) ناداري سو عیبون کا ایک عیب هے (फ़ा) انسان بے زر طائر بے پر است (अ) من قل دینا رہ ذل مقدارہ

जलता घर कृष्णार्पण।

(सं) छिन्नबन्धं मत्स्यमवलोक्य धीवरो भणति धर्म्मो मे भविष्यतीति।
(अं) To make virtue of necessity.
(उ) اُڑا ستوا پتّرونکو (फ़ा) آب دریا مي بخشد (अ) التصدق بالمال الذي

जल लकीर जिमि जीवणो है स्थिर रहबो नाहीं ।

(सं) आयुष्यं जललोलबिन्दुचपलम् । (अं) Life is short.
(उ) موت سے کسکو رستگاري هے * آج وه کل هماري باري هے (फ़ा) انسان فانی است وزندگانی او مثل حباب نقش بر آب است (अ) كل نفس ذايقة الموت

जहां मुरगा नहीं वहां क्या सबेरा नहीं होता ?

(सं) कुक्कुटै रहिते देशे किं प्रभातं न जायते ? (अं) Cock-crow does not make the dawn. (उ) جہاں مرغ نه هون کیا وهان سویرا نہین هوتا (फ़ा) شعر—منت منه که خدمت سلطان همی کنی * منت شناس ازو که بخدمت گماشتت (अ) لايشكر الله من لايشكر الناس

जमात से करामात ।

(सं) संहतिः श्रेयसी पुसां सकुलैरल्पकैरपि । (अं) Unity is strength.
(उ) جماعت سے کرامات هے (फ़ा) آرے باتفاق جهان میتوان گرفت
(अ) يدالله فوق الجماعت

जन्म के दुःखी नाम चैनसुख ।

(सं) गर्भदासस्य नाम कुबेरः । (अं) Call a spade a spade.
(उ) کہانے کو نه ملے کہلي نام نجب‌علی (फ़ा) برعکس نہند نام زنگی کافور
(अ) صلت علي الاسدو بلت عن النقد

जबतक जीवक डंख में तबतक बीन बजाउ ।

(सं) यावत्तैलं तावद्व्याख्यानम् । (अं) (Lit.) Go on playing on harp so long as life is in me. (उ) اب تو آرام سے گذرتی هے عاقبت کی خبر خدا جانے (फ़ा) دنیا بامید قائم است (अ) المامول خیرمن الماکول

जब आया देही का अन्त जैसा गदहा वैसा सन्त ।

(सं) यमस्य करुणा नास्ति नास्ति जाति विचारणा । (अं) Death is a great leveller. (उ) قبر مین هر شخص کو سارهے تین هاتهه جگه ملتی هے

जब भी तीन अब भी तीन जब पाये तब तीन ही तीन ।

(सं) प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः ।

(अं) There is strength in numbers. or (Lit.) Misfortune follows the hopeless wherever they may go.

(उ) پورب جاؤ یا دکھن وهی کرم کے لچھن

जवानी दिवानी होती है।

(सं) यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता । एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्। (अं) (Lit.) Youth makes one mad.

(उ) انسان کو جوانی مین کچھہ سوجھتا نہین (फ़ा) درایام جوانی چنانکه افتدودانی

(अ) الشباب شعبة من الجنون

जहां कांसा वहीं बिजली का सांसा।

(सं) प्रकर्षमाधारवशं गुणानाम्। (अं) (Lit.) It is the bell metal that glitters under the flash of lightning.

(उ) روپیه کے سب لاگو هین (फ़ा) مال خودرا بدوست و دشمن مغماے

(अ) وانه لحب الخير لشديد

जहां गढ़ा होता है वहीं पानी मरता है।

(सं) छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति। (अं) (Lit.) Water naturally flows downwards.

(उ) چور کی داڑھی مین تنکا

(फ़ा) گردن بےطمع بلندبود (अ) الامین امن والخائن خائف

जहां गाय वहीं गाय का बछड़ा।

(सं) यत्र गुरवस्तत्रैव शिष्याः। (अं) (Lit.) Where there is the cow, there is the calf. or, Where there is the king there is the Court.

(उ) ملا كي دوڑ مسجد تک

(फ़ा) دیوانه کجا باشد درکوه وبیابا نہا (अ) مهما تكن اكن

जहां जाय भूखा वहां पड़े सूखा।

(सं) दुर्भगा यत्र गच्छन्ति यान्ति तत्रैव चापदः। (अं) (Lit.) Ill luck follows an unfortunate man wherever he may be. or, All my swans have turned out geese.

(उ) جہان گئے داڑھو رانی وهان پڑا پتھر پانی (फ़ा) دولت مساعدت نکندبےنصیب را

(अ) زرع الشقی یمسک المطر

जहां तेल देखा वहीं जनने को बैठ गई ।

(सं) भुज्यते यत्र लभ्यते । (अं) Wasps haunt the honey-pot.
(उ) جہان ملا کونڈا پرات وھان گنوائی ساري رات (फ़ा) شکم بندہ برائے نان
دھد جان (अ) الجایع لایخاف المھالک

जहां दुल्हा वहीं बारात ।

(सं) यत्र रामस्तत्रैवायोध्या । (अं) Where the king is there is the court.
(उ) دولہا کے دم کے ساتھہ یہ ساري برات ھے
(फ़ा) خیال درھمہ عالم بگشت و بازآمد * کہ از حضور تو خوشتر ندید جاے را
(अ) مھماتکن اکن

जहां फूल वहां कांटा ।

(सं) यत्र रत्नानि तत्रैव मकराः । (अं) No rose without thorn.
(उ) گل کے پہلو میں خار ھوتا ھے (फ़ा) ھر جا کہ گل است آنجاخاراست
(अ) مع کل راحت آفة

जहां मेरो सैयां वही मेरो गइयां ।

(सं) अस्ति प्राणपातिर्यत्र तत्रैव वसतिर्मम । (अं) Where there is the king there is the Court.
(उ) بے میربازي بتر
(फ़ा) دیوانہ کجا باشد درکوہ وبیابا نہا (अ) مھماتکن اکن

जहां रूख नहीं वहां अरण्डा ही रूख ।

(सं) निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते । (अं) A figure among cyphers.
(उ) اندھون میں کانا راجہ
(फ़ा) خرس درکوہ بوعلی سینا (अ) الھرت سلطان فی الفیران

जब भूख लगी भड़ुए को तब तन्दूर की सूझी और पेट भरा तब दूर की सूझी ।

(सं) सर्वः स्वार्थं समीहते । (अं) The bond of self-interest lasts till the end is gained.
(उ) پیٹ بھرے پر کھٹا میٹھا
(फ़ा) سنگ سبز قلیہ ترش (अ) الکاب الشبعان یخلص الحلیب

जब बिगड़े जब सुघड़ नर क्या बिगड़ेगा कूढ़ । मट्ठे का क्या बिगड़े जब बिगड़े जब दूध ।

(सं) कलङ्किते कः कलङ्कः महतामेव तद्भयम् । (अं) The black cannot be further blackened.
(उ) بننے والاھی بگڑتا ھے

जहां न पहुँचे रवि तहां पहुँचे कवि।

(सं) अद्भुतेयं कवेः सृष्टिर्ब्रह्मणोऽपि गरीयसी । कवयः किं न जल्पन्ति ।

(अं) There is nothing in creation beyond the poet's fancy. or, the flight of fancy surpasses all.

(उ) جہاں سورج اور چاند نہ پہونچیں وہاں شاعر کا تخیل پہونچتا ہے

जबां शीरीं मुल्कगीरी।

(सं) यदिच्छसि वशीकर्त्तुं जगदेकेन कर्म्मणा। परापवादशस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय। (अं) Soft word turneth away wrath.

(उ) میٹھا بچن سب سے زبردست جادو ہے (फ़ा) لامنیکو دام دلہا

(अ) كلام المحبوب ضياء القلوب

जगन्नाथ का भात जगत पसारे हाथ।

(सं) तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा। (अं) God's gifts are for all. (उ) خدا کا فضل سب پر یکسان ہے

(फ़ा) رویم بوصف زندان وهرچه باداباد (अ) الميت لايخاف من القبر

जब ओढ़ लीनी लोई तब क्या करेगा कोई।

(सं) निर्लज्जस्य कुतो भयम्। एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत्।

(अं) No shame for the shameless. (उ) بے حیا سب سے زبردست ہے

जा

जाकी अपकीरति छाय रही जग सो यमलोक गयो न गयो।

(सं) सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। (अं) Death is better than disgrace. (उ) بےعزتی کے جینے سے عزت کا مرنا بھلا ہے

(फ़ा) مردن به نیکنامی به از زیستن به بدنامی (अ) الموت في عز خير من حياة في ذل

जाके फटी नहीं बिवाई वह क्या जाने पीर पराई।

(सं) न हि बन्ध्या विजानीयाद्गुर्वीप्रसववेदनाम्। लक्ष्मीवन्तो न जानन्ति द्ररिद्राणां हि वेदनाम्। (अं) The wearer only knows where the shoe-pinches. (उ) جسپر گذرتی ہے وہی خوب جانتا ہے

(फ़ा) تندرستان را نباشد درد ریش (अ) لم نصيب بمصيبتي

जाको प्रभु विपता देहीं वाकी मति पहिले हरलेहीं।

(सं) विनाशकालेविपरीतबुद्धिः । प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति। (अं) Fate drives one to despair.
(उ) گیدڑ کی موت آتی ہے تو گانوں کی طرف دوڑتا ہے (फ़ा) اجل سگ
که آمد درمسجد خراب کند (अ) اذا جاء اجل البعیر حام حول البیر

जाको राखे साइयां मार न सकिहै कोय। बाल न बांका कर सकै जो जग बैरी होय।

(सं) अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं, सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति । जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ॥ (अं) (Lit.) Whom god keeps, none can kill. (उ) مارنے والے کا ایک ہاتھ
بچانے والے کے ہزار ہاتھ (फ़ा) دشمن اگر قویست نگہبان قوی تراست (अ) ومن
یعصمه الله فلایضره شئ

जाट कहै सुन जाटनी मोको तो यहां रहनो, ऊंट बिलैया ले गई हांजी २ कहनो।

(सं) प्रभोर्वचो न प्रतिवादयन्ति भृत्यास्त एवेह समृद्धिभाजः। (अं) (Lit.) Flattery is the chief thing necessary in service.
(उ) زمانه سازی بھی بڑی دانائی ہے (फ़ा) خلاف رای سلطان رای جستن *
بخون خویش بایددست شستن (अ) مخالفت الملوک عارفی العاجل ونارفی الاجل

जागेगा सो पावेगा सोवेगा सो खोवेगा।

(सं) जाग्रता प्राप्यते सर्वं स्वपता हीयतेऽखिलम्। (अं) First come, first score. or, A sleeping fox catches no poultry.
(उ) سویا سو رویا (फ़ा) گربهٔ خفته موش نمیگیرد
(अ) من لزم الرقاد عدم المراد

जात पांत पूछे नहिं कोई हर को भजे सो हरका होई।

(सं) यो मे भक्तः स मे प्रियः। (अं) Fair is not fair but that which pleaseth. (उ) جسے پیا چاہے وہی سہاگن کہلائے
(फ़ा) بندگی باید پیمبر زادگی منظور نیست (अ) یختص برحمته من یشاء

जात मद पिये लखाय।

(सं) जातिर्निर्णीयते सम्यक् स्वप्नवाक्यात्तथा मदात् । कुलमाख्याति

भाषणम् । (अं) (Lit.) Drink often leads to the disclosure of truth. (उ) شراب انسان کي کسوٹی هے (फ़ा) گوهر هر کسي از بادہ پدیدارشود (अ) یعرف همته الرجل بشرب الخمر

जादू टोना है सखी भूल करो मत कोय । पिया कहै सो कीजिये आपही वश में होय ॥

(सं) वशीकरणमन्त्रोऽयं भर्तुरादेशपालनम् । (अं) (Lit.) Devotion is the secret of influencing the husband.

(उ) کام پیارا یا چام (फ़ा) مہتري در قبول فرمان است
(अ) الامرفوق الادب

जा बिधि राखे राम ताही बिधि रहिये ।

(सं) ईश्वरेच्छा गरीयसी । (अं) (Lit.) Be content in the state in which Ram (God) has placed you.

(उ) راضي هين هم اوسي مين جسمين تري رضا هے (फ़ा) راضي برضاي دوست بودن خوشتر (अ) الرضا بالقضا

जाने चोंच दी वही चुग्गा देगा ।

(सं) येन शुक्लीकृता हंसाः शुकाश्च हरितीकृताः । मयूराश्चित्रिता येन स ते वृत्तिं विधास्यति ॥ गर्भादुत्पतिते जन्तौ मातुः प्रस्रवतः स्तनौ ।

(अं) God never sends mouth but He sends meat.

(उ) رزق تو رازق کے هاتہ هے (फ़ा) هرکه جان دادنان خواهدداد
(अ) هوالرزاق ذوالقوة المتين

जावो लाख रहो साख ।

(सं) विश्वासो यदि रक्ष्येत का प्रभूतधनक्षतिः । कीर्तिर्यस्य स जीवति ।
(अं) (Lit.) Honour is worth any cost.

(उ) نام بهلا یا دام (फ़ा) نام بلند به از بام بلند (अ) الاعتبار خيرمن القنطار

जान है तो जहान है ।

(सं) प्रतीयते हि लोकोऽयं जीवत्येव मृते न तु । (अं) Live and all is attainable, and, die and all is gone.

(उ) جان هے تو جهان هے * آپ ڈوبے تو جگ ڈوبا

जाको जौन स्वभाव मिटै नहिं जी से। मीठी नीम न होय सींचो गुड़ घी से॥

(सं) या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते। निम्बः सिञ्चित आदरेण पयसा पुष्णाति नेक्षोरसम्॥ (अं) Leopard never changes his spots, or, Black takes no other hue.

(उ) نیم کي کڑواهٹ کو کسنے دور کیا ہے (फ़ा) دم سگ راست نشود

(अ) العادت لاترد الا بالموت

जाओ पूत दक्षिण वही कर्म्म के लक्षण।

(सं) भाग्यं फलति सर्वत्र। (अं) Better death than dishonour.

(उ) پورب جا یا دکهن وهي کرم کے لچهن

जाकर जेहिपर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू॥

(सं) सती च योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।

(अं) Free love is never unresponded.

(उ) سچا عشق بے اثر نهين هوتا

जा मन होय मलीन सो पर सम्पदा सहेना।

(सं) दृष्ट्वा परेषामुत्कर्षं दुःखमाप्नोति दुर्जनः। (अं) The mean-minded chafes at other's prosperity.

(उ) حسد سے دوسرون کي ترقي نهين ديکهي جا سکتي

जाका कोड़ा ताका घोड़ा।

(सं) वीरभोग्या वसुन्धरा। अधिकारः परं बलम्। (अं) Might is right.

(उ) جسکي تيغ اسکي ديگ (फ़ा) دست زور بالا

(अ) الملک لمن غلب

जाके घर में नौसौ गाय सो क्या छांछ पराई खाय।

(सं) भवन्ति गोमायुसखा न दन्तिनः। (अं) (Lit.) A king never goes a-begging.

(उ) جاکے گهر مين نو سو گاے سو کیا چهانچهه پرائي کهاے

जाके घर में माई ताकी राम बनाई।

(सं) जीवन्मातृकएवनूनमतुलं भुङ्क्ते सुखं स्वालये। (अं) (Lit.) There is nothing higher than mother's love.

(उ) جاکے گهر مين مائي تاکے رام بنائي

जाके हित चोरी करों सोइ बनावे चोर ।

(सं) यदर्थं क्रियते चौर्य्यं चोरस्तैरेव कथ्यते । पुत्रदारादिभिर्लोकस्तदर्थं तस्करोऽभवत् ॥ सुदुस्त्यजास्त्यज्यमानाः कामाः कष्टा हि शत्रवः । (अं) The black tooth of ingratitude.

(उ) جسکے لئے چوري کي جاے وهي چور بناے

जि

जिजमान चाहे नरक को जाय चाहे स्वर्ग को मुझे अपने दही पुड़ी से काम ।

(सं) यजमानहितं भूयादहितं वा भवेदिह । प्रयोजनं ममैताद्धि भवेत् स्वोदरपूरणम् ॥ (अं) Plough or not plough, you must pay your rent. (उ) مردہ دوزخ مین جاے یا بہشت مین ملا کو حلوا مانڈے سے کام (फ़ा) پیغمبر اول دعاے براے خود کند (अ) اللهم اغفرلي

जिधर जलता देखें उधर तापें ।

(सं) अन्यच्छिद्रं समासाद्य कार्य्यं साध्नोति दुर्जनः । छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्कः । (अं) A villain is like a weather-cock.

(उ) بے پیندے کا لوٹا (फ़ा) طور ملا فقانہ خوب نیست

(अ) لاالي هذا ولاالي ذاک

जिनके पड़े स्वभाव जायगा जीव से । नीम न मीठा होय सिंचो गुड़ घीव से ॥

(सं) स्वभावो दुरतिक्रमः (अं) Habit is a second nature.

(उ) رسي جل جاے پر بل نہین جاتا (फ़ा) ریسمان سوخت لیکن کجي نرفت

(अ) العادت لاترد الا بالموت

जिन ढूंढ़ा उन पाया ।

(सं) अन्विष्टं येन लोकेऽस्मिन् लब्धं तेनैव निश्चितम् । (अं) (Lit.) Ask about, and you will find it out.

(उ) جو کہوجیگا اسکے لئے کہولا جائیگا (फ़ा) ھ کہ جست یافت

(अ) من جد و جد

जिसका अगुआ अन्धा उसका लश्कर कुआं में।

(सं) अन्धस्यैवान्धलग्नस्य विनिपातः पदे पदे। (अं) A blind leading a blind, both shall fall into the pit.

(उ) جاهل کا پیر کنوین مین گرے پر گرے (फ़ा) هر کراکور رهنما باشد

(अ) اذاکان الغراب دلیله قوم سیهدیهم طریق انها لکینا

जिसके पास नहीं पैसा वह भलामानुस कैसा।

(सं) अर्थेन तु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधसः। क्रियाः सर्वा विनश्यन्ति ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥ (अं) Money makes a man.

(उ) مادر پدر برادر جو کچهه کهو سو زر هے (फ़ा) اشراف کیست که اشرفیه دارد

(अ) عزت الدنیا بالا موال لا بالفضائل

जितने मुँह उतनी बातें।

(सं) पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना। (अं) Babel of voices, babel of talk.

(उ) گئے بیچهے چیز کی قدر هوتی هے

(फ़ा) قدر هر نعمت است بعدزوال (अ) النعمت اذا فقدت عرفت

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(सं) वीरभोग्या वसुन्धरा। (अं) Might is right.

(उ) جسکی لاٹهی اسکی بهینس * زبردست کا ٹهینگا سر پر (फ़ा) دست زور بالا

(अ) الملک لمن غلب

जिसकी जूती उसका सिर।

(सं) शत्रोः साहाय्यमासाद्य तेनैव तन्निकृन्तनम्। (अं) Beat him with his own stick.

(उ) میان کی جوتی میان کا سر

जिसको पिया चाहे वही सुहागिन।

(सं) सर्वत्रादरभाग्भवेन्नृपतिभिः सम्मानितः सेवकः। (अं) (Lit.) Fortunate is she who is loved by her husband.

(उ) جسکو پیا چاهے وهی سهاگن (फ़ा) هر عیب که سلطان بپسندد هنراست

(अ) یختص برحمته من یشاء

जितना गुड़ डालो उतनाही मीठा होगा।

(सं) अधिकस्याधिकं फलम्। (अं) The more you will exert, the better you will grow.

(उ) مال کا مول ہے (फ़ा) ارزان بعلت وگران بحکمت
(अ) الرخیص بالعلت والعالي بالحکمت

जिसका खाइये उसका गाइये।

(सं) दातुर्गेयं यशो नित्यम्। (अं) (Lit.) Whose bread I eat, his praise I sing. (उ) جسکا کھانا اسکا گانا
(फ़ा) خلاف راي سلطان راے جستن * بخون خویش باشد دست شستن (अ) مخالفت الملوک عارفي العاجل و نارفي الاجل

जिसके हाथ लोई उसका सब कोई।

(सं) द्रव्येण सर्व्वे वशाः। (अं) Summer friends.
(उ) بنے کي سب خوشامد کرتے ھین (फ़ा) ناسزاي را چوبيني بختيار * عاقلان تسليم کردند اختيار (अ) رايت الناس قدذھبوالي من عندہ ذھب

जिय बिनु देह नदी बिनु वारी। तैसे नाथ पुरुष बिनु नारी॥

(सं) यथा प्राणैर्विना देहः सरिता वारिणा विना। तथा पत्या विना पत्नी विद्यतेऽत्र मृतैव सा। (अं) (Lit.) No woman can live without protection. (उ) بے مرد کي عورت کا دل رنجیدہ
(फ़ा) زن بے مرد پر ازبیم ودرد

जी

जीते थे तो लीखों भरे मर गये तो मोतियों जड़े।

(सं) मृते परमसत्कारो जीविते तु निरादरः। (अं) A thing when lost, is valued most. (उ) گئے پیچھے چیز کي قدر ھوتي ھے
(फ़ा) قدر ھر نعمت است بعد زوال (अ) النعمت اذافقدت عرفت

जीना तब लग सीना।

(सं) न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्म्मकृत्। (अं) (Lit.) Work is the mission of life. (उ) دنیا کے کام تو کبھي ھوتے نہین تمام
(फ़ा) کار دنیا کسے تمام نکرد ھرچہ گیرید مختصر گیرید (अ) ماتم الرجل بالعمام

जीयेगा सो खेलेगा फाग।

(सं) जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्। (अं) Who live unto this day, will *holi* play. (उ) کل کي خبر کسکو ھے
(फ़ा) تاسال دگرمے کہ خورد زندہ کہ ماند (अ) انک لاتدری ماعبدالله مالسمک غدا

जीती मक्खी कोइ न खावे।

(सं) दोषं ज्ञात्वा दोषिणो वै नैव क्रियेत संग्रहः। विज्ञाय मक्षिकां नात्ति।

(अं) No one with eyes open can fall into a sink.

(उ) جیتی مکھی نہیں نگلی جاتی (फ़ा) دیدہ ودانستہ در بلاافتادن نشاید

जु

जुत जुत मरें बैलवा बैठे खायें तुरंग।

(सं) अन्येनोपार्ज्जितं वित्तं सुखमन्यैश्च भुज्यते। (अं) (Lit.) One labours hard and another eats the fruit.

(उ) محنت کرکر مرغی مرے بچہ کھائیں بلار (फ़ा) کوہ رافرہاد کند ولعل را پرویز یافت

(अ) یکسب الوالد ویأکل الولد

जू

जूठा खाइये मीठे की लालच।

(सं) मिष्टान्नस्य प्रलोभेन ह्युच्छिष्टं भुज्यते नरैः। लोभः पापस्य कारणम्।

(अं) (Lit.) Temptation leads to hell.

(उ) گناہ اور بے لذت (फ़ा) یکے حرام دوم شلغم (अ) لایحسن الاساءۃ من غیر التذاذ

जूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारते।

(सं) अतिलोभो न कर्त्तव्यः। (अं) He that grasps at too much, holds nothing fast.

(उ) حاتم طائی کی گور پر لات مارتا ھے

(फ़ा) برگور حاتم طائي لکد میزند روغن از رنگ میکشد (अ) ابخل البخلاء

जे

जेते मुख तेती बारता।

(सं) भिन्नरुचिर्हि लोकः। जनाननेकः करमर्पयिष्यति। (अं) As many men, as many words.

(उ) جتنے منہہ اُتنی بات

(फ़ा) هرزبان را گفتگوے دیگراست (अ) کل یتکلم بلسانہ

जेह जेतो निश्चय तेतो देत दई पहुँचाय। शक्कर खोरे को मिले जैसे शक्कर आय॥

(सं) निश्चिताध्यवसायो ना फलमाप्नोति निश्चितम्। (अं) He that

eats good meat, Shall have good meat (उ) جیسی نیت ویسی برکت (फ़ा) خدا خود میر سامان است ارباب توکل را (अ) الاعمال بالنیات

जै

जैसा काछ्र काछे वैसा नाच नाचे।

(सं) यादृशं हि तपस्तप्तं तादृशं फलमश्नुते। (अं) (Lit.) Act according to the dress you put on. (उ) جیسی دیکھی گانون کی ریت ویسی اوٹھائی اپنی بھیت (फ़ा) با مسلمان اللہ اللہ با برھمن رام رام (अ) در مع الذینا حیث دارات

जैसा देश वैसा वेष।

(सं) यत्र यादृश आचारस्तत्र वर्त्तेत तादृशम्। (अं) When you are in Rome, do as the Romans do. (उ) گنگا گئے گنگاداس متھرا گئے متھراداس (फ़ा) جاے گل گل باش و جاے خار خار (अ) درمع الدینا حیث دارات

जैसा माल वैसा मोल।

(सं) यादृशं वस्तु लोकेऽस्मिन् मूल्यं तस्य तु तादृशम्। (अं) (Lit.) As is the tree, so is its fruit. (उ) مہنگا روئے ایک بار سستا روئے بار بار (फ़ा) ار زان بعلت گران بحکمت (अ) الرخیص بالعات والعالی بالحکمت

जैसा मुँह वैसी थाप।

(सं) प्रारब्धं यादृशं यस्य भोगमाप्नोति तादृशम्। (अं) (Lit.) As is the man, so are his words. (उ) جیسی خطا ویسی سزا ککڑی کے چور کی گردن نہیں مارتے (फ़ा) بقدرجرم میباشد سزاے (अ) الجرم بغرائم

जैसा सोता वैसी धारा।

(सं) यादृक् स्रोतस्तादृगेव प्रवाहः। (अं) Like father, like son. (उ) جیسے کا تیسا (फ़ा) زادۂ ظالم ستمگرمی شود * بشکلدچون تیغ خنجرمی شود (अ) کماتدین تدان

जैसी करनी वैसी भरनी।

(सं) यादृशं कुरुते कर्म्म तादृशं फलमश्नुते। (अं) (Lit.) As you sow, so you shall reap. (उ) جیسا کروگے ویسا بھروگے (फ़ा) نیکی نیک را بدی بد را (अ) کماتدین تدان

जैसी जात वैसी बात।

(सं) यादृशी वर्तते जातिर्भाषणं तादृशं भवेत्। (अं) The words indicate the position of a man. (उ) زبان سے ملک کی پہچان هوتی هے (फ़ा) تا مرد سخن نگفته باشد عیب و هنرش نهفته باشد (अ) المرء في لسانه لا فی طیلسانه

जैसी पड़े औदशा वैसी सहे शरीर।

(सं) आपतेत्कुदशा यादृक् तामेव सहते वपुः। (अं) Bear and blame not what you cannot help, or, What cannot be cured, must be endured. (उ) خدا کا دیا سر پر (फ़ा) مرضي مولي از همه اولیٰ (अ) من رضي بالقضاء لم يسخط بعد

जैसी माई वैसी जाई।

(सं) यादृशी जननी लोके पुत्री भवति तादृशी। (अं) Like father, like son. (उ) جیسا سوت ویسا پھیٹا جیسا باپ ویسا بیٹا (फ़ा) مار نزاید جز مار بچه (अ) الولد سر لابيه

जैसे कन्था घर रहे वैसे रहे विदेश।

(सं) वासो विदेशे गेहे वा पत्युः क्लीवस्य वै समः। (अं) Far or near, all the same. (उ) هونا نهونا برابر (फ़ा) عدم وجود یکسان است (अ) سواء العاكف فيه والباد

जैसे जल वैसे मच्छ।

(सं) कार्य्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (अं) Great men, great views. (उ) بڑون کی بڑی بات (फ़ा) فکر هرکس بقدر همت اوست (अ) كلام الملوک ملوک الكلام

जैसे ऊधो वैसे माधो।

(सं) उद्धवो यादृशः प्रेमी तादृगेवाऽस्ति माधवः। (अं) (Lit.) Paul or Peter both alike. (उ) چور کا بھائی گرہ کٹ (फ़ा) سگ زرد برادر شغال (अ) السامع الغيبت احد المغتابين

जैसे तेरी कोमरी तैसे मेरे गीत।

(सं) यादृशी शितला देवी तादृशो वाहनः खरः। (अं) As the pay of the piper, so is the play. (उ) جیسے کملي ویسا گیت

जैसे गङ्गा न्हाये तैसे फल पाये।

(सं) भावानुसारेण फलं नृणां भवेत्। (अं) As you sow, so you reap.
(उ) جیسا بویا ویسا کاٹا (फ़ा) کردنی خویش آمدنی پیش
(अ) کما تدین تدان

जैसे नागनाथ तैसे सांपनाथ।

(सं) यथा पुत्रस्तथा पुत्री। (अं) What is twelve pence is a shilling. (उ) ایک توے کی روٹی کیا چھوٹی کیا موٹی
(फ़ा) سگ زرد برادر شغال (अ) السامع للغیبت احد المغتابین

जैसी बहै बयार पीठि तैसी तब दीजे।

(सं) प्रसङ्गसदृशं कार्य्यं कुर्वाणो न विनश्यति। (अं) To trim the sail according to the wind. (उ) گنگا گئے گنگاداس جمنا گئے جمناداس
جیسی دیکھی گانوں کی ریت ویسی اوٹھائی اپنی بھیت—ھوا کا رخ دیکھکر پیٹھ پھیرنی چاھئے (फ़ा) زیرکی با زمانہ ساختن است (अ) درمع الدنیا حیث دارت

जैसी जाकी भावना तैसी ताकी सिद्धि।

(सं) यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी। (अं) As the motive is, so will be result attained. (उ) بلی کو خواب میں بھي چھچھڑے ھي نظر آتے ھیں (फ़ा) تشنہ درخواب آب می بیند
(अ) الجوعان لایری في منامه الا الطعام

जो

जो इच्छा करिहौ मन माहिं। हरि कृपा कछु दुर्लभ नाहिं॥

(सं) हरौ तुष्टे मनुष्यस्य किमप्राप्यं धरातले। (अं) When God wills, all winds bring rain, or God willing nothing is impossible, or, despair is infidelity. (उ) خدا کي رحمت سے نا امید نہ ھونا چاھئے (फ़ा) ناامیداز رحمت یزدان مباش (अ) لاتقنطوامن رحمت الله

जोगी जुगुत जानी नहीं, कपड़े रँगे तो क्या हुआ।

(सं) अप्राप्ततत्त्वस्य न वेशतः फलम्। (अं) The gown does not constitute the churchman. (उ) کملی پہننے سے زاھد نہیں ھوتا

(फ़ा) در عمل کوش و هرچه خواهی پوش تاج بر سرنه وغم بر دوش
(अ) ان اللہ لاینظر الی صورکم ولکن ینظرالی قلوبکم ونیاتکم

जो चोरी करता है वह मोरी भी रखता है।

(सं) व्यभिचारे प्रवृत्तो जारः प्राक्पलायनोपायं कुरुते। (अं) (Lit.) A thief is careful enough of his means of escape.
(उ) عیب بھی کرنے کو ہنر چاہئے–عقلمندوں کی اور بلا (फ़ा) عیب کردن را ہنری باید (अ) الحکمت مفتاح السعادت

जो जाके मन में बसे सो सपने दरसाय।

(सं) जाग्रद्दशायां यत्किञ्चित् दृष्टं वापि श्रुतं जनैस्तदेव स्वप्नावस्थायामनुभूयेत निश्चितम्। (अं) A cat always dreams of mice.
(उ) بلی کو خواب میں بھی چھچھڑے ہی نظر آتے ہیں (फ़ा) شتر در خواب بیند سیب وانبہ (अ) الجوعان لایرئ فی منامہ الاالطعام

जोड़ जोड़ मर जायँगे माल जमाई खायँगे।

(सं) अन्ये मृतस्य क्रीडन्ति दारैरपि धनैरपि। (अं) The miser-hoards for other's enjoyment. (उ) مال موذی نصیب غازی
(फ़ा) نیاز پیران حق فقراست (अ) السعیدمن اکل و زرع والشقی من مات وودع

जोतेगा हल तो पावेगा फल।

(सं) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः। (अं) No gain without pain, or, Fortune favours the industrious.
(उ) خدمت سے عظمت ہے (फ़ा) نارنج نبری گنج نیابی (अ) من خدم خدم

जो बन आवे सहज में वाही में चित्त दे।

(सं) सुखसाध्यं समाचरेत्। (अं) Never do by force what can be done by fair means. (उ) گڑ سے مرے تو زہر کیوں دے
(फ़ा) کاریکہ بہ نرمی برآید درشتی درو نشاید (अ) المدارات تخرج من حجرہا دبۃ

जो विधि लिखी ललाट न कोऊ मेटि है।

(सं) यत् पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः। (अं) There is no avoiding the decrees of Fate.
(उ) ہمئے قسمت کے نوشتہ کو نہ ٹلتے دیکھا (फ़ा) نگردد قلم زانچہ گردانده
(अ) جف القلم بماهوکائن

जो मीठा खायगा वह कडुआ भी खायगा।

(सं) अश्वमारोहते यस्तु स कदाचित्पतत्यपि। (अं) Whoever is desirous of profit must be prepared loss.

(उ) مزے همفے اوٹھاے هھن مصیبت کون جھیلے گا (फ़ा) بقدر عیش مي باشد مصیبت (अ) ثم لتسألن یومئذ عن النعیم

जो धन दीखे जात आधा दीजे बांट।

(सं) सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः। (अं) Cut off the limb to save the body, or, Half a loaf is better than no bread. (उ) آدھا دیکر سب بچانا فرض ہے

जोगी जोगी लड़े खप्परों की हानि।

(सं) साधूनां कलहे नूनं केवला खर्परक्षतिः। (अं) (Lit.) The hermits fight only to break the begging bowls.

(उ) شاهونکي لڑائي مین پیادون کي موت

जो चढ़ेगा सो गिरेगा।

(सं) पतनान्ताः समुच्छ्रयाः। (अं) No rise without a fall.

(उ) هر کمال کو زوال لازم ہے (फ़ा) هر کمالي را زوالي

(अ) رب صاعد القاعد

जो किसी को कुआं खोदता है, उसको खाई तैयार रहती है।

(सं) वञ्चको वञ्च्यते स्वयम्। (अं) He who digs other's grave falls into it himself, or, The evil recoils upon the doer.

(उ) دوسرے کے لئے کنوان کھودنے والا خود اسمین گرتا ہے (फ़ा) چاه کنندہ را چاه در پیش (अ) من حفر بیرالاخیه فقدوقع فیه

जोगी काके मीत कलन्दर किसके भाई।

(सं) भिक्षुकः कस्य बन्धुः स्यात् योगी कस्य सखा भवेत्। (अं) What is the bond of kinship with the wandering mendicant?

(उ) جوگي کسکا میت قلندر کسکا بهائي

जोरू चिकनी मियां मजूर।

(सं) पत्नी विलासिनी भर्त्ता निर्द्धनः श्रमजीविकः। (अं) Ill assorted pair. (उ) بي بی حور میان مزدور (फ़ा) شوهر مزدور وزن دختر حور

जो तोको कांटा बुवे ताको बुवे तू फूल।

(सं) अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते। (अं) Return good for evil. (उ) جو تمہارے راستے میں کانٹا بکھیرے اسکے واسطے تم پھول بچھاؤ (फ़ा) بجاے خار دشمن را گل انداز

जो बोले सो घी को जाय।

(सं) मुखरस्तत्र हन्यते। (अं) Silence is golden. (उ) جاهلوں کي مجلس میں چپ رهنا عقلمندي هے (फ़ा) جواب جاهلان باشد خموشي (अ) واعرض عن الجاهلین

जोगी था सो उठ गया आसन रही भभूत।

(सं) गताः सर्वे महात्मानः परकार्यविधायकाः। तेषां स्मरणमात्रं हि विद्यते जगतीतले। (अं) (Lit.) The sages have gone, only their memory is left behind, or, Lords gone, empty chairs. (उ) جوگي اوٹھہ گیا بھبوت رهگئي—طوطا اڑ گیا پنجرا پڑا هے

झगड़ा झूठा कब्जा सच्चा।

(सं) सत्योऽधिकारो ह्यनृतं निवादः। (अं) Possession is nine points of the law. (उ) قبضه سب سے بڑا استحقاق هے

झरबेरी के जंगल में बिल्ली शेर।

(सं) स्वगृहे कुक्कुरोऽपि चण्डो भवति। (अं) (Lit.) A coward is a hero in his own house. (उ) اندهوں میں کانا راجه (फ़ा) خروس در کوه بوعلي سینا (अ) الهرة سلطان في الفیران

झार भी बनिये का बैरी है।

(सं) दुर्बले शशकः सिंहः। (अं) (Lit.) A hare proves a lion to the weak. (उ) کمزور کے لئے سپاهي بهادر هیں

झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी।

(सं) सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्। मूर्खः स्वल्पविधिं कृत्वा समिच्छति महाफलम्। (अं) More haste, worse speed. (उ) جهٹ پٹ کي گهاني آدها تیل آدها پاني

झारि बिछाई कामरी रहे निमाने सोई।

(सं) यदर्थं सुमहान् यत्नस्तस्मै किञ्चिन्न रोचते। (अं) Not liked by him for whom intended. (उ) بندر کیا جانے ادرک کا سواد

झोपड़ी में रहे महलों के सपने देखे।

(सं) वन्यः शृगालः कलभत्वमिच्छेत्। (अं) Alanaschar's dream.
(उ) رهنا جهوپڑے میں خواب محلوں کا (फ़ा) کوري و نظربازي
(अ) وجهها وجهالغول وتطلب لباس الحور

ट

टट्टी की ओट शिकार।

(सं) मधुरेणैव गीतेन हरिणानां बधो वने। (अं) Attacking from behind. (उ) اوت سے نشانه بازي

टके की बुढ़िया नौ टका मूड़मुड़ाई।

(सं) अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छा। (अं) A pound's fare on a penny's luggage (उ) دمڑي کي روئي ٹکا دهنکائي
(फ़ा) آفتابه خرچ لحم (अ) كراية المال ازيدعلي راس المال

टके के वास्ते मसजिद ढाहना।

(सं) अल्पहेतोर्बहुत्यागः। (अं) A kingdom for a horse, or, To sell the religion for money, or, I suffer a great loss for a trifling gain. (उ) ٹکے کے واسطے مسجد ڈهانا

टके की मुरगी छः टके महसूल।

(सं) स्तोकं फलञ्चैव महान् प्रयासः। (अं) A pound's tax on a penny's luggage. (उ) دمڑي کي بڑهيا ٹکا منڈائي
(फ़ा) آفتابه خرچ لحم (अ) كراية المال ازيدعلي راس المال

टु

टुकड़े देकर बछड़ा पाला सींग लेकर मारन आया।

(सं) मातुर्जङ्घा हि वत्सस्य स्तम्भीभवति बन्धने। (अं) To return evil for good. (उ) همارې تو بلي اور همين سے مياون

(फ़ा) کس نیاموخت علم تیرازمن که مراعاقبت نشانه نه کرد (अ) جزو الذئب یغدے بدر الشاة فیکبرو یا کلها

ट

टूटी कमान दो जने डरे।

(सं) धनुर्भङ्गे द्वयोर्भयम्। (अं) (Lit.) The break of a bow is doubly dangerous. (उ) ایک تر دو طرف هوتا هے
(फ़ा) جنگ دوسر دارد (अ) الحرب لهطریقان

टूटी की बूटी नहीं।

(सं) भ्रष्टस्य काऽन्या गतिः। मूर्खस्य नास्त्यौषधम्। (अं) What cannot cured, must be endured. (उ) موت کے آگے کوئي نهيں چلتي
(फ़ा) موت را دوائے نیست (अ) ان الموت الذي تفرون منه فانه ملاقیکم

टूटे पीछे फिर जुड़े गांठ गठीली होय।

(सं) त्रुटितानां सुसन्धाने दृढा ग्रन्थिः प्रजायते। (अं) (Lit.) The torn pieces being tied together the knot become big.
(उ) تاگا ٹوٹے گانٹھ کہاے یه عیب کبهي نه جاے (फ़ा) پیکان اگر از زخم بیرون آید خلش باقي ماند (अ) ولاتکونوا کا لتي نقضت غزلهامن بعد قوة انکاثاً

ठ

ठगाने से ठाकुर कहाता है।

(सं) वञ्चितो बुद्धिमाप्नुयात्। (अं) (Lit.) Deception brings wisdom. (उ) ٹهگانے سے ٹهاکر کہاتا هے
(फ़ा) زر ریزد زرد شود (अ) الدراهم بالد را همتکسب

ठग जाने ठगही की भाषा।

(सं) शठस्य शाठ्यं शठ एव वेत्ति। (अं) (Lit.) The wickedness of a man may be detected by one who is himself wicked.
(उ) چور کو چور خوب پهچانتا هے (फ़ा) رموز عاشقان عاشق بداند
(अ) یقیس المرء علي نفسه

ठगाये ठाकुर बजे।

(सं) प्रतारितः शिक्षति पाटवं नरः। (अं) (Lit.) Deceptions

brings money. (उ) روپیہ سے روپیہ پیدا ہوتا ہے
(फ़ा) زر ریزد زردار شود (अ) الدراهم بالدرا هم تکسب

ठठेरे ठठेरे बदलाई।

(सं) ब्राह्मणो ब्राह्मणं दृष्ट्वा श्ववाहो घुर्घुरायते। (अं) Exchange in kind. (उ) کائیں کائیں کوے کی آواز ہے
(फ़ा) سخن بد آواز گفتن است (अ) کماتقول تقال

ठा

ठाकुर चाकर दोऊ नीके।

(सं) यथा राजा तथा प्रजा। (अं) Like master like man.
(फ़ा) وزیرے چنیں شہریارے چنان (उ) جیسا آقا ویسا چاکر
(अ) العبدعلی خصال مولاہ

ठाढ़ा मारे और आगे धरले।

(सं) शूराः स्वदोषं नहि गोपयन्ति। (अं) (Lit.) To beat and to cares. (उ) زبردست مارے اور رونے نہ دے
(फ़ा) دست زور بالا (अ) الملک لمن غلب

ठाड़ा मारे तो गरीब क्या कोशने से भी गया।

(सं) बलिनां शासने किं न दुर्बलाः क्रोशितुं क्षमाः ? (अं) (Lit.) Harm to be returned at least with abuse.
(उ) زبردست کا هاتهه چلے غریب کی زبان (फ़ा) هر که دست ازجان بشوید هرچه دردل داردبگوید (अ) اذا یئس الانسان طال لسانہ

ठाले से बेगार भली।

(सं) अकरणात् किमपि करणं श्रेयः। (अं) (Lit.) Better to be impressed than to remain idle. (उ) خالی بیٹھے شیطان سوجھے
(फ़ा) مردبیکار یاشود دزد یاشود بیمار (अ) الکسل باب من الزندقة

ठो

ठोकर खावे बुद्धि पावे।

(सं) बाधां प्राप्तो भवति कुशलः सर्व्वकार्य्येषु धीरः। (अं) Failure

is the pillar of success. (उ) تجربه عقلمندی کي جڑ ہے

(फ़ा) آزمودہ کار بازي نخورد (अ) الحكمة بالتجربة

ठोकर लगे जब आंख खुले।

(सं) भवति विज्ञतमः परिबाधितः। (अं) Failure makes one cautious. (उ) ضرورت ایجاد کي جڑ ہے

(फ़ा) حاجت مادر اختراع است (अ) الاحتياج ام الاختراع

डा

डाकनवारो घरो सिर पै फिर लाज कहां खर पै चढ़िबेकी।

(सं) शोचामि गोपगृहिणी कथमद्य तक्रम्। (अं) (Lit.) It is not disgraceful to mount upon an ass with the custodian of honour at the back. (उ) اونٹ کي چوري نو کیا نیوھرے نیوھرے

(फ़ा) زدیم بوصف رندان وھرچه باداباد (अ) الميت لايخاف من القبر

डाकिनी खाय तो मुँह लाल न खाय तो मुँह लाल।

(सं) मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः। (अं) Once a thief always a thief. (उ) نامي چور مارا جاے

(फ़ा) نام رستم به از رستم (अ) تسمع بالمعيدي خير من ان تراه

डू

डूबते को तिनके का सहारा बहुत है।

(सं) वचनेनापि साहाय्यमापन्नस्य महाबलम्। (अं) Drowning man catches at a straw. (उ) ڈوبتے کو تنکے کا سہارا بہت ہے

(फ़ा) غریقے دست اندازد بکا ہے (अ) الغريق يتشبث بالحشيش

डूबा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल।

(सं) कुपुत्रेण कुलं नष्टम्। (अं) (Lit.) Kabir, the renegade had for his son, Kamal, the great saint.

(उ) ڈوبا بنس کبیر کا که اوپجے پوت کمال

डूबी कन्त भरोसे तेरे।

(सं) आशा हि परमं दुःखम्। (अं) (Lit.) To be hoping is

very trying. (उ) انتظار بڑا آزار ہے
(फ़ा) انتظار بدتراز مرگ است (अ) الا نتظار اشدمن الموت

डो

डोकरी को और राजकथा से क्या मतलब।

(सं) अधिकारविहीना या चर्चा सा नैव शोभते। (अं) (Lit.) What has an old woman to do with the politics ?
(उ) رتي سي جان سوا گز كي زبان (फ़ा) گدائے گوشہ نشيني تو حا فظا مخروش×
رموز مصلحت ملک خسروان دانند (अ) اين انت واين كلامک

डोमन बजावे चपनी जात बतावे अपनी।

(सं) कर्म्मणा ज्ञायते जातिः। (अं) A dog, even if a crowned king, will continue to gnaw a bone.
(उ) كمينه كو منهه لگانا اچها نهين (फ़ा) باز گردد باصل خود هر چيز
(अ) كل شئ يرجع الي اصله

ढ

ढलती फिरती छाया कभी इधर कभी उधर।

(सं) दशा नराणां परिवर्तते सदा। (अं) The world is shifting from side to side. (उ) هر گهڑي منقلب زمانه هے
يهي دنيا كا كارخانه هے (फ़ा) جهان را حالها يكسان نماند (अ) وتلک الايام
له نداولهابين الناس

ढा

ढाक के सदा तीन पात।

(सं) अहर्निशं वर्षति वारिवाहः तथापि पत्रत्रितयं पलाशे। (अं) (Lit.) To bear three leaves in every stem is the nature of the *palasha* tree. (उ) پهاڑ كهودا چوها نكلا (फ़ा) كوه كندن و كاه برآوردن
(अ) آلان كماكان

ढो

ढोल गवांर शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।

(सं) ताडनाद्वशमायान्ति बाद्यं शूद्राश्च योषितः। (अं) Beat a

drum and it will give out sound (उ) گنا پیسنے سے ھي رس دیتا ھے (फ़ा) اگر نیک بودے سر انجام زن زنان‌رامزن نام بودے نه زن

(अ) لاترفع عصاک عن اهلک

त

तजी प्रतिज्ञा मोर मैं तोर प्रतिज्ञा काज।

(सं) अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति। (अं) Sacrifice your interest for other's sake. (उ) توري خاطر همين ٠قدم هے

(फ़ा) اگر ساقي تو باشي‌مے توان خورد (अ) رضاء الحبیب یتقدم علي رضاء

तन तकिया मन विश्राम जहां पड़े वहीं आराम।

(सं) उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्। (अं (Lit.) To a lofty-minded man every one is a relation.

(उ) جہان پدتن گئي کملي فقير خانه هوا (फ़ा) درویش هرکجا که شب آمد سرا‌ےاوست

(अ) این بیت الفقیر فهو بیته

तन तजा तो कलन्दर ही राजा।

(सं) त्यक्ते शरीरेऽधिपतिर्मितम्पचः। (अं) Death is destroyer of all cares. (उ) ایک تندرستي اور هزار نعمت

(फ़ा) یک تندرستي به از هزار نعمت (अ) الصحت و الفراغ نعمتان

तन पर नहीं लत्ता मिस्सी मले अलबत्ता।

(सं) नूपुरौ नैव शोभेते वस्त्राभावे हि पादयोः। (अं) Wearing ornaments on a naked body. (उ) کالي گهوڑي بدهوا چاو

(फ़ा) یوسف کجا ودسترس پیرزن کجا (अ) ماني بيتک دقیق فاین تبتاع الرفیق

तय की तेरी हाथ की मेरी।

(सं) वस्तु स्वायत्तमेवाहो जनेभ्यो रोचते सदा। (अं) Plough or not plough, you must pay your rent.

(उ) پہلے اپنا پهر پرایا (फ़ा) آشنائي ملا تاسبق (अ) اللهم اغفرلي

तलवार गिरी और परजा फिरी।

(सं) दण्डो दमयते प्रजाः। (अं) Spare the rod and spoil the child. (उ) حکومت زور کي هے

(फ़ा) ریاست بے سیاست نمی باشد (अ) ادب الریاست صعب السیاست

तलवार से भी बड़ा बात का घाव होता है।

(सं) अस्त्रादपि कठोराणि दुर्वाक्यानि सतां हृदि। (अं) Pen is mightier than the sword. (उ) چهري کا تير کا تلوار ؛ تو گهاو بهرا لگا جو زخم زبان کا رها هميشه هرا

तमाम रात पीसा और पारी में सकेला।

(सं) सकलश्रमाजीवनमेव सञ्चितं वित्तं क्षणाद्भ्रातृगणैर्विभाजितम्।
(अं) Labour without fruit. (उ) رات بهر پيسا اور مقوي بهر أتهايا (फ़ा) كوه كندن وكاه بر آوردن (अ) الآن كماكان

तबेले की बला बन्दर के सिर।

(सं) भूपस्य दोषेण प्रजा निपीडिताः। (अं) Putting Jack's blame on John's shoulders. (उ) طويلے كي بلا بندر كے سر (फ़ा) بلاي طويلا بر سر ميمون بي بي كرے باندي پكڙي جاے (अ) العبد يسرق والمولى يضمن

तले घेरा ऊपर सेहरा।

(सं) अन्तः पापं बहिः शौचः। (अं) Cutting at the root, and watering at the top. (उ) تلے گهيرا اوپر سهرا

तख़्ती पर तख़्ती और मियां जी की आई कमबख़्ती।

(सं) ॐ नमः सिद्धं गुरुः पतङ्गम्। (अं) Too many works, but too small hands. (उ) تختى پر تختى مياں جي كي آئي كمبختي

ता

तांत बाजी और राग पहिचाना।

(सं) नेत्रवक्त्रविकारेण गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः। (अं) The straw shows which way the wind blows. (उ) أنكى جهت سے معلوم هوا كه نام بأزخان هے (फ़ा) قياس كن ز گلستان من بهار مرا (अ) العيان لايحتاج البيان

ताजी मारे तुर्की कांपे।

(सं) अन्यस्य दण्डे हि बिभेति चान्यः। (अं) One is beaten and another is frightened. (उ) تازي مارے تركي كانپے

ताजी पर बश नहीं तुर्की के कान उमेठे।

(सं) अपराधं स्वयं कृत्वाऽऽश्रितान् ताडयते जनः। (अं) The weak are always oppressed. (उ) دهوبي سے هارے تو گدهے کے کان امیٹهے

ताल बजा के मांगे भीक उसका जोग रहा क्या ठीक ?

(सं) असंयतात्मना योगो दुष्प्राप्य इति मे मतिः। (अं) A bard is not a saint. (उ) تال بجا کے مانگے بهیک اُسکا جوگ رها کیا ٹهیک

ताकी न रक्खे वाकी।

(सं) ऋणशेषं न कारयेत्। (अं) Never do things by halves. (उ) طاقي نه رکهے باقي

ति

तिनके का भारत।

(सं) स्वल्पकारणमाश्रित्य विराट् कर्म्म कृतं महत्। (अं) To make a mole-hill of a mountain. (उ) بات کا بتنگڑ

(फ़ा) قطرهٔ شبنمرا طوفان نوح ساختن (अ) بقول بحيث الخردل انه قيل حليمان

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार।

(सं) सकृत् कन्या प्रदीयते। (अं) Great men never retract their words, or, Great men are as good as their words.

(उ) جان جاتي رهے کیا غم هے مگر بات رهے (फ़ा) قول مردان جان دارد

तिल गुड़ भोजन नीच मिताई आगे मीठ पाछे कड़ुआई।

(सं) दिनस्य पूर्व्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।

(अं) Beware of what looks sweet but has a bitter effect.

(उ) بدون کے ساتهه هوتا هے نفع پہلے غرر پیچهے

ती

तीन बुलाये तेरह आये।

(सं) शष्कुलीशङ्गमात्रेण किं दूरं योजनत्रयम्। (अं) Sowing the wind, reaping the whirlwind. (उ) تین بلائے تیره آئے

तीतर की बोली बटेर क्या जाने।

(सं) विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रम। (अं) (Lit.) A crow

(उ) تیتر کی بھاکھا بتیر کیا سمجھے cannot sing like a cuckoo.

तीन पाव आटा पुल पर रसोई।

(सं) बह्वारम्भो लघुक्रिया। (अं) Much ado about nothing.
(उ) ذات کا لنگوٹا نواب سے یاری (फ़ा) درخانه آرد نے ودر کوچه دوتنور
(अ) ما لي بيتك دقيق فاين تباع الرقيق

तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध।

(सं) तीर्थगो मुण्डनात् सिद्धः। (अं) Veni vedi vici.
(उ) تیرتھہ گئے مڑائے سدھہ

तीतर के मुँह लक्ष्मी।

(सं) तित्तिराणां वचः शुभम्। (अं) A trifling thing, but doing a great service.
(उ) تیتر کے مونھہ لچھمی

तीनों पन नहीं एक समान।

(सं) न समानाऽखिलाऽवस्था। (अं) (Lit.) Time does not always run smoothly.
(उ) کبھی کے دن بڑے کبھی کی راتیں
(फ़ा) بیک ساعت بیک لحظه بیکدم * دگرگون مے شود احوال عالم (अ) احوال الانسان تتغير في كل آوان

तीर नहीं तो तुक्का।

(सं) काले प्राप्तं भवति सुमहत् वस्तुजातं हि तुच्छम्। (अं) Use to the best what little you have.
(उ) تیر نہیں تو تکا

तीन लोक में मथुरा न्यारी।

(सं) मुरारेस्तृतीयः पन्था। (अं) A way peculiar to one.
(उ) یہاں کا باوا آدم ھی نرالا ھے (फ़ा) این خانه تمام آفتاب است (अ) اهل هذه الدار لهم مختار

तु

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू।

(सं) स्वार्थमेव समीहस्व किं परार्थस्य चिन्तया। (अं) Oil your own machine.
(उ) قاضی جی دبلے کیوں شہر کے اندیشہ سے
(फ़ा) هر کسے آن درود عاقبت کار که کشت (अ) لنا اعمالنا ولكم اعمالكم

तुरत दान महाकल्यान।

(सं) शीघ्रदानं महापुण्यम्। (अं) A thing done in time always proves to be of great use. (उ) نو نقد نہ تیرہ اودھار

(फ़ा) سیلی نقد بہ از حلواے نسیہ (अ) اَلنقد خیرمن النسیة

तुलसी क्यारे में भूत भागड़ा।

(सं) राक्षसो देवमन्दिरे। (अं) There is many a slip between the cup and the lip. (उ) کڑھي میں کویلہ

(फ़ा) زشت در سلک نکویان مےنمایدزشت تر (अ) بین الملا یکة ابلیس

तुलसी विलम्ब न कीजिये लेते हरिको नाम।

(सं) शुभस्य शीघ्रम्। (अं) In doing charitable acts never ask many questions. (उ) تامل نہ چاھئے ہے کار ثواب میں

(फ़ा) درکار خیر حاجت ھیچ استخارہ نیست (अ) الخیر لایوخر

तुलसी मन शुद्ध भये जिनके तब तीरथ तीर रहे न रहे।

(सं) को ह्यर्थः तीर्थवासेन शुद्धे चित्ते विपश्चिताम्। (अं) Pure mind is the holiest shrine. (उ) سراپا پاک ھیں دھوئے جنھوں نے ھاتھہ دنیاسے نہیں حاجت کہ وہ پانی بہائیں سر سے پاؤں تک (फ़ा) پاکي پاک دل است

(अ) الطہارت طہارت القلب

तुलसी हाय गरीब की कभी न निष्फल जाय। मुए ढोर के चाम से लोह भस्म हो जाय।

(सं)संतापो नैव दीनानां जायते निष्फलो नृप ! (अं) The sigh of a needy never goes in vain. (उ) غریب کي آہ بري هوتي هے کسي دل کا ظالم ستانا برا هے (फ़ा) بترس آزآہ مظلومان کہ هنگام دعا کردن اجابت ازدرحق بهراستقبال می آید (अ) اتق دعوت المظلوم فانہلیس بینہا و بین اللہ حجاب

तू

तू चाहे मेरे जाये को मैं चाहूं तेरी खाट के पाये को।

(सं) पुरुषः पुत्रकामोऽस्ति भार्य्या संयोगकामिनी। (अं) Ill requited love. (उ) جہاں تمہارا پسینہ گرے وهاں میرا خون

(फ़ा) من ترا حاجی بگویم تو مرا حاجی بگو (अ) ان تکرمني اکرمک

तू डाल डाल मैं पात पात।

(सं) न निर्वलो भाद्रपदो हि श्रावणात्। (अं) Who can teach the wise ?
(उ) کیا سکھایگا سکھانا تو مجھسے سیکھ جاے
(फ़ा) حکمت بہ لقمان آموختن (अ) اتعلم الطاب لجالینوس

ते

तेली का तेल जरे मशालची का सिर दुखे।

(सं) परस्य वित्तव्ययमपि लोके कृपणः सोढुं न शक्नोति। (अं) To carp at other's nobleness.
(उ) بھوزا کہیں ہو آماس کہیں
(फ़ा) مدعي سست گواه چست (अ) الشاهد حاضر يسعے وصاحب الحق غايب يخفے

तेली जोड़े पली पली मेहमान लुटावे कुप्पा।

(सं) शतं सुवर्णकारस्य लौहकारस्य चैककम्। (अं) It is easy to be generous with other people's money.
(उ) تیلي جوڑے پل پل مہمان لٹاوے کپا (फ़ा) تدبیر کند بندہ تقدیر زند خندہ
(अ) التقدیر یضحک علي التدبیر

तेरी कान कै तेरे धनी की कान।

(सं) त्वं माननीय उत ते प्रभुस्स्वयम्। (अं) Realisation is better than explanation.
(उ) حمایتي کے گدھے عراقي کے لات مارے
(फ़ा) گوسالہ بزور میخ مي جہد (अ) الوسيلة نعم الطاقة

तेरी गति जानी ना पड़े।

(सं) अगम्या गतिस्ते प्रभोऽवर्त्ततेऽलम्। (अं) God only knows His ways.
(उ) خدا کي باتیں خداهي جانے
(फ़ा) علم غیب خاصہ خدا است (अ) الغيب عند الله

तेरी माया तेरेही आगे।

(सं) त्वन्माया तव सान्निध्यौ। (अं) (Lit.) To present one with what has been given by him.
(उ) آپکي جوتیونکا صدقہ
(फ़ा) خر خواجہ بہترین از خواجہ (अ) منک ومن قدمک

तेरे मन के लगाये हर पावे जो तू या विधि मन को लगावे।

(सं) भक्त्या तुष्यति माधवो नहि गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः।

(अं) Hand with work and heart with God.

(उ) دلکو هزار فکر ونگ‌ودو لگي رهے * پر عشق شرط هے کہ اُدهر لو لگي رهے

(फ़ा) دست بکار و دل بیار (अ) يدک مکفول و قلبک مشغول

तेरो राम बसत तोरे मन में तू काहे डोलत है बन में।

(सं) ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन! तिष्ठति। (अं) Seek God within. (उ) کیسي مسجد کیسا مندر جب دیکھو جب دل کے اندر

(फ़ा) یار درخانهٔ ومن گرد جهان میگردم (अ) وفی انفسکم افلا تبصرون

तेल देखो तेल की धार देखो।

(सं) सर्वतो वीक्ष्य कर्त्तव्यम्। (अं) Observe which way the wind blows. (उ) دیکھئے اونٹ کس کروٹ بیٹھے

(फ़ा) دیده باید که شتر بکدام پهلو به نشیند (अ) ذهب الهم بموت الشات

तै

तैरेगा सो डूबेगा।

(सं) यस्तरति स एव निमज्जति। (अं) He who swims must be ready to be drowned, or, No rose without a thorn.

(उ) جو چڑھیگا وہ گریگا (फ़ा) هر کمالے را زوالے (अ) رب صا بعد يفاعد

तो

तोको परि न मोको आपदा।

(सं) तवास्ति चिन्ता न ममास्ति दैन्यम्। (अं) (Lit.) It would be harmful neither to you nor to me.

(उ) تم روٹھے هم چھوٹے (फ़ा) خس کم جهان پاک

था

थाप मार मुँह डोरा तो राखवो।

(सं) स्वयमक्षिणी भङ्क्त्वाऽन्धो भवसि। (अं) (Lit.) There must be consistency even in practising deception.

(उ) طمانچه مار کے منهه اپنا سرخ رکھتے هیں (फ़ा) با آنکه سیه شد دلم از جور فلک × خود را به طمانچه سرخ رومي دارم (अ) اخفاء الشدايد من المروة

थु

थुर मोली और बहुत दुधारी।

(सं) स्वल्पव्ययेन सुन्दरि ! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति। (अं) (Lit.) Thing must be good, but the price must be small, or, Much gain but little pains. (उ) آم کے آم اور گٹھلي کے دام

(फ़ा) کم خرچ بالا نشین (अ) قلیل البضاعة کثیر المنفعة

थू

थूककर चाटना अच्छा नहीं।

(सं) कृत्वा प्रतिज्ञां न विलोपयेताम्। (अं) It is mean to go back on one's own word. (उ) اگل کر کیوں نگلتے هو

थूक में सतू नहीं सनता।

(सं) नैव नैशेन हैमेन पिपासा शाम्यति कचित्। (अं) (Lit.) Dew drops do not quench thirst. (उ) تھوک سے ستو نہیں گیلا هوا ہے

थे

थेगली कहां लगा दूं फाटे आसमान को।

(सं) छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति। (अं) (Lit.) The sky rent asunder, cannot be mended back, or, the world cannot be fenced. (उ) ایک دشمن سر سے ٹالو دوسرا پیدا هوا

(फ़ा) تن شده جمله داغ داغ پنبه کجا کجا نهم (अ) اعیي الداء الدواء

थो

थोड़ेही बोलने में सार है।

(सं) सत्याय मितभाषिणाम्। (अं) A quiet tongue shows a wise head. (उ) کم بولنا عقلمندي کي نشاني هے

(फ़ा) کم گفتن نشان خرد مندي است (अ) اذا تم العقل نقص الكلام

थोड़ेही में पाइये सब बातन को सार।

(सं) अल्पाक्षरं नैकविधार्थबोधकम्। (अं) A few words, but

contain the gist of the whole. (उ) دیگ میں سے ایک هي چاول دیکھا جاتا هے (फ़ा) مشتے نمونہ از خروارے (अ) القلیل یدل علی الکثیر

थोड़ी पूँजी खसमै खाय।

(सं) पल्लवग्राहि पाण्डित्यमुपहासस्य कारणम्। (अं) Small capital brings no profit. (उ) تھوڑي پونجي خصمے کھئے

द

दगा किसी का सगा नहीं।

(सं) विश्वासघातेन समं न पातकम्। (अं) A traitor is not a well-wisher. (उ) جو کوئی کسیکے لئے کنوان کھودیگا خود اسمیں گریگا (फ़ा) تو چاهے کندۂ درره که مردم را درانداازي * نمي ترسي ازان روزیکه خودرا درمیان بیني (अ) من حفر بیراً لاخیه فقدوقع فیه

दबे पर सब कोई चोट करता है।

(सं) दैवो दुर्बलघातकः। (अं) The weak has always to suffer oppression. (उ) دبي بلی کتے پر حمله کرتي هے (फ़ा) ندانی که چون گربه عاجز شود * برآرد بچنگال چشم پلنگ (अ) کسنور مغلوب یصول علی الکلاب

दया धर्म्म को मूल है।

(सं) दयामूलो मतो धर्म्मः। (अं) (Lit.) Mercy is the root of virtue. (उ) رحمدلي خوب هے (फ़ा) رحمدلي سراسر نیکو است (अ) ارحموا ترحموا اغفروا یغفرلکم

दरिया बहा जाता है हाथ धो री।

(सं) मयैव सर्व्वे निहताः पूर्वमेते निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।

(अं) Make hay while the sun shines.

(उ) بهتے دریا هاتهه دهو لو (फ़ा) بدنیا توانی که عقبیٰ خري * بخر جان من ورنه حسرت بري (अ) الدنیا مزرعة الاخرة

दरिद्रता को मूल एक आलस बखानिये।

(सं) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। (अं) Sloth is the mother of poverty. (उ) ملتي نهیں کاهلي سے دولت (फ़ा) کاهل و جود درهر دوجهان مردود (अ) الکسلان نصیبه الحرمان

दरजी की सुई कभी गजी में कभी किनखाब में।

(सं) साधूनां चरणद्वन्द्वं कदाचिच्चक्रवर्तिभिः। पूजितं स्यात् कदाचित्तु निर्धनैर्गृहवासिभिः। (अं) Good or bad, all equal in the eyes of a saint. (उ) درزي کی سوئي کبهي گزي مين اور کبهي کمخواب مين

दबी बिल्ली चूहे से कान कटाती है।

(सं) प्रबले दुर्बले जाते दुर्बलः प्रबलायते। (अं) The fallen lion is kicked by jackals. (उ) غرضمندونکو دينا لازم ہے

(फ़ा) گردن بے طمع بلندبود (अ) الاميني آمن والخائن خايف

दमड़ी की बुलबुल टका हलाली।

(सं) अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छति। (अं) Much cost, little gain. (उ) دمڑي کي مرغي ٹکا حلالي

(फ़ा) آفتابہ خرچ لحم (अ) كراية المال ازيدعلے راس المال

दया धर्म्म नहीं तन में मुखड़ा क्या देखे दर्पण में।

(सं) येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न दया न धर्म्मः। ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति। (अं) Vain is life devoid of virtue. (उ) سيرت نهين تو صورت کس کام کي

(फ़ा) رحمدلي سراسر نيكوست (अ) ارحموا تراحموا اغفروا يغفرلكم

दया बिन सन्त कसाई।

(सं) हिंस्रा विद्यां विना विप्राः साधवश्च दयां विना। (अं) (Lit.) A saint without mercy is no better than a butcher.

(उ) رحمدلي خوب ہے (फ़ा) رحمدلي سراسر نيكوست (अ) ارحموا تراحموا اغفروا يغفرلكم

दमड़ी न कौड़ी रानी से मटकौअल।

(सं) धर्म्मस्य कणिका नास्ति स्वर्गे इच्छति वाटिकाम्। (अं) (Lit.) Desirous of buying a kingdom though having not a farthing in purse. (उ) دمڑي نہ کوڑي راني سے مٹکول

दा

दाता दाता मर गये रह गये मक्खीचूस।

(सं) कृपणा अत्र जीवन्ति दातारो हि दिवंगताः। (अं) (Lit.) The

close-fisted are living while the charitable have departed.
(उ) گھوڑے گئے گدھوں کا راج آیا (फ़ा) آدمیان گم شدند ملک خدا خر گرفت
(अ) مات الناس وبقي النسناس

दादू दावा छोड़ दे निरदावा दिन काट । केतेक सौदा कर गये पनसारी की हाट ॥

(सं) त्यक्त्वाऽधिकारं निष्कामः समयानतिवाहय । सकामा बहवो हट्टे कृत्वा विनिमयं गताः। (अं) Attachment is foolishness in this mutuable world. (उ) بازار کی مٹھائی جسنے پائی اسنے کھائی (फ़ा) زال دنیا چون عروس آراستست * هر صباحے شوئے دیگر خواستست (अ) ازار الحمام من اتزر اتزر

दान वित्त समान ।

(सं) दानं देयं यथाशक्ति । (अं) Charity is wealth.
(उ) غریب کی کوڑی امیر کی اشرفی برابر ہے (फ़ा) صبر درویش به زبذل غنی
(अ) الدرهم من يد المعسر كالقنطار من الموسر

दानलेनवारे नाहिं प्राण लेनवारे हैं ।

(सं) सदा वक्रः सदा क्रूरः सदा मानधनापहः । कन्याराशिस्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः। (अं) A discontented friend is a source of much trouble. (उ) مردونکا وار بھي کہین خالی جاتا ہے
(फ़ा) شمشير مردان خالي نه باشد (अ) ضربة الشجاع يجلب المتاع

दाने बिखराने जहां जाना ज़रूर है ।

(सं) भाग्यं हि जीवान् नयते दशान्तरम् । (अं) One must follow the leading of fate. (उ) آب و دانه زور آور ہے باقی بہانہ
(फ़ा) در شے ے برد آدمي را بزور * یکے آب و دانه دگر خاک گور (अ) وما تدري نفس ماذا تكسب غدا وما تدري نفس باي ارض تموت

दाता दे भण्डारी का पेट फटे ।

(सं) ददत्युदाराः कृपणा रुदन्ति । (अं) (Lit) The gift delighteth the giver, but paineth the servant. (उ) تیلی کا تیل جلے مشعلچی کا دل جلے (फ़ा) مدعی سست گواه چست (अ) الشاهد حاذ و يسعى و صاحب الحق غايب يختفي

दाई से पेट नहीं छिपना।

(सं) सवयस्कैश्च मर्म्मज्ञैः सार्द्धं गोप्यं न गुह्यते। (अं) No Feigning of sickness before the doctor. (उ) دائي سے حمل نہين چہپتا

(फ़ा) داناي نہان وآشكا را (अ) علم الغيب والشهادت

दालभात में मूसरचन्द।

(सं) सिद्धेऽन्नव्यञ्जने जाता अन्ये विघ्नविधायका। (अं) Fly in the pudding.

(उ) دال بهات مين موسر چند

दि

दिनकर की तीन दशा होत एक दिन में।

(सं) इहैव दृष्टानि मयैव तानि जन्मान्तराणीव दशान्तराणि। (अं) The world is shifting from side to side.

(उ) ہے بہار باغ دنيا چند روز (फ़ा) گاہے چنين گاہے چنان

(अ) وتلك الايام نداولها بين الناس

दिल मिले की यारी।

(सं) समानशीलव्यसनेषु सख्यम् (अं) Love is the union of hearts.

(उ) دو دل راضي تو كيا كريگا قاضي

(फ़ा) زن راضى شوهر راضى تف برانديش قاضى (अ) المراة راضية و البعل راض فمابال قضاء القاض

दिया न बाती बांदी फिरे इतराती।

(सं) वस्त्रं न भूषणं देहे दासी लक्ष्मीव मन्यते। (अं) An ounce of meal and a kitchen upstair.

(उ) گهر مين كوئي نہين بازار مين سير (फ़ा) درخانه ارزنے ودر كوچه دوقلوز (अ) مافى بيتك وقيق فاين متاع الرقيق

दिये का प्रकाश स्वर्ग तक है।

(सं) पुण्यप्रकाशो हि महान् समुज्ज्वलः। (अं) It is divine to give in charity.

(उ) دیے كى روشنى عرش تك هے

(फ़ा) صدقه دادن رد بلاست (अ) الصدقة ترد البلاء

दिन ईद रात शब्बेरात।

(सं) दिवाऽनन्तव्रतं प्रोक्तं रात्रौ कृष्णाष्टमी मता। (अं) Feast in day time, and a wake in the night. (उ) دن عیدرات شبرات

दिल से दिलको राह है।

(सं) वेद्यश्चाऽन्यमनो निजेन मनसा मार्गो यतस्तस्य तत्। (अं) Heart answers heart. (उ) دل سے دل کو راہ ہے

दिल को करार तब सूझे त्यौहार।

(सं) सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमात्राः। (अं) If the heart is sad the world is sad. (उ) دل میں قرا ہو تیسے بیوپار سوجھتا ہے

दिवाली के चोखे से पला मोटा नहीं होता।

(सं) अन्नं पुष्टिकरं नैव जायते समये न यत्। (अं) Sumptuous eating one day does not make one fat.
(उ) دیوالی کے چوکے سے پلہ موٹا نہیں ہوتا

दिया तले अन्धेरा।

(सं) स्वाधिकारं न वेत्तीह पण्डितोऽपि बुधाग्रणीः (अं) It is darkest under the lamp. (उ) چراغ کے تلے اندھیرا
(फ़ा) پائی چراغ تاریک میباشد (अ) یکسو الناس و استہ عاریۃ

दिल जाने सो ही दिलदार।

(सं) चित्तज्ञा दुर्लभा लोके। (अं) True friend is he who feels for me. (उ) دل ہے جانے سوہی دلدار

दु

दुख पीछे सुख होत हैं ज्यों निशि बीते भोर।

(सं) सुखं हि दुःखान्यनुभूय जायते घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
(अं) There is no joy without alloy. (उ) کہ ہے رنج کے بعد راحت ضرور (फ़ा) ہر شے را روزے درپے است (अ) ان مع العسر یسرا

दुख मिटीया राम बिसरीया।

(सं) यावद्दुःखं तावद्रामस्मरणं न तु दुःखापगमे। (अं) Danger

past God forgotten. (उ) غرض نکلی آنکھ بدلی
(फ़ा) چون مصیبت رسد بحق نالد (अ) اذامسکم الضر فالیه تجرؤن

दुनियां देखत भूली का तमाशा है।

(सं) दृष्ट्वा विस्मरणं यस्मिन् जगदेतत् कुतूहलम्। (अं) The world is a play of a magician. (उ) هستئی رنگ گلستان جہان کچھ بھی نہیں
(फ़ा) دنیا هیچ ست وکار دنیا همه هیچ (अ) الدنیا ماء ت ولیس فیها راحت

दुबधा में दोऊ गये माया मिली न राम।

(सं) न ध्यातं पदमीश्वरस्य विधिवत् संसारविच्छित्तये स्वर्गद्वार-कपाटपाटनपटुर्धर्म्मोऽपि नोपार्जितः। नारीपीनपयोधरोरुयुगलं स्वप्नेऽपि नालिङ्गितं सन्दिग्धस्य सुखं न जातमिह मे सांसारिकं वा परम्। (अं) Between two stools we come to the ground.
(उ) دونوں دین سے گئے پانڈے حلوا ملا نہ مانڈے (फ़ा) در آب جنبان صورت درست نمی ماند (अ) مذبذبین بین ذلک

दुबली और दो असाढ़।

(सं) एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छाम्यहं पारमिवार्णवस्य। तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति। (अं) Woe to the vanquished. (उ) مرے کو مارے شاہ مدار
(फ़ा) مصدقه زده را از هر طرف سنگ می آید (अ) المادة الفاسد ینزل علی عضوضعیف

दुबली गाय के बगायें घणी।

(सं) दुर्बले हि बहुविघ्नसम्भवः। (अं) The weakest goes to the wall. (उ) موے پرسودرے
(फ़ा) زده راعی توان زد (अ) المادة الفاسدة نیزل علی عضوضعیف

दुराये दुरै नहीं नाहको नेह सुगन्ध की चोरी।

(सं) नवपरिमलगन्धः केन शक्यो वरीतुम्। (अं) Love and cough cannot be hidden. (उ) نہیں چھپتی محبت اور خوشبو
(फ़ा) عشق و مشک پنهان نمی ماند (अ) من سرق الملک فقداجزے نفسه

दुबले मारे शाहमदार।

(सं) दैवो दुर्बलदुःखदः। (अं) The weak are oppressed even

by the fate. (उ) دبلے کو مارے شاہ مدار

(फ़ा) نزلہ برضعیف میریزد (अ) المادہ الفاسدۃ ینزل علی عضو ضعیف

दुधैली गाय की लात भली।

(सं) प्रभोर्हि भ्रूकुटीभङ्गः सहन्ते सेवकाः सदा। (अं) Where there is gain, one does not mind pain. (उ) مطلب کے وقت مصیبت بھی راحت معلوم ہوتی ہے (फ़ा) گرد گلہ تو توتیاے چشم گرگ

(अ) الوزیت دون المرام نعمت الراحۃ

दू

दूध दही खाने से मतलब कि गाय भैंस से।

(सं) भोज्यमाम्रफलं किन्ते तत्तरूणाञ्च संख्यया। (अं) I want fruit, I have nothing to do with the tree.

(उ) آم کھانیسے کام یا پیڑ گننے سے (फ़ा) خربوزہ بخور ترا با فالیز چہ کار

(अ) کل البطخ ولاتسال عن نباتہا

दूल्हा केही साथ बरात।

(सं) शिष्याश्च गुरुसन्निभाः (अं) Light is the life of lamp.

(उ) بے میرباری ابتر (फ़ा) دیوانہ کدا باشد درکوہ وبیاباںہا

(अ) مہمانکن اکن

दूर के ढोल सुहावने।

(सं) अपरिचिते महानादरो भवति। (अं) Distance lends enhancement to the view. (उ) خوان بڑا خوان پوش بڑا کھول دیکھو تو آدھا بڑا (फ़ा) نامش کلاں و دہش و یران (अ) اسمع جعجعۃ ولاارے طحنا

दूध का जला छांछ को फूंक फूंक कर पीता है।

(सं) सर्पदष्टा मनुष्या हि रज्जुतोऽपि च बिभ्यति। (अं) The burnt child dreads the fire, or, The ill-used man is evercautions.

(उ) سانپ کا کاٹا رسی سے ڈرتا ہے (फ़ा) مار گزیدہ از ریسمان میترسد

(अ) لا یلدغ العاقل من حجر واحد مرتین

दे

देखा देखी साधे योग छीजे काया बाढ़े रोग।

(सं) अनुकृत्य जनं कश्चित् योगाभ्यासेन रुग्णता। (अं) (Lit.)

Performance of Yoga without the help of a *guru* oftentimes brings on disease. (उ) جسکاکام اسیکو چھاجے اورکرےتو ٹھینگا باجے

(फ़ा) ہرکارے وہر مردے (अ) كل ميسر لما خلق له

देखें कैसे गंवार आवें और कैसी पैंठ भरे।

(सं) मेला मूर्खैः परिप्लुता। (अं) There is many a slip between the cup and the lip. (उ) دیکھئے اونٹ کس کروٹ بیٹھے

(फ़ा) دیده باید که شب حامله فرداچه زاید (अ) انتظروا بماینزل به القضاء

दे गया सो लेगया छोड़ गया सो खो गया।

(सं) यद्दत्तं हि दरिद्रेभ्यो भुक्तं यच्च दिने दिने। तत्ते वित्तमहं मन्ये शेषं कस्यापि रक्षसि। (अं)(Lit.) Charity is real hoarding, and hoarding is real waste. (उ) کھائے کھلائے اسکا بدله خدا سے پائے

(फ़ा) خدا بر تو باشد توبر خلق باش (अ) انفق تنفق

देव जाने अपनी सी टेव।

(सं) देवो भूत्वा देवं यजेत्। (अं) Be good, and everybody will appear good to you. (उ) چور کو چور خوب پہچانتا ہے

(फ़ा) ولي را ولی مي شناسد (अ) يقيس المرء علي نفسه

देशवाली गधी और पूरवी चाल।

(सं) भारतीयो जनो भाषामाङ्गलीयां प्रभाषते। (अं) (Lit.) A Westerner by birth, but following the style of the East.

(उ) صورت چڑیلوں کی مزاج پریوں کیسا (फ़ा) کوري و نظر بازي

(अ) وجهاوجه الغول وتطلب لباس الحور

देसां देसां ढार कुलां कुलां व्यवहार।

(सं) भवन्ति भिन्नाः कुलदेशरीतयः। (अं) Many men, many minds, or, Different men have different tastes.

(उ) ہر شہر کا جدا طریقہ ہے (फ़ा) ہر ملکے و ہر رسمے

(अ) بكل بلدة عرف

देहरी को दीपक ज्यों घरको औ आंगन को।

(सं) देहलीदीपकन्यायः। (अं) (Lit.) A lamp over the threshold belongs neither to the inside room or the outside yard, or, It is neither fish nor flesh. (उ) دھوبي کا کتا نہ

گهر کا نہ گهات کا (फ़ा) سگ گاذر نہ درخانہ نہ درمشرب
(अ) لاالی هؤلاء ولاالي هؤلاء

देश चोरी परदेश भीख।

(सं) वरं देशचौर्य्याद्विदेशेषु भिक्षा। (अं) Position and honour to be aimed at more in one's own country than elsewhere. (उ) ديس چوري پرديس بهيک

देह धरे का दण्ड है सब काहू को होय।

(सं) शरीरं व्याधिमन्दिरम्। (अं) The ills of the flesh are for all heirs of the flesh. or, To be born is a punishment.
(उ) ديهه دهرے کا دنڈ هے سب کاهوکو هوے

देखी तेरी कालपी बावनपुरा उजाड़।

(सं) दृष्टा ते नगरी नाथ ! या हि सर्व्वत्र निर्जना। (अं) Tall talks or, Much talk little worth. (उ) اپنا گهر ديکها هے
(फ़ा) رفل بفدي از تو کي مزاج نترسد (अ) العليل الهرم لايفرغه صورت العلهل

दो

दो तो चून के भी बुरे होते हैं।

(सं) संहतिः श्रेयसी पुंसाम्। (अं) Unity is strength, or Unity is the bond of friendship. (उ) جماعت کرامات هے
(फ़ा) دو تن يک شون بشکفد کوه را * پرا گندگي آرد انبوه را (अ) يد الله فوق الجماعت

दोष कहा वा कुब्जा को सखी अपनो श्याम खोयो।

(सं) तस्या न दोषस्तु हृतः प्रियो मे। (अं) Thy coin is base, why blame the dealer. (उ) اپنا دام کهوٹا تو پرکهنے والے کا کيا دوش
(फ़ा) گر نه بيند بروز شپره چشم * چشمهٔ آفتاب راچه گناه (अ) الزيوف زيوف فما يصنع الناقد

दोनों दीन से गये पाण्डे हलुआ मिले न माण्डे।

(सं) इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः। (अं) Between two stools, and you come to the ground (उ) گئے دونون جهانکے کامونسےهم نہ ادهر کے هوے نہ اودهر کے هوے * نہ خداهي ملا نہ وصال صنم نہ ادهر کے هوے نہ اودهر کے هوئے

(फ़ा) درآب جلیاں صورت درست نمی ماند (अ) مذبذ بین بین ذالک

दोनों हाथों में लड्डू हैं।

(सं) हत्वा वा प्राप्स्यासि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। (अं) In clover. (उ) دنوں هاتهہ میں لڈو هیں

दोनों घर का पहुना भूखा मरे अखीर।

(सं) इष्टदेवो न यस्यैकस्तस्य कार्य्यं विनश्यति। (अं) The guest of many hosts often starves. (उ) دو کشتیوں میں پانوں رکهنےوالا ضرور ڈوبیگا

ध

धन का धन गया मीत की प्रीति गई।

(सं) यदीच्छेद्विपुला प्रीतिस्त्रीणि तत्र न कारयेत्। विवादो ह्यर्थसम्बन्धः पश्चाद्दाराभिभाषणम्॥ (अं) Lend money and lose your friends. (उ) گره سے پیسا دشمن بنانا

(फ़ा) قرض مقراض محبت باشد (अ) القرض مقراض المحبت

धन दे तनको राखिये तन दे रखिये लाज।

(सं) धनैः शरीरं परिरक्षणीयं यशस्तु रक्ष्यं तनुना धनैश्च। (अं) Health is better than wealth; and death is better than disgrace. (उ) آبرو جگ میں رهے تو بادشاه بهي پوچهے (फ़ा) مردن بنام بهکه بود زندگی به ننگ (अ) الموت في عز خيرمن موت في ذل

धन ले कोई धर्म हारे कोई।

(सं) त्यजन्ति साक्षिणो धर्म्मं गृह्णन्ति धनिनो धनम्। (अं) One suffereth the pain, another maketh the gain. (उ) کاٹے بازه نام تلوار کا

(फ़ा) کوهرا فرهاد کند و لعل را پرویز یافت (अ) الموت في عز خيرمن موت فی ذل

धनवन्ती के कांटा लगा दौड़े लोग पचास। निर्धनियां गिरा पहाड़ से कोई न आया पास॥

(सं) यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः। यस्यार्थाः स पुमाँल्लोके निर्धनस्य न कश्चन॥ (अं) Wealth brings friends.

(उ) صدا طوطی کي سنتا کون هے نقارخانه میں (फ़ा) قهر درویش بجان درویش (अ) لاضياء سراج المسكين

धर्म की जड़ सदा हरी।

(सं) धर्म्ममूलं न शुष्यति। (अं) (Lit.) The root of religion is ever green. (उ) روپیہ کی ڈھال ٹال دے و بال
(फ़ा) صدقہ دادن رد بلا است (अ) الصدقات تردد البلاء

धर्म्म धीरा पाप उतावला।

(सं) दीर्घसूत्रायते धर्म्मं पापे शीघ्रायते भृशम्॥ (अं) (Lit.) Virtue is always steady while vice is restless. (उ) بری خبر جلد
پہونچ جاتی ہے (फ़ा) آوازۂ مرگ زود میرسد (अ) الصوت المنکر یسمع من بعید

धरम का धरम करम का करम।

(सं) एकः पन्थाश्च कार्य्यं द्वे। (अं) Work and worship combined. (उ) دھرم کا دھرم کرم کا کرم

धनि रहीम जल पङ्क को लघु जिय पियत अघाय। उदधि बड़ाई कौन है जगत् पियासो जाय।

(सं) क्षुद्रः परेषां हितसाधको वरं यस्माद्धितं नो न वरं महानपि।
(अं) Vain is greatness if it profits none. (उ) جو بندہ
نوازی کرے جان اس پہ فدا ہے * بے فیض اگر یوسف ثانی ھے تو کیا ہے (फ़ा) آتش
زن دران خانہ کہ دودش کسے نہ بیند (अ) خیر الناس نیفع الناس

धी

धीरज सुधारे कारज।

(सं) धैर्य्येण सम्पद्यत एव कार्य्यम्। (अं) Patience leads to success. (उ) صبر کا پہل میٹھا ھوتا ہے (फ़ा) صبر تلخ است و لیکن بر
شیرین دارد (अ) الصبر مفتاح الفرج

धू

धूल पड़ी वा काम में एक चित्त दो ठौर।

(सं) चित्ते द्वैविध्यमापन्ने कार्य्यभ्रंशो भवेद्ध्रुवम्। (अं) One man cannot please two masters. (उ) ایک نوکر دو آقا کی خدمت
نہیں کر سکتا (फ़ा) یک مرغ دو جا کباب نمی شود (अ) لا یصمد
الرجل علی لشکرین

धो

धोबी का छैला आधा उजला आधा मैला।

(सं) अष्टम्याञ्चैव कृष्णायामर्द्धं शुभ्रा भवेन्निशा । अर्द्धं मलीमसा भाति रजकस्य शिशुर्यथा। (अं) (Lit.) The child of laundress is partly clean and partly unclean. (उ) آدھا تیتر آدھی بٹیر
(फ़ा) هیچ کاره , همه کاره (अ) مثل النعامة لاطیر لاجمل

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

(सं) त्रिशंकुरिवान्तरा तिष्ठ। (अं) Between two stools and you come to the ground. (उ) راجه کا روزا دھر کا نه اودھر کا
(फ़ा) سگ کاذر نه درخانه نه در مشرب (अ) لا الی هولاء والی هولاء

न

नई कहानी गुड़ से मीठी।

(सं) कस्मै न रोचते नव्या नवोढेव कथा सुधा। (अं) A news is sweeter than a sweet. (उ) نیا گز میٹھا ھوتا ھے
(फ़ा) کوزه نو دوروز آب را سرددارد (अ) کل جدید لذیذ

नगारा बाज दमामे बाज गये।

(सं) नो चेत् काले कृतं कार्य्यमधुनैव विधीयताम्। (अं) They have done their parts and you must mind yours, or, Mind your business. (उ) مرے پر جیسے سو من مٹی ویسے ھزار من
(फ़ा) غرق شده را فریادچه سود (अ) المیت لایخاف من القبر

नदी किनारे रूखड़ा जब तब होय विनाश।

(सं) नद्यास्तटे स्थितं वृक्षं कः कियद्रक्षयिष्यति। (अं) (Lit.) The life of a tree on the river bank is always in danger.
(उ) بکرے کی ماں کب تک خیر منائیگی (फ़ा) دیگ چوبی دگربار بر دیگدان نمی آید (अ) الکذب سیهلک

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

(सं) न नर्त्स्यति यतो राधा न तैलं नव मडिका। (अं) A bad workman quarrels with his tools. (उ) ناچ نه جانے آنگن ٹیڑھا
(फ़ा) رقص کردن خودنداند صحن را گویدکج است (अ) من لم یعلم یعتال

नमकहरामी नर से तो कूकरही भलो है।

(सं) कृतघ्नात् कुक्कुरो वरः। (अं) (Lit.) A dog is better than an ungrateful man. (उ) بیوفا آدمي سے کتا اچھا
(फ़ा) سگ حق شناس به از مردم ناحق شناش * سگ بهتر ازآن کس که وفادارنه باشد (अ) الکلب اعقور خیرمن الانسان الغدور

नमे सो भारी होय।

(सं) गुणप्रकर्षो विनयादवाप्यते। (अं) (Lit.) Down bends the tree when fruits come upon it. (उ) بهاري هي ڈنه جهکتا هے
(फ़ा) نهد شاخ پر میوه سر بر زمین (अ) من تواضع وقروم من تعاظم حقر

नया योगी कुल्लन पर जटा।

(सं) नूतनः परिडतो वाचां विस्तारं कुरुते भृशम्। (अं) Where there is truth there is no show. (उ) نیا نوکر هرن کے سینگ اکهیرتا هے (फ़ा) ملازم نو تیز رود (अ) کل جدید لذید

नर्मदा के कङ्कर सबही शिवशङ्कर हैं।

(सं) सर्व्वे राजकुलोत्पन्ना नृपायन्तेऽपि निर्धनाः। (अं) (Lit.) Every particle of a holy thing is also holy.
(उ) لنکا میں سب هي ستر ستر گز کے (फ़ा) این خانه تمام آفتاب است
(अ) اهل هذه الدار کلهم مقتدر

नवनि नीच की अति दुखदाई।

(सं) नमनं नीचजनानामत्यन्तं दुःखदं भवति। (अं) (Lit.) It is painful to bow one's one head down before an inferior.
(उ) دشمن کي چاپلوسي پر هرگز نه جائے (फ़ा) بر تواضعهاے دشمن تکیه کردن ابلهي است (अ) من اعتبر بکلام عدوه نهواعدی لنفسه

नव लावे तेरह की भूख।

(सं) आशावार्धि को गतः। (अं) The more one gets the more one wishes to get. (उ) اسي کی آمدني چوراسي کا خرچ
(फ़ा) خرچ باندازه دخل کن (अ) کلوا واشربوا ولاتسرفوا

न रहे बांस न बजे बांसरी।

(सं) मूलाभावे कुतः शाखा। (अं) No rope without hemp.
(उ) نه رهے باس نه بجے بنسي

नदी नाव संयोग।

(सं) समागमो दैववशेन जायते। (अं) Fortuitous meeting.

(उ) ندي ناو سنجوگ

नये चिकनियां अरण्डी का फुलेल।

(सं) एरण्ड तैलेन नवो विलासी कृतार्थमात्मानमसौ हि वेत्ति। (अं) (Lit.) Beginners are mindful of external finish.

(उ) نیا نوکر ہرن کے سینگ اکھیڑتا ہے

नदी में रहकर मगर से वैर।

(सं) नद्यां निवासो मकरेण वैरम्। (अं) To live in the water and to be at war with shirk. (उ) پاني ميں رهنا مگر مچهه سے بير

(फ़ा) من نقل الى السماء رجع الي فمه (अ) هر كه با اولاد باز وپنجه كرد ٭ ساعد سيمين خودرا رنجه كرد

नमक का सहारा ही बहुत है।

(सं) सहायताऽल्पाऽप्यधिकैव मन्यते। (अं) A trace of leaven leaveneth all. (उ) نمک کا سہارا ہي بہت ہے

नई नाइन बांस का नहन्ना।

(सं) खड्गः श्रोत्रे नवो योद्धा। (अं) A new workman with a strange tool. (उ) نئے شوقين جهب ميں گاجر

नया नौ दिन पुराना सब दिन।

(सं) प्राचीनं नूतनाद्वरम्। (अं) The new may be nine days' wonder, but the old is for good. (उ) نيا نو دن پرانا سب دن

नक्कारखाना में तूती की आवाज़।

(सं) हस्तिसङ्घे पिपीलिका। (अं) (Lit) A little sound, however sweet, is drowned under a loud one.

(उ) نقارخانه ميں طوطى كي آواز (फ़ा) لاصفياء اسراج لمسكون

(अ) چراغ مفلسان نورے ندارد

न नाम लेवाँ न पानी देवाँ।

(सं) अपुत्रस्य कुलं नष्टं स्वर्गो नैव च नैव च। (अं) To have an unworthy son is as good as to have no son.

(उ) نه نام ليوا نه پاني ديوا

नज़र चूकी माल दोस्तों का।

(सं) न मित्रं पश्यतो हरः। (अं) Carelessness is injurious.

(उ) نظر چوکی مال دوستونکا

नये नये हाकिम नई नई बात।

(सं) नूतनो नूतनो वैद्यः औषधश्च नवं नवम्। (अं) Every cook has his own recipe. (उ) نئے حاکم نئی بات

(फ़ा) تجدیدالاحکام تجدیدالحکام (अ) هرکه آمد عمارت نوساخت

ना

नाथ तुम जानत हो घट घट की।

(सं) त्वं सर्वज्ञोऽसि हे प्रभो!। (अं) Omniscient art Thou, O Lord! (उ) دانی سے پیٹ چھپتا نہیں

(फ़ा) دانا ے نہان و آشکارا (अ) عالم الغیب والشهادت

नाम काल नहिं खाय।

(सं) यशो नैव विनश्यति। (अं) A man dies, but his name survives or, Fame is indestructible (उ) مرد مرے نام کو

نامرد مرے دام کو (फ़ा) احمق یش راست کندو عاقل محاسن

(अ) الجاهل يطلب المال والعاقل يطلب الكمال

नाम मोटा दरशन खोटा।

(सं) उपकारः श्लाघनीयः केवला न यशस्विता। (अं) Great boast, little roast. (उ) خوان بڑا خوان پوش بڑا کھول کر دیکھو تو آدھا بڑا

(फ़ा) آواز دهل از دور خوش می آید (अ) اسمع بعجب ولا ي طحبا

नाऊ! बाल कितने हैं? यजमान! आगे आते हैं।

(सं) केशाः कियन्तो वर्त्तन्ते मस्तके मम नापित!। केशास्ते यजमानाऽग्रे आगच्छन्त्यधुनैव ते॥ (अं) Like master like servant.

(उ) حجام سے پوچھا سر میں کتنے بال ججمان سامنے هي آتے هين

नाच न आवे आंगन टेढ़ा।

(सं) वर्तते नाक्षराभ्यासो ग्रन्थोऽशुद्धिसमाकुलः। (अं) To a poor penman every pen is bad. (उ) ناچ آوے نہ آنگن ٹیڑھا

(फ़ा) من ام یعلم بحتال (अ) رقص کردن خود نه داند صحن را گوید کج است

नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा। (चातुर तो बैरी भलो मूरख भलो न मीत)

(सं) पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः । (अं) Better a wise enemy than an unwise friend. (उ) نادان کی دوستي جي کا جنجال نادان دوست سے دانا دشمن اچھا (अ) عدو عاقل خير من صديق جاهل (फ़ा) دشمن دانا به از دوست نادان

नाना के आगे ननिहाल की बातें।

(सं) किं ज्ञानिने ज्ञानमयोपदेशैः । (अं) To carry coal to Newcastle. (उ) نانا کے آگے نانہال کی باتیں

नाम भानमती और झोली में शिर।

(सं) नाम्ना वसुन्धरा गेहे सङ्कीर्णे निवसत्यहो । (अं) An idiot bearing the name of Solomon. (उ) ام بھان متي اور جھولی میں سر

नामर्दी तो ईश्वर ने दी मार मार तो कहते जाओ।

(सं) निर्विषेणाऽपि सर्पेण कर्तव्या महती फटा । यदि दैवाद्विषं नाऽस्ति फटाटोपो भयङ्करः ॥ (अं) By moral strength conquer the physical weakness. (उ) هاتھ سے کچھ نہ ہو سکے تو زبان سے کیوں چوکے

नाई की बारात में जने जने ठाकुर।

(सं) सर्व्वे सिंहाः क्षत्रियाणां समाजे । (अं) Too many cooks spoil the dish. (उ) لنکا میں سب ہي ستر ستر گز کے
(अ) اهل هذه الدار كلهم مختار (फ़ा) این خانه تمام آفتاب است

नामी बनियां कमाखाय नामी चोर मारा जाय।

(सं) अकीर्त्या मरणं लोके कीर्तिर्यस्य स जीवति । (अं) (Lit.) Fame for skill helps the craftsman, while fame for skill hangs the thief. (उ) نامي بنیا بدنام چور
(फ़ा) نام رستم به از رستم (अ) تسمع بالمعيدي خير من ان تراه

नाक कटी पर हठ न हटी।

(सं) युष्मत्कृते खञ्जनमञ्जुलाक्षि ! शिरोमदीयं यदि जातु जातु । नीतानि नाशं जनकात्मजार्थे दशाननेनाऽपि दशाननानि । (अं) Never to give up the point at any cost. (उ) رسی جل گئی پر بل ویسے ہی ہیں

नाक दबाने से मुँह खुलता है।

(सं) नद्यावरोधे जलमन्यतो व्रजेत्। (अं) (Lit.) Press the nose, and the mouth will open. (उ) نچوڑنے سے عرق نکلتا هے

नाइन दूसरे के ही पैर धोना जानती है।

(सं) परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्। (अं) (Lit.) Men are always clever in giving precepts. (उ) چمار كي جورو ننگے پانوں پھرے (फ़ा) عارف بخود غیر عارف (अ) مراة الحایک لاتلبس الثوب الجديد

नि

निकली ओठों चढ़ी कोठों।

(सं) मुखाद्विनिस्सृतं वृत्तं भवेत्सर्वत्रगं क्षणात्। षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः।
(अं) Words have wings. (उ) منهه سے نكلي بات پرائي
(फ़ा) وقت از دست رفته و تیر از کمان جسته دسخن از زبان گذسته باز بدست نیاید
(अ) كل سر جاوزا لاثنين شاع

नित्य कुआं खोदना व नित्य पानी पीना।

(सं) कार्य्यं कुर्व्वन् भवति फलभाक् प्राणिवर्गो ह्यतन्द्रः। (अं) (Lit.) To do something everyday and to earn the day's bread. (उ) نیا دن نئي روزي (फ़ा) روز نو وروزي نو (अ) يوم جديد ورزق جديد

निपट कठिन हठ मोसे कीनी रे सैयां।

(सं) स्वामिन ! प्रतिज्ञा कठिना कृता त्वया। (अं) Very hard is thy resolution, my sweetheart. (उ) اُس كام كو كهتا هے جو آتا نهين مجهكو (फ़ा) کج دارو مریز (अ) هے تا مرني مالا استطوه

निर्धन के धन गिरिधारी।

(सं) निर्धनानां धनं प्रभुः। (अं) God is the wealth of the poor. (उ) طریقه هے کویموںکا نباهنا اپنے چاکر کا
(फ़ा) خواجه آنست كه باشد غم خدمت گارش (अ) المولى من يعول العباد

निरञ्जन निराकार ज्योतिस्वरूप।

(सं) निरञ्जनं निराकारं ब्रह्म ज्योतिःस्वरूपकम्। (अं) Thou art

spotless, formless, and all light O Lord ! (उ) خدا کي ذات
بےنظیر ھے (फ़ा) ذات خداے لایزال ھست قدیم وبےمثال (अ) لیس کمثلہ شے

निष्ट (नष्ट) देव की भिष्ट (भ्रष्ट) पूजा ।

(सं) यथा देवस्य रूपं स्यात्तथा तस्याऽस्ति पूजनम् । (अं) As is the God, so is the worship. (उ) لاتوںکا دیوتا باتوں سے نہیں مانے
(फ़ा) درودگر بے سرزنش کارنمي کند (अ) لا یعذ رمن یقتل

नी

नीकी हू फीकी लगे बिन अवसर की बात ।

(सं) अविज्ञातप्रसङ्गस्य वचो वाचस्पतेरपि । याति निःसारतां लोके युद्धे हास्यवचो यथा । (अं) A day after the fair.
(उ) عید پیچھے ٹر (फ़ा) مشتے کہ بعداز جنگ یاد آید برکلۂ خود بایدزد
(अ) لایعطب العطر بعد العروس

नीम हकीम खतरे जान ।

(सं) अनुभवरहितो वैद्यो लोके निहन्ति प्राणिनः प्राणान् । (अं) Better call no doctor than a bad one. (उ) نیم حکیم خطرۂ جان
نیم ملا خطرۂ ایمان (फ़ा) نیم حکیم خطرہ جان نیم ملا خطرۂ ایمان
(अ) مثل النعامۃ لا طیرو لا جمل

ने

नेकी का बदला बदी ।

(सं) उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते । (अं) Evil for good.
(उ) کھلانے کا نام نہیں رلانے کا الزام (फ़ा) نیکي برباد گناہ لازم
(अ) الیوم علے اللیام ظالم علے الکرام

नै

नैन लगे तब चैन कहां है ।

(सं) कान्ताकटाक्षक्षतचेतसां हि शान्तिः सुखं चैव न चेतासि स्यात् ।
(अं) Attachment mars peace of mind.
(उ) نہ ائي آنکھہ جب سے آنکھہ لگي (फ़ा) آن را کہ غم یاربود چون خسپد
چشمیکہ دروخاربود چون خسپد (अ) تتجافی جنوبہم عن المضاجع

नैना देत बताय सब हिय को हेत अहेत । ज्यों नाई की आरसी भली बुरी कहि देत।

(सं) नेत्रवक्त्रविकारेण लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः। (अं) Look is the index of soul. Or, A merry heart makes a cheerful countenance. (उ) آدمي چہرے مہرے سے پہچانا جاتا ہے

(फ़ा) ظاهر عنوان باطن است (अ) الظاهر عنوان الباطن

नौ

नौ निद्धि बारह सिद्धि।

(सं) सिद्धयो द्वादश प्रोक्ता निधयश्च नवेरिताः। (अं) (Lit.) Gems are of nine kinds and success is of twelve.

(उ) گنگا جمنا گہر مین بہتي هين (फ़ा) دلا خوش باش که نان ماهروغن امتاد

(अ) العميان قد يلتقط الهميان

नौ नगद न तेरह उधार

(सं) स्वल्पं हस्तगतं श्रेयः नाऽनल्पं परहस्तगम्। (अं) (Lit.) Ready cash, though small, is preferable to credit, though large. (उ) نو نقد نہ تیرہ ادهار

(फ़ा) كنجشك دردست به از باز درهوا (अ) النقد خير من النسيئة

नौ दिन चले अढ़ाई कोश।

(सं) न वरं दीर्घसूत्रता। (अं) At a snail's pace.

(उ) نو دن چلے اڑهائي كوس

नौसौ चूहा खाय बिलाड़ी हज्ज को चली।

(सं) वृद्धा वेश्या तपस्विनी। (अं) Physical strength declining, mind turns to God. Or, An old thief preaching gospel.

(उ) نو سو چوهے كهاكر بلي حج كو چلي (फ़ा) من خوب ميشناسم پيران پارسارا

(अ) انا اعرف با سوارك

नौकरी की पत्थर पर जड़ है।

(सं) भृत्यत्वं नैव सुस्थिरम्। (अं) Nothing is so uncertain as service. (उ) چاكري كي جڑ پتہر پر هے

नौकी लकड़ी नब्बे खर्च।

(सं) वहनीयव्ययो मूल्यादधिको नैव शोभते। (अं) Paying a pound for a penny whistle. (उ) اتنے کی بڑھیا نہیں جتنے کا لہنگا پھٹ گیا (फ़ा) آفتابہ خرج لحم (अ) نواء المال ازیدعلی راس المال

नं

नंगा खड़ा उजाड़ में है कोई कपड़ा ले।

(सं) स्वयं नग्नोऽप्यसौ भिक्षुर्दानं दातुं समुत्सुकः। (अं) One who is naked cares little for cloth. (उ) لنگڑے نے چور پکڑا دوڑیو میاں اندھے (फ़ा) ابلہ گفت دیوانہ باور کرد (अ) الجاهل یقول والعالم یقیس

नङ्गी नहाय निचोड़े क्या।

(सं) किं वासेन प्रयोजनं दिगम्बराणां ग्रामे रजकस्य कस्यचित् कदाचित्। (अं) What is fashion to one wanting clothes? (उ) ننگی نہائے تو کیا نچوڑے

प

पक्के आम के टपकने का डर है।

(सं) वृद्धमृत्योः सदा भयम्। (अं) The old are in dread of death. (उ) تھکا اونٹ سرائے کو تکتا ھے (फ़ा) موے سفید از اجل آرد پیام * پشت خم از مرگ رساند سلام (अ) الشیب رسول الموت

पढ़ा पर गुना नहीं हो तो किस काम का।

(सं) अनुभवरहिता विद्या व्यर्था जायते प्राणिनां लोके। (अं) Knowledge without experience is of little value. (उ) آدمیت اور شے ھے علمیت کچھ اور شے * کتنا طوطے کو پڑھایا پر وہ حیوان ھی رھا (फ़ा) چارپائے بروکتابے چند (अ) العلم بلا عمل کا لشجر بلا ثمر

पढ़ै सो पण्डित होय।

(सं) पठन् भवति पण्डितः। (अं) Learn not and know not. (उ) سیکھیگا نہیں تو جانیگا کہاں سے (फ़ा) ناخواندہ استادی مکن (अ) علموا وتعلموا

पत्थर को जोंक नहीं लगती।

(सं) न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य। ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति। (अं) (Lit.) The leeches do not suck a piece of stone. (उ) یہ گز وہ نہیں کہ جسے چیونٹی کھائیں
(फ़ा) آہن سود مکوب (अ) دلو السماء لایروي الظمان

पतली ही जेवड़ी में बल लगता है।

(सं) नैके दुर्बलशत्रवः। (अं) Light but strong.
(फ़ा) نزلہ برضعیف مے ریزد (उ) مرے کو سب کوئی مارے
(अ) المادۃ الفاسدۃ ینزل علے عضو ضعیف

पढ़े न लिखे नाम विद्यासागर।

(सं) अक्षरशत्रुर्नाम्ना विद्याधरः। (अं) (Lit.) A Vidyasagar not knowing even the alphabet. Or, A high-sounding title without sense. Or, A general in title, but without a single soldier to command. (उ) پڑھے لکھے خاک نہیں نام محمد فاضل
(फ़ा) بر عکس نہند نام زنگي کافور (अ) صلت علے الاسدو بلت عن البقر

पराये धन पर लक्ष्मीनारायण।

(सं) परराज्ये विक्रमो राजा। (अं) One can be very generous with other's money. (उ) حلوائی کي دوکان دادا جي کا فاتحہ
(फ़ा) فاتحہ آبابدکان حلوائي (अ) التصدق بالمال الذي فقدہ

परदेशी की प्रीति फूस का तापना।

(सं) मैत्र्या किं परदेशिभिः। (अं) Friendship of a foreigner is like a house built on sand.

(उ) پردیسي کي محبت اور پھوس کا تاپنا برابر ھے

पराया घर थूकने का डर।

(सं) रोगी चिरप्रवासी परान्नभोजी परावसथशायी। यज्जीवति तन्मरणं यन्मरणं सोऽस्य विश्रामः। (अं) One is never at ease in another's house. (उ) پرایا گھر تھوکنے کا ڈر

पकाई खीर होगया दरिया।

(सं) विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्। (अं) Lofty aim but

poor achievement. (उ) کرموں کی بلیا پکائی کھیر ہو گیا دلیا

(फ़ा) چقندر کا شتم زردک برآمد (अ) زرع الشقي يمسك المطر

पराया शिर पसेरी बराबर ।

(सं) परदुःखदुःखिताः कियन्तः ? (अं) No one knows the weight of another's burden. (उ) جانے بچارا قلندر جسکا پھوٹے کچکول (फ़ा) بار دکسی رسد کہ درے دارد (अ) لم یصب بمصیبتی

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं सो नर न घनेरे ।

(सं) परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् । धर्म्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः । (अं) Every one can give precept but few can follow. (उ) نصیحت سہل ہے عمل مشکل

(फ़ा) خودرا فضیحت دیگران را نصیحت (अ) يكسو الناس واسته عارية

पराये पीर को मलीदा–घर के देव को धतूरा ।

(सं) अति परिचयादवज्ञा ह्यपरिचितस्यादरो भवति । (अं) A prophet is not honoured in his own country. (उ) گھر کی مرغی دال برابر

(फ़ा) گوہر درکان بیقدر در دوکان باقدر (अ) المرء وایعزفی قریته

पढ़े पारसी बेचें तेल ये देखो क़िस्मत के खेल ।

(सं) भाग्यवन्तं प्रसूयेथा न शूरान् न च पण्डितान् । (अं) (Lit.) A learned man doing a menial work, Oh, the freaks of Fortune. (उ) پڑھے فارسی بیچے تیل یہ دیکھو قدرت کے کھیل

पराई नौकरी साँप खिलाने के बराबर है ।

(सं) सेवाधर्म्मः परमगहनो सर्पवत्क्रीतिक्रुद्धि । (अं) (Lit.) To serve another is like playing with a serpent.

(उ) پرائی نوکری سانپ کھلانے کے برابر ہے

पराई हँसी गुड़ से भी मीठी ।

(सं) परोपहासो हि सुधासमो भवेत् । (अं) (Lit.) It is very pleasing to pick holes in another's coat.

(उ) پرائی ہنسی گڑ سے بھی میٹھی

परहित घृत जिनके मन माखी ।

(सं) त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ।

(अं) (Lit.) To do harm at any cost.

(उ) پوهت گهرت جنگے من ماتهي

पतंगी रंग लगाया काया झूठी रे साधो।

(सं) स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ मुखं श्लेष्मागारं तदपि च शशाङ्केन तुलितम्। स्रवन्मूत्रक्लिन्नं करिवरशिरस्पर्द्धिजघनं मुहुर्निन्द्यं रूपं कविजनविशेषैर्गुरुकृतम्। (अं) Death is inevitable.

(उ) آدمي بلبلا هے پاني کا (फ़ा) هر که آمد در جهان زاهل فنا خواهد برد

(अ) كل نفس ذائقة الموت

पर घर कूदें मूसलचन्द।

(सं) परालये नृत्यति ठएठपालः। (अं) Cocks made free at horse's corn. Or, A self-elected manager.

(उ) حلوائي کی دوکان دادا جي کي فاتحه (फ़ा) ده ـ کرم داشتن

(अ) التصدق بالمال الغير

परदेश कलेश (क्लेश) नरेशन को।

(सं) दुर्निवारः पथि क्लेशः। (अं) (Lit.) A rich man is never at ease at another's house. (उ) سفر اور سقر میں ایک نقطه کا فرق ہے

(फ़ा) سفر صورت سقر دارد (अ) السفر قطعة من السقر

परमेश्वर से डरे वही बुद्धिमान् है।

(सं) स एव बुद्धिमाँल्लोके यो बिभेति परेशितुः। कुकार्य्यं विदधन्नित्यं सर्वथेह नृपादिव॥ (अं) Fear of God is the best guide. Or, Fear of God is the highest prudence. (उ) جنکے رتبے هیں سوا انکو سوا مشکل هے (फ़ा) مصلحت قرب از بعد افزون است

(अ) راس الحكمت مخافت من الله تعالے

पराधीन सपने सुख नाहीं।

(सं) सर्व्वं परवशं दुःखम्। (अं) Dependence is the greatest misery. (उ) یهکهکو مرگئي بلبل قفس میں * کوئي بنده نهو بندے کے بس میں

(फ़ा) خدا کسے را دست نگر کسے نکند (अ) المنتظر مضطر

पहिले भात खवायके पीछे मारी लात।

(सं) सत्कृत्य पूर्वं परतोऽभिभूयते। (अं) Unkind kick

following a kind reception. (उ) بکري نے دودھ دیا میگنیون
(ليقديو) بهرا (फ़ा) اقرار که مشروط شود اقرار نیست که خوش کند
(अ) سائر عبان فسقوا

पहले तो वह रीझ थी अब क्यों ऐसी खीज ।

(सं) यूयं वयं वयं यूयमित्यासीन्मतिरावयोः । अधुना मित्र! किं जातं यूयं यूयं वयं वयम् ॥ (अं) Why is this tension of feeling now, where once love ruled (उ) کهاں وه شوق اور کہاں یه نفرت
(फ़ा) یاباں شورا شوری یاباین بے نمکي (अ) ذاک خيرک وهذا مضيرک

पहिले भात पीछे बात ।

(सं) शतं विहाय भोक्तव्यम् । (अं) First give one food and then talk. (उ) پہلے کہانا پیچھے گانا
(फ़ा) اول طعام بعده کلام (अ) قدم العشاء قبل العشاء

पा

पानी निकल गया पाल बाँधा कर ।

(सं) नीरे च निर्गते राजन्! किमर्थं सेतुबन्धनम् । (अं) There is no use in shutting the stable door after the steed is stolen. (उ) چوري پیچھے تالا دینا
(फ़ा) چو کار از دست رفت فریاد چه سود (अ) الان وقد عصب قبل

पानी पीजे छान मित्र कीजे पहिचान ।

(सं) मित्रं परिचितं कुर्याद्वस्त्रपूतं पिबेज्जलम् । (अं) Judge not of men and things at the first sight Or, choose your friend after careful examination. (उ) چهدام کي هنڌیا لیتے هین تو بهي تهونک بجاکر
(फ़ा) بیفشان و بشمار و عاقل نشوں
(अ) لاتتخذ احداً من غير الا بتلاء

पानी में आग लगावे लुगाई ।

(सं) स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ।
(अं) Inscrutable are the ways of females. (उ) عورتوں کا مکر خدا کي پناه
(फ़ा) زیدزن دل مردان دونیم است * زنانرا کید هاے بس عظیم است (अ) ان کیدکن عظیم

पाप मूल निन्दा।

(सं) निन्दा पापस्य कारणम्। (अं) It is a great sin to pick holes in an another's coat. (उ) کسیکي بدي تو نکر عیب هے * که أسکا خدا عالم الغیب هے (फ़ा) پرده پوشي شیوه جوانمردان است (अ) الغیبة اشد من الزنا

पापी के माल अकारथ जाय डांड भरे कि चोर ले जाय।

(सं) पापिनस्तु धनं याति वह्नितस्करपार्थिवैः। (अं) Ill got, ill spent. (उ) حرام کا مال حرام میں هي جاتا هے (फ़ा) مال حرام بود بجاے حرام رفت (अ) الخبیثات للخبیثین

पासा पड़े अनाड़ी जीते।

(सं) मूर्खस्यापि जयो द्यूते प्रारब्धाज्जायते त्वहो। (अं) (Lit.) Success is but a cast of dice.

(उ) جو کام هوا هم سے وه رستم سے نه هوگا (फ़ा) گاه باشد که کودک نادان بغلط برهدف زند تیرے (अ) الکذوب قد یصدق

पानी में पत्थर नहीं सड़ता।

(सं) राजानो नैव म्रियन्ते पीडिताः क्षुधया गृहे। (अं) (Lit) A piece of stone is never dissolved in water.

(उ) پانی میں پتھر نهیں سڑتا

पांचो पण्डा छठे नारायण।

(सं) पाण्डवाः पञ्च संख्याताः षष्ठो नारायणः स्मृतः। (अं) Act in consultation. (उ) پنچ مل خدا مل پنچ

(फ़ा) درهمه کار مشورت باید * کارے مشورت نکو نباید (अ) وأمرهم شوري بینهم

पांचो अंगुली घी में मज़ा मारो जी में।

(सं) सर्व्वाधिकारित्वमुपागतेषु सौख्यं न किं स्यादधुना भवत्सु।

(अं) To roll in plenty and to have no cares.

(उ) آج کل تو گھي کے چراغ جلتے هیں (फ़ा) دلاخوش باش که نان ما بروغن أفتاد (अ) العمیان قد یلتقط الهمیان

पांच अंगुलियों से पहुँचा भारी।

(सं) स्कन्धमहत्त्वं शाखापुञ्जात्प्रजायते त्वधिकम्। गुरुरिह मणिबन्धो

भाति पञ्चांगुलिभ्यः। (अं) (Lit.) Wrist is stronger than five fingers together. (उ) پانچ انگلیوں سے پہونچا بھاری

पांड़े जी पछतायँगे सूखे चने चबायगे।

(सं) उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितग्रहणे मानाभावः। (अं) (Lit.) Refusing when offered, but repenting afterwards.

(उ) پانڈے جی پچھتائینگے سوکھے چنے چبائینگے

पांत में दो भांति कैसी।

(सं) पंक्तिभेदं न कारयेत्। पंक्तिभेदः शिवाय न। (अं) There should be no division in the camp. (उ) فراسی مسلمانی اسمیں بھی آناکانی (फ़ा) در یک دیگ دوشکم نمی باشد

(अ) ما جعل الله لرجل من قلبین في جوفه

प्राण जाय पर वचन न जाहीं।

(सं) न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् (अं) (Lit.) A word must be redeemed at any cost. (उ) وعدہ ضرور پورا کرو

(फ़ा) مرد آنست کہ یک سخن داد (अ) الکریم اذا وعد وفی

प्रारब्ध लिखा कहीं नहीं जाता।

(सं) अवश्यमेव भोक्तव्यं प्रारब्धं कर्म्म प्राणिभिः। (अं) What is in luck is sure to happen. Or, Fate is inevitable.

(उ) قسمت سات تالوں میں بھی آملتی ہے (फ़ा) رزق را روزی رسان پر میدهد بے مگس هرگز نماند عنکبوت (अ) النصیب یصیب

पि

पिया मोरा आंधर मैं कापर करूं सिंगार।

(सं) दृष्टिहीनः प्रियो मेऽस्ति किमर्थं भूषये वपुः। अरसिकेषु रसस्य निवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख। (अं) (Lit.) It is useless to cast pearls before swine. (उ) اندھے کے آگے رونا اپنے دیدے کھونا (फ़ा) آئینہ داری در مجلس کوران (अ) انک لا تسمع الموتی ولا تسمع الصم الدعاء

पिसनहारी के पूत को चना लाभ बहुत है।

(सं) दीनानां मोदकं सक्तुः (अं) A little gain is enough for a poor man. (उ) ڈوبتے کو تنکے کا سہارا

(फ़ा) غریقے دست اندازدبکا ہے (अ) الغریق یتشبث بالحشیش

पिया गये परदेश अब डर काहे का।

(सं) पतिर्मदीयः परदेशवासी श्वश्रूर्ममान्धा परिवारशून्या। भयं न किञ्चिन्मम मन्दिरेऽस्ति संरोचत चेन्निवसाऽत्र पान्थ ? ॥ (अं) When the cat is away, the mice will play.

(उ) پیا گئے پردیس اب ڈر کاھیکا

पी

पीपल पूजन मैं गई अपने कुल की लाज। पीपल पूजत हरि मिले एक पन्थ दो काज॥

(सं) आम्राश्च सिक्ताः पितरश्च तृप्ताः एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। (अं) To kill two birds with one stone. (उ) حج کا حج اور بنج کا بنج (फ़ा) ایک تیر دو نشانہ (अ) نعمت ھدیۃ العبیر ان کانت مع الشعیر

पीपलिया पान खरंता हंसती कुंपलियां मुझ बीती तुझ बीतसी धीरी बापड़ियां।

(सं) किं मेऽधुना पिप्पलराजपत्र ! करोषि निन्दां निजशब्दजातैः। प्ररोह ! मां त्वं हससि प्रहासैर्दुःखं द्वयोर्वा भविता ममेव ॥ (अं) No one can feel the weight of another's burden.

(उ) چھدا جگر جو گھر کا ھمارے کان ھوے (फ़ा) عاقل را باید کہ از دیگران پند گیرد (अ) السعید من وعظ لغیرہ

प्रीतम मिले उजाड़ में वही उजाड़ बजार।

(सं) स स्वर्गो यत्र मे प्रियः। (अं) (Lit.) In the company of friend a desert is like a populous city.

(उ) وھاں لگتا ھے دل اپنا جہاں دلدار اپنا ھے (फ़ा) خوشتر آن شہر یکہ دروے دلبر است (अ) الغریب من لیس لہ حبیب

प्रीति का निबाहना खाँड़े की धार है।

(सं) क्षुरस्य धारा नितरां दुरत्यया प्रेम्णः पथस्तत् कवयो वदन्ति।

(अं) (Lit.) To keep up the even course of love is as hard as walking on the edge of a sword.

(उ) عشق باري جسكو كهتے هيں وه تيڑهي كهير هے

(फ़ा) عاشقي بس مشكل است

(अ) الحب سهل لاكن بشق الكبد

प्रीति की रीति निराली है।

(सं) अद्भुतः प्रेमपन्थाः। (अं) Wonderful are the ways of love !

(उ) عشق كي ذات نهيں

(फ़ा) چون عشق آمد حيا رفت (अ) العشق ترك السلامت في اختيار الملامت

प्रीति जहां परदा नहीं परदा जहां न प्रीति।

(सं) न मातरि न दारेषु न सोदर्ये न चात्मजे। विश्वासस्तादृशः पुंसां यादृङ् मित्रे स्वभावजे॥ (अं) No sincerity, no love.

(उ) دوست كا مال دوست كو روا هے (फ़ा) خانهٔ دوستان بروب ودر دشمن مكوب

(अ) الصديق يحل له بيت الصديق

प्रीति रीति जानी आसान मुश्किल पड़ी बात अब आन।

(सं) प्रेम्णो हि पन्था सुगमोऽतिबुद्धः ज्ञातं तु काठिन्यमहोऽधुनास्य।

(अं) (Lit.) The course of love appears very smooth at first, but turns out to be full of difficulties in the long run.

(उ) آغاز عشق هے ابهي چاهو تو روك لو * پهر انتهاءِ آكے سنبهالا نه جائيگا (फ़ा) عاشقي بس مشكل است (अ) الحب سهل لكن يشق الكبد

पु

पुराना वैद्य और नया ज्योतिषी उत्तम होता है।

(सं) नवीनो गणितज्ञो हि प्राचीनश्च चिकित्सकः। उभौ श्रेष्ठतमौ लोके कार्य्यदक्षौ न संशयः (अं) (Lit.) An experienced medical man and a new astronomer are always considered to be the best.

(उ) طبيب پرانا اور نجومي نيا

पुण्य करते होय हानि तऊ न छाड़िये पुण्य की बानि।

(सं) दुःखैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना न पुण्यकार्य्याद्विरमन्ति धीराः।
(अं) (Lit.) Practice virtue and mind not at what cost.
(उ) هاتهہ کا دیا سر پر آتا هے (फ़ा) زر بر سر فولاد نہی نرم شود
(अ) الصدقه تردالبلاء

पू

पूंजी पूंजी से उपजती है।

(सं) धनादेव धनं भवेत्। (अं) Money begets money.
(उ) روپیه کو روپیه کماتا هے (फ़ा) زر را زر مي کشد
(अ) الدراهم بالدرا هم تکسب

पे

पेट करावे वेठ।

(सं) उदरनिमित्तं न कृतं हि किं किम्। (अं) Stomach teaches all arts.
(उ) یه سب پیت کے دهندهے هین
(फ़ा) چندین شکل براے اکل (अ) البطن یعلم الفطن

पेट भरेके खोटे चाले।

(सं) धनिनामेव चित्तेषु पापवृत्तिरुदेत्यलम्। (अं) Necessity knows no law.
(उ) خدا گنجے کو ناخن ندے
(फ़ा) خررا خدا شاخ نمیدهد (अ) اذاملک الا را ذل هلک الفاضل

पेट भरे पर सौ मतुली (मस्ती) सूझे।

(सं) अन्नसन्तुष्टदेहानां पापवृत्तिरुदेत्यहो। (अं) Hunger appeased, everything becomes enjoyable. (उ) پیت بهرے پر کهتا میتها (फ़ा) قدر میوه بیوه داند نه که صاحب میوه (अ) الکلب الشبعان یمحض الحلیب

पेट में पड़ा चारा तो कूदने लगा बिचारा।

(सं) अन्ने ह्युदरमायाते दीनोपि प्रबलायते। (अं) Full stomach makes a jolly-heart. (उ) جب آدمي کے پیت مین آتي هین روتیان سو سو طرحکے کهیل کهلاتي هین روتیان (फ़ा) گر به مسکین اگر پر داشتے * تخم کنجشک از جهان بر داشتے (अ) اذا ملک الا را ذل هلک الفاضل

पै

पैर का जूता पैर में ही अच्छा होता है।

(सं) स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते दन्ताः केशा नखा नराः। (अं) (Lit.) A thing looks nice when set in its proper place.

(उ) جوتي پير هي ميں اچهي لگتي هے (फ़ा) موزه بر سر نمي زيبد

पैसा करे काम–बीबी करे सलाम।

(सं) न बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम्। (अं) (Lit.) Money succeeds everywhere. (उ) پيسه كرے كام بي‌بي كرے سلام

(फ़ा) زر برسر فولاد نهي نرم شود

पैसा फले न पेड़।

(सं) द्रव्यं वृक्षाः फलन्ति न। (अं) (Lit.) Money is not the fruit of a tree. (उ) پيسه درخت ميں نهيں پهلتا

पैसे की हांड़ी गई तो गई कुत्ते की जाति तो पहिचान ली।

(सं) भवति विज्ञतमः क्रमशो जनः। (अं) (Lit.) The nature of the man is known, though at some cost. (उ) چهدام كي هانڈي گئي كتے كي ذات پهچاني گئي (फ़ा) دانهم كه از زيان نفع مي آيد

पैंड़ चली नहीं बाबा प्यासी।

(सं) मार्गं व्रजन्त्येव पिपासिताऽभूत्। (अं) (Lit.) To feel fatigued no sooner than the journey is begun.

(उ) ابهي دلي دور هے (फ़ा) هنوز دهلي دور است

(अ) الآن كما كان

पौ

पौबारे पड़ रहे हैं।

(सं) उदेति भाग्यं तव मित्र ! साम्प्रतम्। (अं) To live in Clover.

(उ) خوب طوطي بولتي هے ان دنوں صياد كى (फ़ा) دلا خوش باش كه فان ماهروغن افتاد (अ) العميان قد يلتقط الهميان

पं

पञ्च जहां परमेश्वर।

(सं) यत्र पञ्च जनास्सन्ति तेष्वेव परमेश्वरः। (अं) Where there is a big assembly, there is Divinity. (उ) پانچ کہیں بلی تو بلی هی سہی (फ़ा) درهمه‌کار مشورت باید * کارِ بے مشورت نکو ناید (अ) وامرهم شوری بینهم

पंचो शामिल मर गये मानो गये बरात।

(सं) सहमरणे नैव दुःखं स्यात्। (अं) A common blot is not held as a stain. (उ) سو نکٹوں میں ایک ناک والا نکو (फ़ा) مرگ انبوہ جشنے دارد (अ) اذا عمت طابت البلاء

पञ्च कहे बिल्ली सो बिल्ली।

(सं) अतथ्यस्तथ्यो वा हरति महिमानं जनरवः। (अं) Majority and reason go hand in hand. (उ) پنچ کہیں بلی تو بلی هی سہی (फ़ा) در همه کارِ مشورت باید * کارِ بے مشورت نکو ناید (अ) وامرهم شوری بینهم

पण्डित भूले तो पैंड़ो कहां मिले।

(सं) पण्डितेषु प्रभ्रष्टेषु शरण्यो नैव कश्चन। (अं) (Lit.) If the sages are in error, who are then to be followed? (उ) پڑھا هوا بهی جو بهٹکے تو کیا ٹهکانا هے (फ़ा) چو کفر از کعبه بر خیزد کجا ماند مسلمانی (अ) زلة العالم زلة العالم

फ

फन फन मणि नहीं होत।

(सं) शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे। (अं) All that glitters is not gold. or, All trees do not bear fruits. (उ) فقط ناک اور کان سے آدمی نہیں هوتا (फ़ा) نه هر که سر بتراشد قلندری داند نه هر که آینه دارد سکندری داند (अ) ما کل سوداء تمرة ولا بیضاء شحمة

फा

फाटे पीछे ना मिलें मन माणिक औ दूध।

(सं) मनोमाणिक्यदुग्धानि विदीर्णानि मिलन्ति न। (अं) (Lit.) Milk, mind, and jewel, once lost are for ever lost.

(उ) شیشه دل بہت ھي نازک ھے * ٹوٹکر پھر کبھي نهھں جڑتا (फ़ा) تاوان اگر تو لعل دھي در حساب نیست * دلوا شکستۂ نه که گوھر شکستۂ (अ) ان الزجاجة اذا کسر ھالایعب

फि

फ़िक्र बुरी फ़ाका भला फ़िक्र फ़क़ीरे खाय।

(सं) दारिद्र्यान्मरणाद्वापि मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्। चिता चिन्ता द्वयोर्मध्ये चिन्ता नूनं गरीयसी। चिता दहति निर्जीवं चिन्ता चैव सजीवकम्॥ (अं) (Lit.) A vacant mind is better than a mind full of anxiety. Anxiety is a living furnace even to a sage. (उ) آدمی کو غم کہا جاتا ھے
(फ़ा) اندیشه بسیار پیری آورد (अ) الهم یائل الا نسان

फिर पछताये क्या हुआ (जब) चिड़िया चुग गई खेत।

(सं) व्यतीते समये किं स्यात्पश्चात्तापैः प्रयोजनम्?। (अं) (Lit.) It is useless to repent for the past. What can not be repaired is not to be regretted. (उ) سانپ نکل گیا لکھر پیٹا کرو
(फ़ा) دریغ سود ندارد چو رفت کاراز دست (अ) الان وقدعصیت قبل

फी

फीकीहू नीकी लगे कहिये समय विचार। सबके मन हरषित करे ज्यों विवाह में गार।

(सं) अप्युक्तं हर्षदं वाक्यं यथावसरमप्रियम्। यथा गालिर्विवाहेषु वनितावदनेरिता॥ (अं) Everything has its season.
(उ) اپنے موقع پر بری بات بھي اچھی معلوم ھوتی ھے (फ़ा) سنگ زدن بر محل به اززردادن غیر محل (अ) کل شئے یستحسن فی مواقعه

फू

फूल न पाती देवी हा हा।

(सं) पत्रं पुष्पं फलं नास्ति देव्याः पूजा कथं भवेत्। (अं) A soldier without weapon is as good as useless.
(उ) پھول نه پاتی دیبی ھا ھا

फूला नहीं समाया।

(सं) आनन्दपूरो न ममौ शरीरे। (अं) In an ecstasy of joy.

(उ) پهولا نهين سمايا

फूंक फूंक कर पैर धरो।

(सं) माऽसमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्। (अं) Proceed slowly with caution. (उ) كنوان اور كهائين ديكهه كر چلو

(फ़ा) آهسته خرام بلكه مخرام * زير قدمت هزار جان است (अ) قدم الخروج قبل الولوج

फूंके तक्र दूध को दाध्यो।

(सं) रज्जौ यथाहेर्भ्रमः। पलाशकुसुमभ्रान्त्या शुकतुण्डे पतत्यलिः। सोऽपि जम्बूफलभ्रान्त्या तमलिं धर्त्तुमिच्छति॥ (अं) A burnt child dreads the fire. (उ) سانپ كا كاٹا رسي سے ڈرتا هے

(फ़ा) صيد نميتوان نمود بلبل دام‌ديده را (अ) لايلدغ العاقل من حجر واحد مرتين

फूल फूल करके चंगेर भरती है।

(सं) यथा बिन्दुप्रपातेन क्रमशः पूर्य्यते घटः। स हेतुः सर्वविद्यानां धर्म्मस्य च धनस्य च॥ (अं) Many a little makes a mickle. Or, Many drops make a shower. (उ) دانه دانه راس

(फ़ा) اندك اندك بسيار مي شود (अ) قطر على قطر اذا اجتمعت نهر ونهر على نهر اذا اجتمعت بحر

ब

बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्ला।

(सं) उभौ समानौ जनकात्मजौ हि (अं) A greater rogue than the father himself, or, Out-Heroding Herod.

(उ) بڑے مياں تو بڑے مياں چهوٹے مياں سبحان الله

बहती गङ्गा में पाँव धोना।

(सं) नृपस्य दाने सचिवो यशस्वी। (अं) To sail with the wind.

(उ) بهتي گنگا ميں هاتهه دهو لو (फ़ा) چو ميدان فراخ است گوي بزن (अ) الدنيا مزرعة الآخرة

बद अच्छा बदनाम बुरा।

(सं) वरीयान् दुर्जनो लोके दुश्चरित्रो न कर्हिचित्। (अं) (Lit.) Doing bad is better than bearing a bad name.

(उ) بد اچھا بدنام برا (फ़ा) مردن به نام به که بود زندگي به ننگ

(अ) الموت في عز خير من حيوة في ذل

बलवान् बीसों बिस्वा मारे और रोने न दे।

(सं) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (अं) (Lit.) A tyrant strikes hard but never allows to cry. (उ) زبردست مارے اور رونے نه دے (फ़ा) دست زور بالا (अ) الملک لمن غلب

बरतन से बरतन खटकता ही है।

(सं) ब्राह्मणाः कुकुराश्चैव स्वजातिद्वेषकाः सदा। (अं) Two of a trade can never agree. (उ) دو برتن ایک ساتھ رهنے سے ضرور ٹکراتے هیں

बगल में तोशा किसका भरोशा।

(सं) स्वायत्तं सुखदं वस्तु पराशा न गरीयसी। पुस्तकस्था च या विद्या परहस्तगतं धनम्। कार्य्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्॥

(अं) To be enjoying pleasure, not caring what may come next. (उ) بغل میں توشه تو کسکا بهروسه

बगल में सोंटा नाम गरीबदास।

(सं) नाम्ना वै दीनदासोऽयं दीनेभ्यो दुःखदः सदा। (अं) A tyrant in nature, but in name a saint. (उ) بغل میں سونٹا نام غریب‌داس

बराती खा पीकर जाते धाम, दुलहा दुलहिन से पड़ता काम।

(सं) सुखं दुःखं स्वयं भुङ्क्ते न चान्ये स्वस्य कर्मणः। (अं) The actors bear the consequence while others only enjoy pleasure. (उ) براتی کھا پیکر جاتے دھام دولھا دلہن سے پڑتا کام

बजाज़ की गठड़ी का झींगुर मालिक।

(सं) रजकानां गृहे स्वामी वेद्यो वैशाखनन्दनः। (अं) Fools give feasts and wise men eat. (उ) بزاز کي گانٹھ پر جھینگر بیٹھا کہے سب مال میرا هے

बकरी की माँ कबतक खैर मनावेगी।

(सं) सिंहं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च। अजापुत्रं बलिं दत्ते दैवो दुर्बलघातकः॥ (अं) The weak have to suffer the frowns of Fortune. (उ) كاغذ كي ناؤ آج نه ڈوبي كل ڈوبي
(फ़ा) سبوے گلي امروز اگر نشكند فردا شكند (अ) الكذب يهلك

बनियां अपना गुड़ छिपाकर खाता है।

(सं) वाणिज्यवार्त्ता बहु गोपनीया। (अं) Trade secrets must always be kept concealed. (उ) بنيا اپنا گڑ چهپا كر كهاتا هے

बड़े बोल का सिर नीचा।

(सं) निन्दा भवति जनानां लोकेऽनधिकारचर्चया नूनम्। (अं) Humble are the truly great. (उ) غرور كا سر نيچا
(फ़ा) تكبرعزازيل را خواركرد (अ) ولاتمش في الارض مرحاً

बगुला मारे पंखों का ढेर।

(सं) बके हते पक्षततेर्हि लाभः। (अं) (Lit.) Kill a heron, and you get only feather. (उ) مارے تو كسي امير كو مارے
(फ़ा) خاک از تودہ كلان بردار (अ) كن جهدفي جوف الفيزا

बच्छु नहीं होत गधा गंग के नहवाये से।

(सं) न हेमकुम्भे विषममृतं भवेत्। (अं) Black stone will never turn white. (उ) گدها پيتے گهوڑا نهيں هوتا
(फ़ा) باجي بطواف كعبه حاجي نه شود (अ) ذاكان الطباع طباع سوء * مايس ساقي ادب الاديب

बत्तीस दांत की भाषा खाली नहीं जाती।

(सं) शापो नैव वृथा भवेत्। (अं) (Lit.) The curse of a person possessed of occult power never goes in vain.
(उ) خلق كا حلق خدا كي زبان زبان خلق كو نقارۂ خدا ، سمجهو (फ़ा) زبان خلق نقارۂ خدا (अ) نهرل القصياء داند حال علي يافي افواه لرجال

बनियां जोड़े पली पली राम लुटावें कुप्पा।

(सं) शतं स्याद्धेमकारस्य लोहकारस्य चैककम्। (अं) Man

proposeth God disposeth. (उ) تدبیر نہیں چلتی ہے تقدیر کے آگے
(फ़ा) تدبیر کند بندہ تقدیر زند خندہ (अ) التقدیر یضحک علی التدبیر

बनियां हाट न छेड़िये जाट जंगल के बीच।

(सं) स्वस्थाने कुक्कुरोऽपि तावच्चण्डो भवति। (अं) Every one must stick to his own occupation. (उ) اپنی گلی میں کتا بھی شیر ہوتا ہے (फ़ा) ہر سگ بخانہ خود دلیر است
(अ) کل کلب لبابہ نباح

बनियें का लिखा बनियां बांचे।

(सं) वाचयति वैश्यः खलु वैश्यलेखम्। (अं) Professional secrets are known only to those who carry on that profession.
(उ) لکھے موسا پڑھے خدا (फ़ा) تصنیف را مصنف نیکو کند بیان
(अ) المعنی فی بطن الشاعر

बनी बनी के सब कोई साथी बिगड़ी के कोई नाहीं।

(सं) अर्थप्रार्थनशङ्कया न कुरुते सम्भाषणं वै सुहृत्। (अं) Prosperity gathers friend. (उ) بنی کے سوسالے ہوتے ہیں اور بگڑی کے ایک بھی کوئی نہیں ہوتا (फ़ा) بوقت تنگدستی آشنا بیگانہ میگردد (अ) الناس اخوان من دامت دولتہ

बनी सराहिये।

(सं) कृतकार्य्याः प्रशंस्यन्ते। (अं) Success is merit.
(उ) جسکے ہاتھہ ڈوئی اسکا سب کوئی (फ़ा) ناسزاے را چوبنی بختیار عاقلان تسلیم کردند اختیار (अ) رایت الناس قدذھبوا الی من عندہ ذھب

बरात पीछे धौंसा।

(सं) पश्चाद्भागे हि व्रातस्य नक्कारो वाद्यतेऽद्भुतः। (अं) (Lit.) To play the band after the procession has passed. Or, A day after the fair. (उ) عید پیچھے چاند
(फ़ा) ہرسخن وقتی و ہر نکتہ مقامی دارد (अ) لایصب العطر بعد العروس

बल करतां कल चढ़े।

(सं) बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्। (अं) Knowledge is power. (उ) جو کام کل سے ہو وہ بل سے نہیں ہوتا

(फ़ा) زتدبیر پیرے کسي برنگرد * که کار از موده بود سالخورد (अ) مسئولیت الامر بالتدبیر لا بالتوویر

बलवे नदी तेरा फांट।

(सं) प्रवाहः स्रोतसां वेगैरतिक्रान्ततटः सदा। (अं) (Lit.) Short-lived are the banks of powerful current.

(उ) مرتا هون مين تو آدم خاكي كي شان پر * الله رے دماغ که هے آسمان پر

(फ़ा) سر شت از خاک و دماغ بر افلاک (अ) الانسان خلق من ماء مهين وعرج الي عليين

बस कर मियां! बस कर, देखा तेरा लशकर।

(सं) अलं ह्यलं शूर! विकत्थनेन दृष्टं मया सैन्यबलं त्वदीयम्। (अं) (Lit.) Enough, good Sir, shut up, your grandness we have seen. (उ) بهیڑ کي لات گهتنے تک

(फ़ा) زحل هندي از مریخ ترکي (अ) البعل الهرم لايقرعه صوت الخلخل

बहता पानी निर्मला बंधा गन्दा होय।

(सं) साधूनां भ्रमतामेव चित्तं स्यान्निर्मलं सदा। (अं) Used key is always bright. Or, stagnat water stinks into the nose.

(उ) بیٹهے بیٹهے بهي طبیعت اُکتا جاتي هے (फ़ा) آب چۀ نکه بسیار میماند گندهگردد

(अ) راس الماء اذا مکث

बा

बावन तोले पाव रत्ती।

(सं) अस्ति सम्यक् परीक्षितम्। (अं) Well tried.

(उ) باون توله پاؤ رتي

बापराज घर खाये न पान दांत निपोरे कढ़ गये प्रान।

(सं) न हि कालः प्रतीक्षेत कृतमस्य न वा कृतम्। (अं) Haughtiness characterises an upstart. (उ) باپ راج گهر کهاے نه پان * دانت نپورے کڑهه گئے پران (फ़ा) یوسف کجا ودسترس پیرزن کجا (अ) مانفي بتیک دقیق فاین یتهاء الرفیق

बाप मरा घर बेटा हुआ इसका टोटा उसमें गया।

(सं) तुल्यावायव्ययावुभौ। (अं) As the loss, so is the gain. (उ) باپ مرا گهر لڑکا هوا—اوسکا ٹوٹا اسمین گیا

बात गये कुछ हाल नहीं है।

(सं) सत्या प्रिया न वाग् यस्य स संसारे नराधमः। (अं) Break your promise, and lose confidence. (उ) بانی نہین تو زندگانی کس کی ہے (फ़ा) نام بلند به از بام بلند (अ) الاعتبار خیر من القنطار

बाल की खाल निकालें लोग।

(सं) खलः सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति। (अं) A clever man draws essence from an essence.

(उ) بال کی کھال نکال لوگے

बाज़ार किसका ? जो लेकर दे उसका।

(सं) व्यवहारः सत्याश्रयी। (अं) Honesty in trade secures credit. (उ) بازار کسکا جو لیکر دے اوسکا

(फ़ा) نام بلند به از بام بلند (अ) الاعتبار خیر من القنطار

बावरे गांव में ऊंट पाहुना।

(सं) विप्राऽस्मिन्नगरे महान् कथय कस्तालद्रुमाणां गणः। (अं) (Lit.) In an assembly of mad, a camel is a guest.

(उ) باوری گانون مین اونٹ پانہونا

बारे की माँ न मरे और बूढ़े की जोरू।

(सं) वृद्धस्य भार्य्या मरणेन दुःखं मातुर्वियोगे न च बालकानाम्।

(अं) Mother in childhood, and wife in old age are main props. (उ) بارے کی نه مان مرے اور ئه بوڑھے کی جورو

बारा वर्ष दिल्ली में रहे तो क्या भाड़ झोंका ?

(सं) अपि काश्यां निवासेन पठितं नैव किञ्चन। (अं) A life-long companion of the wise, but himself a fool.

(उ) بارہ برس دھلی مین رھکر کیا بھاڑ جھونکا

बारह वर्षों में घूरे की भी दशा फिरती है।

(सं) चक्रवत् परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च। (अं) Time produces change even where it is least expected. Or, Mutability is the order of Time. (उ) کبھی گھورے کے دن بھی پھرتے ھین

(फ़ा) هر کسے پنج روز نوبت اوست (अ) المریض یشفی و الفقیر یغنی

बाप का पोखर है तो क्या कीच खानी है ?

(सं) तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।

(अं) An evil custom though time honoured, must be remedied. (उ) باپ کي پوکهر هے تو کيا کيچ کهاني هے

बाप न मारी मूसड़ी बेटा तीरन्दाज़।

(सं) मूर्खवंशेषु पण्डितः। (अं) A lily in a heap of dung. Or, A lion in power, though descended from a fox.

(उ) مان بهٹياري پوت فتح‌خان (फ़ा) اگر پدر نتواند پسر تمام کند

(अ) لاتعد قدرک

बाहरवाले खा गये घरके गावें गीत।

(सं) विजातीयाः प्रमोदन्ते दुःखायन्तेस्वजातयः। (अं) Great care for others, but no care for friends and relations.

(उ) باهر والے کها گئے گهر کے گاوين گيت

बार बार चोर की तो एक बार शाह की।

(सं) चौरस्य बहुवारश्चेदेकवारन्तु श्रेष्ठिनः। (अं) (Lit.) A thief is sure to be detected once, though he may escape many a time.

(उ) بار بار چور کي ايک بار ساهوکار کی

बांझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा।

(सं) न हि वन्ध्या विजानीयाद्गुर्वीप्रसववेदनाम्। (अं) The wearer knows where the shoe pinches. (उ) موزے کا گهاؤ ميان جانين يا پائوں (फ़ा) بادردکسے رسد که دردے دارد (अ) لم يصيب بمصيبتي

बात दृष्टान्त से नीके समझात है।

(सं) न दृष्टान्तं विना कश्चिद्वाक्यसारोऽवगम्यते। (अं) An illustration is a good explanation. (उ) بات مثال سے سمجهه مين آتی هے (फ़ा) سخن از مثال روشن گردد (अ) المثل فی الکلام کالملح فی الطعام

बात लाख की करनी खाक की।

(सं) नीचो वदति न कुरुते न वदति सुजनः करोत्येव। (अं) Many speak but few act. Or, It is easier said than done.

(उ) رهنا جهونپڑی میں خواب دیکهنا محلونکا (फ़ा) خضر صورت شیطان سیرت
(अ) لسان تسبح وقلب یذبح

बातां हाथी पायबो बातां हाथीपायँ ।

(सं) सम्मानमपमानश्च वचसाऽऽसाद्यते जनैः । (अं) A tower built on sand. (उ) زبان هي سر كٹوائے زبان هی هاتهی چڑهائے
(फ़ा) زبان سرخ سرسبز میدهد بر باد (अ) سلامة الانسان والعة في لسانه

बातों बूढ़ा करतब खुवार ।

(सं) पापकर्म्मप्रवृत्तोऽपि धर्म्मव्याख्याधुरन्धरः । (अं) To speak like a wise man and to act like a child.
(उ) منهه كا ميٹها پيٹ كا كڑوا (फ़ा) صورت انسان سیرت شیطان
(अ) لسان يسبح وقلب يذبح

बांदी औरों के पांव धौवे अपने लिये सोवै ।

(सं) परकार्य्यप्रवीणोऽपि स्वकार्य्ये कुशली न हि । परोपदेश निपुणः पापाचारे स्वयं रतः ॥ (अं) Wise in precepts but not in deeds.
(उ) چمار كي جورو اور ننگے پانون پهرے (फ़ा) كوزه گر از كوزهٔ نو آب نمي خورد
(अ) مرآة الحايك لايلبس الثوب الجديد

बाप से बैर पूतसे सगाई ।

(सं) पुत्रैः सखित्वं जनकैर्विरोधः । (अं) (Lit.) Friendship with the son and enmity with the father. (उ) كوڑي حرام اور بغچه حلال (फ़ा) شكر خوردن و از نيشكر پرهيز كردن (अ) قتلوا سبط النبی وحرموا قتل البعوضة

बाबा आवै न घण्टा बाजे ।

(सं) न नव माणकं तैलं राधाया नर्त्तनं कथम् । (अं) No movement from here, till the mountain in motion. (उ) دلی سے هينگ آئیگی جب بڑے پکهونگے (फ़ा) تا تریاق از عراق آورده شود مارگزیده مرده بود
(अ) الملدوغ يموت حتي يتركب التریاق

बांबी में हाथ तू डाल मन्त्र मैं पढूं ।

(सं) त्वं हस्तं विवरे देहि अहं मन्त्रं पठामि च । (अं) To make a cat's paw of a person. (उ) بهس مین چنگاري ڈال جمالو دور كهڑي
(फ़ा) از دوردست بآتش گذاردن ۔ (अ) واذا قيل لهم لا تفسدوا فی الارض قالوا انما نحن مصلحون

बाड़ विना बेल नहीं चढ़ती।

(सं) विनाऽऽश्रयं न तिष्ठन्ति पण्डिता वनिता लताः। (अं) No flying without wings. (उ) دنیا میں وسیلہ بڑی چیز ہے
(फ़ा) مربی بیار و مربی بخور (अ) الدنیا بالو سایل لابالفضایل

बासन विलाय जात रह जात वासना।

(सं) चम्पकपुष्पपुटन्यायः। (अं) Body is mortal but soul is immortal. Or Desire never dies. (उ) نیکی رہ جاتی ہے رھتا نہیں انسان باقی (फ़ा) زندہ جاوید کیست هر که نکو نام زیست
(अ) من ثبت جودہ ثبت وجودہ

ब्याह पीछे बरात।

(सं) मुण्डं मुण्डयित्वा मुहूर्त्तं पृच्छति। (अं) A day after the fair. (उ) هر ایک بات اپنے موقع کی اچھی هوتی ہے
(फ़ा) هر سخن وقتی و هر نکته مکانے دارد (अ) لایحب العطر بعدالعروس

बार बह जायगी और बात रह जायगी।

(सं) व्यत्येति समयो नित्यं वार्त्तैवाऽवतिष्ठते। (अं) (Lit.) Time passes away, but words last. (उ) وقت نکل جاتا ہے اور بات رہ جاتی ہے (फ़ा) حرف میماند وقت نمی ماند (अ) لایبقي الزمان و یبقی مارفي اللسان

ब्राह्मण जीमेही पतियाय।

(सं) तुष्यन्ति भोजने विप्राः। (अं) (Lit.) Feast is the gratification of the greedy. (उ) گڑ کہنے سے منہہ میٹھا نہیں ہوتا
(फ़ा) بگفتن آتش دهن نه سوزد (अ) تحصیل الثواب بالا عمال لابالاقوال

बालक जाने हियो बड़ो जाने कियो।

(सं) विदन्ति हृदयं बाला निपुणाः कार्य्यकौशलम्। (अं) (Lit.) A child judges by heart, and an old man, by acts.
(उ) محبت غیر کو اپنا بنالے (फ़ा) لطف کن لطف که بیگانه شود حلقه بگوش
(अ) الناس عبیدالاحسان

बालक बुद्धिमान् सो ही बड़ा नर जान तू। बूढ़ा हो अज्ञान वही पशु समान है।

(सं) युक्तियुक्तमुपादेयं वचनं बालकादपि । अन्यत्तृणमिव त्याज्यमप्युक्तं पद्मजन्मना । (अं) Wisdom alone is age.

(फ़ा) بزرگي به عقل است نه بسال

(उ) بڑائي عقل سے ہے

(अ) غلام عاقل خير من شيخ جاہل

बावली रांड़ के बावले जाये ।

(सं) स्यान्मातृतुल्या प्रकृतिः सुतस्य । (अं) Like father like son.

(उ) سانپ کے بچے سنپولے ہوتے ہیں

(फ़ा) عاقبت گرگ زاده گرگ شود (अ) الولد سرلابيه

बासी कढ़ी उबाला आया ।

(सं) यातयामं गतरसं पूति पर्युषितञ्च यत् । उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ (अं) Unusual brightness of a lamp indicates its approaching end.

(उ) مینڈکي کو زکام ہوا

(फ़ा) مارا ازين گياه ضعيف اين گمان نبود (अ) الكناس استكره من ريح الزبلة

बासी बचे न कुत्ता खाय ।

(सं) मूलं नास्ति कुतः शाखा । (अं) (Lit.) Not too much to be spent otherwise.

(उ) نه رہے بانس نه بجے بنسي

(फ़ा) که فرداترا جان دهدنان دهد (अ) يوم الجديد و رزق جديد

बांह गहे की लाज ।

(सं) अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति । (अं) A good man always abides by his words.

(उ) ہاتھہ پکڑے کی شرم ہے ہمکو

(फ़ा) لحاظ دستگيري هم ضرور است (अ) اعتصمنا بيديک فامرنا اليک

वि

बिन दामन की चेरी ।

(सं) विनैवार्थेन सेविका । (अं) A female attendant serving for love.

(उ) بے دامون غلام

(फ़ा) درم نا خريده غلام تو ام (अ) عبد بغير الثمن

बिन हिम्मत किस्मत नहीं ।

(सं) पौरुष्येण विना मूल्यं पुरुषस्य न किञ्चन । (अं) Nothing brave, nothing have. Or, Fortune favours the brave.

(फ़ा) همت مردان مدد خدا

(उ) همت بڑي چيز ہے

(अ) من اعمل اجتهاده بلغ مراده

बिना बुलाई आवे टांय टांय गावे।

(सं) उष्ट्रस्य च विवाहे तु गर्दभा गानतत्पराः। (अं) An uninvited visitor is like a straw (उ) بن بلاے احمق لے دوڑي صحنک
(फ़ा) ناخوانده مهمان کسے مشو (अ) لاتات طعامالم تدع الیه

बिना वसीले की नाव डावां डोल होती है।

(सं) कर्णधारं विना नौका याति नद्यामितस्ततः। (अं) No flying without wings. (उ) بغیر سہارے کے بیال
(फ़ा) یک رعایت قاضی به از هزار گواه (अ) الدنیا بالوسایل لابالفضایل

बिन पखावज बिन ताल नाचे है।

(सं) नर्त्तनं किं विना वाद्यम्। (अं) To go to fight without any weapon. (उ) گنجي کبوتري اور محل مین ڈیرا
(फ़ा) زشت باشد روے ناز بیاو ناز (अ) وجہ وجه الغول ویطلب لباس الحور

बिन निरधार न होसके सांच झूठको न्याव।

(सं) गवेषणां विना नैव सत्यासत्यविनिर्णयः। (अं) No truth can be established without proof. Or, Without opposition success is easy. (उ) ایکطرفی ڈگري سب کوئی لے سکتا هے
(फ़ा) تنہا پیش قاضی روے راضی آئی (अ) من یات الحکم وحده یفلح

बिपति पड़े पै जानिये को बैरी को मीत।

(सं) आपत्सु मित्रं जानीयाद्व्यसनेषु च बान्धवान्। (अं) Adversity tries friends. Or, A friend in need is a friend indeed.
(उ) دوست وه جو اڑي مین کام آوے (फ़ा) یاران باشد که بوقت سختی بکار آید
(अ) اخوک من آساک في شدتک

बिधी तो बिल्लाये क्यों।

(सं) अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म्म शुभाशुभम्। (अं) A creator is in distress! Or, Eat, as you cooked. (उ) اپنے کئے کی سزا بھگتو (फ़ा) تیشه از دست خود برپاے خودزده (अ) ذلک بماقدمت یدیک

बिधि प्रपञ्च गुन अवगुन साना।

(सं) द्वन्द्वात्मकोऽयं संसारो विधिना निर्म्मितोऽद्भुतः। (अं) (Lit.) Good and evil are mixed together even in the creation of God. (उ) بھلائي اور برائي هر شے مین هے

बिच्छूका मन्त्र जानें नहीं सांप के बिलमें हाथ डाले।

(सं) अक्षरं नैव जानाति स्पर्द्धते पण्डितैः सह। (अं) (Lit.) A fool challenging a wise man. (उ) بچھو کا منتر جانے نہیں سانپ کے بل میں ھاتھہ ڈالے

बिल्ली को ख्वाब में भी छींछड़े नज़र आते हैं।

(सं) स्वप्नेऽपि दुर्जनोऽन्येषामहितं चिन्तयत्यलम्। (अं) (Lit.) One dreams at night what one thinks about during the day. (उ) پیاسے کو خواب میں بھی پانی نظر آتا ھے
(फ़ा) تشنه درخواب آب می بیند (अ) الجوعان لایری في منامه الاالطعام

बिन देखे राजा भी चोर।

(सं) अदृष्टे चौरे वै नृपतिमपि शङ्कत सुजनः। (अं) (Lit.) Even a king may be suspected as a thief, so long as not definitely known. (उ) بن دیکھے راجہ بھی چور

बिच्छूका काटा रोवे सांप का काटा सोवे।

(सं) सुप्यते सर्पसन्दष्टैरुद्यते वृश्चिकार्द्दितैः। (अं) Carping at a gnat, and swallowing a camel. (उ) بچھو کا کاٹا روئے سانپ کا کاٹا سوے

बिजली कांसे ही पर गिरती है।

(सं) विद्युत्पातो भवेत् कांस्ये। (अं) Magnet draws iron. (उ) بجلي كانسے هي پر گرتي هے

बिल्ली के भागों छींका टूटा।

(सं) सौभाग्येनैव वैद्यानां रोगार्त्तो जायते नृपः। (अं) Fortune's freak. Or, Illness of a wealthy man is for the gain of the doctor. (उ) بلي کے بھاگ سے چھینکا ھي ٹوٹ گیا

बिल्ली खायगी नहीं तो लुड़का ही देगी।

(सं) उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्। (अं) Mischief-making is the nature of the wicked. (उ) بلي کھایگي نہیں تو لڑھکا ھي دیگي

बी

बीज के झबुके मोति पोयले तो पोयले।

(सं) कार्य्यं हि काले कृतमेव सिद्ध्यति तस्मिन् व्यतीते नहि तस्य सिद्धिः। (अं) (Lit.) If you can make any food use of a worthless thing, you may (उ) بہتے دریا هاتھ دھو لو (फ़ा) تنور تا گرم است نان‌توان بست (अ) الدنيا مزرعةالا خرة

बीती ताहि बिसार दे आगेकी सुध ले।

(सं) गतं न शोचेद्भवितव्यचिन्तकः। (अं) (Lit.) Let dead past bury its dead. (उ) گھتي جاتي هے هردم چيت رے چيت (फ़ा) ايكه پنجاه رفت در خوابي * مگراين پنجروز در يابي (अ) تدارک في العمرمافات في اوله

बु

बुढ़िया मरी तो मरी आगरा तो देखा।

(सं) स्वार्थे सक्ता हि जन्तवः। (अं) A great gain at a small cost. (उ) بڑهيا مري تو مري آگره تو ديكها

बुरे काम का बुरा हवाल।

(सं) कुफलं स्यात् कुकर्म्मणः। (अं) Evil comes of evil. (उ) جيسي كرني ويسي بهرني (फ़ा) بد كرداري را بد انجامي (अ) وجزاء سيئة سيئة مثلها

बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम।

(सं) वृद्धा वेश्या मुखे तस्या नासा भूषणमद्भुतम्। (अं) An old matron in a young lady's dress. (उ) پراني ديگچي پر قلعي كي بهڑک (फ़ा) در هفتاد سالگي مشق طنبور ميكند (अ) شيخ يتصبى

बुढ़ापे में आदमी की मत मारी जाती है।

(सं) वृद्धत्वे हीयते मतिः। (अं) Old age is second childhood. (उ) بڑهاپے مين انسان كو هوس زيادہ هوتي هے (फ़ा) پيري و صدعيب چنين گفته اند (अ) الشيب داء لادراءه

बुढ़िया वेट बिना कैसे रहे।

(सं) वृद्धा कथं तिष्ठतु स्वाश्रयं विना। (अं) A son is the prop

of old age. (उ) وهي دهن هے جو لگي هے ترے ديوانه کو
(फ़ा) ابر موتخواهند مستان خانه گوويران شرد (अ) تريدالا مطاروان هدم الدار

बू

बूर के लड्डू खाय तो पछताय न खाय तो पछताय।

(सं) कृताकृतेऽनुतापः स्याद्‌दुर्भगाभरणे इह। (अं) Commission or omission, repentance inevitable. (उ) کنوارى ارمان بياهي پشيمان (फ़ा) نا کرده ارمان و کرده پشيمان (अ) الازدواج ندامة والعروسة حسرة

बे

बेईमानी का मुंह काला।

(सं) सत्यमेव जयति नानृतम्। (अं) Truth triumphs in the long run. (उ) بے ايماني کا منهه کالا

बै

बैठे से बेगार भली।

(सं) अभावे शालिचूर्णं वा। (अं) Better to serve gratis than remain idle. (उ) بيکار سے بيگار بهلي—بيکار مباش کچه کيا کر
(फ़ा) گر نغويسي قلمے مي تراش (अ) الكسل باب من الزندقة

बैले दीजे जायफल क्या तौले क्या खाय।

(सं) उष्ट्रवक्त्रे च जीरकम्। (अं) A drop in the ocean.
(उ) بيلے ديجے جائپهل کيا تولے کيا کهاے

बैठा ठाला बनियाँ सेर बांट तौले।

(सं) वाणिज्यरहितो वैश्यो माति पाषाणशेटकम्। (अं) (Lit.) An idler kills his time in useless pursuits.

(उ) بيٹها ٹهالا بنيا سير بانٹ تولے

बैल न कूदा कूदी गौन।

(सं) राज्ञा प्रजा न दण्ड्यन्ते ताभिरेव स दण्ड्यते। (अं) It is not you that have fallen, but your hat. (उ) بيل نه کودا کودی گون
يه تماشا ديکهے کون (फ़ा) نرگاؤ نه جست جست خروار (अ) الشاهد حاضر يسعے دصاحب الحق غائب يختفي

बो

बोये गेहूं उपजे जौ।

(सं) प्राप्नोति दुःखं कुरुते च धर्म्मम्।-(अं) To sow the wind and reap the tempest. (उ) میں کروں تیری بھلائی توکرے میری آنکھ
(फ़ा) نیکی بربادگناہ لازم (अ) الکرم علي اللیام ظلم علے الکرام

बोये पेड़ बबूलके आम कहां से खाय।

(सं) यादृशं कुरुते कर्म्म तादृशं फलमश्नुते। (अं) A bramble brings forth no grapes. (उ) نتیجہ کار بد کا کار بد ہے
(फ़ा) اگر خار کاری سمن ندروی (अ) وجزاء سیئة سیئة مثلها

बोये बीज ताके फल नीके ही लुनोहीगो।

(सं) अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म्म शुभाशुभम्। (अं) As you sow, so you shall reap. (उ) کرگہا چہوڑ تماشے جاے ناحق چوٹ جولاہا کہاے
(फ़ा) پیچش مارا ز کجروی خوداست (अ) ذلک بما قدمت یدیک

बोलबो न सीख्यो सब सीख्यो गयो धूलमें।

(सं) किं स्याद्वाऽन्यगुणैर्लोके वाग्मिता श्रेयसी मता। (अं) (Lit.) Eloquence is the finest art. (उ) پہلے بات کو تو لو پہر منہہ سے بولو
(फ़ा) اول اندیش وا نگہے گفتار پاے بوش آمدہ است و پس دیوار (अ) فکر مرارا ثم قل

बोले सो तेलको जाय।

(सं) मुखरस्तत्र हन्यते। (अं) Silence is golden. or, Silence is a great virtue. (उ) ایک چپ سو کو ہراوے
(फ़ा) ہزار جواب ایک خاموشي (अ) واعرض عن الجاهلین

बौ

बौहरे के राम राम और यम के सन्देशे बराबर हैं।

(सं) मृत्युवद्दुःखदायिस्याद्वञ्चकानां वचो मधु। अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः। (अं) He that goes a-borrowing goes a-sorrowing. (उ) قرضدار ہمیشہ خوار
(फ़ा) قرض شوہر مردان است (अ) الدین سنین الدین

ब्यौपार अपार है।

(सं) लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये। (अं) Business has no limit.
(फ़ा) سود در سوداگري است (उ) بهلا کر بهلا هوگا سودا کر نفع هوگا
(अ) التجارت یوبح المال

बं

बंके को तिरबंका मिलही जाता है।

(सं) धूर्त्तो हि लभते राजन् धूर्त्तराजं न संशयः। (अं) Pride *versus* pride. (उ) سیر کو سوا سیر موجود هے
(फ़ा) هر فرعونے را موسے (अ) لکل فرعون موسیٰ

बन्दर के गले में मोतियों की माला।

(सं) मूर्खहस्तेषु पुस्तकम्। (अं) (Lit.) To adorn a monkey with a necklace of pearl. (उ) بندر کے گلے میں موتیوں کی مالا

बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

(सं) विहाय मुक्तां करिकुम्भजातां कान्ता किरातस्य बिभर्त्ति गुञ्जाम्।
(अं) To cast pearls before swine. (उ) بندر ادرک کا ذایقه کیا جانے * شیخ کیا جانے صابن کا بهاؤ (फ़ा) چه داند بوزنه لذات ادرک
(अ) لاتطرح الدرفي اعناق الکلاب

भ

भक्ति के वश भगवान्।

(सं) भक्तिवश्यः परात्मा। भक्तिप्रियो माधवः। (अं) (Lit.) Love wins the favour of God. (उ) خوشامد سے خدا راضي
(फ़ा) خوشامد هر کرا گفتم خوش آمد (अ) ادعوا بکم تضرعا وخفیه

भजन बिन काहे को देह धरी।

(सं) तेषां वृथा जन्म गतं नराणां नाराधितो यैः पुरुषः पुराणः।
(अं) (Lit.) Vain is the life of those that do not pray.
(उ) بندگي کرے تو بنده نهیں تو گنده (फ़ा) زندگي آمد براے بندگي * زندگي بے بندگي شرمندگي (अ) وما خلقت الجن والانس الالیعبدون

भड़भूजे की छोकरी और केसर का तिलक।

(सं) दुहिता चर्म्मकारस्य कण्ठे मौक्तिकभूषणम्। (अं) An ogre ugly as imperious as a fairy. Or, (Lit.) A cobbler's daughter in a barones's gown. (उ) چھچھوندر کے سر میں چنبیلي کا تیل (फ़ा) زشت باشد روے نازیبا و ناز (अ) وجہہا وجہ الغول ویطیب لباس الحور

भरमभारी पिटारा खाली।

(सं) अन्तःसारविहीनस्य बहिराडम्बरं बहु। (अं) (Lit) Gorgeous in look, but possessed of no worth. (उ) اچھے ہیں پر خدا کام نہ ڈالے (फ़ा) آواز دہل از دور خوش مي آید (अ) اسمع جعجعۃ ولاري طحنا

भलाई का फल बुराई।

(सं) अहो! पुण्यफलं दुःखम्। उपकारफलं राजन्! अपकारोऽभवत्किल। (अं) (Lit.) Good act, evil result. (उ) نیکي کا ثمرہ بدي ہے (फ़ा) نکوئي بابدان کردن چنان است * کہ بد کردن بجاے نیکمردان (अ) الکرم علے اللئام ظلم علے الکرام

भली कहत कहा जाय।

(सं) भद्रं भद्रमिति ब्रूयात्। (अं) (Lit.) Speak gently. (उ) خوش گفتار بڑا ہشیار (फ़ा) کلام نکو دام دلہا است (अ) الکلام المحبوب صیاد القلوب

भली बात में विलम्ब कहा।

(सं) शुभस्य शीघ्रम्। (अं) In doing charitable acts ask not many questions. Or, (Lit.) Lose no time in attempting what is good. (उ) نیکی اور پوچھہ پوچھہ (फ़ा) درکار خیر تا خیر مکن (अ) الخیر لایؤخر

भवानी निबल बकरे सबल।

(सं) स्वामितः सेवको महान्। (अं) Ten rupees worth of watch and twenty rupees worth of case, or, An Amazonian wife and a dwarfish husband. (उ) دمڑي کي بڑھیا ٹکا سر منڈائي (फ़ा) آفتابہ خرج اعم (अ) کراية المال إزدعلي راس المال

भई गति सांप छछूंदर केरी।

(सं) किं करोमि क गच्छामि पतिते कार्य्यसङ्कटे। (अं) I am between Scylla and Charybdes. (उ) بھئي گت سانپ چہچہوندر کیری (फ़ा) نہ راے رفتن نہ روئی ماندن (अ) ان افعل امت وان سنت لغت

भरी जवानी मांझा ढीला।

(सं) प्राप्ते यौवनकालेऽस्य शरीरं दुर्बलायते। (अं) (Lit.) Why is this sluggishness in the vigour of youth?

(उ) چڑھي جواني مانجها ڈهيلا

भरे में भरता है।

(सं) वृथा दानं धनाढ्येषु वृथा भुक्तेषु भोजनम्। (अं) Money begets money.

(उ) بھرے میں بھرتا ھے

भरे समुन्दर म घोंघा प्यासा।

(सं) गरीयसी केवलमीश्वरेच्छा। (अं) (Lit.) To live in the sea, and still to be dying of thirst.

(उ) بھرے سمندر میں گھونگھا پیاسا

भा

भागते चोर की लँगोटी ही सही।

(सं) सर्वनाशे समुत्पन्ने यल्लब्धं खलु तद्वहु। (अं) From a bad paymaster get what you can. (उ) نا دھنی سے جو کچھہ ھاتھہ لگے سو غنیمت (फ़ा) از خانۂ سوختہ هرچہ برآید سود است (अ) خذ القلیل من اللئیم

भांग भखन तो सुगम है लहर कठिन कहँ होय।

(सं) प्रतिक्रिया स्यात्कठिना भक्षणे सुलभं विषम्। (अं) Enjoyments are sweet in the beginning, but bitter in the long run.

(उ) لوگ کہتے ھیں چاہ مشکل ھے * یہ غلط ھے نباہ مشکل ھے (फ़ा) یارے غارے باید کہ زخم مارے بکشد (अ) الحب سہل لکن یسق الکہن

भाग्यवान् के भूत कमावें।

(सं) क भोग्यमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः। (अं) (Lit.) A

Luckyman is served even by an evil sprit.
(उ) خدا دیتا هے تو نهيں پوچهتا تو كون هے (फ़ा) خدا كه ميدهد نمي پرسد كه تو كيستي (अ) فضل الله يوتيه من يشاء

भाई दूर पड़ोसी नीड़े।

(सं) दूरे ते भ्रातरः सन्ति निकटे प्रतिवासिनः। (अं) Love thy neighbour more than thy brother. (उ) آنكه اوجهل پهاڑ اوجهل
(फ़ा) هر كه از ديده دور از دل دور (अ) من بائي من العين نقد بائي من القلب

भावी के वश संसार।

(सं) अवश्यम्भाविनो भावा भवन्ति महतामपि। (अं) God's will, will be done. (उ) خدا چاهے سو كرے (फ़ा) هرچه خدا خواست همان مي شود. (अ) يفعل الله مايشاء ويحكم مايريد

भी

भीक के टुकड़े बाजार में डकार।

(सं) अन्तः सारविहीनस्य बहिराडम्बरं बहु। (अं) Much show, little fact. (उ) بهوك كے ٹكڑے بازار ميں ڈكار

भीक मांगे और आंख दिखावे।

(सं) याचमानः स्वयं भिक्षां नेत्रकोपं करोति च। (अं) Beggars must not be in temper. (उ) چوری اور سينه زوري
(फ़ा) چه دلاور است دزدي كه بكف چراغ دارد (अ) لايقضي الخصم علي القاضي

भीख न दे माई मेरो खप्पर जिन फोड़।

(सं) भिक्षा न दीयतां मातः! खर्परस्तु न भज्यताम्। (अं) Kindly let me go home alive, I will trouble thee no longer.
(उ) بخشوبي بلي بندہ لنڈوراهي بهلا (फ़ा) روباه را گفتند پوستين پوش گفت انچه
(अ) رضامن نوال بالرحيل

भू

भूले बनियां भेड़ खाई अब खाऊं तो राम दुहाई।

(सं) न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्। (अं) I will never do so again.
(उ) بهولے بنيا بهيڑ كهائي-اب كهاؤں تو رام دهائي

भूख में गूलर ही पकवान ।

(सं) क्षुधा स्वादुर्बुभुक्षायाम् । (अं) Hunger is the best sauce.

(उ) بہوک میں گولر هی پکوان (फ़ा) کوفتہ را نان تہی کوفتہ است

(अ) البقل في السفر خير من سويق الحضر

भूलि गई राव रंग भूलि गई जिकड़ी, तीन चीज़ याद आई नोन तेल लकड़ी ।

(सं) सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमात्राः । (अं) With marriage commence the troubles of life. (उ) اب تو نون تیل لکڑی یاد ہیں

भूखा सो रूखा ।

(सं) बिभुक्षितः किं न करोति पापम् । (अं) For a hungry man, no pleasure has any charm. (उ) بہوکا مرتا کیا نہیں کرتا

(फ़ा) گرسنہ بوریا دلیر بود (अ) الجوع جرثمة كبيرة

भूखा बंगाली भात ही भात ।

(सं) क्षुधार्त्तस्तण्डुलाशी वै तण्डुलं याचते मुहुः । (अं) Mad of self, sings of self. (उ) غرض کا باولا اپنی گاوے

(फ़ा) صاحب غرض مجنون می باشد (अ) صاحب الغرض مجنون

भूखे भजन न होय ।

(सं) कोऽपि कर्त्तुं न शक्नोति भजनं भोजनं विना । (अं) A light purse is a heavy curse (उ) پریشانی میں کوئی کام جیسے هو نہیں سکتا

(फ़ा) هیچ کارے برنیاید در پریشان خاطری (अ) من قل دنیاره قل مقداره

भूख में चना चिरौंजी ।

(सं) चणकं स्याद्बुभुक्षायां नूनं ह्यमृतसन्निभम् । (अं) A good stomach is the best sauce. (उ) بہوکے کو دررهی سے پکوان کی خوشبو آتی هے (फ़ा) کوفتہ را نان تہی کوفتہ است

(अ) البقل في السفر خير من سويق الحضر

भूखे को भोजन थाके को विश्राम ।

(सं) दद्यादन्नं क्षुधार्त्ताय श्रान्ताय स्थानमुत्तमम् । (अं) Give the needy what he needs. (उ) اندها کیا چاهے دو آنکھیں

(फ़ा) کورچہ خواهد هردم چشم روشن (अ) الاعمى لا يطلب الا العين

भूख में किवाड़ ही पापड़ा।

(सं) सक्तुः सुधा स्याद्धि बुभुक्षितानाम्। (अं) Hunger is the best sauce. Or, To a hungry man no food comes amiss.
(उ) بهوکه کو کیا روکها اور نیند کو کیا تکیه (फ़ा) گرسنه را از دورے بوی طعام بدماغ میرسد (अ) اکل في السفر خیر من سویق الحضر

भे

भेंड़ की लात घुटनों तक।

(सं) मशकस्य बलं कियत्। (अं) What great harm can a gnat do ?
(उ) کیا پدي اور کیا پدي کا شوربه
(फ़ा) زحل هندي از مریخ ترکي نترسد (अ) البغل الهرم لایقرعه صوت الجلجل

म

मरने चली और मलार गावे।

(सं) स्वभावो दुस्त्यजो नाथ ! प्राणैः कण्ठगतैरपि। (अं) Goes to the guillotine and begs for pie. (उ) مزاج عالي نه توشک نه نهالي
(फ़ा) کوري و نظربازي (अ) وجهاوجه الغول ويطلب لباس الحور

मरते के साथ न आप मरो।

(सं) म्रियमाणेन सार्द्धं स्वयं न म्रियस्व। (अं) Drown not thyself to save a drowning man. (उ) ڈوبتے کي خاطر تم کیون ڈوبتے هو
(फ़ा) از براے دیگران خودرا بهلاکت میفداز (अ) لایهلک نفسک لغیرک

मर जैहैं पर टरिहैं नाहीं।

(सं) अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। (अं) I will rather die than be dishonoured.
(उ) کماي جتني بهیکهي اُتني بهاري هوگی (फ़ा) خاقے به منت یکطرف وآن شوخ تنها یکطرف (अ) من یصولم یوقر

मन सांचा तो सब सांचा।

(सं) स्वान्ते पूते जगत्पूतम्। (अं) Honest with oneself, honest with the world. (उ) دل هو قابو مین تو سب کچه هو سکے
(फ़ा) صفائی قلب حاصل کن که جام جم همین باشد (अ) القلب اذا صلح صلح الجسد وان فسد فسد

मन मोतियों ब्याह मन चावलों ब्याह ।

(सं) विवाहः स्याद्यथाशक्ति । (अं) Look to the end not to the means. (उ) ضرورت سے زیادہ سامان نرکھو

(फ़ा) اگر هوس است همین قدربس است (अ) الحریص محروم

मन मिले का मेला ।

(सं) सन्मित्रसम्मेलनमेव मेला । (अं) The mind is the seat of unity. Or, Where there is peace at home there is no need of a judge. (उ) دو دل راضی تو کیا کریگا قاضی

(फ़ा) خویشی بخوشی وسو دابرضا است (अ) المرأة را ضیة والبعل راضی فمابال قضاء القاض

मन मस्त भया जब क्या बोले ।

(सं) मत्ते मनसि किं ब्रूयात् । (अं) All's gone if the mind is gone. (उ) جو مست هین قدس کے اونکو شراب کیا هے

(फ़ा) مستی ما است از نگهے پرست (अ) لاصحومن سکرالمحبة

मन भावे मुड़िया हिलावे ।

(सं) मनोभावं शिरः कम्पैः सङ्गोपयति मानवः । (अं) Nodding nay though the mind may. (उ) لب پہ توبہ توے دل میں هوس جام شراب (फ़ा) در دل هوس شراب وبر لب توبه (अ) القلب اثیم واللسان سلیم

मन चङ्गा तो कठौती में गङ्गा ।

(सं) मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः । (अं) Good mind good find. (उ) جی خوش تو جهان خوش

(फ़ा) دل اگر شاد است گلخن گلشن است وربود ناشاد گشن گلخن است

(अ) فرح العالم بفرح القلب

मन का लड्डू फोड़ना ।

(सं) मनोरथैः किं भवतीह कार्य्यम् । मनसा कल्पिते हर्म्ये शयानोऽसौ नृपायते । (अं) Build castles in the air. (उ) بالو کی دیوار بنانا

(फ़ा) عنقار ابدام آوردن (अ) لایدخل الجمل فی سم الخیاط

मन का घाटा कि धन का ।

(सं) धनं नास्ति मनो न वा । (अं) The will fails, not the

treasure. Or, Short of will, short of purse.

(उ) اميري دل كے ساتهہ هے (फ़ा) تونگري بدل است نه بمال
(अ) الغنى غني النفس

मन अटका तन भटका।

(सं) मनो यत्र वपुस्तत्राकृष्टं सञ्जायते ध्रुवम्। (अं) Absent from mind absent from body. (उ) نه لگي آنكهہ جب سے آنكهہ لگي
(फ़ा) آنراكه غم يار بود چون خسپد * چشميكه دروخار بود چون خسپد
(अ) تتجافي جنوبهم عن المضاجع

मन उमराव कर्म्म दरिद्री।

(सं) प्रारब्धहीनो मनसि प्रवीणः। (अं) Lord in the mind beggar of hand. (उ) تات كا لنگوٹا نواب سے ياري
(फ़ा) يوسف كجا ودسترس پيرزن كجا (अ) مافي بتوك دقيق فاين متاع الرقيق

मतलब के दो बोल ही बहुत हैं।

(सं) स्वल्पाक्षरं सार्थकवाक्यमुत्तमम्। (अं) Short and sweet.
(उ) لفظون كي بوچهار مطلب كابكار (फ़ा) طوالت موجب ملالت است
(अ) خير الكلام ماقل ودل

मछली के जाये किनने तैराये।

(सं) प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति। (अं) Mother nature is mother nurse. (उ) آغاسير كي دائي سكهي سكهائي
(फ़ा) بچهٔبط اگر شبيئه بود * آب درياے تا بسينه بود (अ) ابن الفقيه نصف الفقيه

मरद की बात और गाड़ी का पहिया आगे को ही चलता है।

(सं) नरस्य वाक्यं शकटस्य चक्रं नित्यं पुरो धावति धावतीह।
(अं) A step forward is a step taken. (उ) مرد مرے نام كو نامرد مرے دام كو
(फ़ा) نام نكوست حاصل ايام زندگي
(अ) الجاهل يطلب المال و العاقل يطلب الكمال

मन में बसे सो सपना देखे।

(सं) दृष्टं श्रुतं जाग्रति यद्धि लोके स्वप्ने तदेवेक्ष्यत एव लोकैः।
(अं) The thought is the father of the action.

(उ) جواري اپنا هي دانون ديکهتا هے (फ़ा) شتر درخواب بيند پنبه دانه
(अ) الجوعان لايري في منامه الاالطعام

मक्खी बैठी शहद पर रही पंख लपटाय। हाथ मले और सिर धुने लालच बुरी बलाय॥

(सं) त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत्। लोभः पापस्य कारणम्। (अं) Greed is its own hell. (उ) مکهي بيٹهی شهد پر رهي پنکهه لپٹائے هاتهه ملے اور سر دهنے لالچ بري بلاے (फ़ा) بدوزد طمع ديدهٔ هوشمند—درآردطمع مرغ وماهی ببند
(अ) الطمع يعمي ويصم

मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

(सं) मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। (अं) The mind makes the man. (उ) من کے هارے هار من کے جيتے جيت

मन मोदक नहीं भूख बुझावहिं।

(सं) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्य्याणि न मनोरथैः। (अं) Castles in the air. Or no strongholds. (उ) خيالي پلاؤ سے پيٹ نهين بهريگا
(फ़ा) عنقارا بدام نتوان آورد (अ) لايد خل الجمل في سم الخياط

मा

मांगे बिन महतारी भी न दे।

(सं) ददाति माताऽपि न याचनं विना। (अं) A closed mouth catches no flies. (उ) بے روئے مان بچے کو دودهه نهين ديتي
(फ़ा) طفل تانگريد مادرش شير ندهد (अ) ادعوني استجب لکم

मांगन भलो न बापसों ईश्वर राखे टेक।

(सं) तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः। वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं याचयेदिति॥ (अं) (Lit.) With faith in Providence resolve to stand on your own legs rather than to beg.
(उ) سب سے برا مانگنا (फ़ा) درسختي مردن به که حاجت پيش کسے بردن
(अ) السوال ذل ولوکان من ابويه

मा का पेट कुम्हार का आवा कोई गोरा कोई काला रे।

(सं) भिन्नरूपगुणशीला जायन्ते सोदरा भ्रातरोऽपि। (अं) (Lit.)

Brothers born of the same mother are often seen to be of different colour and nature. (उ) پانچوں انگلي برابر کبھي نہيں ھوتيں (फ़ा) خدا پنج انگشت يکسان نکرد (अ) ليسو سواء

मारे सिपाही नाम हो सरदार का।

(सं) योद्धृभिर्युध्यते युद्धे नायकेनाप्यते यशः। (अं) One doth the labour, another enjoyeth the fruit. Or, One soweth, another reapeth. (उ) مارے سپاهي نام سردار کا (फ़ा) کوه را فرهاد کند ولعل را پرويز يافت (अ) يکسب الوالد ويأکل الولد

मानो चाहे न मानो हम तुम्हारे पञ्च।

(सं) अस्वीकृतोऽपि पक्षाभ्यां न्यायं कर्तुं समुद्यतः। (अं) A self-elected president. (उ) مان نه مان مين تمهارا مهمان

माके दुलार से लड़के की खराबी।

(सं) लालयेत्पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्। प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रवदाचरेत्। (अं) A spoiled child of the harem. Or, Spare the rod and spoil the child. (उ) استاد کی مار مان باپ کے پيار سے بهتر هے (फ़ा) جور استاد به زمهر پدر (अ) الضرب للصبيان کالماء في البستان

माने तो देवता नहीं तो पत्थर।

(सं) तस्माद्भावो हि देवता। (अं) Where there is reverence there is divinity. (उ) اعتقاد بڑي چيز هے (फ़ा) پيرمن خس است اعتقاد من بس است (अ) الوهم خلق الاشياء

मार से भूत भागता है।

(सं) प्रेतः प्रहारात्सततं पलायते। (अं) (Lit.) Even a devil pauses before an uplifted rod. (उ) مار سے بهوت بهاگتا هے (फ़ा) گر نبودے چوب تر فرمان نبردے گاو خر (अ) عود يعلم الضفج

माह नंगे वैशाख भूखे।

(सं) माघे नग्नश्च वैशाखे क्षुधया पीडितो जनः। (अं) No cloth to protect against cold, and no food to appease hunger. (उ) ماه ننگے بيساکهه بهوکهے

मा न माका जाया सबही लोक पराया।

(सं) मातृभ्रातृविहीनस्य मम लोकः परोऽखिलः। (अं) (Lit.) Selfless love is only mother's love. (उ) همنے عالم كو آزما ديكها جسكو ديكها سو بيوفا ديكها (फ़ा) هركرادم برداشتم ماده برآمد (अ) الوفاء قدذهب اسمه وبقي رسمه

मानो तो देव नहीं भीत को लेव।

(सं) भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम्। (अं) (Lit.) An image is nothing but an image if not hallowed with reverence. (उ) اعتقاد بڑي چيز هے (फ़ा) پيرمن خس است اعتقاد من بس است (अ) الوهم خلاق الاشياء

मा पिसनहारी बाप कञ्जर और बटा मिरजा सञ्जर।

(सं) माता दासी पिता दासः पुत्रः सम्राट्शिरोमणिः। (अं) (Lit.) The mother grinds at the mill, the father a basket-maker, the son forsooth a King Sanjar ! Or, Son of poor parents, himself a great king. ! (उ) ماں بهٹیاري پوت فتح خان (फ़ा) پدر اگر نتواندپسر تمام كند (अ) لاتعد قدرک

माया को डर काया को क्या डर।

(सं) स्वसम्पत्तिकृते भीतिः स्वशरीरकृते न हि। (अं) No money, no fear. (उ) روپيه كے سب لاگو هيں (फ़ा) زر رادوست بسيار اند وزردار را دشمن بےشمار (अ) وانه لحب الخير لشديد

माया ढलती फिरती छाया।

(सं) अर्थाः पादरजोपमा गिरिनदी वेगोपमं यौवनमायुष्यं जललोलबिन्दु चपलं फेनोपमं जीवनम्। (अं) Riches have wings. Or, Fortune is ever fickle. (उ) يه دولت كسو پاس رهتي نهيں * سدا ناؤ كاغذ كى بهتي نهيں (फ़ा) اول آن روز و اخيرآن شب است (अ) المال ظل زايل

माया तेरे तीन नाम परसा, परसू, परसराम।

(सं) यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः। यस्यार्थाः सपुमान् लोके यस्यार्थाः स हि पण्डितः। (अं) Wealth is honour.

(उ) گھٹے تو فقیر بڑھے تو امیر مرے تو پیر (फ़ा) سال اول شیخ بودم سال دیگر میر زا * غلہ چون ار زان شود امسال سید میشوم (अ) ذو المال عاقل وفا قدہ لایعقل

मार चौदहवां रत्न है।

(सं) लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः। (अं) Rod is the fourteenth jewel obtained from churning the ocean.

(उ) مار کے آگے بھوت بھاگے (फ़ा) گر نبودے چوب ترفرمان نبردے گاوخر

(अ) عود یعلم الضفنج

मारन बैल गली संकरी।

(सं) सङ्कीर्णैकपदीमार्गो घातको वृषभोऽग्रतः। किं करोमि क गच्छामि पतिते कार्य्यसङ्कटे॥ (अं) On the horns of a dilemma.

(उ) ادھر قبلہ ادھر قطاب بي خدیجہ سوئے کدھر (फ़ा) نہ راہ رفتن نہ روے ماندن

(अ) ان اقل امت وان اسکت لغت

मारे घुटना फूटे ललाट।

(सं) पादे घातो व्यथा मुण्डे। (अं) I ask for a fork and you bring me a cake. (उ) کہیں کہیت کی سنیں کہلیان کی

(फ़ा) سوال دیگر جواب دیگر (अ) ضربت العنق انکسر العین

माल का मोल है।

(सं) गुणानुरूपा भवतीह सत्क्रिया। (अं) (Lit.) As is the thing, so is its worth. (उ) جیسا گڑ ڈالوگے اتناہی میٹھا ہوگا

(फ़ा) ہردو عالم قیمت خود گفتۂ نرخ بالاکن کہ ارزانی ہنوز (अ) الرخیص بالعلت والعالي بالقیمۃ

मान का पान भला।

(सं) यत्सम्मानेन सम्प्राप्तं स्वल्पञ्चेदपि तद्बहु। (अं) A gift with a kind countenance is a double present. (उ) تھوڑي بھی بہت ہے آبرو کي (फ़ा) راحت در اندک است (अ) ماقل وکفی خیرمما کثرو الھي

मान घटे नित के घर जाये।

(सं) अतिपरिचयादवज्ञा। (अं) Familiarity breeds contempt.

(उ) قدر کہو دیتا ہے ہر روز کا آنا جانا (फ़ा) ہر روز مہمانا صحبت زیادہ شود

(अ) زرغباً تزدد حباً

मान महीपत मान, दियो दान नहिं लीजिये।

(सं) न विषं विषमित्याहुर्ब्रह्मस्वं विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति ब्रह्मस्वं पुत्रपौत्रकम्। (अं) Give a thing and take again, and you shall ride in hell's wain. (उ) دي هوئي چيز کا پهر کسکا لينا
(फ़ा) انچه عطا فرمودۂ باز مگير (अ) الوفاء قدذهب اسمه وبقي رسمه

मि

मिट्टी का माधो।

(सं) गोमयीयो गणेशः। (अं) A mere puppet.
(उ) بهينس کا بهائي (फ़ा) کندۂ ناتراش (अ) ابن هبنقه

मियां भये गोर जोग बीवी भई घर योग।

(सं) आसन्नमृत्योर्भार्या वै सुन्दरी षोडशी बत। (अं) One at the threshold of life, the other at the threshold of death. Or, An old husband, and young wife. (उ) ميان قبر مين پانؤن لٹکاے بيٹهے بيبي پالنے جهولے (फ़ा) شوهر بلب گوروزن دربازي و شور * شوهر آفتاب لب بام وزن هنوز ميوۂ خام (अ) البعل في الحبس والفراش فى الرقص

मिलन भलो बिछुड़न बुरो, मत मिल बिछुड़ो कोय।

(सं) संयोगे परमानन्दो वियोगे दुःखमुत्कटम् । न संयोगो वियोगान्तो भवेत् कस्यापि कर्हिचित्। (अं) (Lit.) Union is bliss, and separation is pain. (उ) ايکدن پہلےهی دنياسےاوٹهانا همکو * يا الهی شب فرقت نه دکهانا همکو (फ़ा) قيامت آنزمان باشد که يار از يار دور افتد
(अ) الفرقت حرقت

मित्र को मिलाप अति आनन्द को कन्द है।

(सं) शोकारातिभयत्राणं प्रीतिविश्रम्भभाजनम् । केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम् ॥ (अं) When friends meet, heart is warm. (उ) ملنے سے دوستونکے دلکو خوشی هوتي هے
(फ़ा) چشم ازروے دوستان روشن شود نه از باغ وبوستان (अ) زيارت الحبيب طراوت المحبت

मियां की दौड़ मसजिद तक।

(सं) दुर्बलानां समुत्साहः शयनावधिवर्द्धते। (अं) The wrath of

the weak is pacified on his wife. (उ) ملا کی دوڑ مسجد تک
(फ़ा) دیوانہ کجا باشد درکوہ وبیا بانہا (अ) مہما تکن اکن

मियां रोते क्यों हो ? सूरत ही ऐसी है।

(सं) वानराणां मुखं कृष्णं भवत्येव स्वभावतः। (अं) (Lit) A man of uncouth make has a weeping look.

(उ) میاں روتے کیوں ہو صورت ہی ایسی ہے

मिस्सों से पेट भरता है किस्सों से नहीं।

(सं) अलं कथाप्रसङ्गेन क्षुधा सम्पीडितान्तिके। (अं) Fair words butter no parsnips. (उ) مسون سے پیٹ بہرتا ہے قصوں سے نہیں

मिजाज़ क्या है तमाशा घड़ीमें तोला घड़ी में माशा।

(सं) क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः रुष्टः तुष्टः क्षणे क्षणे। अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः॥ (अं) (Lit.) Fickle temper wanes hot and cold at the same breath. (उ) مزاج کیا ہے تماشا گھڑي میں تولہ گھڑي میں ماشا

मिल गये की हर गङ्गा।

(सं) ईश्वरेच्छा गरीयसी। (अं) Depend on chance.

(उ) ملگئے کي ہر گنگا

मी

मीठा नवाला और कड़ुवा बोल कोई नहीं भूलता।

(सं) मिष्टान्नभुक्तिः कटुका च वाणी विस्मर्य्यते नैव कदापि कैश्चित्। (अं) (Lit.) Sweet food and bitter words are never to be forgotten. (उ) تلوار کا زخم بہر جاتا ہے بات کا نہیں بہرتا
(फ़ा) جراحات لسان رانیست دارو * جراحات سنان راهست دارو (अ) جراحات السنان لہا التیام ولایلتام ماجرح اللسان

मीठा मीठा लपालप कड़ुआ कड़ुआ थू।

(सं) सुखं सर्वं ममैवास्तु दुःखं माऽभूत् कदाचन। (अं) If favourable to self-interest, everything is delicious, if not, not. (उ) میٹھا میٹھا غپ کڑوا کڑوا تہو

मीठा और भर कठौती।

(सं) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। बहुमिष्टमनल्पश्च दुर्लभं जगतीतले।
(अं) (Lit.) Sweet and in plenty. (उ) میٹھا اور بہر کٹھوتی

मु

मुख देखे की प्रीति है।

(सं) परोक्षे कार्य्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्। वर्ज्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥ (अं) Out of sight, out of mind.
(फ़ा) روبرو ہو دن بہ از پہلو بودن (उ) آنکہہ اوجہل پہاڑ اوجہل
(अ) من ماد من العين فقدباء من القلب

मुए सांप पर कीड़ियों का कटक।

(सं) कीटसैन्यं मृते सर्पे। दुर्बले शशकाः सिंहाः। (अं) To slay the slain. Or, To tread on a crushed worm. (उ) مرے شیر کو گیدڑ بہی لات مارتا ھے (फ़ा) حق کسے را اگر بیفدازد * کسش از خیل خانہ نغوازد
(अ) اذ مات الا سد يلعب به الرجال

मुए बाबा की बड़ी बड़ी अँखिया।

(सं) मृताः सर्वैः प्रशस्यन्ते। धन्या मृता ये नराः। (अं) A thing when lost is valued most. (उ) مرگئے جب ھم ھوئي تعریف میری چاہ کی
(फ़ा) قدر عافیت کسے داند کہ بمصیبتے گرفتار آید (अ) النعمة اذا فقدت عرفت

मुफ़ की शराब काज़ी को भी रवां है।

(सं) विना मूल्येन संप्राप्तमपेयञ्चाऽपि किञ्चन। विदुषा गृह्यते धर्म्म्य-मिति मत्वा नृणा बत। (अं) (Lit.) Wine, when obtained gratis, is not unacceptable even to the Kazi. (उ) مفت كي شراب قاضی کو بھي حلال ھے (फ़ा) شراب مفت قاضی هم مي خورد (अ) اللقطت ملتقطت

मुड़ा योगी पिसी दवा का क्या ठीक।

(सं) परिवर्त्तितवेषाणां रूपज्ञानं सुदुर्लभम्। (अं) (Lit.) A hermit has no caste. (उ) منڈا جوگي پسي دوا کا کیا ٹھیک

मुरगी को तकुआ का घाव ही बहुत है।

(सं) दुर्बलानां भवत्येव स्तोकदण्डोऽपि मृत्यवे। (अं) (Lit.) A

small rod suffices to kill a worm. (उ) چینٹی کو پیشاب ہی
دریا ہے (फ़ा) مورچه را قطره شبنم طوفان است (अ) طوفان النمل بالقطرات

मू

मूर्ख की सारी रैन छैल की एक घड़ी।

(सं) मूर्खस्य सर्व्वाऽपि निशा न तादृक् भवेत्सुखार्थं प्रमदाजनेषु । क्षणं क्षणं स्यात् क्षणदश्च यादृक् ये कामशास्त्रे निपुणा हि तेषाम् ॥ (अं) (Lit.) A clever man can do in an hour what a fool takes a day to perform. (उ) مورکھ کی ساری رین چھیل کی ایک گھڑی

मूल से ब्याज प्यारा होता है।

(सं) कुसीदं मूलात्प्रियं भवति । पुत्रात् पौत्राः प्रिया भवन्ति । (अं) (Lit.) Interest is more valued than the capital.

(उ) پونجی سے نفع عزیز ہوتا ہے

मे

मेरे ही से आग लाई नाम धरो वैसंदर।

(सं) कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः । (अं) A jackdaw in borrowed feathers. (उ) احمد کی پگڑی محمود کے سر
(फ़ा) از ریش کند بر بروت بست (अ) یسرق من بیت الجیران و یکرم به الضیف

मेड़की को जुकाम लोग हँसे तमाम।

(सं) वन्ध्यापुत्रं समाकर्ण्य कस्य चित्ते न विस्मयः । (अं) (Lit.) A barren lady producing a child is a wonder indeed.
(उ) میڈکی کو بھی او زکام ہوا (फ़ा) مارا ازین گیاہ ضعیف این گمان نبود
(अ) الکناس یستکره من ریح المزبلة

मै

मैं न कहूं तोसूं कौन कहेगो।

(सं) मदन्यः को वदेत्तुभ्यम् । (अं) (Lit.) Who else would keep eye on you. (उ) مانا کرو کہا بہی کسی خیرخواہ کا
(फ़ा) سخن شنیدن نیم دولت ست (अ) العمل علی نصح ناصح

मैं तो रामदिवानी मेरो मरम न जाने कोय।

(सं) श्रीरामचन्द्रपदपङ्कजमत्तचित्तभृङ्गस्य मर्म मम कोऽपि न वेत्तुमीशः।

(अं) (Lit.) Deep are the meanings of the devotees.

(उ) جومست هین درس کے انکو شراب کیا هے (फ़ा) مست مے بیدار گردد نیم شب مست ساقی روز محشر بامداد (अ) لاصحو من سکر المحبت

मैं के गले छुरी।

(सं) इति बत मे मे कुर्वन् पशुरिव नीतः कृतान्तेन। (अं) Pride goeth before fall. (उ) بڑے بول کا سر نیچا هے

(फ़ा) بخود منگر (अ) ولاتمش فی الارض مرحا

मैं अपराधी औगुण भरिया तारण तुमरे हाथ।

(सं) मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नः त्वत्समो न हि। एवं ज्ञात्वा महादेव ! यथायोग्यं तथा कुरु॥ (अं) (Lit.) Have mercy on me, O Lord, as I am the greatest of sinners ! (उ) هون لاکهه خطا و جرم هم سے گذرے هے کریم کب کرم سے (फ़ा) یارب من اگر بدم سراسر * از نیکی خویشتن تومگذر (अ) یامحسن ایاک المسئی

मो

मोहिनी देख मुनिवर चले।

(सं) कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः। (अं) (Lit.) The beauty of a female acts upon the mind even of a sage.

(उ) زلف کا دام جہان خال کا دانہ هوگا * پهنس هی جایگا اگر کیسا هی دانا هوگا

(फ़ा) زلف خوبان زنجیر پاے عقل است و دام مرغ زیرک (अ) النساء حبایل الشیطان

मोरियों पै डाटे वारणे उघाड़े।

(सं) नष्टं पीताम्बरं जातं कन्थां रक्षितुमुद्यतः। (अं) Penny-wise and pound-foolish. (उ) اشرفیان لٹهین اور کویلون پر مہر

(फ़ा) نگہبانی هیزم ورائگانی عود (अ) بنیت قصراً وهدمت مصراً

मोम का हाकिम लोह के चने चबावे।

(सं) पश्य क्षौद्रोऽधिपो मित्र ! लौहं चणकमत्त्यहो। (अं) (Lit.) A

kind-hearted man must needs be strict when dealing out justice. (उ) هزار هاتهی گیا گذرا بی سوا لاکهہ کا
(फ़ा) صد موش را یک گربه بس است (अ) كثيرمن الحطب يكفيه قليل من النار

य

यथा राजा तथा प्रजा ।

(सं) राज्ञि धर्म्मिणि धर्म्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः । राजानमनुवर्त्तन्ते यथा राजा तथा प्रजा ॥ (अं) (Lit.) As is the king, so are his subjects. (उ) جيسا دولها ويسي برات
(फ़ा) سلطان عادل جهان خوشدل (अ) الناس على دين ملوكهم

या

यारकी यारी से काम, उसके फेलों से क्या काम ।

(सं) गुणा ग्राह्या हि मित्रस्य नैव दोषाः कदाचन । (अं) (Lit.) Love is the religion of the lover. (उ) يير كي ييري سے كام يا أسكے فعلوں سے (फ़ा) بگذشت ملا برو وبفعلش مرو (अ) انظرالي ماقال ولاتنظرالي من قال

यामे कहा सन्देह ।

(सं) अत्र कः सन्देहः । (अं) No doubt about it.
(उ) اسمیں کچهہ شک نہیں (फ़ा) درین چه شک (अ) لاريب فيه

या सुखनींद सोओ या माला जपो ।

(सं) सुखं स्वपिहि भो प्राज्ञ ! राम राम रटाथवा । (अं) (Lit.) Lying down and counting the beads. (उ) ایک وقت میں دو کام نہیں هو سکتے (फ़ा) در امردر آن واحدا مکان ندارد (अ) ضدان لايجتمعان

र

रहना इकन्त का यही मत सन्त का ।

(सं) सन्तो विविक्तमिच्छन्ति । (अं Better alone than bad company. (उ) آپ بهلے اور اپنا گهر بهلا
(फ़ा) هيچ آفت نرسد گوشهٔ تنهائي را (अ) السلامة في الوحدة

रससे मरे तो विष क्यों दे ।

(सं) कार्य्ये स्वल्पश्रमाराध्ये बहुयत्नैरलं नृप ! । (अं) (Lit.) Poison has no use there where nectar serves its purpose.

(उ) گڑ سے مرے تو زهر کیوں دو (फ़ा) کاریکه به نرمی بر آید درشتي درونشاید

(अ) المداراة تخرج من حجر صاحبته

रहे बांस न बजे बांसरी ।

(सं) मूलं नास्ति कुतः शाखा । (अं) (Lit.) The tree dying, the branches must die too. (उ) رهے بانس نه بجے بانسري

रस्सी जल गई पर ऐंठन रह गई ।

(सं) श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम् । (अं) Body decays, but habits continue. (उ) رسي جل گئي پر بل نه گیا

(फ़ा) ریسمان سوخت لیکن کجي نرفت (अ) العادت لاتردالابالموت

रसमें विष, सुरजनमें दुरजन ।

(सं) रसे विषं देवजनेषु दुर्जनः । समागमाः सापगमाः सर्व्वमुत्पादि भङ्गुरम् । (अं) (Lit.) A heron in an assembly of geese.

(उ) رس میں بکهه سُرجن میں درجن

रख पत रखा पत ।

(सं) प्रतिष्ठां परेषां सुरक्षन्ति तेषां प्रतिष्ठा स्वयं रक्ष्यते शङ्करेण ।

(अं) (Lit.) Show respects to others and you would be respected. (उ) اپني عزت اپنے هاته

(फ़ा) عزت هرکس بدست آنکس است (अ) ان تکرمني اکرمک

रसोई का विप्र कसाई का कुक्कुर ।

(सं) ब्राह्मणः पाचको राजन् ! पशुघ्नस्य च कुक्कुरः । एतौ द्वौ न प्रजायेते दुर्बलौ हि कदाचन ॥ (अं) (Lit.) A Brahmin cook and a butcher's dog are both alike. (उ) رسوئي کا بپر قصائي کا کوکر

रा

राजा नलपर विपत पड़ी । भूनी मछली जल में पड़ी ।

(सं) जगतीह सदा विमुखे हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता ।

(अं) Misfortune does not come alone. (उ) کمبختی جب آوے تو اونٹ چڑھے کتا کاٹے (फ़ा) بخت خواب آلوده را فالوده دندان بشکند وبنهد (अ) اذا غلبت الشقوة على الرجل يعيبه اهل بيته

राजा योगी अग्नि जल इनकी उलटी रीति। डरते रहियो परशुराम थोड़ी राखें प्रीति।

(सं) शस्त्रपाणौ जले वह्नौ योगिनि नखिश्रृङ्गिणोः। विश्वासो नैव कर्त्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च॥ (अं) (Lit.) No reliance is to be placed on the favour of a king, or of a Yogin (devotee). (उ) سچ کہا ہے مزاج شاہوں کا * آن میں کچھ ہے آن میں کچھ ہے (फ़ा) گاہے بسلامے برنجند وگاہے بدشنامے خلعت دہند (अ) من اقتدا على سلطانه قتل

राजा का दान प्रजा का स्नान।

(सं) राज्ञो दानं प्रजास्नानं समानं पुण्यदं द्वयम्। (अं) (Lit.) Liberality of a king is for the good of his subjects. (उ) غریب کی کوڑی امیر کی اشرفی برابر ہے (फ़ा) اگر یکبہ پیچد بقنطار گنج نسنجد آنکہ دینارے از دست رنج (अ) الدرهم من هذا المعسر كالقنطار من الموسر

राजा करे सो न्याव पासा पड़े सो दाव।

(सं) राज्ञो न्याये तथा द्यूतजये भाग्यं न पौरुषम्। (अं) What the king does is justice. (उ) قاضي كي مارى حلال (फ़ा) حکم حاکم مرگ مفاجات (अ) امر السلطان كموت الفجائة

राई का पर्वत।

(सं) क्षुद्रापराधं बहुलीकरोति। (अं) To make the mountain of a molehill. (उ) پھانس کا بانس (फ़ा) دانہ خردل را کوه الوند وانمودن (अ) يقول لحبة الخردل انه جبل سليمان

राई से पर्वत करे पर्वत राई माहिं।

(सं) मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्। वटबीजे यथा वटः। (अं) Impossibility is a word never to be found in the dictionary of God. (उ) رائي سے پربت کرے پربت رائي ماهيں

रांड सांड और नकटा भैंसा ये बिगड़ें तो होवे कैसा।

(सं) रण्डा षण्डश्च मूर्खश्च भ्रष्टाः सन्तो निशाचराः। (अं) (Lit.) A villain when enraged can do any mischief.

(उ) رانڈ سانڈ اور نکٹا بہینسا یہ بگڑیں تو ہوئے کیسا

राजा किस के पाहुने योगी किस के मीत।

(सं) विश्वासो नैव कर्त्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च। न चैवाभ्यागतो राजा योगी मित्रं न कस्यचित्। (अं) No counting upon the favour of a king or of a Yogin. (उ) راجہ کسکے پاهنے جوگی کسکے میت

रावले तेल खोले झेल।

(सं) कस्यामप्यवस्थायां न त्याज्यं नृपनिश्चितं हि वस्तु। (अं) (Lit.) A loving look of a friend is a great solace. (उ) کافی ھے تسلی کو تری ایک نظر بھی (फ़ा) هرچہ از دوست میرسد نیکو است (अ) عطاء المحبوب مرغوب

रावले घोड़े बावले सवार।

(सं) वाहकस्यापराधेन घोटको गर्दभायते। अयोग्याय पदं दत्तं सर्व्वथा हानिकृद्भवेत्। (अं) Bad workman quarrels with his tools.

(उ) جیسے مدارمیاں ویسی هی گهوڑی (फ़ा) مرانخریدۂ جانرازان قدرش نمیدانی

(अ) الغنيمة الباردة يبذل بلا حرقة

राम भरोसे जो रहै परवत पै लहराय।

(सं)अरक्षितं तिष्ठति रामरक्षितं सुरक्षितं रामहतं विनश्यति। ईश्वरार्पित-सर्वस्वः सुखी सर्वत्र जायते॥ (अं) (Lit.) Happy are the faithful wherever they happen to be.

(उ) بهروسا ایک خدا کا سچا هے (फ़ा) تو کل بر خدا کن بالیقین تو

(अ) توکل علے الله یکفک

राम नाम में आलसी भोजन में हुशियार।

(सं) भगवत्कीर्त्तने मंदो भोजने च समुत्सुकः। (अं) (Lit.) Slow to act but clever to eat. (उ) دانہ کو آگے کام کو پیچھے

(फ़ा) روستایان گیلان (अ) ابن هبنقه

राम नाम जपना पराया माल अपना।

(सं) मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यद्दुरात्मनाम्। रामो वाचि ह्यसिः पार्श्वे ॥ (अं) God on tongue and devil in heart. (उ) ہاتھي کے دانت دکہانے کے اور کہانے کے اور (फ़ा) دیدار زا یوسف دلوا گرگ (अ) لسان تسبیح و قلب یذبح

राम धनी वाको काहे की कमी।

(सं) किं दुर्लभं स्यात्प्रभुसेवकस्य। (अं) (Lit.) The servants of God are above all wants. (उ) نا خدا سے کام کچھہ رکھتے نہین اپنی کشتی کا نگہبان اور ھے (फ़ा) ماخداداریم مارانا خدا درکار نیست (अ) من له المولی فله الکل

रात भरे दिन रीते इन पेटन ने जग जीते।

(सं) अस्य दग्धोदरस्यार्थे ,किं किं न विहितं मया। जगदस्त्युदराधीनम्। (अं) Stomach teaches all arts. (उ) پیٹ سب ناچ نچاتاھے (फ़ा) این همه ازپئےآنست که زرمی خواهند (अ) البطن یعلم الفطن

रात गई बात गई।

(सं) रात्रिरेवं व्यरंसीत्। वार्त्ताभिः सह मेऽगमेच्च रजनी। (अं) (Lit.) It is no use crying over spilt milk. (उ) سانپ نکل گیا لکیر پیٹا کرو (फ़ा) علاج واقعه پیش ازوقوع باید کرد * دریغ سود ندارد چورفت کار از دست (अ) الآن و قد عصیت قبل

राजा रूसेगा तो अपनी नगरी लेगा किसी का भाग तो नहीं लेगा।

(सं) रुष्टो राजा पुरं लाति भाग्यं नैव तु लास्यति। (अं) (Lit.) If the king is displeased he can but turn me out of his city. (उ) أپئے همارے سر آنکہون پر * جایئے تہنڈي تہنڈي چہانه سے تشریف لیجایئے (फ़ा) اگر آئي بسرو چشم ماوگرنه خوش بروانیک سوراه (अ) ذهب الهم بموت الشاه

रांड़ के रोने में भी बान।

(सं) वैधव्यदुःखेन समं न दुःखम्। रोदनं विधवाया वै वैचित्र्येण सम-न्वितम्। (अं) (Lit.) A public woman's tears too appeal to

heart. (उ) هم جانکئے صاحب کچهه دال میں کالا هے
(फ़ा) به بهانهٔ بچه مادر مي خورد (अ) مرا مکم غیرهذا

राजा मानी सो रानी।

(सं) अङ्गीकारो हि भूपस्य प्रधानो मन्यते जनैः। (अं) Fair is not fair but that which pleaseth. (उ) جسے پیا چاہے وهي سہاگن کہلاے
(फ़ा) هرعیب که سلطان بپسندد هنراست (अ) یختص برحمته من یشاء

राजा राज प्रजा सुखी।

(सं) युक्तः प्रजानामनुरञ्जने स्याः तस्माद्यशो यत् परमं धनं वः। राजत्वं हि भवेद्राज्ञः प्रजानामेव सौख्यता। (अं) (Lit.) Prosperity of the subjects is the test of a sovereign's success.
(उ) اپنے حال میں سب خوشحال هیں (फ़ा) عیسے بدین خود و موسے بدین خود
(अ) لکم دینکم ولي دین

रि

रिस मारे रसायन पैदा होती है।

(सं) क्रोधरोधोऽमृतायते। (अं) (Lit.) When anger arises, think of the consequence. (उ) غصه حرام هے
(फ़ा) بلے مرد آنکس است از روے تحقیق که چون خشم آیدش باطل نگوید
(अ) الغضب مفتاح الشر

री

रीझे तो नेहाल करे खीझे तो पैमाल।

(सं) यस्मिन् रुष्टे भयोत्पत्तिः सन्तुष्टे च धनागमः। स रामो नृपतिः सेव्यो नान्ये भूपा हि कामुकाः। (अं) Sweetest wine makes the best vinegar. (उ) خدا کي لاٹهي میں آواز نهیں هوتي
(फ़ा) دیر گیرد سخت گیرد مرترا (अ) ایاک وغضب الحلیم

रीती भरे भरी ढुलकावे मेहर करे तो फेरि भरावे।

(सं) कर्त्तुं वाऽकर्त्तुमन्यथा कर्त्तुं प्रभवति भूपो भवे सततम्। (अं) Nothing is impossible to Omnipotence. (उ) ریتي بهری بهرے ڈهلکاوے * مهر کرے تو پهیر بهراوے

रु

रुपया परखे बारबार आदमी परखे एकबार।

(सं) मुद्राः परीक्ष्या असकृत्परन्त्वहो परीक्षणीयाः सकृदेव मानवाः।
(अं) Confide not in him who has once deceived you.
(उ) آزمائے ہوئے کو آزمانا پشیمانی اوٹھانا ہے (फ़ा) آزمودہ را نباید آزمود
(अ) من جرب المجرب حلت به الندامت

रू

रूप को कहा आभूषण।

(सं) न रूपमाहार्यमपेक्षते गुणम्। (अं) A good face need no paint. (उ) نہیں محتاج زیورکا جسے خوبی خدانے دی* کہ جیسے خوشنما لگتا ہے دیکھو چاند بن گہنے (फ़ा) یکے طلعت زیبابہ از ہزار خلعت دیبا
(अ) الحسین لایحتاج المعین

रूप की रोवै करम की हँसे।

(सं) रूपेण हीनः प्रबलश्च भाग्यात्। (अं) (Lit.) Beauty weeps while fortune enjoys. (उ) ہے اپنا اپنا مقدر جدا نصیب جدا
(फ़ा) بخت اگر برگردد بارے خیر گردد (अ) اعقل لاینفع الشقی

रूप की काली नाम कनको बाई।

(सं) रूपेण कालिका देवी नाम्ना गौरी सुलोचना। (अं) A black man called Mr. White. (उ) قرین لومڑی سے نام دلیرخان
(फ़ा) برعکس نہند نام زنگی کافور (अ) صلت علی الاسد و بلت عن النقد

रै

रैन बीती अरु भोर भई सुखनींद सोय के माला जपी।

(सं) रात्रिर्गताऽभूच्च प्रभातकालः सुखेन सुप्त्वा जपतीह मालाम्।
(अं) A mere show of devotion. (उ) گذر گئی گذران کیا جھونپڑی کیا میدان (फ़ा) سال گذشتہ حال گذشتہ (अ) مضی ما مضی

रैन गई तो जान दे सजनी दिन मत खोवे री।

(सं) नैवातीते विचारः स्याद्वर्त्तमानं समाचर। (अं) (Lit) the past bury its dead, Act, act in the living present.

(उ) یہ دنیا شیشہ ساعت کي هے ریت * گهٹتي جاتي هے هودم چیت رے چیت

(फ़ा) گذشتہ را صلوات و آیندہ را احتیاط (अ) تدارک في العمر مافات فی اوله

रो

रोग जिन बनायो तिन ओषधि बनाई है।

(सं) येन रोगा इमे सृष्टाः सृष्टं तेनैव चौषधम्। (अं) Every sore has its salve.

(उ) هر مرض کے لئے دوائی بهی هے

(फ़ा) هر درد را دوا هست و هر رنج را شفاء (अ) لكل داء دواء

रोग गये वैद्य वैरी।

(सं) रोगे गते रिपुर्वैद्यः। (अं) In prosperity gold, in adversity God.

(उ) پارگئے چاهے پل ٹوٹے چاهے ناؤ ڈوبے

(फ़ा) چون مصیبت رسد بحق نالد (अ) اذامسکم الضرفالیه تجرون

रोग का घर खांसी लड़ाई का घर हांसी।

(सं) काशो रोगस्य हेतुः स्याद्धास्यं कलहकारणम्। (अं) Jesting lies bring serious sorrow.

(उ) مذاق فساد کي جڑ هے

(फ़ा) ظرافت آتش افروز جدائي است (अ) المزاح اوله فرح و آخره ترح

रोज़गार और दुश्मन बारबार नहीं मिलते।

(सं) वाणिज्यञ्चैव शत्रुश्च भूयो भूयो न लभ्यते। (अं) Chances are chances.

(उ) روزگار اور دشمن باربار نهین ملتے

रोज कुआं खोदना रोज पानी पीना।

(सं) नित्यं वित्तमुपार्ज्जयेत्प्रतिदिनं कुर्य्याद्व्ययस्तस्य च। उपार्जयत्यसौ दीनो नित्यं वित्तं तद्व्ययश्च कुरुते। (अं) Te live from hand to mouth.

(उ) نیا دن نئي روزی (फ़ा) روز نو روزي نو

(अ) یوم جدید و رزق جدید

ल

लक्ष्मी बिन आदर कौन करे।

(सं) नैव लक्ष्मीं विनाऽऽदरः। दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी।

(अं) No wealth, no honour. (उ) بے زر بے قدر
(फ़ा) اےزر تو خدا نۂ ولیکن بخدا ستارعیوب و قاضی الحاجاتی
(अ) عزت الدنیا بالا موال

ललाट की फूटी अच्छी हिये की फूटी बुरी।

(सं) अन्धो वरो नैव च ज्ञानहीनः। (अं) Wisdom is far better than riches. (उ) بیوقوف دولتمند سے عقلمند غریب اچھا
(फ़ा) انچه دانا کند کند نادان * لیک بعد از هزار دشواری (अ) سرالعمی عمی القلب

लवार सौगन्द खाय हजार।

(सं) विश्वसेत् कर्हिचित् कोऽपि नैवेहासत्यभाषिणम्। असत्यवक्तुः शपथैः शतैः किम्। (अं) (Lit.) Liars do not stick at oaths.
(उ) قسم جھوٹھا ھي بہت کھاتا ھے (फ़ा) دردغ گورا سوگند گواہ است
(अ) ایمان المرء معرفت بایمانه

लड़कों का खेल चिड़ियों का मरण।

(सं) बालस्य क्षणिका प्रीतिः पक्षी प्राणैर्वियुज्यते। (अं) It is amusement with you but death to us. (उ) مرغي اپني جان سے گئي میان جي کو مزہ نه آیا (फ़ा) من مردم وتو حکایتے مي شنوي
(अ) العصفور في النزع والطفل في الطرب

लगा सो भगा।

(सं) ये लग्नास्ते पलायिताः। (अं) (Lit.) To take to heel as soon as wounded. (उ) وقت کے جاتے هوے لگتي نهين دیر بهي (फ़ा) حیف صد حیف که وقت چون سیف مي گذرد (अ) الوقت سیف قاطع

लगन लगी तब लाज कहां है।

(सं) चित्त लग्ने हि लज्जा क। (अं) (Lit.) True love knows no shame. (उ) دل جڑا شرم توتي (फ़ा) چون عشق آمد حیا رفت
(अ) العشق ترک السلامت في اختیار الملامت

लड़ना दे पर बिछुड़ना न दे।

(सं) वरं विरोधो न वियोगआश्रितैः। (अं) (Lit.) Dispute is better than dissension (among friends). (उ) لڑنا دے پر بچھڑنا نهدے

लगी बुरी होती है।

(सं) आसक्तिर्दुःखदायिनी। (अं) (Lit.) Attachment is a source of pain. (उ) نہ لگی آنکھہ جب سے آنکھہ لگی
(फ़ा) آنراکہ غمی یاربود چون خسپد * چشمے کہ درو خار بود چون خسپد
(अ) تتجافی جنوبہم عن المضاجع

लड़का बगल में ढिंढोरा नगर में।

(सं) कण्ठे हिरण्मयी माला मृग्यते मन्दिरे दरे। (अं) (Lit.) To go out in search of a thing while in hand. (उ) لڑکا بغل مین ڈھنڈھورا شہر مین

लकड़ी के बल बन्दरी नाचे।

(सं) आश्रयेण विना लोके न किञ्चित्कर्त्तुमर्हति। (अं) (Lit.) One acts as directed by the master. (उ) بندر ناچے کہونٹے کے بل
(फ़ा) گر نبودے چوب تر فرمان نبودے گاوخر (अ) عود یعلم الضفع

लटा हाथी बिटोरा सा।

(सं) भाति वै संकुचित इव क्षीणगजः। (अं) When the elephant sinks into the mire, even the frogs give him a kick. (उ) لٹا ھاتھی بٹورا سا

ला

लाल प्यारा लाल का ख्याल प्यारा।

(सं) रत्नं प्रियं तस्य च चिन्तनं प्रियम्। मणिः कस्मै न रोचते।
(अं) Even a friend's dog is dear. (उ) یار پیارا یار کا خیال پیارا (फ़ा) سگ لیلی بچشم مجنون باید دید (अ) من احب شئیا اکثرین ذکرہ

लाठी कपार से भेंट नहीं झूठमूठ बाप रे बाप।

(सं) आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञा कामं व्यग्रा भवन्ति च। (अं) Not send for a surgeon before you are wounded. (उ) سوت نہ کپاس جولاھون سے لٹھم لٹھا (फ़ा) بچہ درشکم و نامش مظفر
(अ) لم یعمر القریۃ و قد جاء السارقون

लाख दुरावो कहीं न दुरे घटकी प्रकट होके रहे।

(सं) प्रयत्नेनाऽपि गोप्यं चेदन्तः प्रकटतामियात् । पलालजालैः पिहितः स्वयं हि। प्रकाशमासादयतीक्षुडिम्भः। (अं) As we think, so we speak. (उ) جو دلمیں هوگا وهي زبان سے نکلیگا
(फ़ा) انچه در دل است بر زبان مي آيد (अ) كل اناء يترشح بمافيه

लाख कही पर एक न मानी।

(सं) दीपनिर्वाणगन्धञ्च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम्। न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः। नाश्रृणोच्च बहुशः कथितोऽपि। (अं) Eluch advice and little heed. (उ) بہرا کوئي کہا کرو ایک نہیں سنتا
(फ़ा) بارها گفتم هلالي ترک خوبان کن ولے * هیچ تاثیرے ندیدم گفتگوے خویش را
(अ) يهدے فلا يهتدی

लाल गुदड़ी में नहीं छिपता।

(सं) न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते। (अं) Fire cannot be concealed under cloth. (उ) گن ظاهر هوکر رهتا هے
(फ़ा) بلے گنجینه درویرانه باشد (अ) رفعته علي الرفعت

लाख का घर खाक कर दिया।

(सं) कुपुत्रेण गृहं नश्येद्धनाढ्यमपि नित्यशः। (अं) No vagabond can ever prosper. (उ) لاکهه کا گهر خاک کر دیا
(फ़ा) ابرمي خواهند مستان خانه گوویران شود (अ) تريدالاسطاروان هدم الدار

लातों के देव बातों से नहीं मानते।

(सं) यथा देवस्तथोपहारः। (अं) Mere words do not suffice, where rod is necessary. (उ) لاتون کا بهوت باتون سے کب مانتا هے
(फ़ा) دروغگو بے سرزنش کارنمي کند (अ) لايعزمن يقتل

लालच बुरी बलाय।

(सं) लोभः पापस्य कारणम्। (अं) Avarice begets sin.
(उ) طمع بري بلا هے (फ़ा) بدوزد طمع دیده هوشمند * درآرد طمع مرغ وماهي ببند
(अ) الطمع يعمي ويصم

लाठी मारने से पानी अलग नहीं होता।

(सं) स्नेहबन्धा न भिद्यन्ते बहुदुःखाकुला अपि। (अं) (Lit.) Water cannot be cut asunder. (उ) لاٹھی مارنے سے پانی جدا نہیں ہوتا

लि

लिखे मूसा पढ़े ईशा।

(सं) अयमपरोऽस्य विशेषः स्वयमपि लिखितं न वाचयति। (अं) (Lit.) One thing is written and another is read.

(उ) اپنا لکھا آپ ھی پڑھے (फ़ा) تصنیف را مصنف نیکو کند بیان

(अ) المعنی فی بطن الشاعر

लिखते न बने कलम टेढ़ी।

(सं) दोषं ददाति लेखन्यै असमर्थो हि लेखकः (लेखने)। (अं) A bad workman quarrels with his tools. (उ) لکھتے نہ بنے قلم ٹیڑھی

(फ़ा) رقص کردن خودنداند صحن را گوید کج است (अ) من لم یعلم یحتال

लू

लूट का मूसल भी भला।

(सं) लुण्ठने यदि लब्धः स्यान्मूसलोऽपि मणेः समः। (अं) Even a trifle is again if obtained without any effort.

(उ) لوٹ میں خاصہ نفع (फ़ा) مفت راچہ گفت (अ) اللقطات ملتقطه

ले

लेना एक न देना दो।

(सं) कर्त्तव्यं नैव किञ्चन। (अं) To be quits.

(उ) لینا ایک نہ دینا دو

लेना देना कुछ नहीं लड़ने को मौजूद।

(सं) काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्। व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन च। अकारणा विष्कृतवैरदारुणा असज्जनाः सज्जनयन्ति विग्रहम्। (अं) A quarrel with no object in view.

(उ) لینا دینا کچھ نہیں لڑنے کو موجود

लो

लोभ गला कटावे।

(सं) लोभान्मोहश्च नाशश्च। (अं) Avarice begets death.

(उ) طمع بڑي بلا هے (फ़ा) بدوزدطمع ديده هوشمند * درآردطمع مرغ وماهي ببند

(अ) الطمع يعمي ويصم

लोहा जाने और लोहार धौंकनेवाले की जाने बला।

(सं) तटस्थो नैव जानाति विक्रमं प्रतिपक्षिणोः। (अं) A disinterested spectator. (उ) تم جانو تمهارا كام جانے

(फ़ा) گوشت خردندان سگ (अ) الناس مجزيون باعمالهم ان خيراً فخيروان شراًفشر

लोहू लगाकर शहीदों में दाखिल।

(सं) येन केन प्रकारेण वीरत्वं द्योत्यतेऽधमैः। (अं) An attempt to pass for a martyr. (उ) لهو لگا كے شهيدون مين داخل

(फ़ा) هفتادسالگى و مشق طنبور (अ) شيخ يتصبى

लोमड़ी के अंगूर खट्टे।

(सं) अशक्तास्तत्पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते। (अं) Grapes are sour. (उ) گهدڑ گرا گدهے مين آج يهين رهينگي

(फ़ा) عصمت بي بي از بيچادري (अ) يشتهي بقلب ويأكو بلسانه

व

वक्त पड़े बांका गधे से कहें काका।

(सं) समय एव करोति बलाबलम्। येन केनाप्युपायेन स्वकार्यं साधयेद्बुधः।

(अं) Difficulty is the leveller of all angularities.

(उ) ضرورت كے وقت گدهے كو باپ بناتے هين (फ़ा) آنچه شيران را كندروبه مزاج احتياج است احتياج است احتياج (अ) صاحب الحاجت اعمى

वह पानी मुल्तान गये।

(सं) गतास्ते दिवसास्तात ! मुक्तानां जन्म शुक्तिषु। (अं) Those days are gone by. (उ) گئي گذري باتين جانے دو

(फ़ा) آن دفتو را گاو خورد وگاوراقصاب برد (अ) الماضي لايذ كر

वस्त्र से खूंटी भी शोभती है।

(सं) पयसा कमलं कमलेन पयः पयसा कमलेन विभाति सरः।

(अं) (Lit.) Even a post looks well if beautifully dressed.

(उ) ایک نور آدمي هزار نور کپڑا (फ़ा) منسے تیز زیب تن نباشد
(अ) الناس با للباس

बणज करेंगे बणियां और करेंगे रीस । बणज किया था जाट ने रह गये सौ के तीस।

(सं) अनुकूलं प्रकृत्यैव कार्य्यं स्यादुत्तमोत्तमम्। (अं) (Lit.) A potter must not try the work of a smith. (उ) غصه تجارت مین منع هے (फ़ा) کلاغے تگ کبک را گوش کرد * تگ خویشتن هم فراموش کرد
(अ) کل میسرلما خلق له

वर मरे या कन्या मरो मेरी गोद का भाड़ा भरो।

(सं) सर्वः स्वार्थं समीहते। (अं) Let me have my dues at any cost. (उ) بر مرے یا کنیا اپني دچهنا سے کام
(फ़ा) هر گرادیدم بعالم آشنائي مطالب است (अ) الدار ثم الجار

वि

विषय में विष है।

(सं) विषया विषवत्त्याज्याः । न विषं विषमित्याहुर्विषया विषमुच्यते।
(अं)(Lit.) Wordliness acts like poison. (उ) زناکاري کا انجام خواري هے (फ़ा) اززنا افتدوبا اندر جهات (अ) الزنایخرب البناء

विद्या लोहे के चने हैं।

(सं) विद्या दुस्तरवारिधिः। (अं) There is no royal road to learning. (उ) اوستاد کي مار مان باپ کے پیار سے بهتر هے
(फ़ा) طفل بمکتب، نمي رود الابزندش (अ) الضرب للصبیان کالماءفي البستان

विद्या और समुद्र जल पार नहीं पृथ्वीराज!

(सं) नैव पारं हि विद्याया वारिणो वारिधेर्नृप! (अं) Art is long.
(उ) علم بے انتها هے (फ़ा) علم کثیرآمد و عزت فقیر * هرچه ضرورست بدان شغل گیر
(अ) العمر قصیر والصناعت طویل

विद्या अमूल्य रत्न है।

(सं) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्। किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।
(अं) Learning is a priceless jewel. or, Learning has no

money value. (उ) علم غریبوں کي دولت اميرونکي زينت هے
(फ़ा) هر که علم دریافت زریافت (अ) العلم للغر باء مال والامراء جمال

विनाशकाले विपरीत बुद्धि ।

(सं) विनाशकाले विपरीतबुद्धिः । (अं) Adversity destroys discretion. (उ) موت آئي تو چيونٹي کے پر جمے
(फ़ा) اجل سگ که ميرسد مال چوبان بخورد (अ) اذاجاء اجل البعير قام حول البير

वे

वेश्या बरस घटावहीं जोगी बरस बढ़ाय ।

(सं) वृद्धाऽपि षोडशी वेश्या युवा योगी शताब्दिकः । इत्युक्त्वा गौरवं लोके सम्प्रचारयतोऽनिशम् । (अं) The fashionable do not like to become old. (उ) ويشيا برس گھٹاوهين جوگي برس بڑهاے

वेही मियां दरबार में वेही चूल्हे के पास ।

(सं) देवदत्तस्य एक एव पुत्रः स एव ज्येष्ठः स एव कनिष्ठः । (अं) (Lit.) No be is the master and servant in himself. (उ) وهي مياں دربار ميں وهي چولهے پاس (फ़ा) پيرباورچي بهشتي خر

वो

वो मढ़ी ही जाती रही जहां अतीत रहते थे ।

(सं) स्थानं तन्न विलोक्यते सुयतयो यत्रावसन् वै पुरा । गतास्ते दिवसास्तात ! मुक्तानां जन्म शुक्तिषु । (अं) Past times are gone, old manners are changed. (उ) وه دن گئے جب خليل خان فاختہ مارتے تهے
(फ़ा) شد آن مرغ کو بيضہ زرين نهاد (अ) قد مضى زمن عمركان يعم فيه الدرر الغرر

श

शत्रु लघु गनिये नहीं ।

(सं) क्षुद्रो रोगस्तथा शत्रुर्लघुर्नैव हि गण्यताम् । (अं) Enemy is enemy, be he great or small. (उ) دشمن کو چهوٹا نهيں سمجهنا چاهئے
(फ़ा) دشمن نتوان حقير و بيچاره شمرد (अ) لايضعف عدوک

शत्रु मरन सुन हर्ष न करो। तुम कहा सदा अमरही रहोगे।

(सं) अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्। अपरे स्थातुमिच्छन्ति किमाश्चर्य्यमतः परम्। मृते शत्रौ न नन्दस्व न त्वं स्थातुर्भविष्यसि।

(अं) Do not laugh at the pain even of your enemy.

(उ) دشمن کو روتا دیکھکے ہنسنا نہ چاہئے (फ़ा) اگر بمرد عدو جاے شادمانی نیست * کہ زندگانی مانیز جاودانی نیست (अ) لاتفرح لموت عدوک

शरम की मा गोड़े रगड़े।

(सं) किं न कुर्व्वन्ति लज्जार्त्ता नम्रा दीना भवन्ति वै। (अं) Bashfulness is an enemy to prosperity. (उ) شرم ہي شرم میں کام تمام ہوا (फ़ा) حیا مانع رزق است (अ) الحیا یمنع الرزق

शरम की बहू नित भूखी मरे।

(सं) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी वसेत्। मुग्धा वधूः क्षुधार्ता वै म्रियमाणेव तिष्ठति। (अं) Shame often turns out to be a source of sufferings. (उ) جسکی زبان چلے اُسکے ستر ہل چلیں (फ़ा) حیامانع رزق است (अ) الحیا یمنع الرزق

शक्करखोरेको शक्कर मक्करखोरेको मक्कर।

(सं) भाग्यं फलति सर्वत्र। (अं) God never sends mouths but he sends meat. Or, Provident supplies every one's wants. (उ) خدا سب کو روزي دیتا ہے (फ़ा) خدا خود میر سامان است ارباب توکل را (अ) الاعمال بالنیات

शा

शान्त की बेर ज्यों दीपक की द्युति।

(सं) शान्तेः काले दीपकस्येव ज्योतिः। (अं) (Lit.) A candle burns bright on the eve of extinction. (उ) چراغ جاتے وقت روشني زیادہ دیتا ہے (फ़ा) چراغ وقت مردن خانہ روشن میکند (अ) تزیدالضیاء في السراج عندالاطفاء

शाम के मरे को कब तक रोवे ?

(सं) अकाले मृतजीवानां दुस्तरः शोकसागरः। (अं) To mourn

for the departed is quite in vain. (उ) شام کے مرے کو کب تک روے

शि

शिकार के समय कुतिया हगासी।

(सं) शत्रौ संग्रामसन्नद्धे जाता सैन्यशिरोव्यथा। (अं) A soldier, pleading headache when ordered to fight. (उ) شکار کے وقت کتیا ہگاسی

शी

शिरा फार श्रावक भये।

(सं) येन केन प्रकारेण स्यात्प्रशस्तो धरातले। (अं) He adopts new views for loaves and fishes. (उ) جدھر مطلب دیکھا اُدھر ڈھل گئے (फ़ा) طور منافقانہ خوب نیست (अ) لاالی ھذاولاھذا الیک

शीलवन्त गुण ना तजे औगुण तजे न गुलाम।

(सं) त्यजन्ति शीलं न हि शीलवन्तस्त्यजन्ति नीचा अपि दुर्गुणं न।
(अं) Black will take no other hue. (उ) کالا کرے نہ ساکا * ھے قول مرتضیٰ کا (फ़ा) پرستار زادہ نیاید بکار (अ) لاخیرفی عبید

शौ

शौक़ीन बुढ़िया चटाई का लहँगा।

(सं) विटै रात्रौ प्रकाशार्थं खद्योतं शिरसि धृतम्। (अं) A fashionable man in a cloak of sack. (उ) شوقین بڑھیا چٹائی کا لہنگا

स

समय पाय तरवर फले केतो सींचो नीर।

(सं) विहिते बहु यत्नेऽपि काले स्यात्कर्म्मणः फलम्। (अं) (Lit.) Everything happens in due course. (उ) منحصر وقت پر ھیں کام تمام (फ़ा) تادر نوسد وعدہ ھرکار کہ ھست * سودے ندھدیاری ھویار کہ ھست (अ) لکل امر مرھون باوقاتہا

सब में है और सब से न्यारा।

(सं) प्रधानराज्याधिगतोऽपि तद्बहिः। (अं) (Lit.) Though having all, he hath nothing still. (उ) سب جگه ہو ہے اور کہیں نہیں
(फ़ा) ایکهدرهیچ جانداري جا * بوالعجب مانده ام کهرجائي (अ) كل شے يحيط به الزمان و ليس في زمان ولا مكان

सब को आपा धापी पड़ी है।

(सं) सर्वे स्वार्थेषु तत्पराः। (अं) Every one seeks his own interest. (उ) اپنے اپنے غم میں سب گرفتار
(फ़ा) هر کس ببند خويش گرفتار محنت است (अ) في كل قلب شغل

सब को अति प्यारो लगे जो नर शील स्वभाव।

(सं) सर्वप्रियाः शीलगुणान्विता नराः। (अं) Character is the best ornament. (उ) ادب بڑي چيز ہے
(फ़ा) با ادب با نصيب بے ادب بے نصيب (अ) الادب خير كله

सब के भले में अपना भी भला।

(सं) भव्यं मे सर्वमङ्गले। (अं) Interest of the world is the interest of one's own. (उ) جو کچھہ که اپنے لئے پسند نکرو غیر کے لئے بهي مت پسند کرو (फ़ा) هرچه بر خود نه پسندے بديگران مپسند (अ) لايحب لغيرک مالا يحب لنفسک

सब के दाता राम।

(सं) सर्वस्य दाता प्रभुः। (अं) Providence is the preserver of all. (उ) رزق تو رزاق کے هاتهه هے
(फ़ा) خدا که دندان دهد نان دهد (अ) هوالرزاق ذوالقوة المتين

सब करतब की विद्या है।

(सं) मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते भार्य्येव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्। लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥ (अं) (Lit.) Do your duty, and you get every thing you want. (उ) بکرتا استاد نه کرتا شاگرد (फ़ा) کار بکثرت است نه بحسرت
(अ) جد حر فا قل الشفاء

सदा के उजड़े नाम बस्तीराम।

(सं) वासो वृक्षतले नित्यं नाम्ना गेहावलीपतिः। (अं) A man named "Lotus Eyed" though destitute of eyes.
(उ) درد کا نام بھي ظالم نے دوا رکھا ھے (फ़ा) بر عکس نہند نام زنگي کافور
(अ) صلت علي الاسد و بلت عن النقد

सदा के दुःखी नाम चैनसुख।

(सं) जन्मना भिक्षुको नाम्ना कुबेरः कथ्यते जनैः। (अं) A black man being called Mr. White. (उ) انکھون کے اندھے نام نینسکھ
(फ़ा) برعکس نہند نام زنگي کافور (अ) صلت علي الاسد و بلت عن النقد

सच कहिया मारा जाय झूठा भँडुआ लड्डू खाय।

(सं) सत्यवक्ता कलौ दुःखी मिथ्यावादी प्रमोदते। (अं) Truth suffers while falsehood wins. (उ) سچ بات کڑوي هوتی هے
(फ़ा) سخن راست تلخ مي باشد (अ) الحق مر ولوکان درا

सत्य का बोलबाला झूठे का मुँह काला।

(सं) सत्यमेव जयति नानृतम्। (अं) (Lit.) Truth conquers, and lie falls. (उ) اصل سے خطا نہين کم اصل سے وفا نہين
(फ़ा) اگر چه بود زا دۂ شہر یار * بہستار زادہ نیاید بکار

सदा दिवाली साधु की जो घर गेहूं होय।

(सं) अन्नपूर्णं गृहं यस्य स सदानन्दमोदभाक्। (अं) Where there is no want there is cheerfulness. Or, Plenty and cheerfulness go hand in hand. (उ) سدا ديوالي سادھو کي جو گھر گیہون هوئين

सब गुन भरी बैंतरा सोंठ।

(सं) सर्व्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते। (अं) A jack of all trades.
(उ) سب گن بہري بيتوا سونٹھ

सब से भली चुप।

(सं) मौनं सर्वार्थसाधकम्। (अं) Silence is a good policy.
(उ) ایک چپ سو کو هرادے (फ़ा) از صدزبان زبان خموشي نکو بود
(अ) واعرض عن الجاهلين

सभी बात खोटी मुख्य दाल रोटी।

(सं) उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः। (अं) First think of saving thyself. (उ) سبھی بات کھوٹی مکھ دال روٹی

सच कहने में आधी लड़ाई होती है।

(सं) सुपथ्यस्य च तथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः। (अं) (Lit.) Plain-speaking often leads to quarrel. (उ) سچ بات کڑوی هوتی ہے (फ़ा) سخن راست تلخ مي باشد (अ) الحق مرولوکان درا

सखी और सूम साल भर में बराबर हो रहते हैं।

(सं) दातारः कृपणाश्चैव वत्सरान्ते समा इमे। (अं) (Lit.) A fashionable dandy and a close fisted miser both are brought to the same level in course of time. (उ) سال بهر مين سخي اور سوم برابر هو جاتے هيں

सब दिन जात न एक समान।

(सं) चक्रवत् परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च। (अं) (Lit.) Time does not always run an even course. (उ) انسان کی حالت ایکسان نہیں رهتي (फ़ा) بيک ساعت بيک لحظ بيک دم * دگرگون ميشود احوال عالم (अ) احوال الانسان يتغيرفي کل آوان

सखी के माल पर पड़े सूम की जान पर।

(सं) अमितव्ययशीलानां यान्ति वित्तानि संक्षयम्। प्राणा एव विनश्यन्ति कृपणानामसंशयम्॥ (अं) (Lit.) Loss tells upon the property of a spendthrift, but upon the life of a miser.

(उ) سخي کے مال پر پڑے سوم کي جان پر

सखी से सूम भला जो तुरतहि देत जवाब।

(सं) दातुर्हि कृपणः श्रेयान् शीघ्रमुत्तरदायकः। (अं) A miser is preferable to a rich man as his refusal is ever ready.

(उ) سخي سے سوم بهلا جو ترتے ديت جواب

सत मति छोड़े शूरमा सत छोड़े पत जाय।

(सं) न हि सत्यात्परो धर्मः न हेयं सत्यमुत्तमैः। (अं) (Lit.) Give

up righteousness and you lose your worth.

(उ) ست مت چھوڑے سورما مت چھوڑے پت آپ

सहस जो डुबकी मैं लई मुक्ता कर नहिं लाग। सागर को क्या दोष है हो न हमारे भाग।

(सं) तुष्टोऽपि राजा यदि याचकेभ्यो भाग्यात्परं नैव ददाति किञ्चित्।
(अं) (Lit.) Diving and finding no pearls in the sea.
Blame not the ocean, the fault is in thee. (उ) دولت بغیر قسمت نہیں ملتی (फ़ा) صد هزار غوطه بخورد م درم بکف نرسید * سزاے بخت من اینک گناه دریا چیست (अ) الغني بالقدر لا بالجبر

सहस्र गोपी एक कन्हैया।

(सं) तारा अनेकाः किल चन्द्र एकः। (अं) The king is but one, but the ministers are many. (उ) ایک دل دلبر بہت دل کس کسکو دیجئے (फ़ा) ایک یوسف و هزار خریدار (अ) زمانة واحدة ومن المرضى مائة

सहज पके सो मीठा।

(सं) अनायास साध्यं फलं स्यात्सुधेव। (अं) Haste make waste.
(उ) دیر آوے درست آوے
(फ़ा) دیر آید درست آید (अ) التاني من فعل الكرام

सा

सारी रात मिम्याई एक बच्चा ब्याई।

(सं) बह्वारम्भो लघुक्रिया। (अं) A mountain in labour produced a mouse.
(उ) ھنوز روز اول ہے
(फ़ा) هنوز روز اول است (अ) الآن كما كان

सार पराई पीर की क्या जाने बेपीर।

(सं) सुखिनो नैव जानन्ति परदुःखगभीरताम्। न हि वन्ध्या विजानीयाद्गुर्वी प्रसववेदनाम्॥ (अं) No one knows the weight of another's burden. (उ) عاشق کی تکالیف کو معشوق کیا جانے جسنے نہ کبھی از اوٹھایا ہے غیر کا (फ़ा) باد رد کسے رسد که دردے دارد (अ) بما يدرب بمصيبتي

स्याही गई सफेदी आई तो भी तुझे समझ न आई।

(सं) वृद्धत्वेऽपि न ते ज्ञानम्। (अं) (Lit.) Old in years but possessing little experience. (उ) اونٹ بوڑھا ہوگیا مگر اوٹھنا بیٹھنا نہ آیا (फ़ा) چہل سال عمر عزیزت گذشت * مزاج تو از حال طفلی نہ گشت (अ) کبرت فما رشدت

सांप के मुँह में छछूँदर निगले तो अन्धा उगले तो कोढ़ी।

(सं) सर्पः छुछुन्दरीं धृत्वा महासंकटगो भवेत् । अद्योच्चदन्धतां विन्देदुद्गिरन् कुष्ठतामियात्॥ (अं) To be in a dilemma. (उ) ادھر کنواں ادھر کھائی (फ़ा) گویم مشکل وگرنگویم مشکل * نے روے سفر کردن ونے رائے اقامت (अ) ان اقل امت وان اسکت یفت

सात पांच की लाकड़ी एक जने का बोझ।

(सं) अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्य्यसाधिका। (अं) Many a little makes a mickle. (उ) تل تل جوڑے پہاڑ (फ़ा) دانہ دانہ انبار میشود (अ) قطیرعلی قطر اذا التفقت بحر

साठी बुद्धि नाठी।

(सं) हीयते ह्यायुषि पुंसां बुद्धिः षष्टितमे गते। (अं) Longevity borders on childhood. Or, Old age is second childhood. (उ) بوڑھے بیل کو مفت میں کوئی نہیں لیتا (फ़ा) کور بخر گنگ بخر پیر مخر (अ) الشیب داء لادواء له

साझे की हांडी चौराहे पर फूटी।

(सं) दुर्वहा साङ्घिकी सूचिः। (अं) Everybody's business is nobody's business. (उ) دو ملاؤں میں مرغی حرام (फ़ा) در اقلیمے دو بادشاہ نگنجند (अ) الاشتراک یضیع المال

सांचे रांचे राम।

(सं) ईश्वरः सत्यवाक् प्रियः। सत्यान्नास्ति परो धर्मः। (अं) (Lit.) Truthfulness is the best religion. (उ) سچ کو کیا ڈر (फ़ा) راستی موجب رضاے خدا ست (अ) صدق المرء نجاتہ

सांचे गुरु का चेला मरे न मारा जाय।

(सं) शिष्यः सिद्धगुरोर्नैव म्रियते नापि हन्यते। (अं) (Lit.) A disciple of a truly great Guru is above all harm's reach. Or An able teacher, and a successful student.

(उ) وہ ہیں نادان جوڈر جاتے ہیں دھمکانے سے (फ़ा) زدل ھندی از مریخ ترکی نترسد (अ) القول الهرم لا يقرعه صوت الجاجل

सांच को आंच नहीं।

(सं) सत्ये नास्ति भयं क्वचित्। (अं) Truth is green.

(उ) سچ سب کو پیاری ھے (फ़ा) راست گو راهمیشه راحت در پیش

(अ) صدق المرء نجاته

सांच कहूं यामे झूठ न जानो।

(सं) नासत्यं विद्यते किञ्चित् सत्यं सत्यं वदाम्यहम्। (अं) (Lit.) Upon my honour, it is quite true. (उ) سچ کہتا ہون کہ جہوت کی عادت نہین مجھے (फ़ा) راست گویم که دروغ نیست

(अ) لاأقول الا حقاً

साख गई फिर हाथ न आवे।

(सं) नष्टा प्रतिष्ठा हि पुनर्न लभ्यते। (अं) (Lit.) Reputation, once lost, cannot be redeemed. (उ) بندھی مٹھي لاکھہ کي کھلي مٹھی خاک کی (फ़ा) مشت بسته قفل بهشت است (अ) الا عتبار خير من الاقتدار

सांचे का रङ्ग रूखा।

(सं) सत्यं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (अं) Exterior of truth is not attractive. (उ) سانچے کا رنگ روکھا

सांची कहे खुश रहे।

(सं) सत्यवक्ता सदा सुखी। (अं) Speak the truth, and enjoy peace. (उ) سونے کو کائي نہین لگتي

(फ़ा) راست گویم که دروغ نیست (अ) لاأقول الاحقاً

सावन के अन्धे को हराही सूझता है।

(सं) स्वप्नेऽपि हि कलौ विप्रैः श्राद्धभोजनमीक्ष्यते। (अं) (Lit.) To the one getting blind in the rains, everything appeacs green.

(उ) سب سے پہلے ھم—نہ رھے کی شادي نہ گئے کا غم

(फ़ा) بزرنخریدۂ جانرا از ان قدرش نمیدانی (अ) الغنیمت الباردت یبذل بالحرقة

सावन सूखे न भादों हरे।

(सं) सर्वदैकरसो भवेत्। (अं) Ever unchangeable.

(उ) ساون سوکے نہ بھادون هرے (फ़ा) خوشوقت کسانیکہ بہر حال خوش اند

(अ) الرضاي بالقضاے

सांप मरे न लाठी टूटे।

(सं) स्वक्षतिमन्तरेणैव दुष्टानां दमनं भवेत्। (अं) Little loss, but much gain. (उ) سانپ مرے نہ لاٹھي ٹوٹے

सि

सिद्ध को साधक पूजता है।

(सं) पूज्यन्ते साधकैः सिद्धाः। (अं) A leader's glory is magnified by his followers. (उ) پیر کي پرستش مجاور بڑھاتا ھے

(फ़ा) پیران نمي پرند مریدان می پرانند (अ) الانام امام من المؤتم

सिर मूड़ के घुटना नहीं मूड़ा जाता।

(सं) योग्यं कार्यं सदा कुर्यात्। (अं) Shaving does not imply the shaving of the knee. (उ) سر منڈا کے گھوتنا نہین مونڈا جاتا

सिर पर पड़ी बजाये सिद्धि।

(सं) आगतं तु भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद्यथोचितम्। (अं) Do with all your might, the duty you are entrusted with.

(उ) سر پر پڑي بجاے سدہ

सी

सींग कटा बछड़ों में मिले।

(सं) श्मश्रूणां मुण्डनं कृत्वा बालक्रीडा विधीयते। (अं) (Lit.) An old man desirous of passing for a child with change of dress.

(उ) لہو لگا کے شہیدون مین ملے (फ़ा) چون پیر شدي کارجوانان تو انکرد

(अ) شیخ بقصیبي

सीख वाको दीजिये जाको सीख सुहाय। सीख न दीजे बाँदरा कि घर बया को जाय।

(सं) मूर्खशिष्योपदेशेन पण्डितोऽप्यवसीदति। (अं) (Lit.) Impart instructions to those that are capable of receiving.
(उ) کویلون کی دلالی میں هاتھ کالے (फ़ा) عیوض نیکی بدی است
(अ) الکرم علی اللیام ظلم علی الکرام

सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता।

(सं) कौशलेन फलं लभेत्। (अं) Honesty does not succeed in dealing with a villain. (उ) مکھیان مانگے سے شہد نہیں دیتین
(फ़ा) از انگشت راست روغن برنمی آید (अ) لایعفی من یقتل

सु

सुलहारी को देख सुलहारी जलती है।

(सं) भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा शुनीव घुर्घुरायते। (अं) Doctors differ. (उ) همرنگ کی دوئی
(फ़ा) خوشه چین کمتر خوشه چین را دوست میدارد (अ) القاص لایحب القاص

सुलगती में फूंक मत दो।

(सं) न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते॥ फूत्कारं नैव कुर्यास्त्वं वह्नौ दीप्ते च मे क्रुधि।
(अं) Do not throw oil into burning fire. (उ) جلتی هوئی میں پولا کیوں ڈالتے هو (फ़ा) نمک برزخم سوخته مپاش (अ) اذا لم یعدنی لم تجدنی

सुर नर मुनि सब की यह रीती। स्वारथ लागि करैं सब प्रीती।

(सं) सर्वः स्वार्थं समीहते। (अं) Everyone seeks his own interest. (उ) دنیا هے اور مطلب
(फ़ा) اول خویش بعده درویش (अ) الدار ثم الجار

सुनना सब का करना अपने मन का।

(सं) श्राव्याणि सर्ववाक्यानि मनःपूतं समाचरेत्। (अं) Lend your ears to all, but act on your own judgment. (उ) سن کوئی هزار کچھه سناوے * کیجئے وهی جو سمجھه میں آوے (फ़ा) بشنو از هزار وانچه دل تو گوید بعمل آر (अ) اسمع المستشار وافعل ما عندک المختار

सुख में मित्र घणा।

(सं) सुखे मित्राण्यनेकानि। (अं) Money has many friends, or Prosperity gains friends. (उ) زر دار کو ہزار یار

(फ़ा) زر دار را ہزاریار شود (अ) الناس اخوان ویرجع الیہ دولتہ

सुख सम्पति में सब के सब कोई।

(सं) सर्वाणि मित्राणि समृद्धिकाले। (अं) Prosperity gains friends. (उ) مصیبت میں نہیں کوئی کسي کا

(फ़ा) بوقت تنگدستی آشنا بیگانہمي گردد (अ) الناس اخوان ویرجع الیہ دولتہ

सुबह का भूला शामको घर आजाय तो भूला नहीं कहा जाता।

(सं) पापीयांश्चेत् कियत्कालं सदाचारी भवेत् पुनः। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः। (अं) A sinner may become a saint.

(उ) صبح کا بھولا شام کو گھر آوے اسے بھولا نہیں کہتے (फ़ा) ہرچہ عوض دارد گلہ ندارد (अ) السیآت تمحی بالکفارات

सुख कहना जन से दुख कहना मन से।

(सं) सुखं वाच्यं जनेभ्यो हि नैव दुःखं कदाचन। (अं) Keep thy sorrow to thyself, and give out thy joy to others.

(उ) سکھہ کہنا جن سے دکھہ کہنا من سے

सू

सूक्ष्म ज्ञान जी की हान।

(सं) सीम्नोऽधिकविचारस्तु सदानर्थाय कल्पते। (अं) A little knowledge is dangerous. (उ) آدھے قاضي قد و آدھے بارا آدم

(फ़ा) نیم حکیم خطرۂ جان نیم ملا خطرۂ ایمان (अ) فعل الاقامت لاطیر والجمل

सूरदास की कारी कमरिया चढ़ै न दूजो रंग।

(सं) जीवन्मुक्ता महात्मानो बध्यन्ते विषयैर्न हि। ज्ञानरञ्जितचित्तेषु अन्यो रङ्गो न प्रस्फुटेत्। (अं) Black will receive no other hue.

(उ) ساون ہرے نہ بہادون سوکھے (फ़ा) خوشوقت کسا نیکہ بہرحال خوش اند (अ) الرضا بالقضا

सूरज धूल उड़ाने से नहीं छिपता।

(सं) रजसा रविराभिभूयते नहि । (अं) (Lit.) A cloud of dust cannot hide the sun. (उ) آفتاب کو دھول سے نہیں ڈھک سکتے

से

सेवा बिन मेवा कहां पाइये ।

(सं) गुरुशुश्रूषया विद्या । (अं) No gain without pain. (उ) بغیر محنت راحت کہاں.. (फ़ा) مقام عیش میسر نمی شود بے رنج (अ) لنا خدم خدم

सेत का चंदन घिसरे लाला ।

(सं) परान्नं प्राप्य दुर्बुद्धे मा प्राणेषु भयं कृथाः । (अं) To spend lavishly what is easily available. (उ) مفت کي چیزکی قدر کہاں (फ़ा) مال مفت دل بیرحم (अ) الغنیمت البارده یبذل بلا حرفته

सेढ़ की सिखावन झांपे तक ।

(सं) नैव सिद्ध्यन्ति कार्य्याणि परस्याऽऽश्रयणे कृते । (अं) The utmost that a clergy can do is to run to his church. (उ) مرد کہنے سے بہی نا مرد ہوا ھے کبھي مرد (फ़ा) از قلقل وزنجبیل سر دی مطلب (अ) الطلب البارده یبذل بلا حرفته

सो

सोने की कटारी कोई पेट में नहीं मारता ।

(सं) सुवर्णछुरिका नैव ह्यात्महत्यासु युज्यते । (अं) (Lit.) No one would like to wound himself with a knife though it be of gold. (उ) پھاٹ پڑے وہ سونا جس سے کان ٹوٹے (फ़ा) دند انکه درد کند بایدش کند (अ) یقطع العضوالوجع

सोच करन्ता पुरुषा हारे मर्द वही जो पहिले मारे ।

(सं) आद्यप्रहर्तुर्विजयो रणे स्याद्विचारमग्नस्य रणे पराजयः ।
(अं) Hesitating men get the worse in a fight. (उ) پہلے مارے سو میر (फ़ा) گرُبہ کشتن روزاول (अ) قتل الموذي قبل الایذا

सोया सो खोया ।

(सं) जागृते न भयं किञ्चित् शयानो रोरवीति च । (अं) Asleeping

fox catches no poultry. (उ) باب زر لکھا ہے بو علی نے * کہ سونے سے مسافر کو خطر ہے (फ़ा) اگر خفتی مردی و اگر رفتی جان سلامت بردی
(अ) من الخم الرۃ معدم المراد

सोनो और सुगन्ध।

(सं) गुणाः सर्वे समापन्ना एकत्र गुणवज्जने। (अं) Charming by nature as well as by culture. (उ) چیزی اور دو دو
(फ़ा) هم ثواب و هم خرما (अ) نعمت هداية البعيران كانت معه الشعير

सोने से गढ़ावन महँगी।

(सं) चित्रणस्याधिकं मूल्यं हेममूल्यादपि प्रभो। (अं) Case is dearer than the watch. (उ) دمڑی کی روئی ٹکا دھنکائی
(फ़ा) افتابه خرچ لحم (अ) كراية المال ازيدعلى راس المال

सोना धूल में भी चमकता है।

(सं) प्रकाशन्ते गुणाः स्वयम्। (अं) Gold glitters even while lying in the grass. (उ) سونا دھول میں بھی چمکتا ہے

सो घर सत्यानाश, जहां है अति बल नारी।

(सं) अबला प्रबला यत्र तत्र नाशो न संशयः। (अं) Woe worth the family where female reigns. (उ) جس گھر میں عورت کی حکومت ہو اسکا ستیاناس ہوتا ہے

सौ

सौ सयाने एक मत।

(सं) बहूनामपि धीराणां मतैक्यं जायते ध्रुवम्। (अं) (Lit.) Conscientious men, however large in number, can always act in concert. (उ) داناؤں کا ایک ہی طریقہ
(फ़ा) اے خرد مندان یکے باشد (अ) مقتضى العقل واحد

सौ वेद न एक लवेद।

(सं) यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नाचरणीयं। (अं) Custom is more powerful than the scripture. (उ) بندی ناچے لکڑی کے بل (फ़ा) گر نبودے چوب ترفرمان نبودے گاوخر (अ) عود تعلم العلم

सौ बनैत न एक लठैत।

(सं) एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न हि तारागणोऽपि च। (अं) He is a host in himself. (उ) سو بنیت ایک لڑیت * سو سونار کي ایک لوهار کي
(फ़ा) بازی بازي بریش بابا بازي (अ) ضربت الحداد یستوي مائة ضربة من الصیاغ

सौ डंडी (दण्डी) न एक बुन्देलखण्डी।

(सं) न शतं ब्राह्मणाः श्रेष्ठा एक एवातिथिर्वरः। (अं) One cannon outweighs thousands of guns. (उ) سو سونار کي ایک لوهار کي
(फ़ा) بازي بازي بریش بابا بازی (अ) ضربت الحداد یستوي مائة ضربت من الصیاغ

सौ औषध एक पथ्य।

(सं) पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः। (अं) Diet cures more than doctors. (उ) پرهیز بهلا نه علاج
(फ़ा) نیست بیمار راجه از پرهیز (अ) نعم العلاج الحمیة

सं

सम्पत् होय थोड़ी तो राखिये गाय कि घोड़ी।

(सं) शक्त्यपेक्षो नरो कुर्य्यात् कार्य्यं स्वोन्नतिहेतवे। (अं) Having a farthing in purse desirous of buying a horse.
(उ) حکمت عملي بهي بڑي چیز هے (फ़ा) کفایت شعاري مقتضاے هوشیاریست
(अ) الاقتصارفی الانفاق نصف المعیشة

सन्तोषी सदा सुखी।

(सं) सन्तोषः परमं सुखम्। (अं) Contentment is the true philsopher's stone. (उ) قناعت بڑي دولت بے زوال هے
(फ़ा) کنج قناعت گنج راحت است (अ) عزمن قنع و ذل من طمع

सं ग्रह की हुई वस्तु काम की।

(सं) संग्रहः फलदायकः। (अं) Make accumulation of your policy, and you will surely be benefited. (उ) کپوت بیٹا اور کهوٹا پیسه کبهي نه کبهي کام آتا هے (फ़ा) داشته آید بکار اگرچه باشد سرمار
(अ) الفلوس ینفع ولوکان ردیاً

संगत सार अनेक फल।

(सं) सत्सङ्गतिः किं न करोति पुंसाम्। (अं) A good company is a great advantage, (उ) تخم تاثیر صحبت اثر
(फ़ा) صحبت تاثیر کنندہ است (अ) الصحبت موثرۃ

संसार में सुखी जीव थोड़े हैं।

(सं) संसारे सुखिनः केचित्। (अं) Few are truly happy in this world. (उ) وھي آرام میں ھے رحمت خدا جسپر
(फ़ा) دریں دنیا کسے بیغم نباشد * اگر باشد بني آدم نباشد (अ) الدنیا دار الفتن والمحن

संसार में दुःख सुख का जोड़ा है।

(सं) द्वन्द्वात्मकोऽयं संसारः सुखदुःखसमन्वितः। कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।
(अं) Happiness and misery follow each other in rotation.
(उ) گل کے پہلو میں خار ھوتا ھے (फ़ा) گنج بے مار و گل بےخار وغل بے خمار نمي باشد
(अ) مع کل راحت آفۃ

संसार में दुःखरूपी सागर है।

(सं) संसारो दुःखसागरः। (अं) (Lit.) World is an ocean of misery. (उ) جسکو دیکھا سو میلا دیکھا
(फ़ा) دریں دنیا کسے بیغم نہ باشد * اگر باشد بني آدم نباشد (अ) الدنیا دار الفتن والمحن

संसार तो असार यामें सुकृत ही सार है।

(सं) असारे खलु संसारे सारः स्यात् सुकृतं कृतम्। (अं) Pleasure is precarious, virtue is immortal. (उ) آدمي رھتا نہین دنیا میں رہ جاتا ھے نام (फ़ा) سعدیا مردنکو نام نمیرد ھرگز * مردہ آنست کہ نامش بہ نکوئي نبرند (अ) من ثبت جودہ ثبت و جودہ

ह

हलक से निकली खलक में फैली।

(सं) षट्कर्णैर्भिद्यते मन्त्रः। (अं) Words out of mouth fly on wings. (उ) بات نکلي زبان سے پھیلي جھان میں
(फ़ा) سخن از زبان گذشتہ باز بدست نمی آید (अ) کل سر جاوز الاثنین شاع

हरे में फूटी है।

(सं. विशीर्णा स्फुटिता चासावद्येकाऽपि हरीतकी। (अं) The nature always appears green to one who gets blind in autumn.

(उ) ساون کے اندھے کو ہراہی ہرا نظر آتا ہے (फ़ा) سنگ مفت و کلاغ مفت

(अ) الغنيمة الباردت يبذل بلا حرفة

हरिगुण बरनि सकै नहिं कोई।

(सं) असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश! पारं न याति। (अं) Unspeakable are the glories of God.

(उ) ہے ایک زبان اور ترے احسان ہزاروں (फ़ा) اگر شکر حق تا بروز شمار *

گذاری نباشد یکے از ہزار (अ) وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها

हरिगुण गाती पेट में काती।

(सं) कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते। (अं) A honey tongue, a heart of gall.

(उ) تن من رام بغل ایتقین

(फ़ा) جو فروش گندم نما (अ) لسان يسبح وقلب يذبح

हरि इच्छा बलवान।

(सं) ईश्वरेच्छा गरीयसी। (अं) God's will always prevails.

(उ) وہی ہوتا ہے جو منظور خدا ہوتا ہے (फ़ा) ہرچہ خدا خو است ہمان می

شود (अ) يفعل الله مايشاء و يحكم مايريد

हर से गरब किया सो ही हारा। गरब किया लंकापति रावण खण्ड खण्ड कर डारा।

(सं) अतिगर्वेण रावणः। (अं) Pride is a vicious horse to ride, or Pride goeth before fall.

(उ) غرور برا ہے

(अ) ولاتمش فی الارض مرحا (फ़ा) متکبرو مغرور مباش

हर दफे गुड़ मीठा ही मीठा।

(सं) शर्करा सर्वदा मिष्टा। (अं) A sweet thing is always sweet.

(उ) بیڈھب ہے اسکو چاٹ ستمگر لگی ہوئی (फ़ा) ہرروز عید نیست

کہ حلوا خورد کسے (अ) لايقسم الحلوة الايوم العيد

हर जैसे को तैसा।

(सं) ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। (अं) God's reward is commensurate with your acts. (उ) هاتھی کا پھر آنکس (फ़ा) هر نمرود را پشه (अ) لكل فرعون موسى

हम तुम राजी तो क्या करेगा काजी।

(सं) स्त्रीपुरुषौ यदा रक्तौ किं करिष्यन्ति बान्धवाः। (अं) The judge has nothing to do when the parties agree. (उ) دو دل راضي تو کیا کریگا قاضی (फ़ा) زن راضي شوهر راضی تف بر ریش قاضی (अ) المرأة راضية والبعل راض فما بال قضاء القاضي

हर्रा लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे।

(सं) द्रव्यस्यापि व्ययो न स्यात् कार्य्यं स्यादुत्तमोत्तमम्। (अं) To wish for a great result at a little cost. (उ) هادي لگے نہ پھٹکري رنگ چوکھا رهے

हरी खेती ग्याभन गाय तब जानो जब मुह में जाय।

(सं) प्रपूर्णं हरितैः शस्यैः क्षेत्रं गर्भवती च गौः। अन्तरायमुखे नित्यं पतिता नात्र संशयः। (अं There is no counting on a harves in the field. (उ) هري کھیتي گابھن گاے تب جانوں جب منه میں جاے

हा

हाल जाय हवाल जाय पर बन्दे का खेल न जाय।

(सं) गच्छन्तु निखिला मत्तो धर्म्म एको हि तिष्ठतु। (अं) State and wealth are gone but disposition still remains.

(उ) لاکھہ کا گھر خاک هو جاے تو هو جاے پر انکے مزے میں فرق نه آوے (फ़ा) زر میخو اهند خویشان خانه گو.روان شود (अ) تريد الا مطارون هدم الدار

हाय जवानी बावरी एक वार फिरि आव।

(सं) अंगं गलितं पलितं मुण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्। (अं) Come back once more, then, youth. (उ) جو جاکے نه آوے وه جواني دیکھي (फ़ा) نیاید دگر آب رفته بجو (अ) الشاب شعبة من الجنون

हाथी के पीछे कुत्ते भूंका ही करते हैं।

(सं) निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु । न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। गच्छतो हस्तिनः पृष्ठे बुकन्ते कुक्कुराः सदा। (अं) (Lit.) An elephant is not in the least affected by the barking of a dog. (उ) کہیں کووں کے کوسنے سے ڈھور مرتے ہیں
(फ़ा) شپرہ گر وصل آفتاب نخواہد–رونق بازار آفتاب نکاہد (अ) ضیاء الشمس لایردمن دعاء الخفاشین

हाथी के पांव में सब का पांव है।

(सं) सर्व्वे पदा हस्तिपदे निमग्नाः। (अं) God worshipped, all gods and goddesses are worshipped. (उ) اچھوں کے ساتھ برے بھی ملجاتے ھین (फ़ा) چوتیر از کمان رفت ناید بدست
(अ) الوقت یمر مر السحاب

हाथ से गयो अवसर फिर न आवे मौसर।

(सं) प्रत्यायान्ति पुनर्गता न दिवसाः। (अं) Past time can never be called back. (उ) وقت کے بھولے مونی بیچتے ھیں
(फ़ा) چو تیر از کمان رفت ناید بدست (अ) الوقت یمر مرالسحاب

हाथ सुमिरनी पेट कतरनी।

(सं) विषकुम्भं पयोमुखम्। (अं) A honey tongue, a heart of gall. (उ) هاتھ میں تسبیح من میں شیطان
(फ़ा) ظاهر از شیخ باطن از شیطان (अ) لسان یسبح و قلب یذبح

हाथ में लिया कांसा तो पेट का क्या सांसा।

(सं) हस्ते चेत्ताणकं कुक्षौ किं भणकम्। (अं) God's world is wide and the beggar is not lame. (उ) ایک در بند هزار در کھلے (फ़ा) پاے گدا لنگ نیست ملک خدا تنگ نیست (अ) اتیت الا تجیرک من شادلک

हाथ न मुट्ठी फरफराय उट्ठी।

(सं) न हस्तं मुष्टिका नैव किमर्थं फड़फड़ायते। (अं) No money in hand, but a big project in mind. (उ) پیٹ میں بڑی بوند نام بکھا محمود (फ़ा) خوردہ نه بردہ آنے والے درد گردہ (अ) لم تعمهر قوية وقد جاء السارقون

हाकिम चून का भी बुरा।

(सं) न स्वातन्त्र्यसमं सुखम्। (अं) Even an image of a king is an object of dread. (उ) ہزار لاہی توتے گھر بار کے باسن توڑنے کو تو بس ہے (फ़ा) شیر اگر مردہ بود پوستینش باردوخر است (अ) کثرمن الحطب یکسبہ قلل من النار

हाकिम गरीब ताकी धाक ना परत है।

(सं) वीरभोग्या वसुन्धरा। विद्यया वपुषा वाचा वस्त्रेण विभवेन च। वकारैः पञ्चभिर्युक्तो नरः प्राप्नोति गौरवम्। (अं) You can't exercise control unless you be strong. (उ) غریب حکومت میں بڑا فرق ہے (फ़ा) ریاست بے سیاست نمی باشد (अ) ادب الرباست سیف السیاست

हाथी दांत दिखाने और खाने के अलग अलग रहते हैं।

(सं) दुर्ज्ञेयनीतयो भूपाः। (अं) Duplicity is the constant weapon of a politician. (उ) من میں رام بغل میں اینٹین (फ़ा) جو فروش گندم نما (अ) لسان یسبح و قلب یذبح

हाथ कङ्गन को आरसी क्या ?

(सं) सूर्य्यस्य किं दीपप्रदर्शनेन। (अं) (Lit.) What need of a looking-glass for getting sight of one's bracelet. (उ) عیان کا کیا بیان (फ़ा) عیان راچہ بیان (अ) الظاہر عنوان الباطن

हाथ पांव की काहिली मुँह में मूछें जायँ।

(सं) अनवधानतया निःशोभान्यङ्गानि भवन्ति। (अं) A sluggard does not like even to move his limbs. (उ) ہاتھہ پاؤنکو دکہہ تو پیٹ کو سکہہ ہاتھہ پاؤن کو سکھہ تو پیٹ کو دکہہ

हारे भी हार और जीते भी हार।

(सं) पराजयो जयेऽपि स्यान्न जयो विजये तथा। न विधेयो विरोधोऽतः कदाचिद्बलिभिः सह। (अं) (Lit.) Defeat is defeat, but even victory too amounts to defeat. (उ) ہارے بھی ہم اور جیتے بھی ہم

हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ।

(सं) न हि भाग्यात् परं किञ्चित्। (अं) (Lit.) Profit and loss,

life and death, praise and blame,—all are in the despensation of God. (उ) ھانی لابھ جیون مرن جس اپجس بدھ ھاتھہ

हाथ की लकीर नहीं मिटती।

(सं) न हस्तरेखा क्षयते कदाचित्। (अं) There is no counteracting the designs of fate. (उ) ھمنے افلاک کو سو رنگ بدلتے دیکھا— پر نہ قسمت کے نوشتے کو بدلتے دیکھا (फ़ा) انچہ برلوح نوشتہ ست ھمان خواھد بود (अ) جف القلم بما ھو کائن

हार मानी झगड़ा टूटा।

(सं) विरोधो नश्यति क्षिप्रमङ्गीकृत्य पराजयं। (अं) Admit your defeat, and the dispute is at an end. (उ) ھارمانی نہ جھگڑا ٹوٹا

हाजिर में हुज्जत नहीं गैर में तकरार नहीं।

(सं) उपस्थितं परित्यज्यानुपस्थितग्रहणे मानाभावः। (अं) (Lit.) I may give what is in hand, but I can hold out no hope for what I do not have. (उ) حاضرمیں حجت نہیں غیرکی تلاش نہیں

हि

हिसाब जौ जौ का दान सौ सौ का।

(सं) यः काकिणीमप्यपथप्रपन्नां समुद्धरेन्निष्कसहस्रतुल्यां। दानेषु कोटिष्वपि मुक्तहस्तस्तं राजसिंहं न जहाति लक्ष्मीः। (अं) (Lit.) In keeping accounts even a farthing is not neglected, but in giving away in charity you give in hundreds.

(उ) حساب جو جو کا دام سو سو کا

ही

हीरा की परख जौहरी जाने।

(सं) गुणान् गुणी वेत्ति न निर्गुणो जनः। (अं) A blind man cannot be a judge of colour, or, (Lit.) A Jeweller is the best judge of the worth of a jewel. (उ) شیخ کیا جانے صابن کا بھاؤ (फ़ा) خرقیمت زعفران چہ داند (अ) لایطرح الد فی اعناق الکلاب

हु

हुक्म बिन पत्ता न हले।

(सं) यद्भयाद्वाति वातोऽपि सूर्यस्तपति यद्भयात्, वर्षन्ति तोयदाः काले पुष्यन्ति तरवो वने। (अं) Not a sparrow falls without his knowledge. or God only knows His own work.
(उ) خدا کے حکم بغیر پتہ نہین هلتا (फ़ा) کارهاے خدا خداداند
(अ) لاتتحرک ذرة الا باذن الله

हुक्के की मारी आग और बाकी का मारा गांव।

(सं) अनवधानफलं सततं नृणां भवति हानिकरं जगतीतले। (अं) An estate in arrears is an estate lost. (उ) حقے کي ماري آگ باقي کا مارا گانؤن

हू

हूं अनाथ अहो दीनानाथ मारन तारन तुमरे हाथ।

(सं) दीनानामहमेवैको दयालूनां त्वमग्रणीः। दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्रजगत्त्रये। (अं) Keep me or take me off as thou pleasest, O lord. (उ) سر تسليم خم هے جو مزاج يار مين آئے
(फ़ा) گر برانيي ور بخواني بندہ ايم (अ) امرک علي الراس والعين

हे

हेरन के मिस टेरन लागी।

(सं) गीतव्याजेन संहन्ति व्याधोऽरण्ये मृगान् यथा। (अं) (Lit.) Eager to meet when in sight. (उ) هم جان گئے کچهہ دال مين کالا هے (फ़ा) مطلب سعدي ديگرست (अ) مرامکم غيرهذا

हो

होय बुरे से सुत भलो ज्यों कमल कीच ते होय।

(सं) कुवंशादपि सत्पुत्रः पङ्कात् पद्मं यथा भवेत्। (अं) The black hen lays white eggs. (उ) کالي مرغي کيا دهوبے انڈے نهين ديتي
(फ़ा) از آزرپسر چون ابراهيم نتوان بر آمد (अ) يخرج الحي من الميت

होनहार होके रहे।

(सं) भावी चेन्न तदन्यथा। (अं) There is no avoiding the dictates of Fate. (उ) هوتا هے وهي جو منظور خدا هوتا هے
(फ़ा) قضاے نبشتہ نبايد سترد (अ) جف القلم بما هوكائن

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

(सं) भव्यानां भवितव्यानां प्रथमं स्याच्छुभावहम्। (अं) Coming events cast their shadows beforehand. or Child is the father of man. (उ) پوت کے پانؤن پالنے مین پہچانے جاتے ہین
(फ़ा) سالے کہ نکو است از بہارش پیدا است (अ) السعید سعیدفي بطن امہا

होत परायो आपनो शस्त्र परायो हाथ।

(सं) परहस्तगतं शस्त्रं स्वीयञ्चापि परं भवेत्। (अं) Possession is the nine points of law. (उ) گانٹھ ھي کا پیسہ کام آتا ہے
(फ़ा) زر یکہ از تست ھمان نعمت کہ در مشت (अ) القبض دلیل الملک

होत नटो मत कोय।

(सं) सति द्रव्ये कथमनङ्गीकारः। (अं) Truth is truth.
(उ) کسي سایل کو جھڑکانہ کیجئے (फ़ा) چیزے بدہ درویش را چیزے مگو
درویش را (अ) واماالسائل فلا تنہر

हं

हंसों में कौवा।

(सं) हंसमध्ये बको यथा। (अं) (Lit.) A heron in an assembly of geese.
(उ) اونت کے گلے مین بلی
(फ़ा) درمیان کبکان زاغ نشست (अ) بین الملا یکہ ابلیس

हंसा थे सो उड़ गये कागा भये परधान।

(सं) सत्पुरुषा मृता लोके दुष्टा जीवन्ति नायकाः। (अं) When the cats are away the mice will play. (उ) بلي گئي چوھون کی بن آئی
(फ़ा) جاے شہران نشست روبا ہے (अ) مات الناس وبقي الخناس

हन्ते को हनिये पाप दोष न गनिये।

(सं) आततायिनमायान्तं हन्यादेवाऽविचारयन्। शठे शाठ्यं समाचरेत्।
(अं) To kill an enemy is no sin. (उ) مارتے کو مارے پاپ
درس نہ کیجئے (फ़ा) موذي را قبل ایذاء باید کشت (अ) قتل الموذي قبل الایذا

न्यायावलिः ।

Sanskrit Maxims and Proverbs.

अ

अन्धपंगुन्यायः ॥ १ ॥

आँखवाला पंगु यदि अन्धे के कन्धे पर बैठ जाय, तो दोनों का देखने और चलने का काम निकल सक्ता है, अर्थात् एक चलने का काम और दूसरा देखने का काम करेगा । अतः परस्पर की सहायता दिखाते समय यह न्याय लगता है ।

1, *The maxim of the blind and the lame.*

A lame man sits on the shoulders of a blind man, the former guiding the latter.

This maxim is used to show the inter-dependence amongst men and the good that might result from co-operation and union.

अन्धदर्पणन्यायः ॥ २ ॥

अन्धे के लिये दर्पण निकम्मा है। तात्पर्य यह है कि जिसके उपयोग में जो वस्तु न आवे उसके लिये वह वस्तु व्यर्थ है ।

2. *The maxim of the blind man and his mirror.*

It is used in case of persons who possess things which can be of no use to them.

अन्धगजन्यायः ॥ ३ ॥

किसी ग्राम में एक हाथी आया । उसको दिखलाने के लिये अनेक जन्मान्धों ने आँखवाले किसी मनुष्य से आग्रह किया । उसने उन लोगों को हाथी के पास लेजाकर हाथी के भिन्न भिन्न अंगों को भिन्न भिन्न अन्धों को पकड़ा दिया । उन अन्धों ने अलग २ अंगों को स्पर्श करके उन अलग २ अंगों को ही हाथी जानकर जिसने सूंड पकड़ी थी, उसने कहा हाथी सांप की तरह होता है, जिसने पांव पकड़ा था, उसने कहा हाथी थम्ब के समान होता है और जिसने पूंछ पकड़ी थी, उसने कहा नहीं, तुम सब झूठे हो, हाथी रस्सी जैसा होता है । इस प्रकार सब परस्पर झगड़ने लगे । आजकल के साम्प्रदायिक कलह में यह न्याय भली भांति घटता है ।

3. *The maxim of the blind men and the elephant.*

Certain blind men approached a tame and docile elephant in order to get an idea of the creature. One felt his trunk, one his legs, one his tail, and so on. The first man—he, who had felt the elephant's trunk—described him as a fat serpent; the second man, who had felt the legs, as four pillars; the third man, the one who had passed his hands on the tail only, as a piece of stout rope, tapering gradually and having loose fibres at the end; and so on. They began to quarrel with one another over the description of the elephant, each considering his own to be correct.

This maxim is used in cases where an imperfect, partial, or one-sided view of a thing is taken.

अन्धचटकन्यायः ॥ ४ ॥

अन्धे के हाथ में बटेर, अर्थात् अनायास यदि किसी अन्धे के हाथ में बटेर (एक पक्षी का नाम है) आजाय तो उसको दैवी कृपा से प्राप्त वस्तु समझनी चाहिये। इसी प्रकार की अनायास प्राप्त वस्तु में यह न्याय लगता है।

4. *The maxim of the blind man catching a sparrow.*

This maxim is used where unexpected and accidental happenings or coincidences are ascribed to divine agency.

अदग्धदहनन्यायः ॥ ५ ॥

अग्नि जले हुये को नहीं जलाती। तात्पर्य यह है जिसमें पूर्ण क्रिया होजाय उसमें पुनः क्रिया का अवसर नहीं रहता।

5. *The maxim of burning the burnt.*

Fire does not burn a thoroughly burnt object.

This maxim is used in cases where a person attempts an impossible or a fruitless task.

अरण्यरोदनन्यायः ॥ ६ ॥

जैसे जंगल में जाकर रोने से कोई नहीं सुनता, उसी प्रकार जहां चाह नहीं है वहां अपनी इच्छा प्रकट करना व्यर्थ है।

6. *The maxim of crying in the wilderness.*

This maxim is used in cases where a man seeks help and support from a quarter from which they are not likely to come.

अन्धपरम्परान्यायः ॥ ७ ॥

एक साथ चलनेवाले अन्धों में एक यदि कुँयें में गिरजाय तो सब के सब कुँयें में गिर जाते हैं; क्योंकि उनको आगे की सुधि नहीं रहती। विना विचारे किसी काम में लगजाने पर यह न्याय लगता है।

7. *The maxim of the blind following the blind.*

It is used in those cases where people blindly, thoughtlessly, or rashly follow others, not caring to see whether their doing so would not be a dangerous leap in the dark.

अपन्थानंतुगच्छन्तमितिन्यायः ॥ ८ ॥

कुमार्ग में जाने वाले मनुष्य को सगा भाई भी छोड़ देता है।

8. *The maxim of a person going wrong.*

A person ought to abandon one going in the ways of wickedness even if one be his dearest brother.

अन्धगोलांगूलन्यायः ॥ ९ ॥

किसी ने किसी अन्धे को बैल की पूंछ पकड़ा दी और कहा कि, यह तुम्हें नगरमें ले जायगा। उस विश्वासी अन्धे ने किसी के कहने पर भी पूंछ को नहीं छोड़ा, इसीलिये अपने नियत स्थान में नहीं पहुँच सका। अन्धविश्वास पर यह न्याय लगता है।

9. *The maxim of the blind man and the bull's tail.*

This maxim is based on the following anecdote: Once upon a time a certain blind man started from his native village, intending to go to a neighbouring big city. He had not plodded on far, when he met a barber, fond of practical jokes. The latter accosted the former and learnt from him, that he, the blind man, was travelling to town, where, he thought, plenty of alms was to be had for the mere asking. The barber, finding a sure victim of his jokes, told the blind man that he would find him a guide. He thereupon took him to a field, where a bullock was grazing, and let him catch his tail. He then said to him, "my friend, here is a sure guide for you. Don't leave him whatever happens, and in spite of all that wicked people might say to do you a mischief." The blind man soon reached not the town, but the heart of a—thorny bush!

This maxim is applied to cases where a man places his trust on an object not worthy of trust !

अमूर्त्तमूर्त्तिन्यायः ॥ १० ॥

भगवान् की मूर्ति नहीं है, वे सर्वव्यापक और मूर्तिरहित हैं। केवल दिव्य देशों में भक्त उपासना के हितार्थ भगवान् की पूजा करता है परन्तु अज्ञानी लोग कहते हैं कि मूर्ति (बुत) की पूजा होती है । अज्ञानप्रतिपादक विषयों में इस न्याय का प्रयोग होता है ।

10. *The maxim of the image form of the Formless.*

As God is omnipresent, He may be worshipped in any object. The true devotee, though believing God to be formless, in order to gratify the cravings of his heart for an image, makes one in a pitha and worships Him in the image. Ignorant men say that he is worshipping an external material object.

The maxim is applied to a man who makes a remark on a profound subject which he does not understand in the least, thus displaying his utter ignorance.

अर्द्धजरतीन्यायः ॥ ११ ॥

जहां एक-धार में दोनों परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का रहना असम्भव है ऐसा बताना हो वहां यह न्याय लगता है। जैसे जरा और यौवन दोनों एक ही अङ्ग में एक ही समय नहीं रह सकते हैं।

11. *The maxim of the two opposites staying in a single substance.*

This maxim is applied in cases where the impossibility of two opposite attributes combined in a single individual at the same time is to prove such as youth and old age can notstay at the same time in a single man or woman.

अर्द्धवैशसन्यायः ॥ १२ ॥

जहां असंभव अर्थ हो वहां यह न्याय लगता है। जैसे कोई मांसभक्षी मांस खाने की इच्छा से मुर्गी का गला काटकर खाता है और उसके बच्चे की इच्छा से उदर की रक्षा करता है ।

12. *The maxim of cutting up half an animal.*

A man cuts off the head, the thorax, the wings and the lower-limbs of a hen, leaving the abdomen intact with the hope that sh might lay the eggs that are in her.

This maxim is used in cases where an absurd, ridiculous, foolish, or unreasonable act is done.

अब्भक्षन्यायः ॥ १३ ॥

जैसे यह ब्राह्मण जल पीकर रहता है, ऐसा कहने से जल से अतिरिक्त भोजन का निषेध प्रतीत होता है। तात्पर्य यह है कि, विशेष शब्द के प्रयोग से सामान्य का निषेध समझा जाता है।

13. *The maxim of living on water alone.*

If it is said that Rama lives on water only, it is to be inferred that, having water, he does not take any food or drink.

This maxim is used in those cases where by the use of particular attributes to an object, its generic attributes are negatived.

अन्ते रण्डाविवाहश्चेदादावेव कुतो न स इति न्यायः ॥ १४ ॥

जब अनर्गल व्यभिचार से बचाने के लिये अत्यन्त व्यभिचारिणी विधवाका विवाह अन्त में करना ही पड़ेगा तो वह पहले ही क्यों न किया जाय ? तात्पर्य यह है कि जिस कार्य को अन्त में करना ही है, उसको पहले ही क्यों न करें ?

14. *The maxim of marrying a widow.*

If a widow is to be married at all, why not before she becomes corrupt ?

This maxim is used in those cases where an act is done after the proper time for its performance is passed.

अशोकवनिकान्यायः ॥ १५ ॥

जहां एक साध्य और अनेक साधन हों और एक ही साधनसे साध्यकी सिद्धि भी होती हो तो वहां यह न्याय लगता है । जैसे रावणने राक्षसियोंसे कहा कि सीताको अशोक वनमें रक्खो। वहां अनेक अशोक वन थे, परन्तु एक में रखनेसे अन्यान्य अशोक वनोंकी अनुपयोगिता आप ही आप सिद्ध हो गई।

15. *The maxim of the grove of* Asoke *trees.*

Ravana kept Sita in the garden of *Asoke* trees, when he could keep her in any other garden.

This maxim is used in those cases where a man finds several ways of doing a thing, any one of them being as good as another, and the preference of any particular one cannot be accounted for.

अश्मलोष्टन्यायः ॥ १६ ॥

रुई की अपेक्षा मिट्टी का ढेला अत्यन्त कठिन होने पर भी पाषाण की अपेक्षा मृदु है।

16. *The maxim of the stone and clod of earth.*

A clod of earth may be considered to be hard as compared with cotton, but is soft as compared with a stone. So a person may be considered to be very important when compared with his inferiors, but sinks into insignificance when compared with his betters.

This maxim is used to denote the relative importance of two things.

अश्वतरीगर्भन्यायः ॥ १७ ॥

खच्चर से यदि खच्चरी में बच्चे उत्पन्न किये जायँ तो फिर उससे आगे बच्चे उत्पन्न नहीं होते अर्थात् उनका वंश (नसल) नष्ट हो जाता है। यहां तक कि गर्भ रहने से कभी कभी उस (खच्चरी) की मृत्यु तक हो जाती है।

17. *The maxim of conception of a female mule.*

It is said that a female mule never conceives, or if she is ever made to, she dies.

This maxim is used in connection with anything which has no existence.

अहिभुक्कैवर्तन्यायः ॥ १८ ॥

कोई अहिभुक् नाम का पुरुष नाव पर चढ़ कर सैर करने को चला। वहां मनुष्यों की अधिक भीड़भाड़ देखकर विचारने लगा, कहीं मैं किसी से बदला न जाऊँ, इस विचार से अपने पैर में रस्सी बांध कर सो गया। उस नाव के नाविक (मल्लाह) ने परिहास (मज़ाक) करने के लिये रस्सी खोलकर अपने पैर में बांध ली; नाव के पार जाने पर अहिभुक् ने कैवर्त (मल्लाह) के पैर में रस्सी बंधी हुई देखकर कहने लगा कि 'तू मैं हूँ' उस मल्लाह ने कहा नहीं मैं तू हूँ, ऐसा विवाद दोनों में होने लगा। मूर्खता के वर्णन में यह न्याय लगता है।

18. *The maxim of Ahibhuk and the boatman.*

A man named Ahibhuk, intending to cross a broad river, boarded a boat in which there was a large number of persons. Now the man thought within himself, "there are so many persons in the boat that it would be no wonder if I lose myself and be transferred and changed to one of them." In order to

avert such a calamity, Abibhook, bound his foot with a piece of rope to keep a mark upon himself, and then feeling easy in his mind, fell fast asleep. The boatman chanced to overhear the man's loud soliloquy, and saw his queer manœuvres ; and soon finding the man snoring stentoriously, he untied the rope from the man's feet and fastened it to his own. Abibhook on waking exclaimed, "Alas ! I am changed to a boatman !"

The maxim is used to show a man's idiocy.

अहिनिर्ल्वयिनीन्यायः ॥ १६ ॥

जैसे सांप अपनी केंचुल को छोड़ने के बाद उसको अपनी नहीं समझता है, वैसे ही जीव बोध से पहले देह को आत्मा से अभिन्न मानता हुआ भी बोध हो जाने पर पृथक् मानने लगता है।

19. *The maxim of the cast off slough of a serpent.*

The meaning of this maxim is: Just as a serpent, after it has cast off its slough, does no longer regard the same as a part of itself, so a man, on acquiring *vidya* or true knowledge, regards his self as distinct from his body.

अहिकुण्डलन्यायः ॥ २० ॥

जैसे सर्प का कुण्डलाकार वेष्टन होना स्वाभाविक है, वैसे ही जो जिसका स्वाभाविक धर्म है, उसमें उसकी अवश्य ही प्रवृत्ति होती है।

20. *The maxim of the coils of a snake.*

Just as the coils of a venomous serpent are natural to it so are the crooked ways to a wicked man.

This maxim is used to denote the natural propensites and impulses of a man.

अन्धकवर्तकीन्यायः ॥ २१ ॥

जैसे कोई मनुष्य दोनों हाथों से ताली बजा रहा हो और उसी समय उसके उन दोनों हाथों के बीच में वर्त्तक पक्षी (बटेर) आजाय, यह असम्भव है। इसी प्रकार के असम्भव अर्थ में इस न्याय का प्रयोग होता है।

21. *The maxim of the man clapping his hands and the sparrow.*

It is unthinkable that a sparrow will perch on the hands of a person clapping.

This maxim is used to denote impossibility.

अजाकृपाणीयन्यायः ॥ २२ ॥

किसी खम्भे में बिना म्यान की तलवार टँगी हुई थी, उसमें बकरा आकर स्वयं शिर खुजलाने लगा जिससे उसका शिर कट गया। अघटित घटना में यह न्याय लगता है।

22. *The maxim of the goat and the naked sword.*

A goat was scratching its neck at the sharp edge of a naked sword and cut it.

One should not meddle with dangerous things.

अग्न्यानयनन्यायः ॥ २३ ॥

अग्नि लाओ, यह कहने से ही अग्निपात्र का भी लाना सिद्ध हो जाता है। साहचर्यद्योतक अर्थ में इस न्याय का प्रयोग होता है।

23. *The maxim of asking to bring fire.*

When a person is asked to bring some fire, it is implied that he is to bring it in a pot or vessel.

This maxim is used in those cases where anything is not explicitly expressed, but implied.

अन्यद्भुक्तमन्यद्वान्तमितिन्यायः ॥ २४ ॥

खाया हो कुछ और वमन किया कुछ, यह परस्पर विरुद्ध है। 'कहे आम सुने इमली' 'मांगे हर्रे दे बहेरा' इत्यादि कहावतों के अनुरूप अर्थ में इस न्याय का प्रयोग होता है।

24. *The maxim of eating one thing and vomiting something else.*

This maxim is used in cases where the answer to a question does not touch the question at all.

अन्धस्यैवान्धलग्नस्येतिन्यायः ॥ २५ ॥

एक अन्धा दूसरे अन्धे को पकड़ कर चलने लगा, रास्ते में कई जगह ठोकरें खाकर गिर गया। उसी प्रकार जिसका नेता (अगुआ) भी मूर्ख हो और वह स्वयं भी मूर्ख हो तो उसके काम में सफलता कभी नहीं होती, प्रत्युत काम में अनेक बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं। मूर्ख नेता के अनुयायी बनने में यह न्याय घटता है।

25. *The maxim of the association with the blind.*

What shall it profit a man if he associates with men of little knowledge? A man should always keep the company of persons, superior to him in learning, wisdom, and good qualities.

अर्द्धं त्यजति पण्डित इतिन्यायः ॥ २६ ॥

यदि सर्व वस्तु का नाश होना संभव हो और उसमें से आधा त्याग देनेसे आधा मिल जाता हो, तो विद्वान् पुरुष आधे को छोड़ कर आधे ही को ले लेता है।

26. *The maxim of saving one half.*

When a man is likely to lose all, he ought to sacrifice one-half in order to save the other half.

अल्पस्यहेतोर्बहुहातुमिच्छन्निति न्यायः ॥ २७ ॥

थोड़े के लिये बहुत का त्याग कर देना यह बुद्धिमत्ता नहीं है। जो पुरुष 'त्यजेदेकं कुलस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्' अर्थात् कुल के लिये एक व्यक्ति को छोड़ देना चाहिये और आत्मा के लिये पृथ्वी का त्याग करना चाहिये, इस नीति का आश्रय नहीं करते, उनके लिये ऐसे न्याय का प्रयोग होता है।

27. *The maxim of a person sacrificing much in order to gain a trifle.*

What sacrifices does not a man make, what troubles does he not take to win transient worldly gain? But he is a truly wise man, who seeks That, gives up his all for That, on obtaining which he obtains everything.

c.f. The English proverb: "Penny-wise, pound-foolish."

अलाभेमत्तकाशिन्याइतिन्यायः ॥ २८ ॥

मत्तकाशिनी नाम की स्त्री को जब और कहीं सुरतोत्सव का मौका न मिला तब उसने तिर्य्यग्योनि में सुरतोत्सव किया। तात्पर्य यह है कि जीव की इच्छा पूरी नहीं होती तो वह निकृष्ट उपाय द्वारा भी इच्छा को पूर्ण करने में प्रयत्न करता है।

28. *The maxim of the passionate Kasini.*

The passionate Kasini, failing to secure other means of satisfying her passion was obliged to satisfy the same on an animal.

This maxim is used to denote the irresistible powers of lust and vile passions, and the degradation caused by them.

अण्डकुक्कुटीन्यायः ॥ २६ ॥

किसी ने एक मुर्गी पाली, वह रोज एक अण्डा देती थी। एक दिन उसके पालक ने विचारा, रोज रोज एक एक अण्डा पाने की अपेक्षा एक ही साथ इसके सब अण्डों को निकाल लूं तो अच्छा हो। इसलिये उसने मुर्गी को मार डाला; फल यह हुआ कि मुर्गी और अण्डे दोनों से उसको हाथ धोना पड़ा। यह न्याय मूर्खताद्योतक है।

29. *The maxim of the hen and the eggs.*

A hen used to lay one egg daily. Its owner thought that he would have all the eggs that were in her at one time. Accordingly he ripped open the abdomen of the hen with the result that might be imagined.

This maxim is used in cases where a person becomes a loser on account of covetousness.

अश्वभृत्यन्यायः ॥ ३० ॥

यह घोड़ा किसका है? ऐसा पूछने पर किसी ने कहा कि जिसका मैं नौकर हूं। तब फिर उसने पूछा कि किसका तू नौकर है? तब उसने जवाब दिया कि जिसका यह घोड़ा है। ऐसे कथोपकथन से निर्णय कुछ भी नहीं होता है, परस्पर ज्ञान की सापेक्षता में यह न्याय लगता है।

30. *The maxim of the horse and its owner.*

A man asked an hostler who was attending to a horse, "whose horse is this?"

The hostler replied, "His, whose servant I am."

The man again asked, "whose servant are you, my good man?"

The hostler replied readily, "why, his, whose horse this is!"

This maxim is applied to a person who argues in a circle, or gives evasive answers.

अजातपुत्रनामोत्कीर्तनन्यायः ॥ ३१ ॥

पुत्र होने से पहले ही पुत्र का नामकरण करना व्यर्थ है। यह न्याय निष्प्रयोजनताद्योतक है।

31. *The maxim of christening the babe yet unborn.*

This maxim is applied to superfluous, foolish, or useless acts of persons.

अन्तेयामतिःसागतिरितिन्यायः ॥ ३२ ॥

मरने के समय जैसी बुद्धि होती है, वैसीही गति होती है, अर्थात् मृत्यु-कालीन भावना के अनुरूप ही परलोक में जीव की गति होती है । यह न्याय अन्तिम विचार की सर्वोत्कृष्टताद्योतक है ।

32. *The maxim of: As thou thinkest in thy last moments, so shalt thou be.**

King Bharata had a favourite antelope, who used to follow him wherever he went, and whom the King loved very much. While on death-bed, the dying King's thoughts were of his pet antelope. The King in his next birth was born as an antelope.

**c.f.* Bhagawad Gita, VIII, 5. 6.

अपराह्णच्छायान्यायः ॥ ३३ ॥

मध्याह्न के बाद की छाया उत्तरोत्तर बढ़ने वाली होने के कारण बहुकाल-व्यापिनी होती है । यह न्याय उत्तरोत्तर वृद्धि और चिरकालव्यापकता के अर्थ में घटता है ।

33. *The maxim of the shadow of the evening.*

This maxim is applied in cases where prosperity or intimacy is on a continued wax.

असाराणामपिबहूनामितिन्यायः ॥ ३४ ॥

अनेक क्षुद्र वस्तुओं का भी मेल बहुत बड़े कार्य्य को कर सकता है; जैसे क्षुद्र घासों से रस्सी बनाई जाती है उससे हाथी भी बांधा जाता है । यह संघशक्तिद्योतक न्याय है ।

34. *The maxim of many trifles.*

A straw is an insignificant thing of little strength, but when it unites with others to make a stout rope, it can bind and hold in check even a mad elephant.

Cf. The English proverbs: "Union is strength." "Many a little makes a mickle."

अस्नेहदीपनन्यायः ॥ ३५ ॥

बिना तेल के दीपक नहीं जल सकता है । कारण के अभाव से कार्य्य का भी अभाव हो जाता है; ऐसे अर्थ में इस न्याय का प्रयोग होता है ।

35. *The maxim of burning a lamp without oil.*

This maxim is used in the following and like senses. A man spends more than he earns; he builds a structure on a

foundation which is weak ; he looks more to show than real worth; he cares for a transient effect instead of permanancy, etc.

आ

आकाशपरिच्छिन्नत्वन्यायः ॥ ३६ ॥

आकाश का माप नहीं हो सक्ता है। किसी व्यापक तत्त्व के विषय में उदाहरण देते समय इस न्याय का व्यवहार होता है।

36. *The maxim of dividing and limiting the limitless and All-pervading Akash (Sky, ether).*

The infinite sky cannot be measured, divided, or limited.

This maxim is used in those cases where a person undertakes or attempts an impossible task; or where one wants to illustrate the infinite, eternal and all-pervasive character of a category, such as the self.

आकाशमुष्टिहननन्यायः ॥ ३७ ॥

आकाश को मुट्ठी से मारना असंभव है। असंभव अर्थ में यह न्याय प्रयुक्त होता है।

37. *The maxim of striking the sky with fists.*

This maxim is used to denote an impossible act.

आदावन्तेचेतिन्यायः ॥ ३८ ॥

आदि और अन्त का उल्लेख होने से मध्य भी समझा जाता है। उस अर्थ में इस न्याय का व्यवहार होता है।

38. *The maxim of the beginning and the end.*

If anything has a beginning, it must have an end; and if it has a beginning and an end, it has a middle also.

आचारार्यत्वन्यायः ॥ ३९ ॥

वर्णाश्रम सम्बन्धी सदाचार के विना मनुष्य जाति में आर्यत्व नहीं हो सक्ता। धर्मधर्मिनिर्णय में इस न्याय का प्रयोग होता है।

39. *The maxim of the existence of the Arya race and good conduct.*

It is on the practice and Continuance of the *Varna* and *Ashram Dharma*, and rules of good conduct, that the existence and prosperity of the Arya race depends.

This maxim is used in those cases where one thing depends upon another for its very life.

आभाणकन्यायः ॥ ४० ॥

जहां मिथ्या किंवदन्ती पर विश्वास करके काम किया जाता है वहां इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे अमुक स्थान में भूत रहता है, यह झूठी अफवाह लोगों में चली आती है और उस पर विश्वास करके लोग उस स्थान पर जाने में भयभीत होते हैं।

40. *The maxim of believing in a rumour.*

This maxim is used in cases where people believe in false rumours as ghost etc., and are swayed by the same.

आम्रवणन्यायः ॥ ४१ ॥

जहां आम के वन बहुत हों वहां अन्य वृक्षों के रहने पर भी आम्रवन के नाम से ही प्रसिद्धि होती है। यह न्याय बाहुल्य का महत्त्वव्यंजक है।

41. *The maxim of the mango grove.*

In a mango grove, there may be some other trees, but still people call it a mango grove.

This maxim is used to denote the force of habit, or the effect of a company or an association, good and bad.

आयुर्घृतमितिन्यायः ॥ ४२ ॥

आयु और घृत का घनिष्ठ सम्बंध है, वा यों कहना चाहिये कि घृत आयु-रूप ही है। परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध बतलाने में यह न्याय लगता है।

42. *The maxim of long life and ghee.*

Ghee is the cause of long life; for, if one regularly takes at meals a little pure *ghee* every day, one is healthier for it, and lives to a ripe old age.

This maxim is used to denote the relation of cause and effect.

आषाढवातेचलतिद्विपेन्द्रइतिन्यायः ॥ ४३ ॥

आषाढ महीने की हवा चलने पर हाथी को सर्वत्र समुद्र ही मालूम पड़ता है; तात्पर्य यह है कि हाथी का उत्साह वर्षा में और निरुत्साह गर्मी में हुआ करता है। निरुत्साह के बढ़ाने वाले स्थल में यह न्याय लगता है।

43. *The maxim of the elephant and the wind blowing in the month of Ashar (July.)*

When the wind blows in the month of Ashara (*July*) everything around an elephant appears to him like the sea and so he becomes very exultant, but when the summer sets in he becomes very dispirited and morose.

This maxim is used in discouraging one in any matter.

इ

इक्षुविकारन्यायः ॥ ४४ ॥

ऊख के पेरने से रस, रसके पकाने से गुड़ और गुड़ के साफ़ करने से खाँड़ आदि वस्तुएँ उत्तरोत्तर उत्तम बनती जाती हैं; इसी प्रकार जहां क्रमशः उत्तरोत्तर विशेष उन्नति दिखाई जाय वहां इस न्याय का व्यवहार होता है।

44. *The maxim of the modifications of the sugar-came.*

The raw sugar-cane is first pressed and the juice extracted therefrom. The liquid juice is then boiled, and made into solid *gur*, which is then refined and turned into fine, white crystallised sugar.

This maxim is used to denote gradual progress.

इक्षुरसन्यायः ॥ ४५ ॥

ऊख को कोल्हू में पेरने से ही रस निकलता है; तात्पर्य यह है कि जहाँ कठिन व्यवहार करने से ही फल अच्छा हो, ऐसे स्थल पर यह न्याय काम में आता है।

45. *The maxim of the juice of sugar-cane.*

You cannot extract the juice out of sugar-cane without first crushing it. So, in order to obtain particular results in certain cases, you have to assume a severe, stern, and unyielding attitude.

इषुवेगक्षयन्यायः ॥ ४६ ॥

धनुष से छूटे हुए बाण का वेग लक्ष्य तक जाकर ही समाप्त होता है, बीच में नहीं। जो पुरुषार्थ लक्ष्यसिद्धि के बिना विरत न हो, वहां ही यह न्याय व्यवहृत होता है।

46. *The maxim of the ceasing of the impulse of a Discharged arrow.*

Just as an arrow discharged from a bow flies on and

on, till it pierces the object aimed at, when it stops, so a worthy man toils day and night, and stops not, unless and until he obtains his heart's desire, when he puts his tools aside and joyfully takes rest.

इच्छेष्यमाणसमभिव्याहारेइतिन्यायः ॥ ४७ ॥

तात्पर्य यह है कि इच्छा के उत्पन्न होने में इच्छा को उत्पन्न करनेवाली वस्तु ही कारण होती है। यह न्याय हेतुहेतुमद्भाव का सूचक है।

47. *The maxim of the will to attain an end and the means.*

If a man has an earnest and ardent desire to achieve anything, the means will not be wanting.

Cf. The English Saying: "Where there is a will, there is a way."

उ

उपास्यमहिलान्यायः ॥ ४८ ॥

जैसे उपासक के लिये जब तक एक उपास्य इष्टदेव न होगा तब तक कदापि सिद्धि नहीं होगी उसी प्रकार आर्यनारी जब तक एक पति-निष्ठा न होगी, तब तक उसका कल्याण नहीं हो सक्ता। यह एकपरायणताद्योतक न्याय है!

48. *The maxim of Upasya (object of worship)—and a woman.*

As firm belief in one is essentially necessary for a worshipper to attain success, so unflinching devotion to her husband is equally necessary for an Aryan woman for the attainment of highest good in life.

This maxim is intended to teach firm faith in one.

उत्खातदंष्ट्रोरगन्यायः ॥ ४९ ॥

जिसका दांत उखाड़ा हुआ है ऐसा सांप काट नहीं सक्ता; जैसे शक्तिहीन दुष्ट, निर्बल डाकू और वृद्ध कामी आदि। ऐसे ही स्थलों में यह न्याय घटता है।

49. *The maxim of a Fangless serpent.*

As a serpent deprived of its fang is harmless, so also a wicked man, who has lost his power, a robber, who has become weak and infirm, or a voluptuous debauch in his old age, can do no harm to any one.

This maxim teaches that the evil propensities lose their force with the decline of physical strength

उदकनिमज्जनन्यायः ॥ ५० ॥

जैसे जल में डूबी हुई वस्तु बड़ी कठिनता से मिलती है; ऐसे ही दुःसाध्य काम को सुसाध्य करने के अर्थ में यह न्याय लगता है।

50. *The maxim of sinking into water.*

It is very difficult to find out a thing that has sunk into water.

The maxim is used to denote the difficulty to be experienced in attempting a thing, which is not easy of performance.

उष्ट्रकण्टकभक्षणन्यायः ॥ ५१ ॥

जिस वस्तु में जिसकी रुचि होती है, उसी में वह आनन्द समझता है। जैसे ऊंट बबूल आदि कँटीले वृक्षों के कांटे सहित पत्तों को खाने से ही आनन्द समझता है। उत्तम खांड़ आदि वस्तुओं में उसकी रुचि नहीं होती है। रुचि के अनुकूल प्रवृत्ति में यह न्याय लगता है।

51. *The maxim of a camel and a thorny plant.*

The camel likes much to eat the thorny leaves and bark of a certain plant though it has to suffer much pain. It is used to denote that one would be pleased to follow his own taste however inconvenient or undesirable it may in reality be.

उपनयन्नपनयन्धर्मोविकरोतिहिधर्मिणमितिन्यायः ॥ ५२ ॥

धर्मी में से धर्म निकल जाने पर उसमें विकार उत्पन्न होजाता है, जैसे अग्नि में से उष्णत्व निकल जाने पर वह कोयला बन जाता है; इसी प्रकार के उदाहरण में यह न्याय लगता है।

52. *The maxim of a thing and its altered condition.*

The maxim originates from the fact that a burning fuel when fully burnt down, and fire is extinguished loses its true nature and is reduced to ashes, and is used to signify that a thing ceases to be called as such when it is deprived of its essential properties.

उपवासाद्वरंभिक्षेतिन्यायः ॥ ५३ ॥

भूखे रहने से भीख मांगकर खाना अच्छा है। आपद्धर्म में यह न्याय लगता है।

53. *The maxim of Apat-Dharma (rules of conduct in time of danger).*

It is better to beg than to fast.

उभयतःपाशारज्जुरितिन्यायः ॥ ५४ ॥

दोनों ओर जाल फैलाने पर हरिण जिधर जाता है उसी ओर फँस जाता है। जिस कार्य्य के करने और न करने, दोनों में ही आपत्ति हो, वहां यह न्याय लगता है।

54. *The maxim of nets in both sides.*

When there are nets on either side, one is sure to get entangled to whichever direction he may move. It is used to denote the difficulty of situation of a person when it is injurious for him either to do a thing or to leave it undone.

उष्ट्रलगुडन्यायः ॥ ५५ ॥

ऊंट जिस लाठी को ढोता है उसी से वह मार खाता है। मूर्खता के उदाहरण में यह न्याय घटता है।

55. *The maxim of a camel and a club.*

The camel is beaten by the rod which it carries on its back. So a fool has to suffer much as the consequence of his foolish conduct.

ऊ

ऊषरवृष्टिन्यायः ॥ ५६ ॥

ऊषर ज़मीन में बहुत वर्षा होने पर भी बीज से अंकुर की उत्पत्ति नहीं होती है। जहां कार्य में सफलता असंभव हो, वहां उद्योग व्यर्थ है । ऐसेही स्थलों पर यह न्याय लगता है।

56. *The maxim of sterility and rain.*

The seeds sown in a barren land do not germinate though there may be a copious rainfall. It is used to denote fruitlessness of efforts in a matter which it is impossible to perfom.

ऋ

ऋजुमार्गेणसिद्ध्यतइतिन्यायः ॥ ५७ ॥

जो काम सुगम उपाय से होसक्ता है उसको कठिनाई के साथ करना अनुचित है।

57. *The maxim of easy way of success.*

It is not proper to take recourse to a difficult way for doing a thing when it can be done easily.

ए

एकवृन्तगतफलद्वयन्यायः ॥ ५८ ॥

जैसे एकही गुच्छे में दो फल लगते हैं, वैसेही दो अर्थों के रखनेवाले एक शब्द के प्रयोग में यह न्याय लगता है।

58. *The maxim of two fruits in one stem.*

As two fruits sometimes grow in one stem, so the same word may sometimes be used in two senses.

एकसंधित्सतोऽपरंप्रच्यवतइतिन्यायः ॥ ५९ ॥

एक ओर जोड़ता है तो दूसरी ओर बिगड़ता है और दूसरी ओर जोड़ता है तो तीसरी ओर छिद्र निकल आता है। नाना विघ्न बाधाएं एक साथ उपस्थित होने पर यह न्याय लगता है।

59. This logical formula is applicable to those cases where one part of argument breaks down, while the other part holds good. At the same time a whole test of logical inconsistencies crop up to make the situation untenable.

एकत्रनिर्णीतःशास्त्रार्थोऽन्यत्रापितथेतिन्यायः ॥ ६० ॥

प्रमाण आदिसे एक स्थान में निर्णय किया हुआ शास्त्र का अर्थ, अन्य स्थानों में भी अनुमान से उसी प्रकार का हो सकता है। यह न्याय सिद्धान्त समर्थक है।

60. Two similar lines of argument when applied to cases of similar character in different circumstances tend to make for certainty in reasoning.

एकदेशविकृतमनन्यवदितिन्यायः ॥ ६१ ॥

किसी भी वस्तु के किसी एक अंश में विकार (हानि या आधिक्य) होजाने से वह वस्तु दूसरी नहीं होजाती, यथा-पुच्छहीन अश्व (घोड़ा) अश्व ही रहता है, गदहा नहीं होजाता; अथवा एक हाथ में छः अंगुलियों के होने से मनुष्य पशु नहीं होजाता।

61. *The maxim of a thing remaining unchanged in form though it may be maimed in part.*

A horse continues to be a horse, and is not transformed into an ass, though its tail may be cut off; or a man does not become a beast though he may lose one of his fingers.

It is used to denote that external deformity is no indication of any change of the true nature of a thing.

एकाकिनीप्रतिज्ञाहिन्यायः ॥ ६२ ॥

केवल प्रतिज्ञामात्र से ही कार्य की सिद्धि नहीं होती है। बहुत बोलने और व्यर्थ बोलने वाले के सम्बन्ध में यह न्याय लगता है।

62. *The maxim of promise alone.*

Mere words of promise cannot secure success, (action is essentially necessary).

It is used to denote that those who talk much are not men of action.

एकाऽसिद्धिंपरिहरतोद्वितीयापद्यतइतिन्यायः ॥ ६३ ॥

एक असिद्धि को दूर करते हुए दूसरी आजाती है। संसार की आपत्ति-बहुल अवस्था में यह न्याय लगता है।

63. *The maxim of one failure bringing other failures in its train.*

In going to remedy one failure, another thing requiring attention is neglected, and that, too, therefore, ultimately proves to be a failure.

एकवाक्यतापन्नानामितिन्यायः ॥ ६४ ॥

एक वाक्य में जिन शब्दों के अन्वय हों वह उसी वाक्य के कहलाते हैं। जो कोई व्यक्ति यदि अपने भाव को छिपाकर बहुत कुछ बोलना चाहे वहां यह न्याय लगता है।

64. *The maxim of being one in month and at heart.*

It is used in cases where a man has one thing at heart, and expresses quite a different thing by words.

एकसम्बन्धिदर्शनन्यायः ॥ ६५ ॥

एकसम्बन्धिज्ञान दूसरे का स्मारक है। विचार सादृश्य के निर्णय में यह न्याय लगता है।

65. *The maxim of association.*

This maxim is used in cases where a thing reminds one of other things with which it is associated or with which it has some resemblance.

औ

औपाधिकाकाशभेदन्यायः ॥ ६६ ॥

विभिन्न उपाधि से युक्त जाति में अवश्य भेद है। भेद प्रतिपादन में यह न्याय काम में आता है।

66. *The maxim of the surnames and the sky.*

As the same atmosphere appears to be different, being circumscribed by different things, so the same class of things becomes different according to the difference of designations and surnames.

It is used to establish the difference among things.

क

क्षीरंविहायरोचकग्रस्तस्यसौवीररुचिमनुभवतीतिन्यायः ॥ ६७ ॥

जिसमें खाने की रुचि नहीं होती ऐसे रोग से पीड़ित पुरुष दूध को छोड़कर कढ़ी में रुचि करता है। कुपथगामी तथा असद् विषय की इच्छा करनेवाले के लिये इस न्याय का व्यवहार होता है।

67. *The maxim of preferring a sour thing to milk.*

There are patients who would not like to take milk, but would long for curd or some preparation of it.

It is used to denote the vitiated taste of those that have gone astray or that are addicted to evil practice.

कण्टकन्यायः ॥ ६८ ॥

कांटे से कांटा निकाला जाता है; अर्थात् दुष्ट के दमन करने के लिये दुष्ट या दुष्टता का प्रयोग युक्तियुक्त है।

68. *The maxim of thorn.*

To draw out a thorn from any part of the body, the help or use of another thorn is necessary. So wicked means may be adopted for putting down a wicked man.

कण्ठचामीकरन्यायः ॥ ६९ ॥

जैसे कोई गले में भूषण पहरा हुआ है और भूलसे दूसरे से पूछ रहा है कि कहां है, दूसरे ने कहा गले में देखो तब उसने कहा हां मिल गया।

69. *The maxim of the neck and the necklace.*

One day a lady was anxiously engaged in search for her

necklace, though in fact she had it then round her neck. When she enquired of another person about it, she was asked only to feel her neck.

It is used to denote the useless attempt of a person to obtain a thing from somewhere else though in fact he is in possession of it, only he is not aware of it.

कण्ठाभरणन्यायः ॥ ७० ॥

यह भी उपरोक्त प्रकार का न्याय है, भ्रम प्रतीति में लगता है।

70. This sort of reasoning is also held to be logical like the above, but it is still not free from error.

कन्याविक्रयिद्विजन्यायः ॥ ७१ ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन द्विजातियों के लिये कन्या देकर धन लेना महापाप है। इस कारण यह पापबोधक न्याय है।

71. *The maxim of a Brahman who accepted money to give his daughter in marriage.*

It is sinful on the part of a Brahman, a Kshatriya or a Vaisya, to accept money as a consideration for giving away his daughter in marriage.

करस्थबिल्वन्यायः ॥ ७२ ॥

जैसे हाथ में रक्खा हुआ बिल्व का फल स्पष्ट दिखाई पड़ता है। वैसेही ज्ञानी व्यक्ति के संमुख जगत्प्रपञ्च का स्वरूप खुलजाता है।

72. *The maxim of a Bilwa fruit on the palm of hand.*

As a Bilwa fruit may be fully well-known on minute examination when it is placed on the hand, so it is possible for man to acquire a thorough knowledge of this world as he is always in direct contact with it.

करिबृंहितन्यायः ॥ ७३ ॥

बृंहित यह शब्द सब की बोलियों के अर्थ में व्यवहृत होसकने पर भी बृंहित कहनेसे केवल हाथी केही शब्द का बोध होता है। एक शब्द अनेक अर्थ में प्रयुक्त होने पर भी जिसमें उसकी प्रसिद्धि है उसी अर्थ का बोध करावेगा। ऐसे उदाहरण में यह न्याय व्यवहृत होता है।

73. *The maxim of Kari-brinhita (the elephant and its particular sound).*

As the word *Brinhita* is ordinarily taken to mean the sound

of an elephant, although the word properly means the sound of all animals, so a word though from its derivation may be applied in various senses, is by usage is restricted to any particular sense.

का

कांस्यभोजीन्यायः ॥ ७४ ॥

जैसे किसी शिष्य ने ऐसा नियम किया कि मैं नित्य गुरुका उच्छिष्ट खाऊंगा और कांसे के बर्तन में कभी नहीं खाऊंगा, गुरु उसका नियमभंग करने के लिये सदा कांसे के बर्तन में खाने लगे, तब शिष्य को कांसे के पात्र में ही खाना पड़ा अतः परस्पर सम्बन्ध से एक को प्रधानता देते समय यह न्याय लगता है।

74. *The maxim of one eating on a bell-metal plate.*

A disciple promised never to take his meal from a bell-metal plate. But his *guru* was resolved to break that promise, and so he began to use bell-metal plates at the dinner time. As it was binding on the part of the disciple to eat the remainder of the food left by the *guru*, he could not but break his promise.

It is used to denote that in cases of mutual relations preference must be given to him who is higher in position.

काफोणिगुडन्यायः ॥ ७५ ॥

कफोणि अर्थात् केहुन में यदि गुड़ लगजाय तो वह चाटा नहीं जासक्ता है। ऐसे असंभव भावप्रकाश में यह न्याय लगता है।

75. *The maxim of the elbow and molasses.*

It is impossible for one to lick out the molasses which is stuck on his elbow.

It is used in cases where one is called upon to perform an impossible task.

काकतालीयन्यायः ॥ ७६ ॥

कौआ अपनी इच्छा से उड़ा आ रहा था, किसी ताड़ के पेड़ के नीचे आने पर दैवात् ताड़का फल गिरा, कौआ मरगया ऐसीही दैवी घटना के प्रकाश में यह न्याय लगता है।

76.' *The maxim of a crow and the palm fruit.*

It takes its origin from the unexpected and sudden fall of a palm fruit upon the head of a crow (so as to kill it) at the very moment of its sitting on a branch of that tree.

It is used to denote an unexpected and accidental occurrence, whether welcome or otherwise.

काकदधिघातकन्यायः ॥ ७७ ॥

जैसे कौए से दही बचाना कहने पर ऐसा समझना चाहिये कि सब पक्षी आदि से दही बचाने को कहा जाता है।

77. *The maxim of a crow and a vessel of curd.*

It has thus come in use :—A vessel containing co-agulated milk is placed by a man in charge of another with a request to protect it carefully from the crow. Here though the man mentions only crow, he means that it should be properly taken care of so that it might not be spoiled by any animal whatever.

It is used to denote that the intention of the speaker is to be marked and given effect to, though his words may not clearly express it.

काकाक्षिगोलकन्यायः ॥ ७८ ॥

ऐसी किंवदन्ती है कि कौआ दोनों आंख का उपयोग नहीं कर सक्ता। ऐसे उदाहरण पर इस न्याय का व्यवहार होता है।

78. *The maxim of the crow's eye-ball.*

It originates from the supposition that the crow has but one eye, and that it can move it, as occasion requires, from the socket on one side into that of the other.

This maxim is applied to a word or phrase which though used only once in a sentence, may, if occasion requires, serve two purposes.

काकदन्तपरीक्षान्यायः ॥ ७९ ॥

कौए के दांतों की परीक्षा करना व्यर्थ है। असंबद्ध और निष्फल कार्यों के लिये इस न्याय का उपयोग है।

79. *The maxim of searching after a crow's teeth.*

It is used to denote any useless, unprofitable, or impossible task.

कामनागोचरत्वेनशब्दबोधएवशब्दसाधनतान्वयइतिन्यायः ॥८०॥

अर्थ का बोध ही मनोवाञ्छित अर्थ का विषय है इसलिये अर्थबोध में शब्द ही कारण है। यदि कोई मनोभाव छिपावे उस समय यह न्याय प्रयुक्त होता है।

80. *The maxim of Sound with meaning is expressive of mental conditions or states.*

This reasoning is applicable only in cases when mental reservation is practised.

कारणगुणप्रक्रमन्यायः ॥ ८१ ॥

जैसा कारण में गुण हो कार्य में भी वैसाही होता है, जैसे तन्तुरूप पटरूप का कारण है, जैसा तन्तु का रूप रहता है वैसाही पट का रूप होता है।

81. *The maxim of properties of cause and effect.*

It is used to denote that the properties or qualities belonging to the cause pass to the effect.

कामिपतिसपत्नन्यायः ॥ ८२ ॥

कामी पति स्त्री को बिगाड़ डालते हैं अतः शत्रु हैं। यह स्त्रियों की पवित्रता के विषय में व्यवहृत होता है।

82. *The maxim of the lewed husband corrupting his wife.*

It is used to denote that husbands are responsible (oftentimes) for the corrupted course of life led by their wives.

कार्येणकारणसंप्रत्ययन्यायः ॥ ८३ ॥

कार्य से कारण का अनुमान होता है। गुप्त कारण पर जोर देने पर यह न्याय लगता है।

83. *The maxim of effect proving the existence and nature of the cause.*

Cf. Eng. saying—A tree is known by the fruit it bears.

कारणनाशेकार्यनाशन्यायः ॥ ८४ ॥

कारण के न रहने से कार्य नहीं रहता है। जैसे दीप के जलने में तेल कारण है तेल के अभाव से दीप नहीं रह सक्ता उसी प्रकार द्वेष आदि कारण नष्ट होने पर द्वेष आदिका कार्य कदापि नहीं रह सक्ता।

84. *The maxim of the destruction of the cause results in the destruction of the effect.*

The effect cannot exist if the cause giving rise to it ceases to exist.

कि

किमज्ञानस्यदुष्करमितिन्यायः ॥ ८५ ॥

अज्ञानी क्या नहीं करसक्ता है। अज्ञान की निन्दा में इस न्याय का प्रयोग होता है।

85. *The maxim of nothing is impossible on the part of a fool.* A foolish and ignorant man is equal to any task

की

कीटभृङ्गन्यायः ॥ ८६ ॥

भ्रमरकीट तैलपाई कीट को पकड़ लेता है और पकड़ कर अपने बिल में बन्द करदेता है और हर समय बिलपर जाकर बोलता रहता है, तैलपाई कीट भय से भ्रमरकीट का ध्यान करते २ भ्रमरकीट बन जाता है।

86. *The maxim of a cockroach and a black-bee.*

A cockroach was seized and carried away by a black-bee to its nest, kept there in close confinement, and at last transformed into a black-bee as an effect of its constant hearing of the buzzing of the bees and being occupied with their thought.

The maxim denotes that mind acts powerfully upon the body.

कु

कुक्कुटध्वनिन्यायः ॥ ८७ ॥

मुर्गे के शब्द की ध्वनि क्रम से बढ़ती है, जैसे पहले एक मात्रा तब दो मात्रा फिर तीन मात्रा की ध्वनि होती है।

87. *The maxim of crowing of a cock.*

The crowing of cocks grows louder and louder by gradual steps. It is used to denote the gradual course to be followed in the path of improvement, which is brought about step by step and not by leaps and bounds.

कुम्भीधान्यन्यायः ॥ ८८ ॥

जिसके पास घड़ाभर अन्न है उसके लिये अन्नदान निष्प्रयोजन है। इस न्याय का स्वारस्य यह ही है कि अभाव में देना उचित है।

88. *The maxim of an earthern jar full of paddy.*

It is needless to give in charity to one who is in possession of a big vessel full of paddy.

It is used to denote that charity is meant for the poor and needy and not for those that have sufficient means of subsistence.

Cf. the English proverb :—To send coal to New Castle.

कुसीदग्राहीब्राह्मणन्यायः ॥ ८९ ॥

सूद खाना ब्राह्मणों के लिये पाप है क्योंकि उससे ब्रह्मतेज जाता रहता है। अतः यह नीचतासूचक न्याय है।

89. *The maxim of a usurious Brahman.*

The Brahman who lives by means of usury is a sinner, for, thereby he loses the spiritual power which is the peculiar possession of a Brahman.

It is used to denote that a man degrades himself by taking recourse to unworthy or base profession.

कुशकाशावलम्बनन्यायः ॥ ९० ॥

जैसे नदी में पड़ा हुआ मनुष्य किसी मजबूत आधार को न पाकर कुश या काश का अवलम्बन करके विफल मनोरथ होता है ऐसेही अच्छी युक्तियों से परास्त पुरुष छोटी युक्ति का अवलम्बन करके हास्यास्पद होता है।

90. *The maxim of catching a straw.*

As a ship-wrecked person in making struggles for saving his life, catches hold of even a straw that he comes across (if he cannot get any thing more solid) though quite in vain, so a person in course of a debate, when he fails to gain his point by a strong argument, takes recourse to a frivolous one, and thus becomes only a butt of ridicule.

कू

कूपखानकन्यायः ॥ ९१ ॥

कूप के खोदने से देह पर पड़ा हुआ कीचड़ कूप के जलहीसे धोया जाता है।

91. *The maxim of digging a well.*

The object of the maxim is to denote that as in course of digging a well the body of the worker becomes soiled with the dust, clay, etc., but these may be washed off again with the water of that well, so the sins committed by one at first may be removed by the merits of the virtuous acts done by him afterwards.

कूपन्यायः ॥ ९२ ॥

विना लोटा डोरी के कूप में जल रहने पर भी उसका कुछ उपयोग नहीं होता है।

92. *The maxim of a well.*

There is water in the well, but it cannot be obtained without the help of a jar and a rope, so the Shastras are store-houses of knowledge no doubt, but they are inaccessible to those that are ignorant.

कूपयन्त्रघटीन्यायः ॥ ६३ ॥

भाग्य किसी का अभ्युदय और किसी की अवनति करता है, जैसे कूपयन्त्र में बँधे हुए पात्रों मेंसे किसीमें जल भरता है और किसी का खाली होता है।

93. *The maxim of the buckets attached to the water-wheel.*

It takes its origin from the fact that while some of the buckets filled with water go up, some are emptied of their contents, while others go down quite empty.

It is used to denote the various vicissitudes of worldly existence.

कूपमण्डूकन्यायः ॥ ६४ ॥

कोई समुद्र का मण्डूक दैववश तीर में आकर कुएँ में पड़ गया। कुएँ के मण्डूक ने उसको देख कर पूछा आप कहां से आये ? उसने कहा मैं समुद्र से आया हूं। तब उसने पूछा समुद्र कितना बड़ा है ? उसने कहा बहुत बड़ा है। तब उसने कहा क्या मेरी जंघा के बराबर ? उसने कहा बहुत बड़ा है। तब कूपमंडूक ने कहा मेरे दोनों जंघाओं के बराबर है ? समुद्रमण्डूक ने कहा नहीं बहुत बड़ा है, ऐसे कहने पर कहा क्या कुएँ के समान तो नहीं है ? उसने कहा समुद्र अपार और अति गम्भीर है यह सुन कर कूपमण्डूक बोला तुम मिथ्या कहते हो, सुन कर वह हँसने लगा।

94. *The maxim of a frog in a well.*

The maxim is supposed to originate thus:—One day a sea frog came upon the shore. Proceeding onwards for a time it came at last to a well and accidentally fell into it. There lived a frog in that well, on seeing the stranger it came up and held the following conversation :—

The second frog:—" Where do you come from ?"
" *first* " :—"I came from the sea I live in."
" *second* " :—" How big is a sea ?"
" *first* " :—" Very big."
" *second* " :—" As big as my thigh."
" *first* " :—" Bigger than that."
" *second* " :—" As big as my both the thighs together."
" *first* " :—" Bigger still."

The second frog :—"Certainly not bigger than this well?"

,, first ,, :—"The sea is, my friend, much bigger than this well. It is a vast expanse of water, and appears to have no limit."

Hearing this the frog in the well laughed at the sea frog, and said that it was a lie. There could not be anything bigger than this well.

It is used to denote that a man of limited ideas, having experience only of his own neighbourhood cannot make himself believe that there can be anything better than what he himself knows.

कूर्माङ्गन्यायः ॥ ९५ ॥

कछुआ अपनी इच्छा से अपना शरीर काम करने के लिये फैलाता है और आपत्ति से बचने के लिये सिकोड़ लेता है।

95 *The maxim of the movement of the limbs of a tortoise.*—

It originates from the fact that a tortoise projects its limbs, *i.e.*, its legs and neck, when it has to serve any purpose, and again it draws them in, when that purpose is served, or any danger is apprehended.

It is used to denote that a sensible person will like a tortoise make an exhibition of his power only when there is an opportunity or necessity for it.

कृत्वाचिन्तान्यायः ॥ ९६ ॥

चिन्ता करके कार्य करना बुद्धिमान् का काम है, कार्य करके चिन्ता करना बुद्धिहीन का काम है।

96. *The maxim of doing an act after due consideration.*—

A sensible man will think twice before he undertakes to do anything. But to do something in hot haste and then to consider the propriety or otherwise about it, is the sign of foolishness.

कैमुतिकन्यायः ॥ ९७ ॥

विना परिश्रम के जहां अर्थसिद्धि हो वहां यदि व्यर्थ परिश्रम किया जाय, तो ऐसे स्थलपर इस न्याय का उपयोग होता है।

97. *The maxim of "how much more".*

This maxim is applied to cases where it is unnecessary to

do any labour, if the object may be gained without any labour whatsoever.

कोषपानन्यायः ॥ ६८ ॥

यह न्याय दिव्य परीक्षा में होता है। चोरी आदि करने वाले मनुष्य को मन्त्रादिक से पवित्र किया हुआ जल पिलाते हैं, यदि वह जल पीकर चौदह दिन तक निरोगी हो तो बिना अपराध का समझा जाता है, नहीं तो अपराधी समझा जाता है।

98. *The maxim of drinking water.*

It thus originates that a man guilty of theft or some such crime is given to drink a quantity of water sanctified by means of *mantra*. If in the course of a fortnight he gets no attack of any disease that would go to prove his innocence, but if he becomes unwell any way, that would go to show that he is guilty.

This maxim is used in the cases of ordeals.

कौण्डिन्यन्यायः ॥ ६६ ॥

कहीं निमन्त्रण में ऐसा कहा गया, सब को दही और कौण्डिन्य को तक्र दो, यहां कौण्डिन्य को दही देना उचित नहीं है, ऐसा समझा गया।

99. *The maxim of Kaundinya.*

This maxim has its origin in the following story. There was a Brahman named Kaundinya. On the occasion of a feast in which many Brahmans were invited, curdled milk was served out to all except Kaundinya for whom *ghol* (a species of that milk) was provided for.

It is used to denote "Exception proves the rule."

कौन्तेयराधेयन्यायः ॥ १०० ॥

जैसे कर्ण कुन्ती का ही पुत्र था, परन्तु ज्ञात न होने से अपने को राधा का पुत्र समझता था, पीछे किसी आप्त पुरुष के कहने से अपने को कुन्ती का पुत्र समझने लगा।

100. *The maxim of Kaunteya Radheya.*

It has its origin in the fact that *Karna*, a hero of the Mahabharat, was in reality the son of *Kunti*, but as he was brought up from his infancy by a carpenter-woman named Radha, he was ordinarily called Radheya.

This maxim is applied to the cases in which a fictitious appellation gets currency in suppression of the real one.

खल्वाटबिल्वीयन्यायः ॥ १०१ ॥

कोई खल्वाट अर्थात् चाँदुल पुरुष धूप को नहीं सहन करता हुआ बिल्व के पेड़ के नीचे गया वहां उसके अभाग्यवश बिल्व का फल गिरा, उसका शिर फट गया। ऐसे भाग्यहीन पुरुष जहां जाते हैं वहां ही आपत्तियां आ पड़ती हैं।

101. *The maxim of a bald-headed man and the Bilva fruit.*

It takes its origin from the story that one day at noon a bald-headed man, tired of the excessive heat of the sun, took shelter under the shadow of a *Bilva* tree. Unfortunately for the man a ripe *Bilva* fruit fell down and struck him severely on the head.

It is used to denote that an unfortunate man is pursued by the evil fate wherever he goes.

खलमैत्रीन्यायः ॥ १०२ ॥

दुर्जनों की मैत्री पहले बहुत बड़ी होती है, पीछे धीरे २ छोटी हो जाती है अथवा खल की मैत्री बालू के भीत के समान मिथ्या होती है।

102. *The maxim of the friendship of a Villain.*

It has its origin in the fact that a Villain is at first very profuse in the profession of his friendship. But as time rolls on its intensity gradually diminishes.

It is used to denote that the friendship of a mischievous villain is as unreliable as a bund of sand.

खलेकपोतन्यायः ॥ १०३ ॥

खलिहान में बूढ़ा, जवान तथा बच्चा सबही कबूतर एक साथ आ जाते हैं ऐसे मनोरथ पूर्ति होने योग्य महत्स्थान का सबही सहारा रखते हैं।

103. *The maxim of the barn of corn and the pigeons.*

As all kinds of pigeons, young and old, go flying into a barn and help themselves to the corn therein to their hearts' content, so this maxim is used to denote that all kinds of men repair to a great man's place to fulfil their own respective ends.

खादकघातकन्यायः ॥ १०४ ॥

भक्ष्य और भक्षक की प्रीति कदापि नहीं होसक्ती, हो तो स्थायी नहीं रह सक्ती।

104. *The maxim of the eater and the eatable.*

It is used to denote that there can be no friendly relation between one that eats and the thing that is eaten. If there be any such relation ever it invariably ends in misery and troubles.

गजघंटान्यायः ॥ १०५ ॥

आडम्बर वर्णन में यह न्याय लगता है ।

105. *The maxim of an assemblage of elephant.*

This maxim is used in discribing any pagentry.

गजभुक्तकपित्थन्यायः ॥ १०६ ॥

हाथी से खाया गया कैथका फल जैसा कि खाया है वैसा ही निकलता है परन्तु भीतर का गूदा गल जाता है । अस्तु जब भीतर साररहित हो बाहर ठीक दिखाई दे तो यह न्याय लगता है ।

106. *The maxim of a wood-apple eaten by an elephant.—*

It takes its origin from the fact that a wood-apple eaten by an elephant is execreted apparently quite unchanged though in fact its contents have all been digested and it has become quite empty.

It is used to denote the internal worthless state of a thing though externally it looks all right.

गड्डलिकाप्रवाहन्यायः ॥ १०७ ॥

जाते हुये भेड़ के समूह में से एक यदि कूएँ में गिरे तो सब गिर जाते हैं या एक जिधर जाता है उधर ही सब जाते हैं ।

107. *The maxim of a continuous current.*

This maxim takes its origin from the fact that in a flock of sheep, if one accidentally slips into a well, the rest will also fall into that well.

It is used to denote the tendency of blindly following others without pausing to think whether the course is right or wrong.

गणपतिन्यायः ॥ १०८ ॥

किसी की प्रधानता या प्रथम सन्मान वर्णन में यह न्याय लगता है ।

108. *The maxim of Ganapati.*

This maxim has its origin in the custom of worshipping Ganapati first on the occasion of the worship of the gods and goddesses whoever they may be and is used to denote the first place to be assigned or the highest respect to be shown to a person who deserves it.

गतानुगतिकोलोकइतिन्याय: ॥ १०९ ॥

संसार में जो प्रवाह पड़ जाता है उसी ढंग पर विना विचारे लोग चलने लगते हैं।

109. *The maxim of a blind follower.*

This maxim is used to signify the tendency of imitation prevailing in men. When any fashion becomes current many would follow it without any judgment as to its propriety or importance.

गर्दभरोमगणनन्याय: ॥ ११० ॥

गदहे के रोमों की गिनती करना व्यर्थ है, क्योंकि अशुचि और अप्रयोजनीय है।

110. *The maxim of the fur of the asses.*

The fur of the asses is unholy and so it is useless to shear these animals. It is used to denote an unprofitable undertaking in which one may be engaged.

गलेपादुकान्याय: ॥ १११ ॥

असंबद्ध वर्णन में इस न्याय का उपयोग होता है। गले में कोई पादुका नहीं पहनता है।

111. *The maxim of wearing shoes or sandals in the neck*

This maxim is used in reference to any absurd or preposterous thing.

गगनरोमन्थन्याय: ॥ ११२ ॥

आकाश में बैल के पागुर का फेन असंभव है, क्योंकि वह जमीन ही पर गिरता है।

112. *The maxim of chewing the end in the air.*

The maxim is used to denote impracticability of any absurd attempt like the remaining suspended in the air of the froth from the mouth of a cow as it is chewing the end.

गुडजिह्विकान्याय: ॥ ११३ ॥

निम्ब नहीं पीनेवाले बालक को पहले गुड़ पिलाते हैं तब निम्ब पिलाते हैं।

113. *The maxim of the Molasses and the Nimba (a kind of bitter fruit).*

The maxim takes its origin from the fact that when it is necessary for a child to use *Nimba* fruit, he is at first given some molasses to taste and then he can eat the *nimba* fruit.

It is used to denote when one feels reluctant to do a thing on account of its very seeming difficult or which is uninteresting to him, he is first given some easy and congenial task to prepare him gradually for the difficult task.

गुणोपसंहारन्यायः ॥ ११४ ॥

दोष न देखने में और गुण के देखने के सम्बन्ध में इस न्याय का प्रयोग है।

114. *The maxim of collecting or gathering virtues.*

This maxim is used in overlooking the faults or defects and observing and gathering merits in others.

गृहार्थमारोपितस्य दीपस्येतिन्यायः ॥ ११५ ॥

घर में दरवाजे के सामने जलाया गया दिया गली में भी उजाला करता है।

115. *The maxim of the lamp placed over the threshold.*

It takes its origin from a lamp hanging over the threshold of a house, which, by its peculiar position, serves to light both the house and the path leading to it.

It is used to denote something which serves a two-fold purpose at the same time.

गोवलीवर्दन्यायः ॥ ११६ ॥

गो यह शब्द बैल तथा गाय का वाचक है तथापि गो शब्द की अधिक प्रसिद्धि गाय के अर्थ में होती है, इसलिये बैल के अर्थ में गोवलीवर्द का प्रयोग करते हैं।

116. *The maxim of a bull-cow.*

The origin of the maxim lies in this that the word *cow* strictly signifies both a male cow and a female cow; but ordinarily it is used in the sense of a female cow; and a different word "*bull*" is used to mean a male cow.

It is used to denote that the ordinary acceptance of a word is not always what it strictly or derivatively signifies.

गोक्षीरं श्वदन्तैर्धृतमितिन्यायः ॥ ११७ ॥

गाय का दूध कुत्ते के दाँतों से पकड़ा गया। उत्तम वस्तु भी असत्स्पर्श से असत् हो जाती है।

117. *The maxim of the cow-milk being touched by a dog's teeth.*

It takes its origin from the cow-milk; a pure thing, getting polluted by the touch of a dog's teeth.

It is used to denote that a good and holy thing becomes corrupted and unholy by coming in contact with something that is bad and impure.

गोमहिष्यादिन्यायः ॥ ११८ ॥

गाय भी दूध देती है और भैंस भी दूध देती है, परन्तु दोनों के दूध और शरीर में आकाश पातालकासा अन्तर है।

118. *The maxim of the cow, buffalo, etc.*

The maxim has its origin in this that the cows give milk, as well as the buffalos give milk, but there is a vast difference in the quality of these two kinds of milk.

It is used to denote that the individual objects falling under one general class are not alike in every respect but have many peculiarities especial only to them.

ग्रहराशिभेदनन्यायः ॥ ११६ ॥

जैसे राशि स्थित रहती है और ग्रह की अलग २ चाल होती है जिससे यह दिखाई पड़ता है कि अमुक ग्रह अमुक जगह है और अमुक कक्षा में है। उसकी चाल, उसकी गति और दूरी में आकाश पातालकासा भेद होने पर भी मालूम और ही होता है। इस बात को ज्योतिषी लोग ठीक समझ सकते हैं। विकल्प वृत्ति में यह न्याय लगता है।

119. *The maxim of the planets and their movement in the Zodiac.*

As the movements of the planets and the Zodiac are not easily comprehensible this maxim is applicable to the circumstances in which eyes fall prey to the illusions of sight.

घट्टकुटीप्रभातन्यायः ॥ १२० ॥

किसी घाट के पास चुंगी घर था। किसी रोज रात में चुंगी देने के डर से कोई मुसाफिर चुंगी के घर के रास्ते को छोड़ कर दूसरे रास्ते से चला परन्तु रात भर घूम कर सवेरे उसी चुंगी घर के पास आगया।

120. *The maxim of the octroi house in the morning.*

The maxim has its origin in the story that one night a passenger with a view to avoid payment of octroi duty proceeded to his destination by a different way. But he walked throughout the whole night, and to his great surprise found himself just before the octroi house when it was morning.

It is used to denote that there is no avoiding the payment of the dues. They must be satisfied sooner or later.

घटप्रदीपन्यायः ॥ १२१ ॥

घड़े के अन्दर रखा हुआ दीया केवल घड़े के भागही को प्रकाश कर सक्ता है।

121. *The maxim of a lamp in a jar.*

The maxim takes its origin from the fact that if a lamp is placed in a jar, it will light only the inside of the jar and nothing else; and is used to denote that bright intelligence, if confined to a private place can be of no use to others.

घुणाक्षरन्यायः ॥ १२२ ॥

घुने हुये काठ में विना यत्न से ही अक्षर बन जाते हैं।

122. *The maxim of letters bored by an insect in wood.*

It takes its origin from the unexpected and chance resemblance of an incision in wood, or in the leaf of a book, made by an insect to the form of some letter.

It is used to denote any fortuitous or chance occurrence.

चक्रभ्रमणन्यायः ॥ १२३ ॥

जब तक चक्र में वेग रहेगा तब तक चक्र घूमताही रहेगा।

123. *The maxim of a wheel in motion.*

It takes its origin from the fact that a wheel will continue to be in motion, so long as the force which imparted motion to it remains unspent.

It is used to denote that all kinds of movement, whether social, religious, or political, remain in active state, so long as the prime movers can keep up their energy.

चतुर्वेदविन्न्यायः ॥ १२४ ॥

किसी मूर्ख ने सुना कि सुवर्ण आदि अधिक धन चारों वेद जाननेवाले ही को दिया जाता है। ऐसा सुनकर वह अपने को कहने लगा मैं चारों वेद जानता हूं। ऐसा कहने पर उसको धन नहीं मिला और हास्य का पात्र बना॥

124. *The maxim of one wellversed in all the four Vedas.*

It takes its origin from the story that an ignorant and unlettered man heard that the possession of the knowledge o the four *Vedas* has the effect of procuring wealth. Hearing this he went on proclaiming himself fully conversant with the

Vedas. But unhappily for him he got no gold, on the other hand he became a laughing stock of all wherever he went.

It is used to denote that by false representation no one can gain any honour, rather thereby he lowers himself in the estimation of others.

चम्पकपटवासन्यायः ॥ १२५ ॥

चम्पे के फूल से सुगन्धित कपड़े में फूल के हटा लेने पर भी सुगन्धि रहती है।

125. *The maxim of the* Champaka *flower in a cloth.*

The *champaka* flowerleaves its fragrance in the piece of cloth in which it is kept, even after the flower is taken away.

The maxim is used to denote that the virtues of a man continue to exercise their genial influence upon others even after the man has departed from this world.

चन्द्रचन्द्रिकान्यायः ॥ १२६ ॥

चन्द्र के साथ ही चन्द्रिका रहती है।

126. *The maxim of the moon and her lustre.*

The maxim originates from the inseparable connection between the moon and her pleasing lustre, and is used to denote that where there is cause there is effect.

चाण्डालब्राह्मणन्यायः ॥ १२७ ॥

यद्यपि असद्वृत्ति को धारण करके ब्राह्मण चाण्डाल के समान हो जाता है। परन्तु ब्राह्मण का यदि रज और वीर्य शुद्ध रहे तो उसकी जाति नष्ट नहीं होती। उस हालत में ब्राह्मण चाण्डाल के समान हो जाता है चाण्डाल नहीं होता। उसको पतित ब्राह्मण समझना योग्य है।

127. *The maxim of a Brahmin and a* chandal (*a man of the lowest and most despised class.*)

A Brahmin by his wicked conduct becomes as low and despicable as a *Chandal*, but he is not thereby changed into a *Chandal* provided the blood and the seed of which he was born were pure.

This maxim is used to denote that unworthy use may bring a thing into disrepute, but will never change its nature.

चित्रपटन्यायः ॥ १२८ ॥

चित्रपट केवल देखने में काम आता है।

128. *The maxim of a painting.*

It originates from the fact that the value of a picture consists only in pleasing the eyes, and is used to denote the worthlessness of a person who possesses only personal elegance and no other merits

चित्रामृतन्यायः ॥ १२९ ॥

चित्र में लिखे हुये अमृतभाण्ड के द्वारा अमृत सम्बन्धीय तृप्ति की प्राप्ति नहीं होती।

129. *The maxim of the word nectar.*

It takes its origin from the impossibility on the part of one of satisfying his desire for nectar merely by writing or reading the word (nectar), and is used to denote that it would be useless to try to get a thing from a quarter from which it can never be expected.

चित्राङ्गनान्यायः ॥ १३० ॥

चित्र में लिखी हुई स्त्री साक्षात् स्त्री के आकारवाली होने पर भी स्त्री का काम नहीं देसक्ती।

130. *This maxim shows that an unreal thing can never stand for a real one however great efforts may be made to make it perfect.*

चित्रालानन्यायः ॥ १३१ ॥

चित्र के खूंटे में हाथी नहीं बांधा जाता है।

131. *The maxim of the picture of a post.*

No elephant can be fastened to a post drawn in a picture.

The maxim is used to denote the worthlessness of a thing that is good only for representation and for nothing else.

चिंतामणिं परित्यज्य काचमणिग्रहणन्यायः ॥ १३२ ॥

चिन्तामणि रत्न को छोड़ कर काचमणि का ग्रहण करना मूर्खता है।

132. *The maxim of accepting glass in preference to* chintamani *(a kind of precious jewel.)*

The maxim is used to denote that as it is foolish to prefer glass to *chintamani* which is very precious, so it is likewise an

act of foolishness on the part of a man to consider an object valuable led away only by its outward charm.

Cf. "All is not gold that glitters."

चौरापराधान्माण्डव्यनिग्रहन्यायः ॥ १३३ ॥

किसी चोर के अपराध से निरपराधी माण्डव्य पकड़ा गया।

133. *The maxim of* Rishi Mandavya *being punished for theft.*

The maxim takes its origin from the story that one day a thief committed theft in a Raja's house and being pursued by the police ran away leaving the goods where *Mandavyu Rishi* was engaged in devotion. The police came up there and arrested the *Rishi* and took him to court. The *Rishi* was punished for theft.

It is used to denote that sometimes honest and innocent men have to suffer the consequences of the wicked conduct of villainous men.

छत्रिन्यायः ॥ १३४ ॥

छत्रधारी जाता है ऐसा कहने से छत्र धारण करनेवाले नौकर आदि भी समझे जाते हैं।

134. *The maxim of the persons with umbrella.*

The maxim originates from a number of persons walking along a road with their umbrellas spread overhead. There may be a master and his retinues in that number, but to an onlooker they are all known by the same designation *viz.*, the persons with umbrellas.

It is used to denote that things are not always what they seem.

जलतुम्बिकान्यायः ॥ १३५ ॥

जल में तुम्बी को फेंकने पर जल के ऊपर में ही रहती है।

135. *The maxim of a gourd on the water.*

It takes its origin from the fact of the gourd not sinking down when thrown into water.

It denotes that a light-minded person cannot dive deep into a matter he may be called upon to be engaged in

जलमन्थनन्यायः ॥ १३६ ॥

पानी का मथन करना निष्फल है।

136. *The maxim of churning water.*

It takes its origin from the fact that to churn water would be productive of no good whatsoever, and is used to denote the fruitlessness of spending labour on a thing from which no good can result.

जलकतरेणुन्यायः ॥ १३७ ॥

कीचड़वाले जल में रखी हुई निर्मली जल से कीचड़ को अलग कर आप निवृत्त हो जाती है।

137. *The maxim of the muddy water.*

The muddy water becomes clear and fit for drinking purposes when a fruit called *nirmali* is dipped into it. So the maxim is used to denote that a bad man becomes good and honest in the company of a good and honest man.

Cf. company makes a man.

जलमृणालन्यायः ॥ १३८ ॥

तालाब में जल बढ़ जाने से कमल के मृणाल भी बढ़ जाते हैं। पीछे प्रचण्ड ऋतुओं में जल घटने से कमल के वृक्ष सूख जाते हैं परन्तु मृणाल छोटे नहीं होते हैं। उसी प्रकार महत् व्यक्ति या महत् जाति दीन हो जाने पर भी अपना महत्त्व नहीं छोड़ सकती। यह स्वाभिमानसूचक न्याय है।

138. *The maxim of the lotus stalk.*

It takes its origin from the growth of the stalk of a lotus with the increase of water in a tank during the rains. Again when the dry season comes and the surface of the water begins to sink, the stalk of the lotus gets dry but it does not die away.

Similarly when a great man or nation by the freaks of fortune is reduced to miserable condition he does not lose thereby his usual nobleness of mind.

जलानयनन्यायः ॥ १३९ ॥

जल लाओ कहने से जल पात्र का लाना स्वतः होजाता है।

139. *The maxim of "bring water".*

It takes its origin from the fact that when a man is asked to bring water he will get also the vessel containing water.

It is used to denote that an unimportant thing acquires importance when connected with an important thing.

जलौकान्यायः ॥ १४० ॥

जैसे मक्खी सुन्दर शरीर में व्रण को ही चाहती है वैसे जोंक स्त्री के स्तन में लगने पर दूध को छोड़ कर खून को ही पीती है।

140. *The maxim of a leech.*

It takes its origin from the fact that a leech will suck blood from the breast of a woman and not milk, just as a fly would sit not on any elegant part of the body but where there is a sore.

It denotes that a depraved man will mind not the virtues but the faults, in others.

जलौष्ण्यन्यायः ॥ १४१ ॥

दूसरे के धर्म का दूसरे में आरोप करने में यह न्याय लगता है। जल की ठंडी तासीर होने पर भी अग्निसंयोग से जल गरम है ऐसा व्यवहार होता है।

141. *The maxim of the hot water.*

It takes its origin from the fact that water is naturally cold, but when heat is applied its nature is changed and it becomes hot.

It is used to denote that the nature of a person becomes altered by coming in contact with a person of different character.

जातिपितृन्यायः ॥ १४२ ॥

जिस मनुष्य जाति को पितरों की सहायता नहीं मिलती वह जाति चिरकाल तक जीवित नहीं रहती। वर्णाश्रमधर्मी हिन्दू जाति पर पितरों की कृपा रहने से वह चिरकाल जीवित रहती है। वर्णाश्रम धर्म्म द्वारा पितरों की कृपा प्राप्त होती है क्योंकि उसमें रज वीर्य की शुद्धि की प्रधानता है। एकान्त आवश्यकता में इस न्याय का प्रयोग होता है।

142. *The maxim of caste system and Pitris.*

The Pitris are a class of celestial Beings : the nation that does not believe the blessing and care of these Beings is sure to be extinct one day. According to the Hindu scriptures the followers of Varna and Ashram order receive such care and blessings and can therefore never die.

This maxim is used to show the indispensableness of something.

जामात्रर्थं क्लृप्तस्य सूपस्यातिथ्युपकारकत्वमितिन्यायः ॥ १४३ ॥

जमाईके लिये बनाई दाल उसके साथ रहनेवालोंकी भी उपकारक होतीहै।

143. *The maxim of the son-in-law and the dish prepared for him.*

The *dal* prepared for the son-in-law will come to the use of other guests that sit to dine with him.

It is used to denote that a thing though primarily intended for one may come to the benefit of many others.

ज्ञानादेर्निष्कर्षवदुत्कर्षोऽप्यङ्गीकार्यइति न्यायः ॥ १४४ ॥

जैसे स्थावर बहुत अल्पज्ञान वाले हैं और ईश्वर सर्व ज्ञानवाला है । ज्ञान का अधिकार सब तरह का होता है ।

144. *The maxim of the lowest and the highest degree of knowledge.*

The trees and plants possess the least amount of knowledge, on the other hand, God has it to the fullest amount.

It is used to denote that everything in this world has two extremities.

ज्ञानिविमानन्यायः ॥ १४५ ॥

जैसे ज़मीन पर चलता हुआ मनुष्य पहाड़ की उँचाई, गह्वर की निचाई, नदी का गर्भ और उपत्यका की समता सब कुछ देखता है परन्तु विमान पर चढ़ कर आकाश में गमन करनेवाला व्यक्ति सब को समान देखता है । वैसे ही अज्ञानी व्यक्ति धर्ममतों में और छोटे बड़े में भेद देखता है, किन्तु ज्ञानी में समदर्शिता आ जाती है ।

145. *The maxim of the wise and the air-boat.*

It takes its origin from the fact that a man walking on the field can mark distinctly the height of a hill, the depth of a cave and the level surface of a plateau, but when he soars high up by means of an air-ship, these differences are not distinguishable to him; everything below then appears to him to be of even surface.

It is used to denote that the consideration of the distinction of high and low, great and small, good and bad, etc., acts in a man so long as he is at the lowest step of the ladder of wisdom or knowledge, but when he reaches the highest step, all the religious and sectarian differences vanish away. To him then everything appears to be of equal importance.

ज्योतिर्न्यायः ॥ १४६ ॥

गृह में दिये के प्रकाश होने पर वस्तु दिखाई पड़ती है ।

146. *The maxim of light.*

It arises from everything becoming visible when it is day.

It is used to denote that ignorance is darkness and knowledge is light.

टिट्टिभन्यायः ॥ १४७ ॥

समुद्र के किनारे रहने वाले किसी टिट्टिभ पक्षी के अण्डे को समुद्र ने अपनी तरङ्गों से हरण कर लिया, पक्षी ने क्रोध कर अपने पंख और चोंच से समुद्र के सुखाने की इच्छा से जल का फेंकना आरम्भ किया, उस पक्षी की दृढ़ता देख कर समुद्र ने अण्डे को वापिस दिया।

147. *The maxim of the bird tittiva.*

The maxim originates from the story that a bird called tittiva lived on the beach of a sea, one day the beach was washed away by a huge wave of the sea. The eggs which the bird lay in the nest were also washed away in consequence. Enraged at this the bird resolved to laddle off the sea and began to throw away the water with its beak and also with its wings, which it once dipped into the sea and then came up and shook them. Struck with wonder at the ñrun determination of the bird the sea returned its eggs.

It is used to denote that all sorts of difficulties, however unsurmountable they may seem to be, melt away before firm determination.

Cf. Labour surmounts every difficulty.

तण्डुलभक्षणन्यायः ॥ १४८ ॥

यह एक प्रकार का दिव्य है। सफेद साठी के चावल मिट्टी के पात्र में रख कर सूर्य के सामने जल से मिलाकर रात भर रखना, प्रातःकाल जिसकी परीक्षा करना है उसको खिला के पिप्पल के पत्ते पर थुकावै, यदि दाढ़ी लाल हो जावे और तालु फटने लगे, शरीर कांपने लगे तब जानना कि यह अपराधी है नहीं तो नहीं।

148. *The maxim of eating rice.*

The maxim takes its origin from a particular kind of ordeal taken recourse to, for ascertaining the guilt of a man, some quantity white Satti rice is to be kept in an earthen pot containing water while it is day. The pot is to be allowed to remain in this state throughout the wholenight. In the morning the accused is to be made to eat the rice first and then to disgorge it on the leaf of a peepal tree. If the beard of the man becomes red, and there be a splitting pain in the throat, and also a shivering comes upon the whole frame, then the guilt of the man is proved.

तत्क्रतुन्यायः ॥ १४९ ॥

जो जिसका ध्यान करे उसको उसका दर्शन होता है।

(149) *The maxim of "The Sacrifice."*

The maxim is used to denote that one is sure to gain the object which he intently thinks upon at all times.

तपःस्वाध्यायत्यागिब्राह्मणन्यायः ॥ १५० ॥

तप और शास्त्र का त्यागी ब्राह्मण पतित ब्राह्मण कहा जाता है। यह पातित्य-बोधक न्याय है।

(150) *The maxim of a Brahmin who has given up his Sandhya prayer and study of the Vedas.*

The Brahmin who never says his prayer, and never reads the Vedas becomes fallen thereby.

It is used to denote that the non-performance of the most essential duties of life makes one quite degraded.

तदागमेहिदृश्यते ॥ १५१ ॥

जैसे तेल में उष्णत्व अग्नि के संयोग से होता है इसलिये वह तेल का धर्म नहीं है अग्नि का है।

(151) *The maxim of the virtue which is acquired and not natural.*

It takes its origin from the fact that the heated state of oil is due to the action of the fire, therefore heat is not a property of the oil but of the fire.

It is used to denote that it is meaningless to assume an important air in consequence of the power derived from another. Such a man is a veritable jackdaw in borrowed feather.

तमःप्रकाशन्यायः ॥ १५२ ॥

प्रकाश होते ही अन्धकार दूर हो जाता है। जहां प्रकाश है उसके नीचे अन्धकार है।

(152) *The maxim of the darkness dispelled.*

It takes its origin from the fact that darkness is chased away when it is daylight.

It is used to denote that the darkness of ignorance is removed by the acquisition of knowledge.

तद्विस्मरणेभेकिवद्गितिन्यायः ॥ १५३ ॥

एक राजा ने एक मण्डूकी पाली थी, उसकी यह प्रतिज्ञा थी कि जब जल दिखाओगे तब मैं चली जाऊंगी, एक दिन राजा ने जल दिखाया वह चली गयी।

(153) *The maxim of a she-frog and the forgotten promise*

It originated from the following story :—

Once upon a time a Raja had a she-frog, under the condition that she would go away as soon as something would be shown her. The Raja forgot the condition, and showed her water one day. Thereupon the frog went away.

It is used to denote that a promise once made must be fulfilled irrespective of the consideration of the position of the promise.

तम उद्दीपनन्यायः ॥ १५४ ॥

प्रकाश लेकर अन्धकार ढूंढ़ना यह मूर्खता है क्योंकि प्रकाश का अभाव ही अन्धकार है।

(154) *The maxim of lighting darkness.*

It is foolishness to go out in search of darkness with a lamp in hand, for, darkness is nothing but absence of light.

It is used to express foolishness on the part of one to go to perfrom a thing by employing a means which is unsuitable for the purpose.

तालसर्पन्यायः ॥ १५५ ॥

सांप यदि ताड़ के पेड़ पर चढ़ता है तो वह मर जाता है।

(155) *The maxim of the palm tree and a serpent.*

A serpent dies if it climbs upon a palm tree.

This maxim is used to denote foolishness of the doer of a thing.

तन्तुपटन्यायः ॥ १५६ ॥

उपादान कारण के नाश होने पर भी उपादेय क्षणमात्र रहता है। ऐसा न्यायशास्त्रवाले मानते हैं। जैसे समवायिकारण तन्तु के नाश होने पर भी पट क्षणमात्र रहता है।

(156) *The maxim of thread and cloth.*

It takes its origin from the opinion held by philosophers that the effect exists for a moment even when the cause is destroyed. Thread is the cause and cloth the effect. The cloth exists momentarily even when the thread is destroyed.

तप्तपरशुग्रहणन्यायः ॥ १५७ ॥

तपा हुआ फरसा पकड़ा नहीं जा सक्ता, अतः वह काम नहीं देसक्ता, उससे अपना ही हाथ जलता है ।

(157) *The maxim of heated axe.*

When an axe is greatly heated it cannot be held in hand, and so nothing can be done with it.

The maxim is used to denote that the means employed for the performance of a work must be such as may be easily used by the doer.

तप्तमाषविधिन्यायः ॥ १५८ ॥

यह भी एक दिव्य है, जैसे तपे हुये तेल से एक माशा सोना के निकालने में यदि हाथ में जलन से फोड़ा पड़े तो अपराधी समझा जाता है नहीं तो नहीं।

(158) *The maxim of the heated gold.*

It takes its origin from an ordeal in which the guilt of an accused is ascertained by placing a small quantity of heated gold taking it out from a kettle full of boiling oil.

तवाहमस्मिन्यायः ॥ १५९ ॥

भगवान् की भक्ति गुरु की भक्ति और पति की भक्ति ऐसी होनी चाहिये जिससे मैं तुम्हारा हूं यह भाव दृढ़ हो जाय, यह भक्तिप्रतिपादक न्याय है ।

(159) *The maxim of I am yours.*

This maxim is a proof of inward *bhakti*, and is employed in reference to the love and reverence for husband, for *guru* and for God.

त्वं ममासिन्यायः ॥ १६० ॥

तुम मेरे हो ऐसा विचार मित्र कलत्रादि में स्नेह और प्रेम के द्वारा होना चाहिये । यह प्रेमप्रवर्तक न्याय है ।

(160) *The maxim of "Thou art mine."*

This maxim indicating love and affection is used in connection with sons, daughters, wife, etc.

तिर्यगधिकरणन्यायः ॥ १६१ ॥

तिर्यक् का स्थान मनुष्य के लिये अवलम्बनीय नहीं है ।

(161) *The maxim of the bird's nest.*

The maxim takes its origin from the nests of birds being of no use to a man for the purpose of living in and is used to denote that in order that a thing may be serviceable, it must be employed in a way suited to its nature.

तिलतण्डुलन्यायः ॥ १६२ ॥

तिल पितृ अन्न है और चावल देवान्न है, दोनों का मेल है क्योंकि यज्ञादिक में दोनों का मेल होता है।

(162) *The maxim of a sesamum seed and rice.*

Rice is the food of the *devas* or Gods, and til (sesamum seed) of the ancestors (pitriloka). Both these being mixed together used in sacrifices.

तुलोन्नमनन्यायः ॥ १६३ ॥

तराज़ू एक तरफ उठने से दूसरे तरफ आपही नम जाती है।

(163) *The maxim of the balance.*

It originates from the fact that when one pan of the balances goes down the other rises up. It is used to denote that improvement to be properly called so must be all round, partial improvement is no improvement. This may be applied to the education of boys and youngmen.

तुल्यायव्ययन्यायः ॥ १६४ ॥

जिसका खर्च आमदनी बराबर है वह न घटता है न बढ़ता है।

(164) *The maxim of equal income and expenditure.*

The person whose receipts and disbursements are equal is neither rich nor poor, and is, on the whole, quite happy.

cf. English proverb :—Cut the coat according to cloth.

तुष्यतुदुर्जनन्यायः ॥ १६५ ॥

जहां दुर्जनों को खुश करने की नीति से बात कही जाय वहां यह न्याय लगता है।

(165) *The maxim of "Please the villain".*

This maxim is used in the cases in which it is thought advisable to satisfy a mischievous man.

तुष्यत्वितिन्यायः ॥ १६६ ॥

जब प्रसन्न करना ही सिद्धान्त होता है तो सब कुछ किया जासक्ता है।

(166). *The Maxim of "please others."*

When the principle to be followed is to please others, then everything, whether right or wrong, may be done.

तृणजलौकान्यायः ॥ १६७ ॥

जैसे जल की जोंक दूसरे तृण को आश्रय करके पहले तृण को छोड़ती है ।

(167) *The maxim of "a caterpillar."*

It takes its origin from the fact that a caterpillar does not leave the grass on which it sits until it can get hold of another. It is used to denote that it would be unwise on the part of a man to abandon the means he has in hand till another is secured.

Cf A bird in hand is worth two in the bush.

त्याज्यादुस्तटिनीनदी ॥ १६८ ॥

जिस नदी का किनारा गिरने वाला हो उसका तट छोड़ देना चाहिये ।

(168) *The maxim of "the river making erosion on the banks."*

It takes its origin from the advisability of leaving the banks of a river which is constantly encroaching upon the banks. It is used to denote that it is unwise to put with one that is dangerous in nature.

द

दण्डचक्रन्यायः ॥ १६९ ॥

घट का दण्ड चक्र चीवर आदि समुदाय कारण हैं ।

(169) *The maxim of the potter's rod, wheel and knife.*

The rod, wheel, and knife of a potter are all the causes of an earthen jar

It is used in cases in which a certain effect follows from several causes together.

दग्धपटन्यायः ॥ १७० ॥

जला हुआ कपड़ा कपड़े के समान दिखाई देता है तब भी उसमें कुछ सार नहीं है ।

(170) *The maxim of the burnt cloth.*

It takes its origin from the fact that a piece of cloth that is set on fire in a place where there is no air would look as all right even after the fire is extinguished, though in fact it has no substance in it.

It is used to denote a thing which is in reality quite worthless, though from the outward appearance it seems to be all right.

दग्धबीजन्यायः ॥ १७१ ॥

बीज जलने से नहीं उगता वैसे ही जब ज्ञान के द्वारा कर्मबीज दग्ध होता है तब उस जीव का आवागमन नहीं होता है।

(171) *The maxim of the burnt seed.*

It takes its origin from the fact that seeds that have been burnt would not germinate if sown, and is used to denote that those souls would not have to come back again into this life in whom Karma accruing from ignorance has been burnt down with the fire of knowledge.

दग्धेन्धनवह्निन्यायः ॥ १७२ ॥

अग्नि काठ को जलाकर स्वयं शान्त हो जाती है।

172) *The maxim of "the burning fuel and the fire."*

It takes its origin from the fire becoming extinguished when the fuel is completely burnt down, and is used to denote that a man of ability never stops to work till he has finished the task undertaken.

दग्धरशनान्यायः ॥ १७३ ॥

जली हुई रस्सी तीन गुणवाली मालूम होने पर भी सार से रहित होती है।

(173.) *The maxim of the burnt cord.*

A cord, twisted in three folds, after being burnt, would appear quite unchanged, though in fact it has then no substance in it. It is used to denote an unlettered fool who looks outwardly as a perfectly good man though in fact he has no worth whatever.

दण्डसर्पमारणन्यायः ॥ १७४ ॥

दण्ड से सर्प को ऐसा मारना चाहिये कि लाठी न टूटे और सर्प मर जाय।

(174) *The maxim of the stick and the serpent.*

The maxim originates from good care to be taken in beating a serpent with a stick so that the serpent may be killed but at the same time the stick may not be broken, and it is used to denote that a clever man should conduct himself in such a way in performing a task that the object in view may be accomplished without any injury either to himself or to anybody else.

दण्डापूपिकन्यायः ॥ १७५ ॥

जैसे दण्ड में बांधा हुआ मालपुआ दण्ड के खींचने से खींचा जाताहै ।

(175) *The maxim of the stick and cakes.*

When a stick and cakes are tied together, and one says that the stick has been pulled down, we are naturally led to expect that the cakes have also been pulled down, the two being so closely connected together. So when one thing is closely connected with another in a particular way, and we say something of the one, it naturally follows that what is asserted of the one can, as a matter of course, be asserted of the other.

दन्तपरीक्षान्यायः ॥ १७६ ॥

दन्त की परीक्षा से मनुष्य की प्रकृति पहिचानी जाती है ।

(176) *The maxim of "the Examination of teeth."*

By the examination of teeth, the nature of a man can be ascertained.

दामव्यालकरन्यायः ॥ १७७ ॥

शम्बर नामक राक्षस ने अपनी माया से दाम व्याल और कर इन तीन राक्षसों को बनाया, वे अपने हाथ के प्रहार से मेरु पर्वत को भी तोड़नेवाले थे परन्तु अज्ञान की महिमा से मच्छर की योनि में उत्पन्न हुए ऐसी पौराणिकी कथा है ।

(177) *The maxim of Dam, Byal, Kar.*

There was a *rakshasa* named Sambar ; by means of enchantment he created three rakshas named Dam, Byal, and Kar, who were so strong that they could reduce the mountain Meru to dust by their blows ; but as they were deprived of the knowledge of truth they had to be born again after death as mosquitoes.

It is used to denote that knowledge is more powerful than physical strength.

दानशून्यक्षत्रियन्यायः ॥ १७८ ॥

दान शून्य क्षत्रिय लज्जास्पद निन्दास्पद और स्वरूपच्युत होता है ऐसे स्थल में इस न्याय का प्रयोग होता है ।

(178) *The maxim of an uncharitable Kshatriya.*

If a person of the Kshatriya caste has no inclination for practising charity, he makes his position thereby very shameful and blameworthy, and moreover he forfeits his claim to be called a Kashatrya.

देवासुरसंग्रामन्यायः ॥ १७९ ॥

जैसे अन्तर्जगत् में देवासुर संग्राम प्रायः होता रहता है उसी तरह मनुष्यों के अन्तःकरण में भी पुण्य और पाप वृत्तियों की लड़ाई होती रहतीहै ।

(179) *The maxim of "struggle between the Devas and Asuras."*

The maxim teaches that like the struggle between the *Devas* and *Asuras* mentioned in the Purans, a constant struggle is going on in the minds of men between the virtuous and the vicious propensities.

दाहकदाह्यन्यायः ॥ १८० ॥

काठ को जलानेवाली ज्वालारहित अग्नि ने जिस काठ को जलाया है उस काठ के समान ही दिखाई पड़ती है ।

(180) *The maxim of the burner and the thing burnt.*

The fire burning a piece of wood and reducing it to ashes would itself at last be transformed into ashes.

It is used to denote that the harm done to another would recoil at last upon the doer.

दुर्बलैरपिबाध्यन्ते पुरुषाः पार्थिवाश्रितैः ॥ १८१ ॥

यदि राजा के भृत्य दुर्बल भी हों तो बलवान् मनुष्य भी उनसे दबाये जाते हैं ।

(181) *The maxim of the weak becoming powerful with the power of the King at his back.*

The person in the employ of a king can lord over a most powerful man, though personally he may be very weak.

देवदत्तहन्तृहतन्यायः ॥ १८२ ॥

किसी मनुष्य को मार भी दिया जावे तो उससे मरा मनुष्य पुनः जीवित नहीं हो सक्ता है ।

(182) *"The maxim of the killer of the Debadatta being killed."*

The man who has killed another named, say, Debadatta, is killed again in his turn by a third person.

It is used to denote that no man can be all-powerful. Every one has his superior.

देवदत्तपुत्रन्यायः ॥ १८३ ॥

पिता का बड़प्पन प्रकाश करने के लिये कहा जाता है कि यह अमुक का लड़का है।

(183) *The maxim of " the son of Deavadatta."*

The maxim is used to denote that the principal object of the life of a son should be to make the name and character of his father glorious and honourable.

देहलीदीपन्यायः ॥ १८४ ॥

दरवाज़े पर रक्खा हुआ दीपक भीतर तथा बाहर में भी प्रकाश करता है।

(184) *The maxim of the lamp on the threshold.*

It originates from the fact that a lamp placed over the threshold of a house would have the effect of lighting the house as well as the approach leading to the house.

It is used to denote something that serves two purposes at the same time.

देहाधोमुखत्वन्यायः ॥ १८५॥

देह के नीचे मुख है यह दुःसाध्य अर्थ है।

(185) *The maxim of "the mouth being at the lower part of the body."*

This maxim is used to denote something quite impossible and absurd.

द्रविडप्राणायामन्यायः ॥ १८६ ॥

सिर को घुमाकर नासिका स्पर्श करना। किसी विषय को जटिल करने के संबन्ध में यह न्याय लगता है।

(186) *The maxim of " lengthened pranayama (regulation of breathing)."*

The maxim takes its origin from the attempt made to catch hold of the nose by moving the hand round the head; and is used to denote the making a matter more difficult than what it ordinarily is.

ध

धरारोहणन्यायः ॥ १८७ ॥

दिव्य परीक्षा में "घटघटत्वम्" इस मन्त्र से जिसको शपथ कराना है उसे बुलाते हैं, बुलाकर तराजू पर बैठाते हैं यदि वह अधिक हो तो निरपराधी समझा जाता है यदि बराबर या कम हो तो अपराधी समझा जाता है।

(187) *The maxim of weighing on a balance.*

In proof of a guilty or non-guilty, one who swears is placed upon a pan of a balance reciting some mantras. If the person becomes heavier he is supposed to be non-guilty, if equal or less he is considered as guilty.

This maxim is used in ascertaining guilty or non-guilty of persons.

धर्मवसन्तागमन्यायः ॥ १८८ ॥

जैसे वसन्त ऋतु के उदय होते ही सब वृक्ष और लता आदि में नये पत्ते, नये फूल, नई शोभा ये अपने आपही हो जाते हैं उसी प्रकार जिस गृहस्थ में धर्म का उदय रहता है वहां सब संपदा अपने आपही आ जाती हैं। यह धर्मसूचक न्याय है।

(188) *The maxim of virtue and advent of the spring.*

It takes its origin from the nature assuming a charming appearance with new leaves and flowers when the spring sets in, and similarly the possession of virtue bringing wealth and happiness in its train.

It is used to denote the importance of virtue.

धर्मिकल्पनान्यायः ॥ १८९ ॥

धर्म से धर्मी की कल्पना हो सक्ती है।

(189) *The maxim of " property and the thing possessing it."*

The name of a certain property signifies the thing which possesses that property.

धर्मकल्पनान्यायः ॥ १९० ॥

धर्मी से धर्म की कल्पना हो सक्ती है।

(190) *The maxim of "the thing and its property."*

The name of the thing connotes the property or properties forming the essence of that thing.

धान्यपलालन्यायः ॥ १६१ ॥

खेत में ऊपर तृण समूह रहने पर भी बीज तृणसमूह को हटाकर ऊपर ऊग जाता है।

(191) *The maxim of "the paddy and the straw."*

It originates from the fact that the paddy seed sown in a field from which weeds have not been carefully rooted out will in the long run outgrow the grass, and is used to denote that seed of wisdom and piety are sure to germinate even if sown in a mind not properly cultivated and prepared.

न

नटाङ्गनान्यायः ॥ १६२ ॥

नाटक में नट पूछता है तुम किसकी स्त्री हो? नटी कहती है तुम्हारी हूँ। तात्पर्य यह है नाटक का संबंध मिथ्या और सामयिक दृश्य के उपयोगमात्र के लिये ही होता है।

(192) *The maxim of "a hero and heroine."*

It takes its origin from the conversation between a hero and a heroine on a theatrical stage in course of which the hero asks the heroine whose wife she is, and she says in reply that she is his wife, and is used to denote that the theatrical relation is false, its usefulness being only to produce a temporary and musing effect. Man's life is also a stage of theatre, and its connection with others in various kinds of relationship is therefore nothing but an illusion.

नष्टाश्वदग्धरथन्यायः ॥ १६३ ॥

दो मनुष्य अपने २ रथ पर चढ़कर नगर के बाहर गये, दैववश आग लगने से एक का घोड़ा और दूसरे का रथ जल गया, वे दोनों परस्पर मिलकर एक का घोड़ा एक का रथ जोड़कर अपने नगर में चले आये।

(193) *The maxim of "the destroyed carriage and horse."*

It takes its origin from the story that one day two persons went out in their own respective carriages. In the way their carriages accidentally caught fire. The consequence was that the carriage of one and the horse of the other were destroyed. At last by mutual agreement they got one carriage ready with what remained of their carriages, and they returned home by that carriage. It is used to denote that by united efforts we can make up our individual wants.

Cf. Union is strength.

नहि कङ्कणस्य दर्शनायादर्शापेक्षेतिन्यायः ॥ १९४ ॥

हाथ का कँगना देखने के लिये दर्पण की आवश्यकता नहीं होती है वह स्वतः दिखाई देता है ।

(194) *The maxim of "a bracelet and a mirror."*

It takes its origin from the fact that there is absolutely no necessity of looking-glass for seeing the appearance of a bracelet worn on the wrist as it is easily visible to the eye, and is used to denote that a medium is quite unnecessary for doing a thing that can easily be performed directly by one's own efforts.

नहि दृष्टेऽनुपपन्नं नामेतिन्यायः ॥ १९५ ॥

कोई भी वस्तु देखने पर अज्ञात नहीं होती है ।

(195) *The maxim of "the thing seen requiring no proof."*

A thing which has been seen by one with his own eyes requires no proof to convince him of its existence, etc.

It is used to signify that the direct knowledge of a thing is superior to a second hand one.

नहि निन्दा निन्दितुं प्रवर्तते इतिन्यायः ॥ १९६ ॥

निन्दा निन्दा करने के लिये प्रवृत्त नहीं होती है । निन्दनीय के विषय में वर्णन के लिये होती है ।

(196) *The maxim of blaming.*

It signifies that blame is directed to a thing that deserves it but not to the act of blaming.

नहि वरविघाताय कन्योद्वाह इतिन्यायः ॥१९७॥

वर के नाश करने के लिये कन्या का विवाह नहीं होता है ; अर्थात् सुख के लिये ही होता है ।

(197) *The maxim of a bride's marriage being intended not for killing the bridegroom.*

A man gives his daughter in marriage not for bringing about the end of the son-in-law but that they may live in happiness and comfort to a good old age.

It signifies that happiness and not sorrow is the end and aim of life of everyone.

नहि प्रतिज्ञामात्रेण अर्थसिद्धिरितिन्यायः ॥ १९८ ॥

केवल चिह्न से ही वस्तु की सिद्धि नहीं होती है।

(198) *The maxim of promise and the success in an attempt.*

It signifies that mere words of mouth cannot secure success in anything, earnest efforts are indispensably necessary for the purpose.

नहि भिक्षुको भिक्षुकमितिन्यायः ॥ १९९ ॥

भीख मांगनेवाला भीख मांगनेवाले से भिक्षा नहीं मांगता है, धनी से ही भीख मांगता है।

(199) *The maxim of a poor man's begging, not of a beggar.*

It takes its origin from the fact of a beggar's not asking alms of another beggar. He would invariably go to one in affluence for the satisfaction of his wants.

It is used to denote the tendency of human nature to seek help from the quarter where it may be reasonably expected.

नहि विवाहानन्तरं वरपरीक्षा क्रियत इतिन्यायः ॥ २०० ॥

विवाह के बाद वर की परीक्षा नहीं होती अर्थात् जो कुछ परीक्षा करना हो पहले ही की जाती है।

(200) *The maxim of examining a bridegroom after marriage.*

It takes its origin from the uselessness of minutely observing a bridegroom after the marriage is over. This should be done before.

It is used to denote that the consideration of propriety or otherwise of a course should be carefully made before it is adopted. After thought in this concern is of no use whatever.

नहि सुतीक्ष्णाप्यसिधारा स्वयमेवच्छेतुमाहितव्यापारा भवतीति न्यायः ॥ २०१ ॥

तीखी भी तलवार अपने आप नहीं काट सकी।

(201) *The maxim of a keen sword.*

It takes its origin from the fact that a sword, however,

keen it may be, would not cut an object unless it is wielded by some body.

It denotes that mere possession of a good thing produces no good, but there must be some one properly qualified to make good use of it.

नहि सुशिक्षितोपि वटुः स्वस्कंधमारोढुं पटुः ॥ २०२ ॥

अच्छी शिक्षा पानेवाला भी बालक अपने कंधे पर नहीं चढ़ सक्ता ।

(202) *The maxim of a highly educated youngman not being able to mount upon his own shoulder.*

It denotes that an impossible and impracticable thing cannot be effected by any one however highly qualified he may be just as a youngman though very learned and wise cannot get upon his own shoulder when he is asked to do so.

नागोष्ट्रन्यायः ॥ २०३ ॥

किसी के ऊंट के शरीर में सांप लिपट गया, उसने ऊँट को बचाते हुए सांप को मारा अर्थात् इष्ट की रक्षा के लिये अनिष्ट का निवारण करना चाहिये ।

(203) *The maxim of a serpent and a camel.*

It takes its origin from a serpent which was killed for saving the life of a camel that was attacked by that serpent; and is used to denote that doing of an injury to another may be excused provided it be for effecting a very useful end.

नाज्ञातविशेषणबुद्धिर्विशेष्यं संक्रामतीतिन्यायः ॥ २०४ ॥

विना विशिष्ट ज्ञान के विशेष्य विशेषण ज्ञान नहीं होता है ।

(204) *The maxim of the Adjective and the Noun.*

The sense of the adjective cannot be comprehended so long as the sense of the noun it qualifies is realised. Or, the meaning of the adjective depends upon that of the noun.

It denotes that knowledge of the principal part must first be acquired and then the subsidiary parts may be understood in their proper light.

नान्यदृष्टे स्मरत्यन्य इतिन्यायः ॥ २०५ ॥

दूसरे के देखे हुए को दूसरा नहीं स्मरण करता है ।

(205) *The maxim of the memory and a thing.*

A thing to be borne in mind must be witnessed by one with his own eye and not with eye of another person.

नारिकेलफलाम्बुन्यायः ॥ २०६ ॥

जैसे नारियल के फल में पानी कहां से आया यह अनुमान करना कठिन है इसी प्रकार दैवी कृपा जानी नहीं जाती ।

(206) *The maxim of the cocoanut-water.*

It takes its origin from the difficulty of explaining how water could exist inside a cocoanut fruit; and is used to denote that it is not in the power of man to understand clearly the kind ways of providence.

निम्नगाप्रवाहन्यायः ॥ २०७ ॥

नदी का प्रवाह सदा नीचे की ओर ही बहता है ।

(207) *The maxim of the current of water.*

It originates from the fact that the water of a stream always flows downwards; and is used to denote that the thoughts of an ignorant person has a downward tendency.

नीरक्षीरन्यायः ॥ २०८ ॥

हंस पानी मिले हुए दूध को पीने के समय दूध पी जाता है और पानी छोड़ देता है । बुद्धिमान् के सद्विचार में इस न्याय का प्रयोग होता है ।

(208) *The maxim of the milk mixed with water.*

It takes its origin from the fact that when a goose is made to drink milk mixed with water it will take only the milk and leave the water behind; and is used to denote that in judging of another a truly wise man will sift out his merits, and would leave the defects in him out of consideration.

नीलेन्दीवरन्यायः ॥ २०९ ॥

नील कमल बहुत कठिनता से मिलता है । प्रायः असंभव विषय में यह न्याय लगता है ।

(209) *The maxim of a blue lotus.*

The maxim is applied in the cases of varieties just as a blue lotus is a very rare thing.

नृपनापितपुत्रन्यायः ॥ २१० ॥

किसी राजा का नौकर नाई था, प्रातःकाल किसी दिन राजाने उससे कहा, खोज कर अति सुन्दर एक बालक लाओ, उसने समस्त नगर में अति सुन्दर २ लड़कों से अपने लड़के को अति सुन्दर समझ कर वह अपने लड़के को ही

राजा के पास लाया, राजा देखकर बहुत रुष्ट हुए, कहने लगे क्या तुम ने मेरी दिल्लगी की है। नाई ने कहा महाराज मैंने दिल्लगी नहीं की, मेरे मत से ऐसा लडका तीनों लोक में नहीं है।

(210) *The maxim of the King and Barber's son.*

It is used to denote a man's natural fondness for his own possession however ugly or despicable it may be in the eyes of others. It takes its origin from a story which states that a king on one occasion asked his barber to bring to him the finest boy that he could find in his kingdom. The barber roamed for a long time over every part of the realm, but could get no boy such as the king wanted. At last wearied and disappointed he returned home, and being charmed with the beauty of his own boy, who was in fact the personification of ugliness and deformity, went to the king and presented the boy to him. The king was at first very angry with the barber for having trifled with him, but on consideration excused him, as he ascribed the barber's preference of his own ugly boy to the dominant desire of human beings to consider their own possessions as supremely good

नौनाविकन्यायः ॥ २११ ॥

नाविक के विना नौका नहीं चल सक्ती है।

(211) *The maxim of the boat and the boatman.*

It takes its origin from the fact that a boat cannot be steered without the help of the boatman, and is used to denote that no act, great or small, can be performed without the guidance of the principal head.

प

पञ्चकोषावरणन्यायः ॥ २१२ ॥

पञ्चकोष ही में निर्लिप्त आत्मा फँसता है। असंभव को संभव देखाने के समय यह न्याय लगता है।

(212) *The maxim of the five Kosha or vestures (sheaths or cases) which successively make the body.*

It is used to denote that what apparently seems impossible may turn out possible, just as the soul resides in the sheaths or cases (*Koshas*) that enshrine it, nevertheless it is not attached to any of these vestures.

पञ्जरमुक्तपक्षिन्यायः ॥ २१३ ॥

पिंजरे से छुटा हुआ पक्षी आकाश में उड़ जाता है। जीव के शरीर त्याग के संबंध में इस न्याय का प्रयोग होता है।

(213) *The maxim of the bird out of the cage.*

It is used to denote the flight of the soul when the trammel of the body is loosened after the death, just as a bird in a cage flies away in the air if it can get out of the cage anyhow.

पतन्तमनुधावतो बद्धोऽपि गत इति न्यायः ॥ २१४ ॥

जालसे निकल कर उड़नेवाले पक्षीके पीछे बहेलिया दौड़ा, तब जो पहले पकड़ी हुई चिड़ियां थीं वे सब भी उड़ गईं।

(214) *The maxim of the fowler and-the birds.*

It originates from the story of a fowler running after a bird that escaped from his trap to find to his great sorrow on his return that the birds which were caught before had also fled away meanwhile.

Cf. The Eng. proverb—A bird in hand is worth two in the bush.

पतिंवरान्यायः ॥ २१५ ॥

स्वयंवर में कन्या सब से उत्तम पति का ग्रहण करके दूसरे में प्रीति नहीं करता है।

(215) *The maxim of a girl making a selection of her husband.*

In a choice-marriage in which choice of the husband is made by the bride herself, the bride would elect a husband who is most deserving. It denotes the tendency of human nature for what is best.

पदमप्यधिकाभावादिति न्यायः ॥ २१६ ॥

अधिक के न मिलने से एक पाद ही मांगने से कार्य सिद्धि होती है, जैसे वामन बलि की कथा।

(216) *The maxim of a part being preferable if not the whole.*

If the whole of a thing be not available, one should be ready to be contented with only a part.

Cf. The Eng. proverb:—"Something is better than nothing."

परान्हच्छायान्यायः ॥ २१७ ॥

पराह्न की छाया क्षण स्थायिनी होती है ।

(217) *The maxim of the afternoon-shade.*

The maxim denotes that the power and influence assumed at the fag-end of life may be enjoyed only for a short time just as the shade of a tree in the afternoon is very short-lived.

पर्वताधित्यकान्यायः ॥ २१८ ॥

जैसे पर्वत के ऊपर की भूमि निकटसी दिखाई देती है ; परन्तु वहां पहुँचने में बहुत कष्टदायक और विलम्बप्रद होती है ।

(218) *The maxim of a table-land.*

The maxim takes its origin from the fact that a level tract of land at the top of a mountain appears from a distance to be not very far off, but in fact it is very difficult and troublesome to go there; and is used to denote those happy prospects which from a distance looks very fascinating, but their attainment costs much pain and trouble.

पर्वतोपत्यकान्यायः ॥ २१९ ॥

पर्वत से उतरना सरल है ।

(219) *The maxim of a valley.*

It denotes that going downward is very easy, just as going down hill to a valley does not cost much trouble.

परशुग्रहणन्यायः ॥ २२० ॥

छोटे अपराध के लिये बड़े दण्ड का आयोजन करना ।

(220) *The maxim of raising the axe.*

It is used in connexion with infliction of heavy punishment for a trifling offence.

पारिषद्न्यायः ॥ २२१ ॥

समुदाय में रहनेवालों में से एक के मरने पर जो बाकी रहते हैं वे उस के काम को करते हैं और काम बिगड़ने नहीं पाता है ।

(221.) *The maxim of a member of a community.*

If a member of a community dies, his work becomes divided among the rest so that the work does not suffer, and is used to signify that a work for the performance of which many hands are engaged does not suffer even if any one among the workers dies or leaves the work.

पाषाणेष्टिकान्यायः ॥ २२२ ॥

जहां छोटे और बड़े ऊंचे और नीचे का विचार करना हो वहां यह न्याय लगता है।

(222) *The maxim of stone and brick.*

It is used to signify something done with the united efforts of all kinds of persons, great and small, just as a house is built with the help of stone—a big thing, and brick—a small thing.

पिण्डं हित्वा करं लेढि ॥ २२३ ॥

खाने के ग्रास को छोड़कर हाथ का चाटना मूर्खता है।

(223) *The maxim of licking the hand letting the morsel fall off.*

It is used to signify a foolish attempt, just as it is foolishness to lick the hand after letting fall the morsel.

पिष्टपेषणन्यायः ॥ २२४ ॥

पीसे हुए को पीसना व्यर्थ है।

(224) *The maxim of grinding flour.*

It is used to denote a superfluous or unprofitable exertion like the attempt of a man to grind pounded flour.

Cf. कृतस्य करणं वृथा It is of no use to go to do a thing which has already been done.

पुत्रलिप्सया देवं भजन्त्या भर्तापि विनष्ट इति न्यायः ॥ २२५ ॥

कोई पुत्र की इच्छा से देवता का भजन करने लगी परन्तु उसका पति भी नष्ट हो गया।

(225) *The maxim of a prayer for a son and the loss of the husband.*

It takes its origin from a story that a certain woman worshipped a god with a view of being blessed with a son, unfortunately it so happened that she lost her husband. It is used to denote the loss of the cause while the effect is earnestly wished for.

It is used to denote the absurdity of a wish or desire.

प्रदुष्टलगुडन्यायः ॥ २२६ ॥

जिस प्रकार दुष्ट ढोर या पशु लाठी से ही वशीभूत होते हैं।

(226.) *The maxim of a big mace.*

It takes its origin from the fact that ignorant fools, like beasts, are intractable, and can be managed only by means of strong rods. It is used to denote that stringent measures are required to be adopted for controlling those that are easily unmanageable.

पुंश्चलीसतीन्यायः ॥ २२७ ॥

जो स्त्री दो पुरुषों से संबंध करले वह सती नहीं हो सक्ती क्योंकि सती धर्म का संबंध शरीर और मन दोनों से है इस कारण परस्पर विरुद्ध भाव वर्णन में यह न्याय लगता है ।

(227) *The maxim of the unchaste and the chaste.*

It is used to signify the contradictory qualities, just as the characters of the unchaste and the chaste women are opposed to each other.

पूर्वात्परबलीयस्त्वन्यायः ॥ २२८ ॥

पहले के शास्त्र से परशास्त्र प्रबल है ।

(228.) *The maxim of the thing coming after being stronger in force than that going before.*

It is used when superiority or inferiority between two things is a point of consideration.

प्रकल्प्यचापवादविषयं तत उत्सर्गोभिनिविशते ॥ २२९ ॥

अपवाद शास्त्र के विषय को छोड़कर उत्सर्ग शास्त्र लगता है ।

(229) *The maxim of the general and the special.*

The application of the general holds true everywhere except the cases coming under the special, similarly the subordinate are to exercise their power in the places that are not within the province of the superior.

प्रकाशाश्रयन्यायः ॥ २३० ॥

प्रकाश उजाले का पूरा आश्रय हो जाता है तथा उजाले में भय दूर हो जाता है ।

(230) *The maxim of the light.*

It is used to denote that ignorance or fear is removed from where there is knowledge or wisdom, just as darkness is chased away from the place when there is light.

प्रकृतिप्रत्ययार्थयोः प्रत्ययार्थस्य प्रधानत्वमिति न्यायः ॥२३१॥

प्रकृत्यर्थ और प्रत्ययार्थ इन दोनों में प्रत्ययार्थ ही प्रधान है।

(231) *The maxim of the root and the suffix.*

The meaning of a word or a root depends upon that of the suffix for completion of sense. It is applied in cases in which the question of the superiority or inferiority is to be decided.

पङ्कप्रक्षालनन्यायः ॥ २३२ ॥

कीचड़ के धोने से कीचड़ नहीं लगाना ही ठीक है।

(232) *The maxim of washing off the mud.*

Just as it is more advisable for one to avoid getting into mud than to go into it and then wash it off, so it is more advisable for one to avoid getting into danger than to expose oneself to it and then to try to get out of it somehow or other.

Cf. Prevention is better than cure.

प्रत्यक्षे किमनुमानम् ॥ २३३ ॥

प्रत्यक्ष प्रमाण में अनुमान करना व्यर्थ है।

(233) *The maxim of inference.*

This maxim is used to indicate that it is utterly useless to make an inference about a thing or to call for any proof about it when it is visible or present before the eye.

प्रजाशोषकराजन्यायः ॥ २३४ ॥

राजा का धर्म प्रजा को पुत्रवत् पालन करना है जो राजा प्रजा का धन हरण करने को ही केवल जानता है वह राज्यपद के योग्य नहीं है। ऐसे अयोग्य पदाधिकारी के वर्णन के समय इस न्याय का प्रयोग होता है।

(234) *The maxim of a tyrant king.*

It takes its origin from the fact that it is the duty of a worthy king to do everything in his power to secure the comforts and happiness of his subjects.

It is used to indicate worthlessness of a king who seeks his own interest at the cost of that of his subjects.

प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायः ॥ २३५ ॥

पहलवानों में यदि बड़ा पहलवान जीता गया तो औरों का जीतना सरल है।

(235) *The maxim of defeating the leader of the wrestlers.*

It is applied in which one, having many adversaries to encounter, has to seek out the chief and give him a crushing defeat, and then he has not to care for others.

प्रयोजनमनुद्दिश्यमन्दोपि न प्रवर्तते ॥ २३६ ॥

प्रयोजन के बिना मूर्ख भी किसी काम में प्रवृत्त नहीं होता है।

(236) *The maxim of not doing a thing uncalled for.*

It signifies that even an ignorant fool will not stir him about doing a thing which he is not required to do.

पाटच्चरयामिकन्यायः ॥ २३७ ॥

घर में चोरों ने चोरी करली तब पहरेदार जगे।

(237) *The maxim of a guard and a thief.*

This maxim takes its origin from the story of a guard attached a richman's house waking up from sleep after the thief, who committed theft in the house, made good his escape. It is used to indicate the vain alertness of one after the opportunity for doing his duty has slipped away.

प्रासादवासिन्यायः ॥ २३८ ॥

एकही मनुष्य महल के नीचे और ऊपर रहता हुआ प्रासादवासी कहलाता है।

(238) *The maxim af a dweller in mansion.*

Whoever occupies a mansion will be called a dweller in it, whether he lives in the ground floor or in the upper flat This maxim is used to signify the ownership of a person over a thing whether he enjoys it exclusively or partially.

प्रदीपे प्रदीपं प्रज्वाल्य तमोनाशाय यतमानः ॥ २३९ ॥

दीपक जलते हुए भी उसके नीचे के अन्धकार को दूर करने के लिये दूसरा दीवा जलाना, परन्तु उसमें भी छाया रह जाती है।

(239) *The maxim of a candle under a candle.*

It takes origin from the attempt of chasing the darkness under a lamp by lighting a second lamp which again has darkness underneath it, and again to chase that darkness another lamp is lighted, and so on, and is used to indicate that efforts made for effecting what is impracticable always prove to be fruitless.

फ

फलवत्सहकारन्यायः ॥ २४० ॥

फला हुआ आम का वृक्ष विना मांगे फल और छाया को देता है।

(240) *The maxim of a mango tree with fruits on.*

The maxim indicates the advisability of taking a shelter with a truly great man, just as it is advisable to take shelter under a mango tree that supplies, quite unasked, fruits and shadow to a weary way-farer.

ब

बकबन्धनन्यायः ॥ २४१ ॥

बगुले को पकड़ना सर्वथा अप्रयोजकता है।

(241) *The maxim of catching a heron.*

The maxim takes its origin from the fact that a fowler derives no advantage by catching a heron as it has very small flesh in its body and indicates the impropriety of causing unnecessary harm to any one.

बधिरकर्णजापन्यायः ॥ २४२ ॥

बहरे के कान में सलाह करना व्यर्थ है।

(242) *The maxim of whispering to the deaf.*

This maxim indicates a vain attempt of a man to do a useless thing like whispering a word to one who is absolutely short of hearing.

बहुच्छिद्रघटन्यायः ॥ २४३ ॥

बहुतसे छेदवाले घड़ेके अन्दर पानी रखनेसे पानी रह नहीं सक्ता है।

(243) *The maxim of a pot having many holes.*

This maxim denotes the unprofitableness of imparting instructions to one destitute of capacities to retain them, just as a pot having holes cannot contain the water poured into it.

बहुवृकाकृष्टमृगन्यायः ॥ २४४ ॥

बहुत से लकड़बघाओं (वृकों) से हरिण पकड़ा गया। तात्पर्य यह है कि हरिण का पकड़ना कठिन है परन्तु बहुत से भेड़िये होने से वह पकड़ा गया।

(244) *The maxim of a deer being attacked by many wolves.*

It denotes the certainty of defeat of a person, however strong he may be, when attacked simultaneously on all sides by many enemies, as a deer attacked by many wolves at the same time is sure to be killed by them.

बहुराजकपुरन्यायः ॥ २४५ ॥

बहुत राजावाले नगर का नाश होता है अर्थात् बहुत शासक जहां होवें वहां की शासनप्रणाली अच्छी नहीं चलती ।

(245) *The maxim of a city of many kings.*

It is used to denote the total mismanagement of an affair in which there are all to lead and none to follow.

बहूनामनुग्रहोन्यायः ॥ २४६ ॥

बहुत से लोगों की कृपा बड़ी ही होती है ।

(246) *The maxim of favour received from many.*

This maxim suggests the fortunate condition of a man when he is in receipt of favour from his numerous friends and patrons.

ब्राह्मणपरिव्राजकन्यायः ॥ २४७ ॥

ब्राह्मण परिव्राजक कहने से पहले ब्राह्मण था ऐसा बोध हुआ अर्थात् वर्णाश्रम मर्यादा के अनुसार परिव्राजक ब्राह्मण ही हो सक्ता है ।

(247) *The maxim of the Brahmin hermit.*

It takes its origin from a Brahmin becoming a hermit is quite in accordance with the rules of the *Varnashram Dharma*, and is used to denote something which carries two-fold senses at the same time.

ब्रह्मैव ब्रह्मदानमितिन्यायः ॥ २४८ ॥

सब दानों में ब्रह्मदान श्रेष्ठ है । यह विद्यादानमाहात्म्य सूचक न्याय है ।

(248) *The maxim of giving away Brahma in charity.*

It takes its origin from the Vedas being known as Brahman, and is used to denote the superiority of free teaching over all other charitable acts.

बिलवर्तिगोधाविभजनन्यायः ॥ २४९ ॥

बिल में रहनेवाली गोह का निकालना कठिन है । किसी कार्य की कठिनता दिखाने में यह न्याय लगता है ।

(249) *The maxim of the alligator in the hole.*

It is used to denote the troubles of a difficult undertaking as the drawing of an alligator out of its hole is always found to be a very difficult task.

बिल्वखल्वाटन्यायः ॥ २५० ॥

कोई चाुल (खल्वाट) छाया की आशा से बिल्व वृक्ष के पास गया, बिल्व का फल गिरने से उसका शिर फूट गया ।

(250) *The mxaim of a bald-headed man under a Bilva tree.*

The maxim has its origin in the story of a bald-headed man having his skull broken by the fall of bilva fruit as soon as he took shelter under the tree, and is used to denote an accidental happening.

बीजवृक्षन्यायः ॥ २५१ ॥

बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज की उत्पत्ति होती है।

(251) *The maxim of seed and sprout.*

It takes its origin from the relation of mutual causation which subsists between seed and sprout, seed being the cause of sprout, which in its turn is the cause of seed.

It is used in those cases in which two things stand to each other in the relation of both cause and effect.

ब्राह्मणश्रमणन्यायः ॥ २५२ ॥

जैसे कोई ब्राह्मण बौद्ध संन्यासी हुआ। वहां ब्राह्मण श्रमण कहने से श्रमण शब्द के साथ भी ब्राह्मण का महत्त्व सूचित हुआ।

(252) *The maxim of Brahmana—Shraman.*

See the maxim of Brahmana hermit. No. 247, supra.

वैश्यवृत्तिकराजन्यायः ॥ २५३ ॥

सूद खाना व्यापार करना आदि व्यापारधर्म है। राजा में वैश्यधर्म निन्दनीय है, यह न्याय निन्दासूचक है।

(253) *The maxim of a merchant-king.*

The maxim takes its origin from the fact that buying and selling, etc, are the functions of a merchant and are quite unsuitable, nay—blame worthy, for a king and is used to denote any unworthy undertaking.

ब्राह्मणवशिष्ठन्यायः ॥ २५४ ॥

ब्राह्मण आये और वशिष्ठ भी आये ऐसा कहने से वशिष्ठ भी ब्राह्मण ही है तथापि वशिष्ठ विशिष्ट ब्राह्मण है ऐसा बोध हुआ।

(254) *The maxim of Brahmana Bashishtha.*

It takes its origin from the fact that as Bashishtha was a Brahmana, the word Brahman suggests the idea of Bashishtha too, yet Bashishtha is specially named only to add to his importance. It is used to denote the special importance of a person over others of his class.

ब्राह्मणग्रामन्यायः ॥ २५५ ॥

जहां बहुत ब्राह्मण हों और जातियां कम हों वहां उस ग्राम का नाम ब्राह्मण-ग्राम पड़ता है।

(255) *The maxim of the Brahmin Village.*

The fact of a village in which the Brahmins form the majority of dwellers, going by the name of a Brahmin village has given rise to this maxim. It is used to denote that a thing is known by the name of its predominating element.

भ

भक्षितेपि लशुने न शान्तो व्याधिः ॥ २५६ ॥

लशुन खाने पर भी रोग नहीं छूटा! लशुन एक अशुद्ध पदार्थ है। प्राणान्त के भय से लशुन खाया तब भी फल की प्राप्ति नहीं हुई।

(256) *The maxim of garlic and illness.*

It takes its origin from one's eating garlic, an unholy and prohibited thing, as a remedy of an illness, but unfortunately the illness is not thereby remedied; and is used to denote the regrettable condition of one who does an unworthy act to gain an end, though unhappily the end is not gained thereby.

भर्क्षुन्यायः ॥ २५७ ॥

किसी राजा का भर्क्षु नामक एक मन्त्री था। राजा की आज्ञा से शत्रुओं को मारने के लिये वह दूर देश गया। वहां शत्रुओं को मार कर आप भी सत्ता जमाने के लिये बहुत दिन वहां रह गया। यहां के मन्त्रियों ने शत्रुता से राजा को ऐसा समझाया कि भर्क्षु को शत्रुओं ने मारडाला और उसकी भेजी हुई चिट्ठियां दबा लीं। बहुत दिनों के बाद भर्क्षु सेना सहित राजनगर में आया, वृत्तान्त सुन कर भाग्यवश सेना को छोड़ अकेले ही राजा से मिलने को गया, राजा ने सचिवों की बात का स्मरण कर सोचा कि यह प्रेत है।

(257) *The maxim of Bharkshu.*

It takes its origin from a story that a certain king had a minister named Bharkshu, whom he sent on an expedition against an enemy across the sea. Bharkshu defeated the enemy and himself became the king of that country, meanwhile a rumour was spread that Bharkshu was dead—Believing the rumour to be true, the king appointed another person in place of Bharkshu, but to his utter surprise Buarkshu made his appearance after a few days.

The maxim is used to indicate the impropriety of doing any thing in hot haste and without due circumspection.

भावप्रधानमाख्यातमिति न्यायः ॥ २५८ ॥

सब के विषय में भाव की प्रधानता रहती है।

(258) *The maxim of the import (of a thing).*

It is used to signify the superiority of import or sense of a thing over anything else that it has.

भामनीन्यायः ॥ २५६ ॥

जैसे एकही व्यक्ति तीन रूप है यह बात असत्य नहीं है क्योंकि एकही अग्नि में दाहकत्व और पाचकत्व और प्रकाशकत्व है।

(259) *The maxim of fire.*

This maxim takes its origin from the fact that fire has the attributes of burning, cooking and removing darkness and is used to denote that various kinds of qualities may be possessed by one and the same man.

भिक्षुपादप्रसारणन्यायः ॥ २६० ॥

कोई भीख मांगनेवाला किसी धनिक के घर गया वहां सोचा कि एकही बार हमारे सब मनोरथ नहीं सिद्ध हो सकेंगे इसलिये पहले उसने बैठने की आज्ञा मांगी उसके अनन्तर पैर फैलाने लगा।

(260) *The maxim of the beggar gradually extending his legs.*

It takes its origin from a story that one day a beggar went to a rich man's house. Thinking that his object would not be gained if he were to make a clean breast of his wants all at once, he first begged permission to sit, and then little by little had everything that he needed. It is used to denote cleverness on the part of one in dealing with a person who is very uncharitable and close fisted.

भिक्षुभियःस्थाल्यनधिश्रयणन्यायः ॥ २६१ ॥

भिक्षुक के डर से अन्न पाक के लिये पात्र को चूल्हे पर नहीं चढ़ाना यह कृपणतासूचक न्याय है।

(261) *The maxim of not cooking food for fear of a beggar.*

This maxim is used to signify the miserliness of a person as he refrains from cooking his food in the presence of a beggar lest the latter should beg for a share.

भूदेवब्राह्मणन्यायः ॥ २६२ ॥

राजा एक देश का राजा होता है परन्तु यथार्थ ब्राह्मण पृथ्वी भर का राजा होता है क्योंकि ब्राह्मण यथार्थ ज्ञानप्रवर्तक है । यह ज्ञानप्रवर्तक न्याय है ।

(262) *The maxim of Bhudev Brahmin.*

It takes its origin from a king being loved and honoured by his subjects, whereas a Brahmin, the seer of truth and the knower of Brahman, is *Bhudeva* or king of the whole earth, loved and honoured as he is everywhere.

It is used to denote the importance of knowledge.

भीमभासहृदन्यायः ॥ २६३ ॥

एक दम जो बढ़ता है वह नीचे भी गिरता है ।

(263) *The maxim of rapid rise.*

This maxim is used to signify that a person who prospers in life rather too rapidly has surely to suffer fall soon again.

भूलिङ्गपक्षिन्यायः ॥ २६४ ॥

भूलिङ्ग नामक पक्षी सिंह के दाँत के पास का मांस ले लेता है यह अति साहस का उदाहरण है ।

(264) *The maxim of the bird named Bhulinga.*

This maxim takes its origin from the fact that this bird gathers bits of flesh from the jaws of a lion, and is used to denote extra-ordinary courage.

भूशैत्यौष्ण्यन्यायः ॥ २६५ ॥

जल का गुण ठण्ढापन और तेज का गुण उष्ण है इनके संयोग से भूमि भी ठण्ढी और गरम कही जाती है ।

(265) *The maxim of earth being cold or hot.*

This maxim originates from the fact that earth becomes cold by coming in contact with water whose property is coldness, and again becomes hot by coming in contact with light whose chief property is heat, and is used to indicate the effects of a company that exerts a part influence upon the character of a person.

भ्रमरन्यायः ॥ २६६ ॥

भ्रमर सब कुछ छोड़कर केवल पुष्परस ही को ग्रहण करता है ।

(266) *The maxim of the black bee.*

This maxim is used to indicate the nature of the truly

wise men who always take note of the merits in others just as the black bees always drink only honey and no other kind of juice from the flowers.

भैरवन्यायः ॥ २६७ ॥

भैरव नामक कोई ब्राह्मण किसी राजा से बहुत सत्कार को पाया अतः अहंकार वश होकर राजा के मन्त्रियोंसे विरोध किया। इसलिये उन लोगोंने सभा में उसका आना जाना बन्द कर दिया और राजा से कह दिया कि वह मर गया। किसी दिन राजा जब शिकार करने को निकला तब वह ब्राह्मण पेड़ पर चढ़ कर कहने लगा, मैं भैरव हूं आपको दर्शन करना चाहिये राजा ने उसे पिशाच समझ कर नहीं देखा।

(267) *The maxim of Bhairab.*

It takes its origin from a story which runs as follows:— Once there was a Brahmin named Bhairaba who grew very conceited on account of the honour and respects he received at the hands of the king. The foolish Brahmin forgot his position and quarrelled with the ministers of the king, who enraged at his conduct, prevented his admission into the royal court, and told the king meanwhile that the Brahmin was dead. After some time, one day when the king went out a—hunting, the Brahmin got upon a tree and spoke to the king that he was Bhairab and begged for an interview with the king; but the king taking him for an evil spirit refused his prayer.

It is used to teach that no one should be too much inflated with prosperity to forget his position and to conduct himself in an unbecoming way; for, by so doing he would be doing himself a positive and unretrievable harm.

म

मक्षिकान्यायः ॥ २६८ ॥

मक्खी अति सुन्दर शरीर में भी व्रण को ही चाहती है।

(268) *The maxim of the fly.*

It is used to denote the fault finding spirit of ill-natured men, who may be likened to the flies that are always in search of wounds and ulcers even on the most beautiful body.

मज्जनोन्मज्जनन्यायः ॥ २६९ ॥

तैरना जो नहीं जानता है वह कदाचित् नदी आदि में पड़ने पर कभी डूबता है और कभी तरता है।

(269) *The maxim of immersing and emerging.*

It takes its origin from a person, ignorant of the art of swimming, now immersing into, and now coming on the surface of the water, when he happens to fall into a river; and is used to denote the struggling condition in which one finds himself when he is required by circumstances to deal with a matter over which he has no mastery.

मण्डूकतोलनन्यायः ॥ २७० ॥

यदि मण्डूक को तोलने के लिये तराजू पर रखा जाय तो वह कूद कर अलग हो जाता है।

(270) *The maxim of weighing a frog.*

Just as it is very difficult to make a frog remain steady on a balance with a view to ascertain its weight, so it is equally difficult to keep a fickle nature steadily employed in any pursuit.

मण्डूकप्लुतिन्यायः ॥ २७१ ॥

मण्डूक कूदता हुआ चलता है।

(271) *The maxim of the frog moving by jumps.*

It is used to denote the movement by fits and starts of fickle natured men like the movement of frogs.

मत्स्यकण्टकन्यायः ॥ २७२ ॥

मत्स्य खानेवाले काँटे के साथ मछली को पकड़ते हैं। पकड़ने पर काँटे को छोड़ कर और हिस्से को ग्रहण करते हैं।

(272) *The maxim of fish and its bone.*

It originates from the fact that when a fish is caught, it is caught with its bone, but when eating, only its flesh is retained, and bone is thrown out. It is used to denote the policy of a truly wise man who would observe everything in nature and would gather from it what conduces to his welfare and reject the rest.

महिषीप्रसवोन्मुखी इति न्यायः ॥ २७३ ॥

भैंस का प्रसव होना सरल है।

(273) *The maxim of a she-buffalo in labour.*

It is used to denote a work which is very easy of performance like the labour of a she-buffalo which is easy and not attended with much pain.

महिलाशीलभङ्गन्यायः ॥ २७४ ॥

शील भङ्ग होकर निर्लज्ज होने से आर्य नारीत्व नष्ट हो जाता है यह स्त्रियों का धर्मसूचक न्याय है।

(274) *The maxim of a female destitute of the nature and character peculiar to her.*

It is used to denote the virtues of the Aryan females which consist in the purity of their nature and character, and which being lost everything worth possessing by them is lost.

मरणाद्वरं व्याधिः ॥ २७५ ॥

मरने से रोग सहित रहना अच्छा है।

(275) *The maxim of sickliness being preferable to death.*

It is used to denote the great love of life which is common to all beings, as no one would like to part with this life.

मल्लग्रामन्यायः ॥ २७६ ॥

जहां बहुत मल्ल हों वहां और व्यक्तियों के रहने पर भी उस ग्राम का नाम मल्लग्राम पड़ता है।

(276) *The maxim of the Mallagrama or a village of wrestlers.*

This maxim is used to denote that unworthy persons living in the company of worthy souls often enjoy the honour and respect paid to the latter, just as weak men living in the same village with gigantic wrestlers are indirectly honoured, their village being known as the village of wrestlers.

मात्स्यन्यायः ॥ २७७ ॥

जहां बलवान् से दुर्बल का बाध हो वहां यह न्याय लगता है क्योंकि मछली दुर्बल होती है अतः सब का भक्ष्य होती है।

(277) *The maxim of fish.*

The maxim is used to denote the oppression which the weak have often to suffer at the hands of the strong and the powerful, as fish, being a very weak animal, is killed and eaten by men and other creatures.

मारणाय गृहीत अङ्गच्छेदं स्वीकरोति ॥ २७८ ॥

मारने के लिये पकड़ा हुआ व्यक्ति अङ्गभङ्ग को स्वीकार करता है।

(278) *The maxim of parting with a limb is preferable to life.*

This maxim is used to denote the advisability of averting a great loss by suffering a comparatively light one, just as a man condemned to death would be glad if the sentence be commuted to the loss of any limb.

मुञ्जादिषीकोद्धरणन्यायः ॥ २७९ ॥

मूँज के जड़ से बाण को बुझाकर यदि जीव पर प्रयोग किया जाता है तो थोड़े घाव से भी मर जाता है।

(279) *The maxim of a poisoned arrow.*

This maxim takes its origin from the fact that a small arrow if poisoned would have the effect of killing a man easily which may not be effected sometimes even by goodmany arrows; and is used to denote the feasibility of doing a deed.

मृगशस्यानाश्रयणन्यायः ॥ २८० ॥

हरिण के डर से अन्न का नहीं बोना।

(280) *The maxim of the deer and corn.*

This maxim is intended to denote abstaining from doing a duty on account of any fear, just as a cultivator may cease from sowing seeds lest the plants and corn should be eaten by the deer.

मृतमारणन्यायः ॥ २८१ ॥

मरे को मारना व्यर्थ है।

(281) *The maxim of slaying the slain.*

This maxim is used to denote any cruel and unprofitable attempt like that of striking a dead body.

मृतस्तनन्धयन्यायः ॥ २८२ ॥

मृत प्राणी का बालक जैसे अनाथ होता है ।

(282) *The maxim of the dead and their helpless infants.*

It is used to denote a most helpless condition of a person like that of a child that has lost its parents and has none to take its care.

मणिमन्त्रादिन्यायः ॥ २८३ ॥

विशेष २ मणि और विशेष २ मंत्र से अनेक कार्य की सिद्धि हो सक्ती है ।

(283) *The maxim of a precious stone and incantation.*

It is used to denote especial efficacious properties of some things as some precious stones and incantations possess the magical virtues of producing good in a wonderful way.

मध्यदीपिकान्यायः ॥ २८४ ॥

गृह के मध्य में दीपक यदि किसी वस्तु के लिये ले आया जाय तो सबही वस्तु दिखाई पड़ती है ।

(284) *The maxim of a light placed at the middle of a hall.*

This maxim takes its origin from the fact that a light taken inside a room and placed at the middle on some particular purpose, will make everything visible in the room, and is used to denote something which serves various purposes at the same time.

य

यः कारयति स करोत्येवेति न्यायः ॥ २८५ ॥

जो कराता है वह करता ही है ।

(285) *The maxim of the employer and the doer.*

This maxim is used to denote the responsibility of one who sets another to do a thing to be quite equal to that of the doer himself.

यः कुरुते स भुंक्ते इति न्यायः ॥ २८६ ॥

जो करता है वह भोगता है ।

(286) *The maxim of the doer and the eater.*

It is used to denote that he who does labour enjoys the fruit derived from it.

यत्कृतकं तदनित्यम् इति न्यायः ॥ २८७ ॥

जो बनाया गया है वह सदा नहीं रहता है ।

(287) *The maxim of the destructibility of created things.*

This maxim is used to denote that every created thing in the world is liable to destruction.

यत्परः शब्दः सः शब्दार्थ इति न्यायः ॥ २८८ ॥

जिस तात्पर्यसे शब्दका उच्चारण किया जाताहै वह सब अर्थ शब्दही का है ।

(288) *The maxim of the words and their imports.*

It is used to denote that the true import or significance of a word is the thing to indicate when the word was originally coined.

यः प्रायः श्रूयते यादृक् तत्तादृगवगम्यते इति न्यायः ॥ २८९ ॥

जो जैसा सुना जाता है वह वैसा ही समझा जाता है ।

(289) *The maxim of understanding follows hearing.*

This maxim indicates that one's understanding a thing depends upon the manner in which it comes to his hearing.

यथासंख्यन्यायः ॥ २९० ॥

जहां तुल्य विधि हो वहां क्रम से अन्वय होता है ।

(290) *The maxim of arranging in regular succession.*

This maxim takes its origin from want of necessity of minding any order in arranging or considering some things that are of equal worth, any one of them being fit to be taken at first and then the rest arranged one after another in regular succession; and is used to denote that things being of equal merit, the rule of preference has no application.

यद्विवाहस्तद्गीतमिति न्यायः ॥ २९१ ॥

जिसका विवाह हो उसी का गीत गाया जाता है ।

(291) *The maxim of the bridegroom being the hero of the marriage procession.*

This maxim originates from the fact that in a marriage procession, the bridegroom is the most important figure to whom all eyes are directed, and who is the subject of talk in every mouth; and is used to denote that the principal character in every affair is considered to be possessed of great importance.

यन्निवृत्तिमदितिन्यायः ॥ २९२ ॥

निवृत्ति में प्रवृत्ति का लक्षण नहीं होता है ।

(292) *The maxim of abstaining from worldly activity.*

It is intended to teach that enjoyment and abstinence are opposed to each other, there being no trait common to them.

यस्याज्ञानं भ्रमस्तस्य इति न्यायः ॥ २९३ ॥

जिसको अज्ञान है, उसको भ्रम है ।

(293) *The maxim of ignorance is illusion.*

It is used to denote that the darkness of ignorance is chased away as soon as the light of knowledge appears.

यादृशं मुखं तादृशी चपेटा इति न्यायः ॥ २९४ ॥

जैसा मुख है वैसा ही (चपेटा) थप्पड मारा गया ।

(294) *The maxim of the slap being proportionate to the cheek.*

It is used to denote that a measure must be taken for controlling one must be sufficiently strong in consideration of the particular case in question, just as the slap administered to a man must be tight enough in consideration of his physique and strength to produce the intended effect.

यादृशो यक्षस्तादृशो बलिरिति न्यायः ॥ २९५ ॥

जैसा देव वैसी पूजा ।

(295) *The maxim of a god and his worship.*

It takes its origin from the practice of making different kinds of offer to different gods according to their nature and taste; and is used to denote that in dealing with others it would be advisable to adopt such means as would suit the requirements of the case in question.

यावच्छिरस्तावती शिरोव्यथा इति न्यायः ॥ २९६ ॥

जब तक सिर है उतना सिर की पीड़ा है ।

(296) *The maxim of the head and headache.*

This maxim is used to denote the sense that there is ache only so long as there is head.

यावत्तैलं तावद् व्याख्यानमिति न्यायः ॥ २९७ ॥

अब तक [illegible] व्याख्यान है।

(297) *The maxim of the lamp and reading.*

This maxim originates from the fact that one can go on with one's study in the light of a lamp so long as there is oil in the hold of the lamp to enable it to burn and is used to denote that a person is held in honour and respect so long as he has means to keep up his position.

यूकाभिया कन्यात्यागन्यायः ॥ २९८ ॥

जूं के डर से पुत्री का त्याग करना।

(298) *The maxim of daughter and louse.*

It takes its origin from a daughter being turned out of doors for fear of the lice that infested her hair; and is used to denote the folly of a coward who is prepared rather to part with a valuable possession than to bravely meet and successfully grapple with a difficulty or danger.

येनोपक्रमते येनोपसंह्रियते स वाक्यार्थ इति न्यायः ॥ २९९ ॥

जिससे उपक्रम और उपसंहार किया जाय वह वाक्यार्थ है।

(299) *The maxim of the sense of a sentence or a speech.*

This means that a sentence or a speech is what has beginning and conclusion, *i. e.* what begins to say some thing about an object and finishes completely what is to be said about that object.

योग्यो योग्येन संबन्ध इति न्यायः ॥ ३०० ॥

योग्य के साथ योग्य का समागम होता है।

(300) *The maxim of a suitable connection.*

It is used to denote that unity, between persons of equal or similar merits or disposition, is a suitable connection.

योजनप्राप्यायां कावेर्यां मल्लबन्धनन्यायः ॥ ३०१ ॥

चार कोस और कावेरी नदी के जाने में रहने पर मल्लाह का बन्धन करना उचित नहीं है; अर्थात् काम के सिद्धि में थोड़ासा विलम्ब रहते समय कार्य-विघ्न करना मूर्खता है।

(301) *The Kaveri and the Kaivarta (a fisherman.)*

It takes its origin from the conduct of a man who want-

ed to go across the river Kaveri, and so took with him a fisherman for the purpose, but fearing that the man might escape, he bound the fisherman, hand and foot while the river was yet 8 miles off; and is used to denote the foolishness on the part of one in being overcautious for the prevention of a danger, and thus making one's position embarassing before the danger actually happens.

याचितकमण्डनन्यायः ३०२ ॥

मांगा हुआ भूषण सदा अपने पास नहीं रहता है।

(302) *The maxim of the borrowed ornaments.*

This maxim is used to denote the folly on the part of a man to try to pass for more beautiful or charming, than what he is by nature by adorning himself with dress and ornaments borrowed from others, as no person has any control on a thing, which has been lent to him by another as it may be taken away by the owner whenever he choses without caring for the convenience or otherwise of the borrower.

र

रक्तपटन्यायः ॥ ३०३ ॥

रक्त वस्त्र के धारण करने से सधवा का ही बोध होता है।

(303) *The maxim of red cloth.*

This maxim is used to denote that a female wearing red cloth is taken to be one whose husband is alive.

रज्जुसर्पन्यायः ॥ ३०४ ॥

रस्सी में सर्प समझना भ्रान्ति से होता है।

(304) *The maxim of the cord and the serpent.*

This maxim takes its origin from mistaking a cord by delusion for a serpent, and denotes the false impression under which men are seen to labour sometimes.

रथवडवान्यायः ॥ ३०५ ॥

रथ में जोड़ी हुई घोड़ियां मिल के ही रथ को खींचती हैं।

(305) *The maxim of the carriage and the pair.*

This maxim is used to denote the co-operation of the workers necessary for the due performance of a work, just

as in a carriage drawn by two horses, the horses must work unitedly in order that the carriage may go on regularly.

रश्मितृणादिन्यायः ॥ ३०६ ॥

सूर्य की किरणों से समय पर घास की अंकुरोत्पत्ति तथा समय पर नाश भी होता है।

(306) *The maxim of the sunlight and the grass.*

It is used denote that a thing which is found to be of essential importance at one time, may at another time prove to be the cause of distinction, just as the sunlight, which is indispensably necessary for the grass to grow up, is also the cause of the drying up of the same grass.

राजपुत्रव्याधन्यायः ॥ ३०७ ॥

किसी राजपुत्र को उसकी विमाता ने जंगल में फेंक दिया। दैववश किसी व्याध ने लेकर उसको पाला। समयान्तर में मन्त्रियों ने निश्चय किया कि यह राजपुत्र है अतः सिंहासन पर निवेशित किया।

(307) *The maxim of a prince and a fowler.*

It takes its origin from a story that once upon a time an infant prince was left in a jungle by its stepmother. The child was accidentally found by a fowler who took it home and brought it up as his own son. Many years afterwards, the prime minister of the king happened to meet the boy and recognised him by his appearance to be no other than the king's son. The minister took the boy with him and installed him on the throne. The maxim is used to denote that truth can never be suppressed for ever, it is sure to establish itself in course of time.

राहुग्रासन्यायः ॥ ३०८ ॥

शास्त्रों में लिखा है कि भूच्छाया को राहु कहते हैं और जब छाया पड़ती है तबही ग्रहण होता है। इधर लोग समझते हैं कि राहुदैत्य सूर्यचन्द्र को ग्रास करता है।

(308) *The maxim of the Rahugrasa or the act of being swallowed by Rahu.*

This maxim is used to denote the erroneous notions that popularly act upon the minds of men, as in the case of eclipse of the sun or the moon, it is popularly believed that

those great luminaries are swallowed for the time being by the demon Rahu, whereas the fact is that the shadow of the earth falling on them makes them invisible for a while.

राजसं तामसं चेति न्यायः ॥ ३०९ ॥

रजोगुणसम्बन्धी और तमोगुणसम्बन्धी दोनों प्रकारके पदार्थ बन्धनके हेतु हैं।

(309) *The maxim of the Rajasa and Tamasa.*

The maxim denotes that both the *gunas* the *Rajas* and the *Tamas* are the cause of bondage.

राजानुगतविवाहप्रवृत्तभृत्यन्यायः ॥ ३१० ॥

भृत्य के विवाह में राजा भी भृत्य के पीछे ही चलता है।

(310) *The maxim of the king and the marriage procession of a servant of his.*

This maxim is used to denote that due regard must be paid to the position of a person irrespective of his caste or social standing just as even a king has to follow his servant on the occasion of his marriage.

रासभरटितन्यायः ॥ ३११ ॥

गदहे का शब्द पहले बड़ा होता है फिर धीरे २ कम होता जाता है। जो पहले बहुत शोर मचाते हैं वे अन्त में निष्फलता दिखाते हैं।

(311) *The maxim of the braying of an ass.*

This maxim takes its origin from the fact that an ass brays at first very loudly, but gradually its sound sinks lower and lower, and is used to denote that anything that makes much noise in the beginning proves, in the long run, to be quite hollow and worthless.

राजशून्यप्रजान्यायः ॥ ३१२ ॥

राजा से शून्य होकर प्रजा उन्नति और शान्ति को प्राप्त नहीं कर सक्ती। उन्नति और शान्ति के अभाव में इस न्याय का प्रयोग होता है।

(312) *The maxim of the subjects without a king.*

This maxim takes its origin from want of peace and happiness of the people in a country where there is no king and is used to denote that a controlling hand is essentially necessary for the happy and peaceful management of human affairs.

रेखागवयन्यायः ॥ ३१३ ॥

ग्राम के रहनेवाले ने जङ्गली मनुष्य से पूछा कि नीलगाय कैसी होती है। जङ्गली ने रेखा खींच कर बताया। उस मूर्ख ने रेखा ही के समान नीलगाय होती है ऐसा समझ लिया। फिर जब जङ्गल में देखा तब उसका भ्रम दूर हुआ।

(313) *The maxim of the outline of a Gayal's image.*

This maxim originates from a story that one day, an illiterate rustic living in a village went to a forest, and enquired of an inhabitant of that forest about a Gayal which that rustic villager never saw before. The forester thereupon drew an outline on the ground to show the villager, what sort of animal a Gayal was. The foolish villager was satisfied. But on another occasion of his going into the forest when he accidentally came across a Gayal he saw that the idea of the animal given him by the forester was quite wrong.

It is used to denote that one should be careful in selecting his preceptor. An incompetent preceptor does more harm than good.

राजपुरप्रवेशन्यायः ॥ ३१४ ॥

राजा के नगर में यथानियम पंक्तिबद्ध होकर प्रवेश होता है।

(314) *The maxim of a king's entrance to the capital.*

This maxim is used to denote that everything should be done in regular order as on the occasion of a king's entering his city, the soldiers, and the followers follow him in proper order.

रोगिन्यायः ॥ ३१५ ॥

रोगी पथ्यापथ्य का विचार नहीं करता है।

(315) *The maxim of the patient.*

This maxim is used to denote that under the influence of evil propensities a man loses the power of judging what is right and what is wrong, just as a patient labouring under diseases for a long time becomes very careless about the regulation of his diet.

ल

लाङ्गलं जीवनमिति न्यायः ॥ ३१६ ॥

हल जोत कर जीना यह अत्यन्त कष्टकर है ।

(316) *The maxim of plough as a means of livelihood.*

It is used to show that to live by ploughing the land with one's own hand, (*i. e.* by cultivation,) is attended with great hardship.

लतावृक्षन्यायः ॥ ३१७ ॥

जिस प्रकार विना वृक्ष के लता खड़ी नहीं रह सक्ती और न फैल ही सक्ती है उसी प्रकार विना पुरुष के अवलम्बन के स्त्रियां स्वाधीन हो कर उन्नति नहीं कर सक्तीं ।

(317) *The maxim of trees and creepers.*

This maxim takes its origin from the fact that no creeper can stand or grow without the help of a tree; and is used to denote that a female can neither live nor make any progress in life without the assistance of her husband or any other male guardian.

लोहचुम्बकन्यायः ॥ ३१८ ॥

चुम्बक पत्थर लोह को आकर्षण कर लेता है उसी प्रकार जहां स्वाभाविक आकर्षण हो वहां इस न्याय का प्रयोग होता है ।

(318) *The maxim of iron and magnet.*

It is used to denote a very close affinity between two things, by virtue of which they are instinctively attracted towards each other though at a distance, just as iron is attracted by magnet.

लोहाग्निन्यायः ॥ ३१९ ॥

अग्नि से तपा हुआ लोहा गर्म हो जाने से उसको जैसा चाहे वैसा घढ़ सक्ते हैं ।

(319) *The maxim of iron and fire.*

This maxim is used to denote that the best use of an opportunity ought to be made no sooner than it presents itself, as one desirous of making things of iron must do so by striking it hard so long as it is hot by being put into fire.

व

वटयक्षन्यायः ॥ ३२० ॥

वट के वृक्ष पर यक्ष रहता है इतने ही से लोग डर जाते हैं । विना सोचे काम में प्रवृत्त होने पर यह न्याय लगता है ।

(320) *The maxim of a fig-tree and a ghost.*

This maxim has its application in cases in which something is done without proper exercise of care and judgment just as men feel afraid in passing by a huge fig-tree, specially alone and at night, as it is popularly believed, without any rhyme or reason, that an evil spirit dwells in that tree.

वध्यघातकन्यायः ॥ ३२१ ॥

वध्य के देखने से घातक की स्थिति अनुमानमें आती है जैसे जहां सांप अधिक होते हैं वहां जाना जाता है कि यहां सांप के वध करनेवाले नहीं हैं ।

(321) *The maxim of the killer and the killed.*

This maxim is used to denote the absence of a controlling agency in a place where there is plenty of things requiring control, as abundance of serpents in a place indicates that there is no one to kill the snakes.

वनव्याघ्रन्यायः ॥ ३२२ ॥

जैसे वन की रक्षा व्याघ्र करता है वैसे व्याघ्र की रक्षा वन करता है । यदि व्याघ्र न रहे तो मृग वन को खा जाते हैं और वन न रहने से व्याघ्र का रहना असंभव है ।

(322) *The maxim of a forest and the tiger.*

This maxim is used in place in which mutual help is intended to be meant, just as a forest is preserved by a tiger, and the tiger by that forest. If there be no tiger in the forest the herbivorous animals come there in a large number whenever they choose and the plants and creepers etc., are eaten away by them and thus the forest is destroyed in a short while, on the other hand, if there be no forest it becomes difficult for a tiger to find out a place to live in.

वह्निधूमन्यायः ॥ ३२३ ॥

धूम के देखने से वह्नि का होना निश्चय होता है ।

(323) *The maxim of the invariable concomitance of fire and smoke: (wherever there is smoke there is fire.)*

It is used to denote such invariable concomitance between two persons or things; (*e. g.* where there is A, there is B; where there is not B, there is not A.)

वरघाताय कन्यावरणमिति न्यायः ॥ ३२४ ॥

वर के भोग के लिये कन्या का पाणिग्रहण किया जाता है, वर के नाश के लिये नहीं।

(324) *The maxim of the bridegroom and the bride.*

A man takes a woman for his wife with a view to make the life as enjoyable as possible and not for the purpose of bringing about his own destruction. The maxim is therefore used to indicate that whatever a man does he does for his own happiness and comfort.

वरगोष्ठीन्यायः ॥ ३२५ ॥

वर और कन्या के एक मत होने से विवाह होता है।

(325) *The maxim of the union of the bride and the bride-groom.*

The marriage between a man and a woman, holding the same kind of opinion in every concern of life, always turns out to be a happy one.

वाजिमन्दुरान्यायः ॥ ३२६ ॥

मन्दुरा घोड़ों के ही रहने के स्थान को कहते हैं। गाय आदि के स्थान को नहीं कह सके।

(326) *The maxim of the stable.*

This maxim is used to denote that every object has a peculiar name given to it, so that it cannot be interchanged with anything else without causing a great confusion; just as the name 'stable' is applied to the shed intended for the horses and not the cows or any other animals to live in.

वातादिन्यायः ॥ ३२७ ॥

वात पित्त श्लेष्म आपस में विरुद्ध हैं परन्तु जब समभाव से मिलते हैं तब शरीर की रक्षा करते हैं।

(327) *The maxim of the wind and other humours of the body.*

This maxim is used to denote that as wind, bile, and phlegm, the three humours of the body, though quite different from one another by nature, prove to be the source of sound health when they are harmoniously combined, so acts of very great importance may be well performed by persons of different nature and disposition if they act in concert.

वायुभक्षन्यायः ॥ ३२८ ॥

जैसे यह वायुभक्षी हैं ऐसा कहने से अन्य वस्तु नहीं खाता है ऐसा प्रतीत होता है ।

(328) *The maxim of living on air.*

When one is said to be living on air, it denotes that he does not eat any thing else.

It is applied to those cases in which one is exclusively devoted to one thing only.

वायुशैत्यौष्ण्यन्यायः ॥ ३२९ ॥

जल और तेज के सङ्ग से हवा में ठण्ढापन और गर्मी का व्यवहार होता है ।

(329) *The maxim of hot and cold air.*

This maxim is used to denote that merits and demerits are often the results of company, just as wind itself neither hot nor cold, becomes so coming in contact with fire and water respectively.

वसुधैव कुटुम्बकमिति न्यायः ॥ ३३० ॥

ज्ञानी व्यक्ति के लिये वसुधा ही कुटुम्ब है । यह न्याय उदारता प्रतिपादक है ।

(330) *The maxim of the universal family.*

This maxim is used to signify that to a truly noble-minded man the distinction between a thing being one's own or not disappears altogether. One who is possessed of really noble mind, is far above that narrowness which induces one to make a distinction between what belongs to him and what belongs to another.

बालाग्रशतभागोपिन्यायः ॥ ३३१ ॥

बाल का सौंवा हिस्सा ऐसा कहने से न्यून से न्यून विभाग समझा जाता है।

(331) *The maxim of splitting hair into hundred parts.*

This maxim is used to denote a very small portion of a thing.

विधेयं हि स्तूयते वस्त्विति न्यायः ॥ ३३२ ॥

प्रयोजन ही से किसी वस्तु में प्रवृत्ति होती है।

(332) *The maxim of necessity being the mother of praise.*

This maxim is used to denote that a thing necessary is always considered valuable, and is also highly thought of.

विपरीतं बलाबलमिति न्यायः ॥ ३३३ ॥

बली को अबल कहना और अबल को बलवान् कहना अर्थात् विपरीत भाषण के समय यह न्याय लगता है।

(333) *The maxim of contrary assertion.*

This maxim originates from the assertions made of a weak one being strong, or an incompetent one being competent, and so on. Such remarks are made either in rony or out of partiality.

विशिष्टवैशिष्ट्यन्यायः ॥ ३३४ ॥

विना विशेषण के विशेष्य नहीं जाना जाता है।

(334) *The maxim of a special distinction.*

Without the help of a qualifying thing, the true excellence of an object cannot be made known. It is the knowledge of distinguishing features of an end or aim, that makes one's mind fixed at it.

विषवृक्षोपीति न्यायः ॥ ३३५ ॥

अपना लगाया हुआ विष का वृक्ष भी नहीं काटना चाहिये अर्थात् जिस को बनाया जाय उसको बिगाड़ना नहीं चाहिये।

(335) *The maxim of the poison-tree.*

This maxim is used to denote that a thing, though hurtful and mischievous, does not deserve to be destroyed by the very person who has reared it, just as a poison-tree ought not to be cut down by the planter himself.

विषं मृत्युरिति न्यायः ॥ ३३६ ॥

विष मृत्यु करनेवाला है।

(336) *The maxim of deadly poison.*

It is used to denote that an evil always produces a disastrous effect, just as poison causes death.

विषभक्षणन्यायः ॥ ३३७ ॥

विष भक्षण आत्महत्या का बोधक है।

(337) *The maxim of drinking poison.*

This maxim is used to denote a suicidal course, just as one causes suicide by drinking poison.

वीचितरङ्गन्यायः ॥ ३३८ ॥

वायु के वेग से नद्यादिक में लहरें उठती हैं। एक लहर से दूसरी, दूसरी से तीसरी इसी प्रकार बढ़ती हैं।

(338) *The maxim of a wave urging forward a wave.*

In the ocean one wave propels another till the first and all others in succession reach the shore. So this maxim is used to denote successive operations, as in the case of the production of sound.

वृक्षप्रकम्पनन्यायः ॥ ३३९ ॥

वृक्ष के हिलने से उसके सब अवयव हिलने लगते हैं।

(339) *The maxim of a tree being shaken.*

Just as when a tree is shaken, its branches and other parts are shaken too; so this maxim is used to denote that whatever affects the whole affects the parts also.

वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः ॥ ३४० ॥

किसी वृद्धा कुमारी से इन्द्र ने कहा, वर मांगो। उसने वर मांगा, हमारा पुत्र कांचनपात्र में दूध भात खावे। उसका विवाह नहीं हुआ था और वह वृद्धा हो गई थी अतः ऐसा वर मांगना हास्यास्पद है।

(340) *The maxim of the old virgin's boon.*

This maxim is used to denote asking such a boon as will cover all that one wishes to have. The Mahabhashya says that an old virgin, when asked by Indra to choose a boon, said:—पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं काञ्चनपात्र्यां भुञ्जीरन् This one boon, if granted, would give her a husband, progeny, abundance of corn, cattle, gold, &c.

वृद्धिमिष्टवतो मूलमिति न्यायः ॥ ३४१ ॥

यज्ञ करनेवाले की अवश्य वृद्धि होती है क्योंकि कर्म के फलदाता देवता जब यज्ञ से प्रसन्न होते हैं तो यज्ञकर्त्ता की वृद्धि होना स्वतः सिद्ध है।

(341) *The maxim of Sacrifice—the root of prosperity.*

This maxim denotes that one who performs sacrifices is sure to prosper in life, because the gods, the givers of the rewards of *Karma* (rituals) being propitiated by sacrifices, good fortune must attend him who performs those sacrifices.

वृश्चिकीगर्भन्यायः ॥ ३४२ ॥

बिच्छू के बच्चे माता का पेट काट कर निकलते हैं।

(342) *The maxim of Scorpion enceinte.*

The maxim is used to denote ingratitude on the part of those that do harm to the persons to whom they are indebted for their very life, just as the young ones of scorpions come out by tearing up the womb and thus causing death of the mother.

वेण्याकाशन्यायः ॥ ३४३ ॥

बहुत लम्बी आकृतिवाली स्त्री के लिये इस न्याय का प्रयोग होता है।

(343) *The maxim of the tuft of hair reaching the sky.*

It is used to denote the extraordinary tallness of a woman, so that the tuft of hair on the head seems to be in touch with the sky.

विषकृमिन्यायः ॥ ३४४ ॥

विष खाने से अन्य जीव मरते हैं परन्तु विष में उत्पन्न हुए कीड़े उसीमें जीते हैं।

(344) *The maxim of the worms bred in poison.*

It is used to denote a state of things which, though fatal to others, is not so to those who being bred in it, are inured or naturalized to it, like poison which, though fatal to others is not so to the worms bred in it.

व्यञ्जकव्यङ्ग्यभावन्यायः ॥ ३४५ ॥

प्रकाशक प्रकाश्य का बोधक होता है।

(345) *The maxim of the indicator and the indicated.*

It is used to signify the thing which is manifested as well as that by which it is manifested.

व्याघ्रीक्षीरन्यायः ॥ ३४६ ॥

व्याघ्री का दूध सोने के बर्तन में रखने से गुणदायक है परन्तु उसका मिलना असंभव है।

(346) *The maxim of the tigress's milk.*

It is used to denote the extreme difficulty of attainment of a thing, though it may be useful, like the milk of a tigress which, if preserved in a golden cup or vessel, becomes very efficacious, though it is very difficult to gather or obtain it.

व्यापकव्यावृत्या व्याप्यव्यावृत्तिरिति न्यायः ॥ ३४७ ॥

व्यापक की व्यावृत्ति होने से व्याप्य की भी व्यावृत्ति हो जाती है।

(347) *The maxim of the genus and the species.*

It is used to denote that exclusion or inclusion of the *genus* means the exclusion or inclusion of the *species* as well.

व्रणं शिशमिषोः शस्त्रग्रहणन्यायः ॥ ३४८ ॥

यद्यपि शस्त्र घाव कर देता है परन्तु घाव के मिटाने के लिये शस्त्र प्रयोग की आवश्यकता होती है।

(348) *The maxim of the boil and the surgeon's knife.*

This maxim originates from the fact the ulceration caused by surgical operations, is oftentimes healed by the same surgical operation again; and is used to denote that sometimes it so happens that an injury caused by a thing, is made up again by that very thing.

व्रीहिबीजन्यायः ॥ ३४९ ॥

जैसे धान्य का एक बीज रहने पर भी पुनः संसार भर में धान्य फैल सक्ता है।

(349) *The maxim of the paddy-seed.*

This maxim denotes that so long as a single seed of a thing is left, there is every chance of its propagation; just as from one single seed of paddy, all the granaries in the land may be expected to be filled in course of time.

विधवाविवाहन्यायः ॥ ३५० ॥

विधवा का विवाह एक हास्यास्पद बात है क्योंकि हिन्दू शास्त्र के अनुसार

कन्या का दान एकही बार होता है इसलिये विधवा विवाह असंभव है । विधवा का पुरुषान्तर ग्रहण हो सक्ता है परन्तु विवाह नहीं । यह असंभव द्योतक न्याय है ।

(350) *The maxim of widow marriage.*

This maxim is used to denote an impossible and ludicrous attempt; as, according to the scriptures of the Hindus a woman can marry only once. The taking of a second husband is quite opposed to the Shastric injunctions of the Hindus, and is therefore quite impossible on the part of a Hindu lady.

श

शक्तिः सहकारिणीति न्यायः ॥ ३५१ ॥

शक्ति शक्तिमान् के साथ ही रहती है ।

(351) *The maxim of an object and its attributes.*

This maxim is used to denote that the attributes of an object are inseparably connected with the object itself, where there is one the other must be there too.

शतपत्रपत्रशतभेदन्यायः ॥ ३५२ ॥

हज़ार पत्तेवाले कमल का फूल सुई से छेदने में जान पड़ता है कि एकही बार सब छिद गया परन्तु प्रत्येक दल के भेद करने में अलग २ समय अवश्य लगता है ।

(352) *The maxim of piercing through the leaves of a lotus.*

This maxim is used to denote an easy and short process of doing a thing, just as hundreds of petals of a lotus being taken together, may be easily strung together at once by means of a needle, whereas to string them one by one would take much time and be a tedious process.

शते पञ्चाशन्न्यायः ॥ ३५३ ॥

सौ में पचास बीत गया अर्थात् आधी उमर बीत गई ।

(353) *The maxim of fifty out of a hundred.*

When fifty out of a total of hundred has been spent, it shows half the part has already been spent up.

शवोद्वर्तनन्यायः ॥ ३५४ ॥

मरे हुए का करवट लेना । यह अत्यन्त असंभवतासूचक न्याय है ।

(354) *The maxim of turning sides of the dead.*

This maxim is used to denote an impossibility, as turning round from one side to the other on the part of a dead body is quite impossible

शाखाचन्द्रन्यायः ॥ ३५५ ॥

वृक्ष में होकर चन्द्रमा दिखाई देते समय कहा जाता है कि वृक्ष की शाखा में चन्द्रमा देखो । वास्तव में चन्द्रमा का स्थान और ही है केवल उपाधि भेद से ऐसा कहा जाता है ।

(355) *The maxim of the bough and the moon.*

As the moon, though considerably distant from the bough of a tree, is spoken of as the moon on the bough, because she appears to be near it, so this maxim is used when the position of an object, though at a very great distance, is fixed by that of another object to which it appears to be contiguous.

शाब्दी ह्याकांक्षा शब्देनैव प्रपूर्यते इति न्यायः ॥ ३५६ ॥

शब्द में रहनेवाली आकांक्षा शब्द से ही पूर्ण होती है ।

(356) *The maxim of the words and their complements.*

It denotes that the complements necessary to complete an idea suggested by a word are also themselves words.

शालिसमृद्धौ कोद्रवाशनत्यागन्यायः ॥ ३५७ ॥

शालिधान्य के अधिक रहने पर कोद्रव (कोदों) नहीं खाया जाता है ।

(357) *The maxim of fine rice and coarse rice.*

It is used to denote that a coarse thing is not used so long as good thing is available, as, nobody likes to use coarse rice so long as fine rice is procurable.

शिरो वेष्टने नासिकास्पर्शन्यायः ॥ ३५८ ॥

शिर के वेष्टन करने में नाक छूना । असंबद्ध स्थल में इस न्याय का प्रयोग होता है ।

(358) *The maxim of touching the nose in binding a piece of cloth round the head.*

This maxim is used to denote any uncalled for and quite

irrelevant thing; just as touching the nose and binding a piece of cloth round the head are quite unconnected and have no relation to each other.

शिष्यस्वातन्त्र्यन्यायः ॥ ३५९ ॥

शिष्य यदि गुरु से स्वतन्त्र विचार और स्वतन्त्र आचार का हो जाय तो शिष्य उन्नति नहीं करेगा। यह शिष्य कर्तव्यबोधक न्याय है।

(359) *The maxim of an independent disciple.*

A disciple can make no advance in spiritual life, should he differ from his spiritual guide (Gurudev) in judgment and conduct. So this maxim is used to teach the duty of a disciple.

शूर्पन्यायः ॥ ३६० ॥

सूप भुस्सा छोड़ देता है केवल साफ़ अन्न ग्रहण कर लेता है।

(360) *The maxim of the winnowing fan.*

This maxim is used to denote the power of appreciating the merits, or of keeping the kernel and rejecting the husk, just as it is done by a winnowing fan which preserves only the corn and throws away the chaff.

शैलूषीन्यायः ॥ ३६१ ॥

नटी बहुतसे रूप धारण करती है परन्तु वास्तव में उन रूपों के साथ उसका कोई भी संबन्ध नहीं है।

(361) *The maxim of an actress on the stage.*

In a theatre the self-same actress makes her appearance on the stage in different sorts of dress and guise on different occasions, but none of these has any concern with her real form, so this maxim is used to denote the delusiveness of the world.

श्यालशुनकन्यायः ॥ ३६२ ॥

किसी ने अपने कुत्ते को साला बनाकर अपनी स्त्री के चिढ़ाने के लिये गाली देना प्रारम्भ किया। स्त्री ने इस वृथा नाते से गुस्सा किया।

(362) *The maxim of a dog, the wife's brother.*

It takes its origin from a story that a man called his dog to be his brother in-law (wife's brother), and called it names often times only with a view to try the patience of

his wife, who would fly into rage at this conduct of the husband; and it is used to denote an unbecoming conduct of a person towards any one among his friends and relatives.

श्वपुच्छोन्नमनन्यायः ॥ ३६३ ॥

कुत्ते की पूंछ का सीधा करना असंभव है।

(363) *The maxim of a dog's tail.*

This maxim is used to denote inflexibility of nature just as the tail of a dog, which is naturally crooked, can never be made straight, however hard one may try for the purpose.

शौर्यहीनक्षत्रियन्यायः ॥ ३६४ ॥

शूरता से हीन क्षत्रिय पतित क्षत्रिय कहाता है। यह पातित्यबोधक न्याय है।

(364) *The maxim of a Kshatriya without prowess.*

This maxim is used to denote fallen condition, as a Kshatriya *i. e.*, one belonging to the warrior class, without bravery, is considered to be a disgrace of his race.

श्वश्रूनिर्गच्छोक्तिन्यायः ॥ ३६५ ॥

घर में जैसा श्वश्रू का अधिकार है वैसाही पुत्रवधू का भी अधिकार है।

(365) *The maxim of "Mother-in-law, go out."*

No lady has any right to turn her mother-in-law out of doors, as the mother-in-law has the same right to occupy the house as she has; so this maxim is used to denote improper exercise of one's power.

श्वः कर्तव्यमद्यकुर्वीति न्यायः ॥ ३६६ ॥

जो कल करना है वह आजही करो।

(366) *The maxim of "Do to-day what you have to do to-morrow."*

This maxim is used to denote that it is proper to make use of the earliest possible opportunity to perform one's duties.

ष

षड्दर्शनन्यायः ॥ ३६७ ॥

जैसे नास्तिक दर्शन छः होने से वैदिक दर्शन का भी नाम षड्दर्शन पड़ गया है। नहीं तो वैदिक दर्शन सप्तज्ञानभूमि के अनुसार सात ही हैं।

(367) *The maxim of the six schools of philosophy.*

It is used to mean that the atheistic schools of philosophy being six, the theistic or the Vaidic philosophies are also regarded as being divided into six schools, while in fact the philosophies are of seven schools according to the seven planes of *jnana* or knowledge.

स

संकरपितृन्यायः ॥ ३६८ ॥

जैसे अर्यमा आदि पितरों की सहायता उस कुल या जाति को मिल सक्ती है जिसमें संकरता दोष न हो और जिसमें रजोवीर्य की शुद्धि हो क्योंकि संकर प्रजा पर पितरों की उपेक्षा रहती है यही कारण है कि संकर जाति या संकर कुल थोड़े दिनों में नष्ट हो जाता है। असंभवता में इस न्याय का प्रयोग होता है।

(368) *The maxim of the intermixed parents.*

This maxim is used to denote an impossible exception. The wishes of the issues of the intermixed parents of presenting libations of water to the names of the deceased ancestors, cannot be realised, as their offerings are not acceptable to *Aryama* and other *pitars.*

सच्छिद्रघटाम्बुन्यायः ॥ ३६९ ॥

छिद्रवाले घड़े में जल रखने से नहीं ठहरता।

(369) *The maxim of a water-vessel with holes in it.*

A water-vessel, even if filled to the brim, becomes soon emptied of all water, if there be holes in it. So this maxim is used to denote utter fruitlessness of efforts on the part of an instructor to help a pupil who is naturally defective, to grow in knowledge and character.

संदिग्धप्रयोजनं च विचारमर्हतीति न्यायः ॥ ३७० ॥

संदेहवाले प्रयोजन में विचार करना पड़ता है।

(370) *The maxim of necessity and judgment.*

This maxim denotes that a necessity, if suspected to be of doubtful utility or importance, should not be done at once, without considering it very carefully and minutely in all its bearings.

समुद्रवृष्टिन्यायः ॥ ३७१ ॥

समुद्र में वर्षा होना; अर्थात् समुद्र में वर्षा होने का प्रयोजन न होने पर भी अधिक होती है।

(371) *The maxim of the sea and rain.*

This maxim is used to denote supply of a thing to one who is in the least need of it just as rain is quite unnecessary in the sea where there is no want of water.

Cf. The English proverb – "To carry coal to New Castle."

सर्वं वाक्यं सावधारणं न्यायः ॥ ३७२ ॥

जितनी बातें होती हैं वे निश्चय अर्थ को कहनेवाली हैं।

(372) *The maxim of a sentence and the assertion it makes.*

This maxim denotes that what a sentence asserts must necessarily be so.

सर्वं विशेषणं सावधारणमिति न्यायः ॥ ३७३ ॥

सर्व विशेषण विशेष्य का बोधक अवश्य ही होता है।

(373) *The maxim of the adjectives and their significations.*

This maxim means that all adjectives express the qualities of the nouns they modify. It is used to denote that nature and character of a great person may be understood from those of his attendants and followers.

सर्वशाखाप्रत्ययन्यायः ॥ ३७४ ॥

जो विषय है वह अवश्यही एक लक्ष्य से युक्त होगा। जैसे वेद की अनेक शाखाओं से किये हुए कर्म लक्ष्य के हिसाब से एकही है।

(374) *The maxim of the things and their aim*

As the Vedas have different branches but they all aim at the great one, so the variety of things in creation have one and the same aim.

संप्रदायकलहन्यायः ॥ ३७५ ॥

कर्मकाण्ड के संप्रदाय और उपासनाकाण्ड के संप्रदाय, सब एकही लक्ष्य की ओर जाने पर भी आपस में अज्ञान से विरोध किया करते हैं ऐसे वृथा विरोध के स्थल में इस न्याय का प्रयोग होता है।

(375) *The maxim of the different systems of religious teaching and their discordance.*

Different systems of religious teaching quarrel among themselves as regards the details of their doctrine, but in reality they all inculcate the worship of the One Being. So this maxim is used to denote the futility of such differences.

साक्षात्प्रकृताविति न्यायः ॥ ३७६ ॥

सबका लय मूलकारण में होता है जैसे घड़े का लय मिट्टी ही में होता है।

(376) *The maxim of universal union in Nature.*

As an earthen vessel is finally reduced to earth of which it is made, so everything in the universe will at last be dissolved into the Great First cause from which they emanated.

साधुमैत्री न्यायः ॥ ३७७ ॥

सज्जनों की मैत्री चिरस्थायी होती है और दिनों दिन बढ़ती है।

(377) *The maxim of friendship of the good and the honest.*

This maxim is used to denote that friendship with persons that are good and honest is permanent in nature and grows in strength and intensity with the increase of years.

सावकाशनिरवकाशन्यायः ॥ ३७८ ॥

चरितार्थ और अचरितार्थ में चरितार्थ बली है।

(378) *The maxim of applicability and non-applicability.*

This maxim denotes that applicability is always more powerful than its reverse.

साहंकारज्ञानीन्यायः ॥ ३७९ ॥

यदि ज्ञानी में अहंकार हो जाय तो उसका ज्ञानमार्ग बन्द हो जाता है।

(379) *The maxim of the wise who is proud.*

The maxim originates from the fact that if a person possessed of wisdom be also proud, his wisdom proves ineffectual, as it thus loses its worth and utility. The maxim is therefore used to determine the course that is proper and advisable.

सिंहमृगन्यायः ॥ ३८० ॥

सिंह और हरिण का स्वाभाविक वैर है क्योंकि खाद्य-खादक संबन्ध है।

(380) *The maxim of the lion and the deer.*

The maxim originates from the fact that there is natural enmity between the lion and the deer as the former lives upon the flesh of the latter, and is used to denote the feeling of enmity that naturally exists between the two, one of whom is stronger than and is always bent upon doing harm to the other.

सिंहमेषन्यायः ॥ ३८१ ॥

कोई सिंह का बच्चा किसी गांव में जाकर भेड़ों के साथ चरने लगा। जवान होने पर भी अपने को भेड़ही समझने लगा। फिर जङ्गली सिंह के उपदेश से उसने अपने को सिंह समझा।

(381) *The maxim of the lion and the sheep.*

The maxim has its origin in the fact that a young lion once strayed into a village and mixed with a flock of lambs. It lived there for some days, and then when it was able to make sound peculiar to its own race or class, it did not perceive it in its proper element. Afterwards a lion from the forest came there and taught it what it was, whereupon it left the flock of the lambs and went to the forest to join the company of lions there. The maxim denotes that under the circumstances, one may for the time being be in a position not to realise one's true worth but at last when under instruction his eyes are opened he behaves in a manner true to his self and nature.

सिंहावलोकनन्यायः ॥ ३८२ ॥

सिंह स्वभाव ही से बड़ा धीर होता है, वह सामने ही देखता है, चंचलता से इधर उधर नहीं देखता है।

(382) *The maxim of the lion's glance.*

A lion is very grave by nature, casts his glance towards the front, and does not see sideways through fickleness.

सार्वजनीनतुल्यायव्ययन्यायः ॥ ३८३ ॥

जमा और खर्च समान होने से लाभ का होना असंभव है।

(383) *The maxim of equal receipts and disbursements.*

It denotes that one, whose expenditure equals his income, can make no savings in his life.

सुतजनिमृतिन्यायः ॥ ३८४ ॥

किसी ने देव की आराधना से पुत्र लाभ करके फिर दूसरे पुत्र के लिये दूसरे देवकी आराधना की । दूसरे पुत्र के जन्म समय में ही पहले देव के कोप से पहला पुत्र मर गया ।

(384) *The maxim of the birth of a son and death of a son.*

The maxim originates from a story that a person got a son by propitiating a certain god, and then again he worshipped and propitiated a different god for another son. The result was that when the second son was born, the first one breathed his last. It is intended therefore to teach that one should devote himself to the worship of one and the same god or, oneness of aim and purpose is indispensably necessary for success in life.

सुभगाभिक्षुकन्यायः ॥ ३८५ ॥

यदि दरिद्री के पास भी धर्मवती स्त्री हो तो उसकी दरिद्रता एक दिन अवश्य ही कट जाती है क्योंकि सुभगा स्त्री लक्ष्मीरूपा है ।

(385) *The maxim of an unlucky husband and a lucky wife.*

If a poor man can marry a wife who is a favourite of Fortune, he is also sure to enjoy fortune's smile in course of time. The maxim therefore denotes that a woman plays an important part in the fortune of a man to make him prosperous in life.

सुन्दोपसुन्दन्यायः ॥ ३८६ ॥

सुन्द और उपसुन्द नामक दैत्य तिलोत्तमा अप्सरा के लिये आपस में लड़कर मर गये।

(386) *The maxim of Sunda and Upasunda.*

The maxim originates from a *Pauranic* story that two *daityas* or demon brothers of the names of Sunda and Upasunda became enamoured of one and the same woman, and the outcome was that they quarrelled among themselves for the damsel, and at last met with their death by fighting with each other, and it denotes that rivalry on account of woman often proves to be the cause of total destruction.

सूचीकटाहन्यायः ॥ ३८७ ॥

कोई कढ़ाई बनवाने के लिये लोहार के पास पहले गया । सुई बनवाने के लिये कोई दूसरा पीछे गया । लोहार को पहले कढ़ाई बनाना उचित था परन्तु सुई के बनाने में अल्प समय लगने से पहले सुई ही को बनाया ।

(387) *The maxim of the needle and the kettle.*

It is used to denote that when two things one easy and the other difficult are required to be done, the easier should be first attended to, as when a smith is required to make a needle and a kettle, he should first take in hand the needle as it is comparatively easier.

सूत्रशाटिकान्यायः ॥ ३८८ ॥

साड़ी बुनते समय में ही साड़ी शब्द का व्यवहार होता है परन्तु उस समय साड़ी सूत के रूप में ही रहती है ।

(388) *The maxim of thread and cloth.*

The maxim takes its origin from the word 'cloth' being used even when it is not in existence, the threads only being put in order for the purpose of making it, and denotes that a thing is freely-talked of as an accomplished fact even when materials only are gathered and all other preparations are made for making that thing.

सूर्योदयास्तन्यायः ॥ ३८९ ॥

जैसे सूर्य का उदय अस्त नहीं होता है, सूर्य अपनी कक्षा में ही रहता है, ऐसे भ्रमोत्पादक विषय में इसका प्रयोग होता है ।

(389) *The maxim of sunrise and sunset.*

The maxim takes its origin from the erroneous notion regarding the motion of the sun who has, broadly, speaking, no motion, but still erroneously believed by people to be rising in the east and setting down in the west, and is used to denote various sorts of erroneous notions that the human nature is subject to.

सोपानारोहणन्यायः ॥ ३९० ॥

जैसे महल पर चढ़नेवाला एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी चढ़ता हुआ महल के ऊपर चढ़ जाता है वैसे ही शनैः शनैः कार्य करने में इस न्याय का प्रयोग होता है ।

(390) *The maxim of going upstairs.*

It is used to denote that one must perform his duties,

gradually, just as one going upstairs must proceed by passing the steps one after another.

सोपानावरोहणन्यायः ॥ ३९१ ॥

जिस क्रम से सीढ़ी पर चढ़ा जाता है शनैः २ उलटे क्रम से उतरा जाता है, नहीं तो गिरने का डर रहता है।

(391) *The maxim of coming downstairs.*

Just as one coming down from the first floor or the second floor must have to pass the steps in gradual succession, or there is every chance of suffering a fall and breaking his limbs, so in retracing one's course in the performance of a work, he should proceed very cautiously, or his whole previous labour may come to nothing.

स्थालीपुलाकन्यायः ॥ ३९२ ॥

बटुआ में एक चावल पका हुआ देखने से मालूम हो जाता है कि समस्त चावल पक गया।

(392) *The maxim of the cooking pot and boiled rice.*

In a cooking pot all the grains being equally moistened by the hot water, when one grain is found to be well cooked, the same may be inferred with regard to other grains. So the maxim is used when the condition of the whole class is inferred from that of a part.

स्थावरजङ्गमविषन्यायः ॥ ३९३ ॥

विष स्थावर हो अथवा जंगम हो दोनों ही मृत्यु के कारण हैं।

(393) *The maxim of poison—movable and immovable.*

Poison, obtained whether from any thing or any animal, may in all cases prove fatal. Similarly an evil, be it done by a friend or a foe, always produces an injurious effect.

स्थूणानिखननन्यायः ॥ ३९४ ॥

स्थूणा (खम्भा) बार २ हिलाकर तब मजबूत गाड़ा जाता है।

(394) *The maxim of digging or fixing in the post.*

As a stake or post to be firmly fixed in the ground is again and again moved and thrust inward, so this maxim is used when one (say a disputant) adds several corroborative illustrations, arguments &c. to strengthen and confirm still more his position already strong.

स्थूलारुन्धतीन्यायः ॥ ३६५ ॥

वर और वधू को विधि के अनुसार ध्रुव और अरुन्धती के तारे को दिखाने के लिये लोग पहले चन्द्रमा को दिखाते हैं तब चन्द्रमा के समीप में रहनेवाली तारा को दिखाते हैं, तब उसके समीप में रहनेवाली सप्तर्षि की तारा दिखाते हैं, तब वशिष्ठ की तारा को निश्चय करके बताते हैं।

(395) *The maxim of a huge thing and a tiny thing (like the star Arundhati.)*

This maxim takes its origin from the custom of showing the star *Arundhati* to the bride and the bridegroom at the close of the marriage ceremony. At that time attention of both is first drawn to the moon, and from the moon to a big star close by, and thus gradually to *Arundhati*, which is a very tiny star. It is used in cases when with a view to bring a very small thing to one's notice, his attention is first drawn to a big and conspicuous object near by and then gradually to the thing in question.

स्फटिकलौहित्यन्यायः ॥ ३६६ ॥

स्फटिक मणि के सामने जपा के फूल रखने से वह लाल दिखाई पड़ता है फिर हटाने से सफेद ही रहता है।

(396) *The maxim of the crystal and the red flower called japa.*

This maxim is used to denote the property of a purely transparent object to reflect the colour of a thing presented before it, just as a crystal which is naturally white, looks red, when a red flower called *japa*, is placed before it, and the flower being removed, the crystal assumes its own white colour again.

स्वकरकुचन्यायः ॥ ३६७ ॥

जैसे अपने आप कुच मर्दन करनेवाली युवती स्त्री आनन्द को नहीं पाती है वैसेही जिज्ञासु अपने से ज्ञान नहीं पाता है।

(397) *The maxim of a female's pressing her breast.*

This maxim is used to denote the fruitlessness of attempts on the part of a seeker of knowledge to acquire it only through his own exertion without any help from a teacher, just as the attempt of a young woman to

enjoy pleasure by rubbing her own breast proves quite fruitless.

स्वप्नमन्त्रलाभन्यायः ॥ ३९८ ॥

स्वप्न के मन्त्रलाभ से कोई सिद्धि नहीं होती है।

(398) *The maxim of getting a mantra in dream.*

This maxim takes its origin from the fact that a *mantra* in order that it may secure success to a worshipper must be obtained not in a dream but from a *guru* or a preceptor, who has himself attained success, and is used to denote that to be able to attain success in any undertaking one must submit himself to the guidance of an experienced teacher.

स्वप्नव्याघ्रन्यायः ॥ ३९९ ॥

स्वप्न में मिला हुआ व्याघ्र स्वप्न के बाद नहीं रहता है।

(399) *The maxim of the tiger dreamt in a dream.*

This maxim is used to indicate the unsubstantial and worthless nature of an imaginary dread just as the fear of the tiger dreamt in sleep is quite worthless.

स्वभावो दुरतिक्रमो न्यायः ॥ ४०० ॥

अपनी आदत नहीं छुटती है।

(400) *The maxim of Nature is unchangeable.*

This maxim is used to denote that one's own nature is not changed.

स्वामिभृत्यन्यायः ॥ ४०१ ॥

स्वामी प्रधान और नौकर अप्रधान है।

(401) *The maxim of the master and the servant.*

This maxim is used to denote the unchangeableness of the relation subsisting between the two persons and the necessity of the discharge of duties attached to the positions of those persons respectively, just as it is with regard to the master and the servant.

स्वाङ्गं स्वव्यवधायकं न भवति न्यायः ॥ ४०२ ॥

अपना अंग अपने से नहीं छिपा रहता है।

(402) *The maxim of a person and his limbs.*

Just as a person knows fully well the condition of his different limbs, so the head of a family or a corporate body

is expected to know the merits and demerits of all under his protection or guidance.

स्वपक्षहानिकर्तृत्वात्स्वकुलाङ्गारतांगत इति न्यायः ॥ ४०३ ॥

अपने पक्ष की हानि करनेवाला कुलाङ्गार के समान है।

(403) *The maxim of the one who fouls one's own nest.*

This maxim is used to denote that he who fouls his own nest is a disgrace of the family he belongs to.

ह

हस्तामलकन्यायः ॥ ४०४ ॥

हाथ पर धात्रीफल रखने से उसका सब अंग देखने में आता है।

(404) *The maxim of the amalak (a fruit of the Emblis amaroblams) on the palm of the hand.*

This maxim is used to denote the facility of studying a thing most familiarly over which one has full control just as an *amalak* fruit on the palm of the hand may be easily and fully known in all its various particulars.

हस्तियूथपतिन्यायः ॥ ४०५ ॥

हाथी के झुण्डों का जो नेता होता है वह वीर सबके आगे चलनेवाला सबका रक्षक सहायक और पालक होता है। मनुष्य के सामाजिक नेता को वैसा होना चाहिये। यह नेतृत्व प्रतिपादकन्याय है।

(405) *The maxim of the leader of a herd of elephants.*

The maxim is used to denote that a popular leader must have courage, strength and discretion enough to guide, help, and protect his followers, just as a leader of the herd of elephants.

ह्रदनक्रन्यायः ॥ ४०६ ॥

जलाशय में रहकर मगर से विरोध असंभव है अर्थात् जिसके अधिकार में रहना उससे विरोध असंभव है।

(406) *The maxim of the lake and the crocodile.*

This maxim originates from an idea, that if any one live in a lake and quarrel with the crocodile in possession of that lake, he is sure to get the worst of it, and is used to denote that it is unwise and injurious, on the part of a person to serve a master and at the same time to find fault with his principles etc.

सुभाषितावलिः।

अ

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमाङ्गतिम्॥

"ॐ" इस एकाक्षर ब्रह्म के नाम को कहते हुए और श्रीभगवान् का स्मरण करते हुए जो स्थूल शरीर को छोड़ता हुआ जाता है वह परमगति को प्राप्त होता है।

अकुण्ठं सर्वकार्येषु धर्म्मकार्यार्थमुद्यतम्।
वैकुण्ठस्य हि यद्रूपं तस्मै कार्य्यात्मने नमः॥

जो सब कार्य्यों में अवारितगति हैं, जो धर्मकार्य्यों के लिये उद्यत हैं और जो वैकुण्ठ के अर्थात् अकुण्ठित भाव के स्वरूप हैं उन कार्य्यात्मा भगवान् को प्रणाम है।

अवेक्षते केलिवनं प्रविष्टः क्रमेलकः कण्टकजालमेव।

ऊंट क्रीड़ावन में जाकर कांटों को ही देखता है।

अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्।

जिसके कुल और स्वभाव ज्ञात नहीं हैं ऐसे किसी को वासस्थान न देना चाहिये।

अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते।

सब गुणों को दबाकर स्वभाव ऊपर ही रहता है।

अधोमुखस्यापि कृतस्य वह्ने-
र्नाधः शिखा याति कदाचिदेव।

अग्नि को निम्न मुख करने पर भी उसकी ज्वाला कभी भी नीचे को नहीं जाती।

अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।

सुकृती पुरुष स्वीकृत वस्तु का पालन करते हैं।

अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते।

जो अपकार करनेवाले की भलाई करता है सज्जन पुरुष उसीको साधु कहते हैं।

आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते
मृद्गन्धं न च कुसुमानि धारयन्ति।

मिट्टी ही फूल के गन्ध को धारण करती है परन्तु फूल मिट्टी के गन्ध को धारण नहीं करता है।

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं ।
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ॥

भाग्य अनुकूल रहने से रक्षा न करने पर भी रक्षित रहता है किन्तु भाग्य के प्रतिकूल होने पर भली भांति रक्षा करने पर भी विनष्ट होजाता है।

असंपादयतः कंचिदर्थं जातिक्रियागुणैः ।
यदृच्छाशब्दवत्पुंसः संज्ञायै जन्म केवलम् ॥

जाति, क्रिया और गुणों से किसी प्रयोजन को नहीं संपादन करनेवाले पुरुष का जन्म यदृच्छा शब्द के समान केवल संज्ञा के लिये होता है।

अन्तःसारविहीनस्य सहायः किं करिष्यति ।

जो अन्तःसाररहित है उसका सहायक क्या करेगा अर्थात् कुछ भी नहीं कर सकता।

अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

अत्यन्त सब जगह वर्जनीय है।

अतिरमणीये काव्येपि पिशुनो दोषमन्वेषयत्येव ।

अति मनोहर काव्य में भी खल दोष का ही अन्वेषण करता है।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

यह अपना है और यह दूसरा है यह विचार छोटे हृदयवालों का है।

अहो गुणानां प्राप्त्यर्थं यतन्ते बहुधा नराः ।

अहो ! गुणों की प्राप्ति के लिये मनुष्य अनेक प्रकार के यत्न करते हैं

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।

छोटी वस्तुओं का भी सङ्ग कार्यसाधक होता है।

अहो दुर्जनसंसर्गादात्महानिः पदे पदे ।

अहो ! दुर्जन के संसर्ग से पद-पद में अपनी हानि होती है।

अणुरप्यसतां सङ्गः सद्गुणं हन्ति विस्तृतम् ।

दुर्जन का अणुमात्र भी संसर्ग विस्तृत उत्तम गुण को नष्ट करता है।

असत्सङ्गाद् गुणज्ञोपि विषयासक्तमानसः ।

दुष्ट के संसर्ग से गुणज्ञ भी विषयासक्त चित्त (विषयी) हो जाता है।

अयाचितः सुखं दत्ते याचितश्च न यच्छति ।
सर्वस्वं चापि हरते विधिरुच्छृङ्खलं नृणाम् ॥

उद्दण्ड दैव विना मांगे मनुष्यों को सुख देता है और मांगने पर नहीं देता है प्रत्युत सर्वस्व हर लेता है।

अलसमपि भाग्यवन्तं भजते पुरुषार्थितेव श्रीः।

भाग्यवान् यदि आलसी भी हो तो उसको लक्ष्मी पुरुष के समान कामुकी बनकर भजती है।

अव्यक्तानि च भाषन्ते धनिनो मद्यपा इव।

धनीलोग मद्यपों के समान स्पष्ट नहीं बोलते।

अन्तरं नैव पश्यामि निर्धनस्य मृतस्य च।

धनहीन और मृतक में भेद नहीं ही देखता हूँ।

अनुगन्तुं सतां वर्त्म कृत्स्नं यदि न शक्यते।
स्वल्पमप्यनुगन्तव्यं मार्गस्थो नावसीदति॥

यदि सज्जनों के मार्ग का पूर्णतया अनुगमन नहीं करसके तो थोड़ा भी उसका अनुगमन करना चाहिये क्योंकि मार्ग पर चलनेवाला दुःख नहीं पाता है।

अपि सम्पूर्णतायुक्तैः कर्तव्याः सुहृदो बुधैः।

बुद्धिमानों को चाहिये कि सम्पूर्ण समृद्धियुक्त होने पर भी मित्रों का संग्रह करें।

अन्यायोपार्जितं वित्तं दशवर्षाणि तिष्ठति।

अन्याय से उपार्जित धन दश वर्ष तक ठहरता है।

असती भवति सलज्जा क्षारं नीरं च शीतलं भवति।
दम्भी भवति विवेकी प्रियवक्ता भवति धूर्त्तजनः॥

व्यभिचारिणी स्त्री सलज्जा होती है, क्षार (खारा) जल ठण्डा होता है, कपटी पुरुष विवेकी होता है और धूर्त्त प्रियवक्ता होता है।

अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः।

पण्डित लोग न कही हुई बातको भी समझ जाते हैं।

असंतुष्टा द्विजा नष्टाः।

असंतोषी ब्राह्मण नष्ट होते हैं।

असंमाने तपो वृद्धिः।

सम्मान न होने पर तपकी वृद्धि होती है।

अपुत्रस्य गृहं शून्यम्।

पुत्रहीन का घर शून्य है।

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।

विद्वान् पुरुष को अजर अमर के समान अपने को समझ कर विद्या और धन का चिन्तन करना चाहिये।

अजीर्णे भोजनं विषम्।

अजीर्ण होने पर भोजन करना विष है।

अयशः प्राप्यते येन येन चापगतिर्भवेत् ।
स्वर्गाच्च भ्रश्यते येन तत्कर्म न समाचरेत् ॥

जिससे अपकीर्ति हो, जिससे अधोगति हो और जिससे स्वर्ग से पतन हो उस कार्य को न करना चाहिये ।

अकाञ्चनेऽकिञ्चननायिकाङ्के किमारकूटाभरणेन न श्रियः ।

सुवर्ण के भूषण से रहित दरिद्र स्त्री के अंग में क्या पीतल के भूषण से शोभा नहीं होती है ?

अनुकूलं दैवं सर्वस्मै स्वस्ति करोति ।

अनुकूल दैव सबका कल्याण करता है ।

अलङ्घनीया राजाज्ञा ।

राजा की आज्ञा का उलङ्घन नहीं करना चाहिये ।

अपेयेषु तटाकेषु बहुतरमुदकं भवति ।

अपेय (जिसका जल पीने योग्य नहीं है) तलावों में बहुत जल होता है ।

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः ।

जिसका कोप बँधा हुआ नहीं है अर्थात् अव्यर्थ क्रोध करनेवाले और इसी कारण आपत्तियों को नाश करनेवाले के सब लोग स्वयं वशीभूत होजाते हैं ।

अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।

पाषाण भी रोता है और वज्र का हृदय भी फटता है ।

अहेतुः पक्षपातो यस्तस्य नास्ति प्रतिक्रिया ।

विना कारण के पक्षपात का प्रतीकार नहीं है ।

अनेकशः संस्तुतमप्यनल्पा नवं नवं प्रीतिरहो करोति ।

अधिक प्रीति अनेकबार परिचय होने पर भी अहो बार बार नवीनता को ही प्रगट करती है ।

अनवहितमानसानां भवन्ति नित्यं भयोदयस्थानम् ।

असावधान चित्तवालों के लिये सदा भयोत्पत्ति का स्थान बना रहता है ।

अर्थो हि कन्या परकीय एव ।

कन्या दूसरे का ही धन है यह निश्चित है ।

अन्यायिनं द्रुतमुदस्यति राज्यलक्ष्मीः ।

अन्यायी व्यक्ति को राज्यलक्ष्मी शीघ्र छोड़ देती है ।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।

श्रीभगवान् शरणागत व्यक्ति को सब पापों से छुड़ादेते हैं इसकारण शरणागत व्यक्ति को कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिये ।

अतिपरिचयादवज्ञा ।
अत्यन्त परिचय हो जाने से अवज्ञा होती है ।

आचारः परमो धर्म्मः ।
आचार परमधर्मस्वरूप है ।

आचारमूला जातिः स्यादाचारः शास्त्रमूलकः ।
जाति आचारमूलक होती है और आचार शास्त्रमूलक होता है ।

आत्मनि सर्वभूतानि सूत्रे मणिगणा इव ।
आत्मा में ही सर्वप्राणिमात्र हैं जैसे सूत्र में माला की मणियें रहती हैं ।

आत्मवर्गहितमिच्छति सर्वः ।
सब लोग अपने वर्गका हित चाहते हैं ।

आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः ।
अनुकूल भाग्य इच्छित वस्तु को लाकर शीघ्र जुटा देता है ।

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च ।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः ॥
मूर्ख लोग तुच्छ कार्य को आरम्भ करके बहुत व्यग्र हो जाते हैं और धीर पुरुष महान् कार्य को आरम्भ करके भी अव्यग्र (स्वस्थचित्त) रहते हैं ।

आमरणान्ताः प्रणयाः कोपास्तत्क्षणभङ्गुराः ।
परित्यागाश्च निःसङ्गा भवन्ति हि महात्मनाम् ॥
महात्माओं का प्रेम मरण पर्यन्त रहता है, क्रोध उसी क्षण तक रहता है और परित्याग सङ्गरहित होता है ।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
आलस्य ही मनुष्यों के शरीर में रहनेवाला महान् शत्रु है ।

आपदि मित्रपरीक्षा ।
मित्र की परीक्षा आपत्ति में होती है ।

इ

इहलोकेपि धनिनां परोपि स्वजनायते ।
इस संसार में धनवान् पुरुष के लिये शत्रु भी अपना कुटुम्ब होजाता है ।

इन्द्रोपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।
अपने गुण की स्वयं प्रशंसा करने से इन्द्र भी तुच्छ होजाते हैं ।

ईशभक्ते न दारिद्र्यम् ।
शङ्करजी का भक्त दरिद्र नहीं होता ।

उ

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।

उद्यमी पुरुषश्रेष्ठ को लक्ष्मी मिलती है ।

उद्यमेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं मनोरथैः ।

जो कार्य उद्यम से सिद्ध होनेवाला है वह मन में विचार करने से नहीं सिद्ध होसक्ता है ।

उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने ।

जिस किसी मनुष्य को उपदेश नहीं देना चाहिये ।

उद्योगः खलु कर्त्तव्यः फलं मार्जारवद्भवेत् ।

उद्योग अवश्य ही करना चाहिये क्योंकि उसका फल बिडाल की तरह होता है, जैसे बिडाल गौ न रहने पर भी दूध रोजही पीता है ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

उदार पुरुष का कुटुम्ब पृथ्वी के सब लोग हैं ।

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।

मूर्खों के लिये उपदेश क्रोधवर्धक होता है शान्ति के लिये नहीं ।

उपकारमेव तनुते विपद्गतः सद्गुणो महताम् ।

विपत्ति में रहनेवाला भी सज्जन बड़ों का उपकार ही करता है ।

उपचरितव्याः सन्तो यद्यपि कथयन्ति नैकमुपदेशम् ।

यद्यपि सज्जन एक भी उपदेश नहीं दें तथापि उनकी सेवा करनी चाहिये ।

उद्यमं साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र विद्यन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छः जहां रहते हैं वहां देव भी सहायक होता है ।

उद्योगिनः करालम्बं करोति कमलालया ।

लक्ष्मी उद्यमी का हस्तावलम्बन करती हैं ।

उदारस्य तृणं वित्तम् ।

उदार के लिये धन तृण के समान है ।

उपकर्तुं यथा स्वल्पः समर्थो न तथा महान् ।
प्रायः कूपस्तृषां हंति सततं न तु वारिधिः ॥

छोटा जितना उपकार कर सक्ता है उतना महान् पुरुष नहीं कर सक्ते हैं । कूप सदाही प्यास को दूर करता है, समुद्र प्यास नहीं मिटासक्ता ।

उत्तमस्तोषमायाति तदङ्गं पोष्यते यदि।

उत्तम पुरुष उनको अङ्गभूत वस्तु की रक्षा करने से प्रसन्न होते हैं।

उपाधिभिः संततसंगतोऽपि न हि स्वभावं विजहाति भावः।

अनेक प्रकार की उपाधियों से संबन्ध होनेपर भी वस्तु अपने स्वभाव को नहीं छोड़ती है।

उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।

उचित या अनुचित कार्य करनेवाले विद्वान् को परिणाम अवश्य सोचना चाहिये।

उद्योगेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

उद्यम से कार्यसिद्धि होती है मनोरथ से कार्य्यसिद्धि नहीं हो सक्ती।

उत्साहात्कार्यसिद्धिः स्यात्।

उत्साह से कार्य की सिद्धि होती है।

उत्साहः परमं पदम्।

उत्साहही उत्कृष्ट स्थान है।

उत्साहिना सदा भाव्यम्।

सदा उत्साही रहना चाहिये।

उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा।

उपकार करनेवाले शत्रु से सन्धि करना चाहिये और अपकार करनेवाले मित्र से सन्धि नहीं करना चाहिये।

उपकृत्य निसर्गतः परेषामुपरोधं न हि कुर्वते महान्तः।

महान् पुरुष स्वभाव से ही दूसरे का उपकार कर प्रत्युपकार नहीं चाहते हैं।

उपचितेषु परेष्वसमर्थतां व्रजति कालवशाद्बलवानपि।

शत्रुओं के बढ़जाने पर समयानुसार बलवान् भी असमर्थ होजाता है।

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते।

कही हुई वस्तु को पशु भी ग्रहण कर सक्ता है।

ऋ

ऋणकर्ता पिता शत्रुः।

ऋण करनेवाला पिता शत्रु है।

ऋणशेषं न कारयेत्।

ऋण का शेष नहीं करना चाहिये ; अर्थात् ऋण बाकी नहीं रखना चाहिये।

ऋषयो राक्षसीमाहुर्वाचमुन्मत्तदृप्तयोः।

ऋषिलोग उन्मत्त और उच्छृङ्खल के वचन को राक्षसी वचन कहते हैं।

ऋणी लभेन्नैव कदापि मोक्षम्।

ऋणकर्ता का कभी मोक्ष नहीं हो सक्ता है जोकि ऋण करके ऋण नहीं देता है।

ऋषिर्नैव वदेन्मिथ्या।

ऋषि मिथ्या नहीं बोलते हैं।

ए

एकादिमध्यपरिणतिरमणीया साधुजनमैत्री।

सज्जनों की मैत्री आदि, मध्य और अन्त में एकरूप तथा मनोहर होती है।

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।

गुण के समूह में एक दोष चन्द्रकिरण में कलङ्क के समान छिप जाता है।

एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोपि च।

एकही चन्द्रमा अन्धकार को दूर करता है। ताराओं का समूह अन्धकार दूर नहीं कर सक्ता।

एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी॥

एकही सुपुत्र से सिंही निर्भय सोती है और दश पुत्रों को साथ लेकर गर्दभी भार ढोती है।

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योपि गर्हितम्।

एक का निन्दित कर्म देखकर दूसरा भी करता है।

एकस्मै स्पृहयालूनामिष्टाय सुधियामपि।
करस्थमेव ब्रुवते कलहं निधनावधिम्।

एकही इष्टवस्तु को चाहनेवाले विद्वान् पुरुषों को भी मरणपर्यन्त कलह हस्तगत रहता है।

एको देवः केशवो वा शिवो वा एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा।
एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा एको वासः पत्तने वा वने वा॥

एकही देव होना चाहिये केशव हों या शिव हों। स्त्री एकही होना चाहिये सुन्दरी हो या गुफा हो। मित्र एकही होना चाहिये राजा हो या साधु हो। निवास एकही जगह होना चाहिये नगर में हो या वनमें हो।

एकेन राजहंसेन सुशोभा सरसी भवेत्।

एकही राजहंस से सरोवर की उत्तम शोभा होती है।

एतदेव हि पाण्डित्यं न स्वल्पाद् भूरिनाशनम्।
यही विद्वत्ता है कि थोड़े के लिये बहुत का नाश नहीं करना।

क

किं दूरं व्यवसायिनाम्।
व्यवसाय करनेवाले पुरुष को कोई देश दूर नहीं है।

किं दुष्करं महात्मनाम्।
महान् पुरुष को कोई कार्य करना कठिन नहीं है।

क भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः।
भाग्यवान् पुरुष कहां भोग नहीं पाता है अर्थात् सब जगह उसको भोग्य पदार्थ मिलता है।

काचः काचो मणिर्मणिः।
काच काचही है और मणि मणिही है।

कीर्तिर्यस्य स जीवति।
जिसकी कीर्ति है वही जीता है।

कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।
कृतघ्न पुरुष की निष्कृति नहीं है अर्थात् कृतघ्नता का अपराध दूर करने के लिये कोई उपाय नहीं है।

किं न कुर्वन्ति सुभगे कष्टमर्थार्थिनो जनाः।
धनार्थी पुरुष क्या नहीं करसक्ते हैं अर्थात् सब कुछ करसक्ते हैं।

कृपणेन समो दाता न भूतो न भविष्यति।
अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति॥
कृपण के समान कोई दाता न हुआ न होगा क्योंकि अपने धन को नहीं स्पर्श करते हुए दूसरे को देता है।

कोऽतिभारः समर्थानाम्।
सामर्थ्यवाले को कोई भी कार्य भारी नहीं होता है।

क्षमारूपं तपस्विनाम्।
तपस्वी पुरुष का क्षमा ही रूप है।

कार्याकार्यविचारो लोभविमूढस्य नास्त्येव।
लोभग्रस्त पुरुष को कर्तव्याकर्तव्य का विचार नहीं होता है।

किं करोति नरः प्राज्ञः शूरो वाप्यथ पण्डितः।
दैवं यस्य छलान्वेषि करोति विफलाः क्रियाः॥
भाग्य जिससे सदा छल कर रहा है वह मनुष्य वीर हो या पण्डित हो

तब भी कुछ नहीं करसक्ता ।

कृशः कस्यास्ति सौहृदम् ।

दुर्बल से किसकी मैत्री होती है ?

किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः ।

विद्याहीन मनुष्य का उत्तम कुल में जन्म होने से क्या ?

कवीश्वराणां वचसां विनोदैर्नन्दन्ति विद्यानिधयो न चान्ये ।

उत्तम कवियों के वाग्विलास से उत्तम विद्वान् लोग ही आनन्दित होते हैं, मूर्ख लोग नहीं ।

कर्पूरः पावकस्पृष्टः सौरभं लभतेतराम् ।

अग्नि से स्पृष्ट होने पर कपूर से अधिक सुगन्धि निकलती है ।

क्षणक्षयिणि सापाये भोगे रज्यन्ति नोत्तमाः ।

क्षणमात्र में नष्ट होनेवाले और विघ्न से भरे हुए भोग में उत्तम पुरुष नहीं अनुरक्त होता है ।

क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधु ह्यम्भः ।

मेघ समुद्र का क्षार जल पीकर अमृत के समान जल बरसाता है ।

किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत् ।

शरीर धारण करके यदि जितेन्द्रिय न हुआ तो सब व्यर्थ है ।

क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतान्नोपकरणे ।

महान् पुरुष की क्रियासिद्धि पराक्रम में होती है बाह्योपकरण में नहीं ।

क्वचित्सर्पोपि मित्रत्वमायान्नैव खलः क्वचित् ।

कभी सर्प मित्र बन जाता है परन्तु खल मित्र नहीं होता है ।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।

काव्यशास्त्र के विनोद में बुद्धिमानों का समय जाता है ।

कवित्वं दुर्लभं लोके शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ।

लोक में कविता करना कठिन है उसमें भी शक्ति का होना और भी कठिन है ।

कृच्छ्रेपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मनः ।

धीर पुरुष का मन क्लेश में भी चलायमान नहीं होता ।

क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति ।

जिसके हाथ में क्षमा शस्त्र है उसका दुर्जन क्या करसक्ता है ।

किंचिदाश्रयसंयोगाद्धत्ते शोभामसाध्वपि ।

किसी उत्तम आश्रय के संयोग से नीच वस्तु भी शोभा को धारण करती है ।

कर्मणा बाध्यते बुद्धिर्न बुद्ध्या कर्म बाध्यते ।

कर्म से बुद्धि बाधित होती है और बुद्धि से कर्म बाधित नहीं होता है।

कलौ वेदान्तिनो भान्ति फाल्गुने बालका इव।

जैसे फाल्गुन मास में बालक मनमाना बकते हैं वैसे ही कलियुग में वेदान्ती बकते हैं।

कुपुत्रेण कुलं नष्टम्।

कुपुत्र होने से कुल का नाश होता है।

कृतस्य करणं नास्ति।

किये हुए को करना नहीं होता है।

कृते प्रतिकृतिं कुर्याद्धिंसिते प्रतिहिंसितम्।

उपकार करनेवाले का उपकार करना चाहिये, हिंसा करनेवाले के प्रति हिंसा करनी चाहिये।

किमाराध्यं सदा पुण्यं कश्च सेव्यः सदागमः।
को ध्येयो भगवान् विष्णुः किं काम्यं परमं पदम्।

सदा किसकी आराधना करनी चाहिये ? पुण्य की, और किसकी सेवा करनी चाहिये ? उत्तम शास्त्र की, किसका ध्यान करना चाहिये ? विष्णु भगवान् का, और किसकी इच्छा रखनी चाहिये ? मोक्षपद की।

कार्यापेक्षी जनः प्रायः प्रीतिमाविष्करोत्यलम्।

प्रायः कार्याभिलाषी मनुष्य अधिक प्रीति प्रगट करता है।

कटुकं वा मनोहरं वा प्रस्तुतवाक्यं मनोहारि
वामे गर्दभनादश्चित्तप्रीत्यै प्रयाणेषु।

कटु हो या मनोहर हो परन्तु समयोपयोगी वाक्य मनोहर ही होती है जैसे यात्रा में वाम भाग में गदहे का स्वर उत्तम शकुन होता है।

कुपात्र दानाच्च भवेद्दरिद्रः।

कुपात्र में दान करने से दरिद्र होता है।

क्रोधो हि शत्रुः प्रथमं नराणाम्।

मनुष्यों का प्रथम क्रोध ही शत्रु है।

कुदेशमासाद्य कुतोऽर्थसंचयः।

कुदेश में जाकर धन संचय कैसे हो सक्ता है।

कुपुत्रमासाद्य कुतो जलाञ्जलिः।

कुपुत्र को पा कर जलाञ्जलि कैसे मिल सक्ती है।

कुगेहिनीं प्राप्य कुतो गृहे सुखम्।

दुष्ट स्त्री पाकर कैसे घर में सुख हो सक्ता है।

कुशिष्यमध्यापयतः कुतो यशः।

दुष्ट शिष्य को पढ़ानेवाले का यश कहां से हो सक्ता है ।

किं जीवितेन पुरुषस्य निरक्षरस्य ।

निरक्षर होकर जीवित रहना व्यर्थ है ।

किं सेवया यदि परोपकृतौ न यत्नः ।

यदि परोपकार में यत्न न किया जाय तो केवल सेवा करना व्यर्थ है ।

किं यौवनेन विरहो यदि वल्लभायाः ।

यदि स्त्री का वियोग ही रहे तो यौवन निरर्थक है ।

किं संगमेन तनयो यदि नेक्षणीयः ।

स्त्रीप्रसंग करना व्यर्थ है यदि पुत्रोत्पत्ति न हो ।

किं भूषणं सुदृढमत्र यशो न रत्नम् ।

इस संसार में अच्छा भूषण क्या है ? यश है रत्न नहीं है ।

कलासीमा काव्यम् ।

कला की सीमा काव्य ही है ।

कर्मायत्तं फलं पुंसाम् ।

पुरुष को कर्मानुसार ही फल मिलता है ।

किं करिष्यन्ति वक्तारः श्रोता यत्र न विद्यते ।

यदि सुननेवाला न हो तो वक्ता क्या कर सक्ता है ।

किं कोकिलस्य विरुतेन गते वसन्ते ।

वसन्त के व्यतीत हो जाने पर कोकिल की मनोहर ध्वनि से क्या ?

किं कातरस्य बहुशस्त्रपरिग्रहेण ।

कातर पुरुष के बहुत से शस्त्र धारण करने से क्या फल है ।

कुलीनता यत्र न तत्र रूपं यत्रास्ति रूपं न कुलं च तत्र ।

जहां रूप है वहां कुलीनता नहीं है, जहां कुलीनता है वहां रूप नहीं है ।

किमिव हि मधुराणां भूषणं नाकृतीनाम् ।

मनोहर आकारवाले का सब ही भूषण है ।

कमीशते रमयितुं गुणाः ।

गुण किसको प्रसन्न करने में समर्थ नहीं है ?

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।

विद्वान् का समय काव्यशास्त्र के आनन्द में व्यतीत होता है ।

क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः ।

क्रिया में नियुक्त किये गये कर्मचारियों को स्वामी को वञ्चित करना नहीं चाहिये ।

काले काले समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः।

समय समय में नियुक्त नीति फल को देती है।

के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः।

जो निष्फल आरम्भ में यत्न करते हैं वे अनादर को प्राप्त होते हैं।

कार्पण्यं तु सदा हेयम्।

कृपणता सदा छोड़नी चाहिये।

कार्पण्यं दोषपोषकम्।

कृपणता दोषों को बढ़ाती है।

काले फलन्ति नीतयः।

नीति का फल समय आने पर मिलता है।

का चिन्ता मम जीवने यदि हरिर्विश्वम्भरो गीयते।

यदि विष्णु संसार के पोषक कहे जाते हैं तो हमारे जीवन में क्या चिन्ता है।

काकः काकः पिकः पिकः।

कौआ कौआ ही है और कोकिल कोकिल ही है।

कालः कं नैव भक्षयेत्।

काल किसको नहीं खा सक्ता है।

कालो हि बलवान् सदा।

काल सदाही बलवान् है।

कर्म्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

कर्म करने का ही तुम्हारा अधिकार है। कर्मफल की ओर दृष्टि डालने का तुम्हारा कभी भी अधिकार नहीं है।

कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाऽचेतनेषु।

चेतन अर्थात् चेतन राज्य के जीव मनुष्यादि और अचेतन अर्थात् जड़ राज्य के उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज जीव, इन दोनों प्रकार के ही जीवों में कामोन्मत्त होने के समय स्वभाव से ही कृपणता अर्थात् कायरपन आजाता है। कामी स्वभाव से ही कायर होता है यही तात्पर्य्य है।

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः।

उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ है जो न विद्वान् है और न धार्मिक है। मूर्ख और पापी पुत्र के उत्पन्न होने की अपेक्षा उसका उत्पन्न न होना ही अच्छा है यही तात्पर्य्य है।

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।

विद्या के द्वारा कल्पवल्ली के समान क्या क्या साधन नहीं होसक्ता है; अपि तु विद्या के द्वारा सकल कार्य सिद्ध हो सक्ते हैं।

क्षमातुल्यं तपो नास्ति।
क्षमा के समान तप नहीं है।

ख

खलः सत्क्रियमाणोपि ददाति कलहं सताम्।
दुग्धधौतोपि किं याति वायसः कलहंसताम्॥
दुर्जन मनुष्य सत्कार करने पर भी सज्जनों के साथ कलह करता है-यह बात सत्य ही है क्योंकि दूध से धोने पर भी कौआ हंस नहीं बन सक्ता।

खलसङ्गेपि नैष्ठुर्यं कल्याणप्रकृतेः कुतः।
श्रेष्ठ प्रकृतिधारी में खल के संसर्ग से भी क्रूरता नहीं आती।

खद्योतो द्योतते तावद्यावन्नोदयते शशी।
खद्योत तभी तक प्रकाश कर सक्ता है जब तक चन्द्रमा का उदय नहीं होता है।

ग

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवंशो निरर्थकः।
गुण सर्वत्र पूजित होता है मातृवंश तथा पितृवंश का बड़ापन व्यर्थ है।

गुणैर्गौरवमायाति न महत्यापि संपदा।
गुण से गौरव होता है बड़ी संपत्ति से नहीं।

गुणैः सर्वज्ञकल्पोपि सीदत्येको निराश्रयः।
गुणों से शङ्कर के समान होने पर भी आश्रय के विना मनुष्य क्लेश पाता है।

गुणेषु क्रियतां यत्नः किमाटोपैः प्रयोजनम्।
गुण में ही यत्न करना चाहिये, वृथा आटोप से कुछ प्रयोजन नहीं सिद्ध होता है।

गुणैरुत्तुङ्गतां याति नोच्चैरासनसंस्थितः।
मनुष्य गुण से ऊंचा होता है, ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं।

गुणो दूषणतां याति दूषणं गुणतां क्वचित्।
कहीं गुण दोष होता है और कहीं दोष गुण हो जाता है।

गुणवन्तः क्लिश्यन्ते प्रायेण भवन्ति निर्गुणाः सुखिनः।
प्रायः गुणवान् पुरुष ही क्लेश को पाते रहते हैं और निर्गुण पुरुष सदा सुखी रहते हैं।

गोत्रस्थितिं न मुञ्चन्ति सदा सन्नतिमाश्रिताः।
उदन्वन्तश्च सन्तश्च महासत्त्वतयानया॥

समुद्र और महान् पुरुष महासत्त्ववान् होने से अपनी गोत्र मर्यादा को नहीं छोड़ते हैं और सदा नम्र रहते हैं।

गुणमेव वक्ति साधुर्दोषमसाधुः प्रकाशयति।

सज्जन गुण को ही प्रकाश करता है और असज्जन दोष को ही प्रकाश करता है।

गुणिनामपि निजरूपप्रतिपत्तिः परत एव भवति।

गुणवान् को भी अपने स्वरूप का ज्ञान दूसरे के द्वारा ही होता है।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति।

गुण गुण के जाननेवाले में ही गुण होता है।

गुणवज्जनसंपर्काद् याति स्वल्पोपि गौरवम्।

गुणीजन के संसर्ग से निर्गुण भी गौरव युक्त हो जाता है।

गुणोपि दोषतां याति वक्रीभूते विधातरि।

विधाता के प्रतिकूल होने पर गुण भी दोष हो जाता है।

गुणिनं जनमालोक्य निजबन्धनशङ्कया।
राजँल्लक्ष्मीः कुरङ्गीव दूरं दूरं पलायते।

हे राजन्! गुणी पुरुष को देख कर अपने बन्धन की शङ्कासे लक्ष्मी मृगी के समान दूर भागती है।

गतेपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।

अवस्था बीत जाने पर भी विद्वान् पुरुष को सर्वथा विद्या का ग्रहण करना चाहिये।

गुणवानपि नोपयाति पूजां पुरुषः सत्पुरुषैरकथ्यमानः।

गुणवान् पुरुष भी सत्पुरुषों के विना कहे पूजित नहीं होता है।

गुणैकपक्षपातिनां रिपोरपि गुणाः प्रीतिं जनयन्ति।

केवल गुण में पक्षपात रखनेवाले को शत्रु का भी गुण प्रीति प्राप्त करा सक्ता है।

गुणाः प्रियत्वेऽधिकृता न संस्तवः।

प्रियता में गुण ही अधिकारी हैं स्तुति नहीं।

गुणेन केनापि जनेऽनवद्ये दोषान्तरोक्तिः खलु तत्खलत्वम्।

दोष से सर्वथारहित मनुष्य में जो दोष लगाता है वह उसकी खलता है।

गुणगृह्या वचने विपश्चितः।

विद्वान् लोग वचन में गुणग्राही होते हैं।

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

गुणी में पूजा के स्थान गुण ही होते हैं लिङ्ग (चिह्न) और अवस्था की पूजा नहीं होती है।

च

चण्डालश्च दरिद्रश्च द्वावेतौ सदृशाविह ।
चण्डालस्य न गृह्णन्ति दरिद्रो न प्रयच्छति ।

चण्डाल और दरिद्र दोनों समान ही हैं क्योंकि चण्डाल की वस्तु कोई ग्रहण नहीं करता है और दरिद्र किसी को देता नहीं है ।

चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः ।

उत्तम क्षेत्र में की हुई खेती मूर्ख को भी फलती है ।

चिन्ता जरा मनुष्याणाम् ।

मनुष्यों के लिये चिन्ता ही बुढ़ापा है ।

चिन्तासमं नास्ति शरीरदूषणम् ।

चिन्ता के समान कोई शरीर का दूषण नहीं है ।

चकास्ति योग्येन हि योग्यसंभवः ।

योग्य के साथ योग्य का समागम शोभता है ।

ज

जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समागतिः ।

मानहीन पुरुष और तृण बराबर ही है ।

जलसेकेन वर्धन्ते तरवो नाश्मसंचयाः ।

जल से सींचने से वृक्ष बढ़ते हैं पाषाण नहीं ।

जीवन्तोपि मृताः पञ्च व्यासेन परिकीर्तिताः ।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खः प्रवासी नित्यसेवकः ।

व्यासजी ने कहा है कि जीते हुए पांच मरे के समान हैं, जैसे—दरिद्र, रोगी, मूर्ख, परदेशी और नित्य सेवक ।

जन्तोर्निरुपभोगस्य दृश्यते भुवि रूक्षता ।

उपभोग से हीन पुरुष रुक्ष रहता है ।

जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् ।

घोड़े का वेगही उत्तम भूषण है ।

ज्यायांसमपि शीलेन विहीनं नैव पूजयेत् ।

अपने से श्रेष्ठ भी यदि शीलहीन हो तो उसकी पूजा नहीं करनी चाहिये ।

जात्यो न भाति तुरगः खरयूथमध्ये ।

जात्यश्व घोड़ा गदहों के बीच में नहीं शोभता है ।

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।

उसको नित्य संन्यासी जानना चाहिये जो न किसी से द्वेष करता हो और न कुछ किसी से चाहता हो।

जनिता चोपनेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति।

अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः॥

जनक, उपनयन करनेवाला, विद्या पढ़ानेवाला, अन्नदाता और भय से रक्षा करनेवाला ये पांच पिता हैं।

जरा रूपं हरति।

बुढ़ापा रूप को हरण कर लेता है।

जरया बलं विनष्टं स्यात्।

बुढ़ापे से बलका नाश होजाता है।

जनः किलाचारमुचं विगायति।

आचारहीन पुरुष की लोग निन्दा करते हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

गर्भधारिणी माता और जन्मभूमि ये दोनों स्वर्ग की अपेक्षा भी विशेष सुखप्रद होती हैं।

जडैर्जीवगणैर्विश्वं विषयात्मकमीक्ष्यते।

जगत्प्रपञ्चजातं तु ज्ञानवद्भिर्विवेकिभिः।

परिणामीति विज्ञाय दुःखरूपं प्रतीयते॥

जड़ अर्थात् मूर्ख वा अज्ञानी जीव इस जगत् को विषयात्मक देखते हैं और विवेकवान् ज्ञानी व्यक्तियों को तो यह सब जगत्प्रपञ्च परिणामी होने के कारण दुःखरूप प्रतीत होता है।

त

ते सर्वे धनवृद्धस्य द्वारे तिष्ठन्ति किंकराः।

ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध आदि सभी पुरुष धनवृद्ध पुरुष के पास भृत्य होकर रहते हैं।

त्यजेन्मायाविनं मित्रं धनं प्राणहरं त्यजेत्।

यदि मित्र कपटी हो तो उसका परित्याग करना चाहिये और जो धन प्राण का नाश करनेवाला हो तो उसका भी परित्याग करना चाहिये।

त्यजति कटुतां न स्वां निम्बः स्थितोपि पयोह्रदे।

दूध के तालाब में रखने पर भी निम्ब अपनी कटुता को नहीं छोड़ता है।

तुल्यं परोपतापित्वं क्रुद्धयोः साधुनीचयोः।

न दाहे ज्वलतोर्भिन्नं चन्दनेन्धनयोः क्वचित्।

क्रोध करनेवाला सज्जन और दुर्जन, दूसरे को समान ही कष्ट देनेवाले हैं, जैसे जलते हुए चन्दन और काठ में कोई भेद नहीं होता है।

तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं प्रार्थयेदिति॥

तृण से हलकी रुई और रुई से हलका याचक है, वायु ने डर से उसको नहीं उड़ाया क्योंकि उसने समझा कि मुझसे भी यह मांगेगा।

तेजस्विमध्ये तेजस्वी दवीयानपि गण्यते।

दूर रहनेवाला भी तेजस्वी पुरुष तेजस्वियों के मध्य में गिना जाता है।

तेजस्विनि क्षमोपेते नातिकार्श्यं समाचरेत्।

क्षमाशील तेजस्वी पुरुष के ऊपर कठोरपना नहीं करना चाहिये।

तुङ्गत्वमितरन्नाद्रौ नेदं सिन्धावगाधता।
अलङ्घनीयताहेतुरुभयं तन्मनस्विनि॥

पर्वत में उँचाई होती है और गम्भीरता नहीं होती और समुद्र में गम्भीरता होती है उँचाई नहीं रहती, मनस्वी में अलंघनीयता के कारण दोनों रहती हैं।

तादृशी जायते बुद्धिर्यादृशी भवितव्यता।

जैसा होनहार होता है वैसी ही बुद्धि हो जाती है।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे।

कुल के लिये एक का त्याग करना चाहिये।

तपःसीमा मुक्तिः।

तपस्या की सीमा मुक्ति है।

त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति।

त्रैलोक्य में किसमें दोष नहीं है।

तावच्च शोभते मूर्खो यावत्किंचिन्न भाषते।

मूर्ख तभी तक शोभता है जब तक बोलता नहीं।

तन्मित्रं यदकृत्रिमम्।

वही मित्र है जो अकृत्रिम हो।

तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।

तीर्थ का जल और अग्नि, इनकी दूसरे के द्वारा शुद्धि नहीं होती है।

तीव्रः स्मरसन्तापो न तथाऽऽदौ बाधते यथाऽऽसन्ने।
तपति प्रावृषि नितरामभ्यर्णजलागमो दिवसः॥

काम का सन्ताप अर्थात् उत्ताप जैसा काम्य वस्तु के निकट होने पर बाधा

देता है अर्थात् कष्टप्रद होता है वैसा आदि में अर्थात् सङ्कल्प करने कासमय कष्टप्रद नहीं होता है। जैसे चातुर्मास्य में वर्षा होने से पहले गर्मी अधिक होती है।

द

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोपि सन्।

विद्या से भूषित भी दुर्जन मनुष्य का परित्याग करना चाहिये।

दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी।

दरिद्रता आने से गुण का समूह नष्ट हो जाता है।

दुश्चारिणी च हसति स्वपतिं पुत्रवत्सलम्।

पुंश्चली स्त्री पुत्र को प्यार करनेवाले पति को हँसती है।

दन्तिदन्तसमानं हि निःसृतं महतां वचः।

कूर्मग्रीवेव नीचानां पुनरायाति याति च॥

जैसे हाथी का दाँत एकबार बाहर निकल जाने पर फिर भीतर नहीं जाता वैसे ही महान् पुरुष का वाक्य परिवर्तित नहीं होता है और नीचों का वाक्य कछुआ के गले के समान आता जाता रहता है।

द्रष्टदुर्जनदौरात्म्यः सज्जने रज्यते जनः।

दुर्जनों की नीचता देखकर लोग सज्जन में अनुरक्त होते हैं।

दोषा दोषा गुणा गुणाः।

दोष दोष ही है और गुण गुण ही है।

दुर्जनवचनाङ्गारैर्दग्धोपि न विप्रियं वदत्यार्यः।

दुर्जनोंके वचनरूपी अङ्गारसे जलेहुए भी सज्जन पुरुष कटुवाक्य नहीं बोलतेहैं।

दोषो गुणाय गुणिनाम्।

गुणी के लिये दोष भी गुणदायक होता है।

दानेन श्लाघ्यतां यान्ति पशुपाषाणपादपाः।

दान से पशु, पाषाण और पादप भी प्रशंसनीय होते हैं।

दुर्वृत्तसंगतिरनर्थपरम्पराया

हेतुः सतां भवति किं वचनीयमत्र।

सज्जनों को दुश्चरित्र पुरुष की संगति अनर्थकारिणी होती है।

दैवमुल्लङ्घ्य यत्कार्यं क्रियते फलवन्न तत्।

अदृष्ट के प्रतिकूल होने पर जो कार्य किया जाता है वह निष्फल होता है।

दैवे विमुखतां याते न कोप्यस्ति सहायवान्।

अदृष्ट के प्रतिकूल होनेपर कोई सहायक नहीं होता है।

दैवं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।

अदृष्ट ही सब जगह फलता है विद्या और पुरुषार्थ नहीं।

दैवं हि फलसाधनम् ।

फल का साधक दैवही है ।

दीपशिखाचञ्चला राजलक्ष्मीः ।

दीपज्वाला के समान राजलक्ष्मी चञ्चला है ।

द्रव्येण सर्वे वशाः ।

द्रव्य के आधीन सब हैं ।

दोषोपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेत्कृपा ।

यदि प्रभुकी कृपा हो तो दोष भी गुण हो जाता है ।

दानेन भोगी भवति ।

दान देनेसे भोक्ता होता है ।

दूरतः शोभते मूर्खः ।

मूर्ख दूर ही से शोभता है ।

दीपनिर्वाणगन्धं च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम् ।
न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः ॥

जो मरणासन्न होते हैं वे दीवा बुझने की सुगन्धि को नहीं सूंघ सक्के और मित्रवाक्य नहीं सुन सक्के और अरुन्धती की तारा को नहीं देख सक्के हैं ।

दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम् ।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् ।

दरिद्र होना और मरण होना इनमें हमको मरणही अच्छा लगता है दरिद्रता नहीं क्योंकि मरण में अल्प क्लेश होता है और दरिद्रता में अनन्त दुःख हैं ।

देवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे दैवज्ञे भेषजे गुरौ ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥

देव, तीर्थ, ब्राह्मण, मन्त्र, ज्योतिषी, वैद्य और गुरु, इनमें जिसकी जैसी भावना होती है वैसीही सिद्धि होती है ।

दरिद्रता धीरतया विराजते ।

दरिद्रता धीरता से शोभती है ।

देशाटनं पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभाप्रवेशः ।
अनेकशास्त्रार्थविलोकनं च चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च॥

देश परिभ्रमण, पण्डितों से मैत्री, वेश्या, राजसभा में प्रवेश और अनेक शास्त्र का अवलोकन, ये पांच चतुर होने के कारण हैं ।

दर्पणं किमपेक्षन्ते कङ्कणस्य निरीक्षणे ।

कँगना देखने के लिये क्या दर्पण की आवश्यकता होती है ?

ध

धर्मस्य त्वरिता गतिः ।

धर्म की गति बहुत शीघ्र है ।

धनिनोपि निरुन्मादाः युवानोपि न चञ्चलाः ।
प्रभवोप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः ॥

महान् पुरुष धनवान् होने पर भी उन्माद नहीं करते और युवावस्था आने पर भी चंचल नहीं होते और स्वामी होने पर भी प्रमाद नहीं करते हैं ।

धीराः सूनृतां वाचमाहुः ।

धीर सत्य वाणी बोलते हैं ।

धनेन किं यो न ददाति याचके ।

जो याचक को न दिया जावे उस धन से क्या प्रयोजन है ।

धन्यो जनः प्राकृतः ।

स्वाभाविक आचरणवाला मनुष्य धन्य है ।

धनमपि परदत्तं दुःखमौचित्यभाजाम् ।

धन भी यदि दूसरे के पास हो अथवा दूसरों का दिया हुआ हो तो सहृदयों के लिये दुःखदायक ही होता है ।

धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति ।

धन होने से नीचकुल भी कुलीन ही कहाता है ।

ध्यानशस्त्रं बकानां च ।

बगुलों का ध्यान ही शस्त्र है ।

धातुः परीक्षा दुर्भिक्षे ।

दुष्काल में धातु (सोना चांदी) की परीक्षा होती है ।

धनार्थी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम् ।

धनार्थी और कार्यार्थी दुःख और सुख को नहीं गिनता है ।

धर्म एको हि निश्चलः ।

एक धर्म ही स्थिर रहता है ।

धनाद्धर्मस्ततः सुखम् ।

धन से धर्म और धर्म से सुख होता है ।

धर्मेण हन्यते व्याधिः ।

धर्म से व्याधि हटाई जाती है ।

धर्महीना विगर्हिताः ।

धर्म से हीन की निन्दा होती है ।

धूसरापि कला चान्द्री न च बध्नाति लोचनम् ।
मलिन भी चन्द्रकला लोचन की प्रतिबन्धक नहीं होती है ।

धर्म्मं यो बाधते धर्म्मो न सद्धर्म्म कुधर्म तत् ।
जो धर्म अन्य धर्म का बाधक होता है वह सद्धर्म नहीं है कुधर्म है ।

धर्म्मो रक्षति रक्षितः ।
जो धर्म की रक्षा करता है उसको धर्म स्वयं रक्षा करता है ।

न

न हि दैवात्परं बलम् ।
दैव से बढ़कर कोई बल नहीं है ।

न ह्युद्यमसमो बन्धुः ।
उद्यम के समान कोई बन्धु नहीं है ।

न च व्याधिसमो रिपुः ।
रोग के समान कोई शत्रु नहीं है ।

न च विद्यासमो मित्रम् ।
विद्या के समान कोई मित्र नहीं है ।

नहि बन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् ।
बन्ध्या स्त्री प्रसव की कठिन पीड़ा को नहीं जानती है ।

न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते ।
शालि के पेड़ के बड़ापन या छोटापन होने में बोनेवाले के गुणकी अपेक्षा नहीं रहती ।

नहि सर्वत्र पाण्डित्यं सुलभं पुरुषे क्वचित् ।
सब मनुष्यों में पाण्डित्य नहीं पाया जाता है ।

न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
घर में आग के लगने पर कुआं खोदना व्यर्थ है ।

निजप्रतिज्ञामनुरुद्ध्यमाना महोद्यमाः कर्मसमारभन्ते ।
उद्योग करनेवाले पुरुष अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए कार्य का आरम्भ करते हैं ।

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।
धीर पुरुष न्यायमार्ग से च्युत नहीं होते हैं ।

नहि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मतः ।
चन्द्रमा चण्डाल के घर में भी अपनी चन्द्रिका प्रदान करता है ।

निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः ।
साधु पुरुष निर्गुण प्राणी के ऊपर भी दया करते हैं ।

नीचो वदति न कुरुते न वदति सुजनः करोत्येव ।
नीच पुरुष बकता है परन्तु कार्य नहीं करता है और सज्जन पुरुष वचन से कुछ नहीं कहता हुआ केवल कार्य ही करता है ।

नाल्पीयसि निबध्नन्ति पदमुन्नतचेतसः ।
उच्च मनवाले पुरुष अल्प कार्य में पैर नहीं रखते हैं ।

निर्गुणोपि मृतः पश्य जनैः शिरसि धार्यते ।
निर्गुण भी मरा हुआ शिर पर रक्खा जाता है ।

निरवद्यानि पद्यानि यद्यनाढ्यस्य का क्षतिः ।
भिक्षुकक्षाविनिक्षिप्तः किमिक्षुर्नीरसोभवेत् ।
दरिद्र पुरुष के भी बनाये हुए श्लोक यदि मनोहर हों तो क्या हानि है । जैसे भीख मांगनेवाले के घर में भी रक्खी हुई ऊख रस सहित ही होती है ।

न विषममृतं कर्तुं शक्यं यत्नशतैरपि ।
सैकड़ों यत्न करने पर भी विष अमृत नहीं बनसक्ता ।

नियतिः केन लङ्घ्यते ।
भाग्य को कोई भी नहीं उल्लंघन कर सक्ता है ।

न दैवमिति संचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः ।
अनुद्यमेन कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तुमर्हति ॥
भाग्य सब कुछ करेगा ऐसा समझ कर उद्योग नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि विना यत्न किये तिल से तैल कौन प्राप्त कर सक्ता है ।

निःसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान् ।
साररहित पदार्थ का प्रायः आडम्बर बड़ा होता है ।

निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते ।
जिस प्रदेश में कोई अन्य वृक्ष न हो वहां एरण्ड भी वृक्ष कहा जाता है ।

न पण्डिताः साहसिका भवन्ति श्रुत्वापि ते संतुलयन्ति चार्थम् ।
पण्डित लोग साहस करनेवाले नहीं होते हैं किंतु किसी भी कार्य को सुनकर अनुमान करते हैं ।

ना गुणी गुणिनं वेत्ति गुणी गुणिषु मत्सरी ।
गुणी च गुणरागी च विरलः सरलो जनः ॥
गुणहीन गुणी को नहीं जानता है और गुणी पुरुष गुणवान् में मत्सर रखता है जोकि गुणी हो और गुण में प्रेम रखनेवाला हो ऐसा मनुष्य विरला ही होता है ।

निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः ।
साधु पुरुष निर्गुण प्राणियों के ऊपर भी दया करते हैं ।

न गुणाः क्वापि पूज्यन्ते सत्स्वीकारो हि गौरवम् ।
पीतिमागुणसाम्येपि हरिद्रास्वर्णयोरिव ॥
कहीं गुण की भी पूजा नहीं होती केवल स्वीकृतमात्र ही पूजित होता है जैसे सुवर्ण और हरिद्रा के एक रंग होने पर भी सुवर्ण ही का अधिक आदर है ।

न कदाचित्सतां चेतः प्रसरत्यघकर्मसु ।
सज्जनों का अन्तःकरण कभी दुष्कर्म में प्रवृत्त नहीं होता है ।

न पिबन्ति भौममम्भः सरजसमिति चातका एते ।
चातक पक्षिगण धूलि मिश्रित पृथ्वी का जल नहीं पीते हैं ।

निर्गुणमप्यनुरक्तं प्रायो न समाश्रितं जहाति सन्तः ।
सज्जन पुरुष गुणहीन होने पर भी अनुराग रखनेवाले अपने आश्रित को नहीं छोड़ते हैं ।

नयहीनादपरज्यते जनः ।
नीतिहीन पुरुष से मनुष्य अपरक्त (दूर) हो जाते हैं ।

न गणस्याग्रतो गच्छेत् ।
समुदाय से आगे होकर कोई कार्य नहीं करना चाहिये ।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः ।
जहां वृद्ध न हों वह कोई सभा नहीं है ।

न तज्जलं यत्र सुचारु पङ्कजम् ।
जिसमें मनोहर कमल न हो वह जल नहीं है ।

न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ।
सज्जनों का भाषण दो बार नहीं होता है ।

निरक्षरे वीक्ष्य महाधनत्वं विद्यानवद्या विदुषा न हेया ।
निरक्षर पुरुष को धनवान् देखकर विद्वान् अपनी सुविद्या को न छोड़े ।

न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः ।
धीर पुरुष अपने निर्णीत अर्थ से विराम नहीं लेता है ।

नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः ।
गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥
नर का भूषण रूप है, रूप का भूषण गुण है, गुण का भूषण ज्ञान है और ज्ञान का भूषण क्षमा है ।

नासत्यवादिनः सख्यम् ।
असत्यवादी की मैत्री नहीं होती ।

न गुणं न च सौभाग्यं स्वयं स्वगुणवर्णने।
अपना गुण अपने से वर्णन करने में न सुख होता और न कोई सौभाग्य मिलता है।

न कुलं वृत्तहीनानां प्रमाणमिति मे मतिः।
आचरणहीन पुरुष के कुल का प्रमाण नहीं होता है।

नष्टस्य कान्या गतिः।
नष्ट पुरुष की दूसरी क्या गति हो सक्ती है।

न वित्तं दर्शयेत्प्राज्ञः कस्यचित्स्वल्पमप्यहो।
स्वल्प भी अपने पास धन हो तो किसी को नहीं दिखाना चाहिये।

न नरस्य नरो दासो दासश्चार्थस्य भूपते।
हे राजन् मनुष्य का दास मनुष्य नहीं होता है किन्तु अर्थ का दास मनुष्य होता है।

न दुर्जनः सज्जनतामुपैति बहुप्रकारैरपि सेव्यमानः।
अनेक प्रकार से सेवा करने पर भी दुर्जन सज्जनता को प्राप्त नहीं हो सक्ता।

नास्ति क्षुधासमं दुःखम्।
क्षुधा के समान दुःख नहीं है।

नृपः कामासक्तो गणयति न कार्यं न च हितम्।
कामी राजा कार्य और हित को नहीं गिनता है।

नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान्।
आलसी को अर्थ नहीं मिलता है।

निर्विषेणापि सर्पेण कर्तव्या महती फणा।
विषशून्य सर्प को भी फणका आटोप करना चाहिये।

नास्ति विद्यासमं चक्षुः।
विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।

नित्यं क्रोधाच्छ्रियं रक्षेत्।
सदा क्रोध से लक्ष्मी कीरक्षा करनी चाहिये।

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयात्।
बिना पूछे किसी से नहीं बोलना।

न क्रोधयातुधानस्य धीमान् गच्छेद्विधेयताम्।
बुद्धिमान् पुरुष क्रोधरूपी निशाचर की अनुकूलता को प्राप्त न करे।

न जातुकामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
मनोरथ यथेच्छ कामों के भोगने से शान्त नहीं होता है।

नास्ति सत्यसमं तपः ।
सत्य के बराबर कोई तप नहीं है ।

न संतोषात्परं सुखम् ।
संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है ।

न च तृष्णा परो व्याधिः ।
तृष्णा के समान कोई रोग नहीं है ।

न च धर्मो दयापरः ।
दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है ।

नास्ति रागसमं दुःखम् ।
स्नेह के समान कोई दुःख नहीं है ।

निकटस्थं गरीयांसमपि लोके न मन्यते ।
समीप में रहनेवाले श्रेष्ठ को भी लोग नहीं मानते हैं ।

नरत्वं दुर्लभं लोके ।
संसार में मनुष्य का तनु दुर्लभ है ।

निन्दां यः कुरुते साधोस्तथा स्वं दूषयत्यसौ ।
खे भूतिं यस्त्यजेदुच्चैर्मूर्ध्नि तस्यैव सा पतेत् ॥
जो साधु की निन्दा करता है वह अपने ही को दूषित करता है । जैसे जो आकाश में राख फेंकता है वह उसीके मस्तक पर पड़ती है ।

निरुत्सुकानामभियोगभाजां समुत्सुकेवाङ्कमुपैति लक्ष्मीः ।
उत्कण्ठारहित उद्योगी के पास लक्ष्मी उत्कण्ठित होकर स्वयं आजाती है ।

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दां सततं करोति ।
जो जिसके गुणाधिक्य को नहीं जानता है वह उसकी सदा निन्दा करता है ।

निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।
अनुराग से निवृत्त पुरुष के लिये घर ही तपोवन है ।

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ।
ध्रुवं सतस्यापगमे प्रसीदति ॥
जो किसी निमित्त से क्रोध करता है वह उसके निवृत्त हो जाने पर प्रसन्न होजाता है ।

नये च शौर्ये च वसन्ति संपदः ।
नीति और शूरता में संपत्ति रहती है ।

नीचं समृद्धमपि सेवति नीच एव ।

तं दूरतः परिहरन्ति पुनर्महान्तः।

समृद्धि से परिपूर्ण नीच की सेवा नीच ही करता है और महान् पुरुष उसे दूर ही से परित्याग करते हैं।

नागो भाति मदेन कं जलरुहैः।

हाथी मदस्राव से शोभता है और जल कमलों से शोभता है।

नित्योत्सवैर्मन्दिरम्।

गृह नित्योत्सव से शोभता है।

न चापत्यसमः स्नेहः।

अपत्य के समान किसी पर स्नेह नहीं होता है।

न स्वल्पस्य कृते भूरि नाशयेन्मतिमान्नरः।

बुद्धिमान् पुरुष थोड़े के लिये अधिक का नाश नहीं करता है।

न विश्वसेदमित्रस्य मित्रस्यापि न विश्वसेत्।
कदाचित् कुपितं मित्रं सर्वं गुह्यं प्रकाशयेत्॥

शत्रु का विश्वास नहीं करना चाहिये और मित्र का भी विश्वास नहीं करना चाहिये; क्योंकि मित्र भी कभी रुष्ट होने पर सब गुप्त प्रकाश कर सक्ता है।

नाद्रव्ये निहिता काचित् क्रिया फलवती भवेत्।

अद्रव्य में नियुक्त की हुई क्रिया फलवती नहीं होती है।

नष्टं मृतमतिक्रान्तं नानुशोचन्ति पण्डिताः।

भूले हुए का, मरे का और व्यतीत वस्तु का पण्डित पश्चात्ताप नहीं करते हैं।

न बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम्।

भाइयों के बीच में धनहीन का जीवन ठीक नहीं है।

नास्ति रागसमं दुःखम्।

अनुराग के समान कोई दुःख नहीं है।

नास्ति त्यागसमं सुखम्।

त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

न स्थातव्यं न गन्तव्यं क्षणमप्यधमैः सह।
पयोऽपि शौण्डिकीहस्ते मदिरां मन्यते जनः॥

नीचों के साथ एक क्षण भी न रहना चाहिये न जाना चाहिये। शौण्डिकी के हाथ के दुग्ध को भी लोग मदिरा मानते हैं।

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृण्मये।
भावेषु विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम्॥

देव काष्ठ या पाषाण या मिट्टी में नहीं रहते हैं; किन्तु भावही में देव रहते हैं इसलिये भावही मुख्य कारण है।

नाविदग्धः प्रियं ब्रूयात्स्फुटवक्ता न वञ्चकः।

मूर्ख प्रिय वचन नहीं बोलता है और वञ्चक स्पष्ट नहीं बोलता है।

निषिद्धमप्याचरणीयमापदि क्रिया सती नावति यत्र सर्वथा।

जहां उत्तम क्रिया नहीं रक्षा करती हो उस आपत्ति के समय में निषिद्ध वस्तु का भी आचरण करना चाहिये।

न महानिच्छति भूतिमन्यतः।

महान् पुरुष दूसरे से विभूति (ऐश्वर्य) को नहीं चाहते हैं।

न निहन्ति धैर्यमनुभावगुणः।

अनुभवित गुण धैर्य को नहीं हटा सक्ता है।

निपातनीया हि सतामसाधवः।

सज्जन को दुर्जन का नाश करना चाहिये।

न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोचये मूर्च्छति मारुतस्य।

वृक्ष के उखाड़ने वाले वायु का वेग पर्वत के शिखर को नहीं उड़ा सक्ता है।

नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः।

नक्षत्र ताराग्रहादिक से युक्त होनेपर भी रात्रि चन्द्रमा से ही शोभती है।

न वसन्त्येकत्र सर्वगुणाः।

एक पुरुष में सब गुण नहीं रहते हैं।

न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति।

गदहा घोड़े का भार नहीं वहन कर सक्ता है।

न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति।

पर्वत के शिखर पर कमलिनी नहीं उगती है।

न च मिथ्या मुनिवचः।

मुनियों का वाक्य मिथ्या नहीं होता है।

न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।

प्रभाशाली ज्योति पृथिवीतल से नहीं उदय हो सक्ती है।

नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्निस्थितिर्न चरणैरवताडनानि।

सुगन्धयुक्त पुष्प स्वभाव से ही शिरपर धारण किया जाता है, पैर से नहीं दबाया जाता है।

नैवात्मनीनमथवा क्रियते मदान्धैः।

मदान्धपुरुष आत्महित भी नहीं कर सक्ता है।

न हि कमलं मधुपाः परित्यजन्ति।

भ्रमर कमल को नहीं छोड़ सक्ता है।

ननु भवति विनीतं द्रव्यमेव क्रियाभिः।

क्रियाद्वारा व्यक्ति ही विनीत होती है।

न कालतः कस्य गुणव्यतिक्रमः।

समय पाकर किसके गुणका व्यतिक्रम नहीं होता है।

नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

कर्म्म न करके एक क्षण भी कोई नहीं रह सक्ता है।

निवृत्तिपोषक आश्रमधर्मः।

सांसारिक विषयों से जो निवृत्ति उसको पोषण करनेवाला अर्थात् बढ़ानेवाला आश्रम धर्म है।

प

पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम्।

सांप को दुग्ध पिलाने से केवल विषकी ही वृद्धि होती है।

पश्यति पीतोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्।

पाण्डुरोगी चंद्रमा के समान सफेद शङ्खको भी पीला देखता है।

पठतो नास्ति मूर्खत्वम्।

पढ़ते हुए को मूर्खता नहीं होती है।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।

भाग्यहीन मनुष्य प्रायः जहां जाता है आपत्ति भी वहां पहुँच जाती है।

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।

भाग्य के प्रतिकूल होने पर सब उत्तम साधन व्यर्थ होजाते हैं।

पण्डिते हि गुणाः सर्वे मूर्खे दोषाश्च केवलाः।

पण्डित में सब गुण रहता है मूर्ख में केवल दोषही रहता है।

पुस्तकेषु च नाधीतं नाधीतं गुरुसन्निधौ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

जो पुस्तक से तथा गुरु के पास नहीं पढ़ा है वह व्यक्ति सभा के बीच में नहीं शोभता है, जैसे कि हंसों के बीच में बगुला नहीं शोभता है।

प्रायेण हि सुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः।

प्रायः सच्चरित्र पुरुषों की विपत्तियां अस्थायिनी होती हैं।

प्रलयेप्यचला महात्मानः।

महात्मा पुरुष प्रलय होने पर भी चलायमान नहीं होते हैं।

प्रकृतिरियं विमलानां क्लिश्यन्ति यदन्यकार्येषु।

उत्तम पुरुष का यह स्वभावही होता है कि दूसरे के कार्य के लिये क्लेश करते हैं।

प्रतिपन्नममलमनसां न चलति पुंसां युगान्तेपि।

निर्मल चित्तवाले महान् पुरुष का स्वीकृत वचन प्रलय होने पर भी नहीं विचालित होता है।

पेशलमपि खलवचनं दहतितरां मानसं सुतत्त्वविदाम्।
परुषमपि सुजनवाक्यं मलयजरसवत्प्रमोदयति॥

दुष्टों का मनोहर वचन भी तत्त्ववेत्ता के मनको जलाता है और सुजनका परुष वचन भी मलय चन्दन के समान आनंदित करता है।

प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहसे नान्यसमुन्नतिं यया।

वह शक्तिमान् पुरुषों की प्रकृति होती है जिससे कि वे दूसरे के अभ्युदय को नहीं सहन करते।

परोपकाराय सतां विभूतयः।

सज्जनों की विभूति परोपकारार्थ होती है।

प्रायेण धनिनामेव धनलोभो निरन्तरम्।

प्रायः धनवान् को ही अत्यंत धनका लोभ होता है।

पुरुषस्तावदेवासौ यावन्मानान्न हीयते।

जबतक मान से च्युत नहीं होता तबही तक वह पुरुष गिनाजाता है।

पूर्वजन्मकृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते।

पूर्व जन्म में जो कर्म किया गया है उसको दैव कहते हैं।

परोपदेशे कुशला दृश्यन्ते बहवो जनाः।

परोपदेश करने में बहुत से मनुष्य निपुण होते हैं।

पाण्डित्यस्य विभूषणं मधुरता ।

पण्डिताई का भूषण माधुर्य है ।

प्राज्ञः शठैर्हस्यते ।

खल विद्वान् को हँसते हैं ।

पर्जन्य इव भूतानामाधारः पृथिवीपतिः ।

मेघ के समान राजा प्राणियों का आधार है ।

पञ्चभिः सह गन्तव्यम् ।

पांच के साथ जाना चाहिये अर्थात् पंचों की सम्मति से काम करना चाहिये

प्रभुप्रसादे विश्वासो न कुर्यात्स्वप्नसंन्निभे ।

स्वप्न के तुल्य मालिक की प्रसन्नता पर विश्वास नहीं करना चाहिये ।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति देवताः ।

प्रिय वाक्य के प्रयोग करने से सब देव प्रसन्न होते हैं ।

प्रसूतान्तं च यौवनम् ।

प्रसव के पर्यन्त ही युवावस्था रहती है ।

प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः परोक्षे मित्रबान्धवाः ।

गुरुकी प्रत्यक्षरूप से स्तुति करनी चाहिये और मित्र तथा कुटुम्बियों की परोक्ष में स्तुति करनी चाहिये ।

पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्यते ।

पटुता और सत्यवादिता ये वार्तालाप से जान पड़ती हैं ।

प्रसीदन्ति जपैर्देवाः ।

देवता जपसे प्रसन्न होते हैं ।

परापकारनिरतैर्दुर्जनैःसह संगतिः ।
वदामि भवतस्तत्त्वं न विधेया कदाचन ॥

दूसरों का अपकार करनेवाले दुर्जनों के साथ संबन्ध नहीं रखना चाहिये, यह तत्त्वोपदेश है ।

प्रायः सन्त्युपदेशार्हा धीमन्तो न जडाशयाः ।

प्रायः उपदेश के योग्य बुद्धिमान् ही होते हैं मूर्ख नहीं ।

प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य विद्या शस्त्रं यथा कापुरुषस्य हस्ते ।
न तृप्तिमुत्पादयते शरीरे वृद्धस्य दारा इव दर्शनीयाः ॥

प्रगल्भता शून्य पुरुष की विद्या और भीरु के हाथ में शस्त्र, ये तृप्तिप्रदान नहीं कर सक्ते हैं केवल वृद्ध के वास्ते युवती स्त्री के समान शरीर में दर्शनीय हैं ।

परिहरत पराङ्गनानुसङ्गं यदि जीवितमस्ति वल्लभं वः ।

यदि जीवन प्रिय हो तो दूसरे की स्त्रीका संबंध छोड़ो ।

पराधीनं वृथा जन्म ।

पराधीन रहनेवाले का जन्म व्यर्थ है ।

परस्त्रीषु वृथा सुखम् ।

अन्य की स्त्री के साथ सुख भोगना व्यर्थ है ।

परगेहे वृथा लक्ष्मीः ।

अपना द्रव्यादि दूसरे के घर हो तो व्यर्थही है ।

पुत्रं विद्यासु योजयेत् ।

पुत्र को विद्या में नियुक्त करना चाहिये ।

प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः ।

प्रायः क्षीण धनवाले स्वामी को सेवा करते हुए भृत्य लोग भी छोड़ देते हैं ।

पुराणमित्येव न साधु सर्वम् ।

पुराना होने से सब समीचीन ही है ऐसा नहीं समझना चाहिये ।

पूर्णो गुणविहीनोऽपि जनैः शिरसि धार्यते ।

गुणहीन पुरुष भी यदि धनादिक से पूर्ण हो तो लोग उसको शिरपर धारण करते हैं ।

पित्रोर्नित्यं प्रियं कुर्यात् ।

माता पिता का नित्यही प्रिय करना चाहिये ।

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ।

यदि रोगी सुपथ्य करे तो औषध का कोई प्रयोजन नहीं है ।

पिपासुता शान्तिमुपैति वारिजा
न जातु दुग्धान्मधुनोऽधिकादपि ।

जलकी पिपासा दूध से अथवा अधिक से अधिक मधु से भी नहीं शान्त होती है ।

प्रारब्धमपरित्याज्यम् ।

प्रारब्ध वस्तुकी जबतक समाप्ति नहीं होती तबतक त्यागने योग्य नहीं है ।

पिशाचानां पिशाचभाषैवोत्तरं देयम् ।

पिशाचों को पिशाच भाषा से ही उत्तर देना चाहिये ।

प्रकृतिर्दुस्त्यजा भवेत् ।

प्रकृति नहीं छुटती है ।

पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् ।

मानी पुरुष का पराजय भी उत्सवही है ।

परलोकजुषां स्वकर्मभिर्गतयो भिन्नपथा हि देहिनाम् ।

परलोक में रहनेवाले प्राणियों की अपने अपने कर्म के अनुसार भिन्न भिन्न गतियां होती हैं।

पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ।

मोहमयी प्रमाद मदिरा को पीकर जगत् उन्मत्त हो रहा है।

प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ।

कीचड़ के लगने पर उसको धो डालने की अपेक्षा कीचड़ से दूर रहकर उसको स्पर्श नहीं करना ही अच्छा है।

प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ।

प्राणीमात्र अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार चेष्टा करते हैं। प्रकृतिका निग्रह क्या कर सक्ता है अर्थात् प्रकृति का निग्रह होना अति कठिन है।

परिवर्त्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।

परिवर्त्तन युक्त संसार में मरकर कौन उत्पन्न नहीं होता है अर्थात् जो मरता है वह उत्पन्न होता है और उत्पन्न होता है वह मरता है।

प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदाञ्चयः ।

शुद्ध मणि प्रतिबिम्ब ग्रहण करने में समर्थ होता है। मिट्टी का ढेला प्रतिबिम्ब ग्रहण नहीं कर सक्ता।

प्रवृत्तिरोधको वर्णधर्मः ।

वर्णधर्म सांसारिक विषयों में जो स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है उसको रोकने वाला है।

पूजात् कोटिगुणं स्तोत्रं स्तोत्रात् कोटिगुणं जपः ।
जपात् कोटिगुणं गानं गानात्परतरं न हि॥

स्तोत्र पूजाकी अपेक्षा कोटिगुण अधिक फलप्रद होता है, स्तोत्रकी अपेक्षा कोटिगुण अधिक फलप्रद जप है, जपकी अपेक्षा कोटिगुण अधिक फलप्रद भगवद्गुणगान और भगवद्गुणगानसे अधिक फलप्रद संसार में कोई साधन नहीं है।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।

परोपकार करने से पुण्य होता है और किसी को कष्ट देने से पाप होता है।

पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम् ।

स्त्री का गुरु एकमात्र पतिही है।

ब

बालः पयसा दग्धो दध्यपि फूत्कृत्य पिबति ।

दुग्ध से जलाहुआ लड़का दही को भी फूंक कर पीता है।

बलेन किं यश्च रिपून्न बाधते।
बलसे क्या हुआ यदि शत्रुको नहीं बन्धन किया गया।

बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
कर्म के अनुसार ही बुद्धि होती है।

ब्रह्मघ्नोपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम्।
ब्रह्मघातकी भी यदि अधिक धनवान् हो तो पूजित होता है।

बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते।
भूखे हुए व्याकरण को नहीं खा सक्ते हैं।

बालोपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः।
राजा बालक भी हो तो मनुष्य है इसकारण से उसका अपमान नहीं करना चाहिये।

ब्राह्मणा गणका वेश्या सारमेयाश्च कुक्कुटाः।
दृष्टेष्वन्येषु कुप्यन्ति न जाने तस्य कारणम्॥
ब्राह्मण, ज्योतिषी और वेश्या और कुत्ते और कुकुट ये दूसरे को आए हुए देखकर न मालुम क्यों क्रोध करते हैं।

बुद्धिप्रारब्धकार्यस्य नास्ति किंचन दुष्करम्।
जो बुद्धिपूर्वक कार्य करता है उसको कुछ दुष्कर नहीं है।

बुधाग्रे न गुणान् ब्रूयात्साधु वेत्ति यतः स्वयम्।
पण्डितों के सामने अपने गुण का प्रकाश नहीं करना चाहिये। वे स्वयं सब जानते हैं।

बहुभाषिणं न श्रद्दधाति लोकः।
बहुत बोलनेवाले का लोग विश्वास नहीं करते हैं।

ब्राह्मणा धर्म्मवक्तारः क्षत्रिया धर्म्मपालकाः।
ब्राह्मण धर्म्म के बतानेवाले हैं और क्षत्रिय धर्म्म के पालन करानेवाले हैं।

भ

भवति विपद्यपि महतामङ्गीकृद्वस्तु निर्वाहः।
महान् पुरुष विपत्ति आने पर भी स्वीकृत वस्तु का पालन करता है।

भक्तिर्भवे न विभवे व्यसनं शास्त्रे न कामास्त्रे।
चिन्ता यशसि न वपुषि प्रायः परिदृश्यते महताम्॥
प्रायः महान् पुरुष की भक्ति शंकर में होती है धन में नहीं और व्यसन शास्त्र में होता है काम के अस्त्र में नहीं और चिन्ता कीर्ति की होती है शरीर की नहीं।

भक्त्या हि तुष्यन्ति महानुभावाः।
महान् पुरुष भक्ति से प्रसन्न होते हैं।

भिन्ने चित्ते कुतः प्रीतिः।

चित्त में भेद होने पर प्रीति कैसे रह सकती है।

भार्यासमं नास्ति शरीरतोषणम्।

स्त्री के समान कोई शरीरतुष्टिकारक नहीं है।

भ्रान्तिभाजि भवति क विवेकः।

भ्रान्तिमान् पुरुष को विवेक कहां से हो सक्ता है।

भवति महत्सु न निष्फलं प्रयासः।

महान् पुरुषों का प्रयास करना निष्फल नहीं होता है।

भवति च सदोपहास्यो यः खलु शरणागतं त्यजति।

जो शरणागत का परित्याग करता है वह सदा हास्य का पात्र होता है।

भाग्यवन्तं प्रसूयेथा मा शूरं मा च पण्डितम्।
शूराश्च कृतविद्याश्च वने सीदन्ति पाण्डवाः॥

भाग्यवान् ही का प्रसव करो, शूर और पण्डित का नहीं; क्योंकि विद्वान् और शूर होते हुए भी पाण्डुपुत्र वन में क्लेश पाए थे।

भक्त्या तुष्यन्ति देवताः।

देवता भक्ति से प्रसन्न होते हैं।

भूयसीरपि कलाः कलङ्किताः
प्राप्य कश्चिदपचीयते शनैः।
एकयापि कलया विशुद्धया
योपि कोपि भजते गिरीशताम्॥

कलङ्कित बहुतसी कला पाकर भी कोई पुरुष धीरे २ क्षीण हो जाता है। एक ही निर्मल कला पाकर जो कोई भी गिरीशत्व को प्राप्त होता है।

भवाब्धितारकः शिवः।

शिव संसारसमुद्र से तारनेवाले हैं।

भवे भक्तिः सदा कार्या।

शिव की भक्ति सदा करनी चाहिये।

भोगे रोगभयं नूनं कुले पतनजं भयम्।
भयं निन्दकजं शक्तौ गुणे खलभयं खलु॥

भोग करने में रोग हो जाने का भय है, कुलीन होने में पतित हो जाने का भय है, शक्तिमान् होने में निन्दकों का भय है और गुणवान् होने में दुष्टों का भय है।

म

मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः।

मनका संतोष होजाने पर न कोई धनवान् है और न कोई दरिद्र है।

मूर्खमन्यायकर्तारं नाधिपत्ये नियोजयेत्।

मूर्ख और अन्यायकारी पुरुष को स्वामित्व के पद पर नहीं रखना चाहिये।

मूर्खो हि जल्पतां पुंसां श्रुत्वा वाचः शुभाशुभाः।
अशुभं वाक्यमादत्ते पुरीषमिव शूकरः॥

मूर्ख मनुष्य वार्तालाप करनेवाले पुरुष का वचन सुनकर उत्तम बात को छोड़कर अशुभ बात को ग्रहण कर लेता है। जैसे कि सुअर उत्तम पदार्थों को छोड़कर केवल पुरीष को ही ग्रहण करता है।

महतां प्रार्थनेनैव विपत्तिरपि शोभते।

महान् से प्रार्थना करने से यदि विपत्ति भी हो तो अच्छी है।

मान्या एव हि मान्यानां मानं कुर्वन्ति नेतरे।

माननीय पुरुष ही माननीय पुरुषों का सत्कार करते हैं इतर नहीं।

मूकः परापवादे परदारनिरीक्षणेऽप्यन्धः।
पंगुः परधनहरणे स जयति लोकत्रयं पुरुषः॥

जो दूसरे के अपवाद में मूक और अन्य की स्त्री के देखने में अन्धा और अन्य के धन हरण करने में लँगड़ा होता है वह तीनों लोक में जयी है।

महाजनाचारपरम्परेदृशी स्वनामनामाददते न साधवः।

महाजनों की ऐसी परम्परा है कि सज्जन पुरुष अपना नामोच्चारण नहीं करते हैं।

महाजनो येन गतः स पन्थाः।

जिस मार्ग से महान् पुरुष लोग गये हैं वही अच्छा मार्ग है।

मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः।

मणि से शोभित सांप से क्या डर नहीं होता है।

मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।

मूर्ख के लिये कोई औषध नहीं है।

मित्राणां च परीक्षा स्यादापत्काले ह्युपस्थिते।

आपत्तियों के आने पर मित्रों की परीक्षा होती है।

मौनिनः कलहो नास्ति न भयं चास्ति जाग्रतः।

मौन रहनेवाले के साथ झगड़ा नहीं होता है और जागते हुए पुरुष को भय नहीं होता है।

मा हिंस्यात्सर्वभूतानि ।

किसी प्राणी की हिंसा नहीं करना चाहिये ।

महावैश्वानरः खलः ।

खल अग्नि के समान है ।

मानिनो हतमानस्य मानोऽपि न सुखप्रदः ।

जिसका मान च्युत होगया ऐसे मानी पुरुष के लिये मान भी सुखकर नहीं होता है ।

मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः ।

विद्वान् के संसर्ग से मन्द (मूर्ख) भी विद्वान् होजाता है ।

मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टस्त्रीभरणेन च ।
द्विषतां संप्रयोगेण पण्डितोऽप्यवसीदति ॥

मूर्ख शिष्य को उपदेश देने से और दुष्ट स्त्री के पालन करने से और शत्रु के प्रयोग से पण्डित भी क्लेश पाता है ।

मक्षिका मशको वेश्या मूषको याचकस्तथा ।
ग्रामणीर्गणकश्चैव सप्तैते परभक्षकाः ॥

मक्खी, मच्छर, वेश्या और मूषक, याचक, ग्रामणी, ज्योतिषी ये सात दूसरे को खानेवाले हैं ।

मूर्खाणां पण्डिता द्वेष्याः ।

मूर्ख लोग पण्डितों से द्वेष करते हैं ।

मद्यपाः किं न जल्पन्ति ।

मदिरापान करनेवाला क्या नहीं बक सकता है ।

मेधावी वृद्धसेवया ।

वृद्ध की सेवा करने से मेधावी होता है ।

मक्षिका व्रणमिच्छन्ति धनमिच्छन्ति पार्थिवाः ।

मक्खी व्रण को ही चाहती है और राजा धन चाहते हैं ।

मातासमं नास्ति शरीरपोषणम् ।

माता के समान कोई शरीरपोषक नहीं है ।

महान् महत्येव करोति विक्रमम् ।

महान् पुरुष महत् कार्य में ही पराक्रम लगाता है ।

महतां यदि निन्दने मतिर्गुणसंख्यैव तदा विधीयताम् ।

यदि महान् की निन्दा करने में बुद्धि हो तो गुणों की संख्या (गिनती) ही करनी चाहिये ।

मम तया चात्मप्रकाशो हतः।
ममत्व करने से अपने (आत्मा के) प्रकाशकी हानि होती है।

मानुष्ये सति दुर्लभा पुरुषता।
मनुष्यत्व होने पर भी पुरुषत्व होना दुर्लभ है।

मूलं दोषस्य हिंसादेरर्थकामौ स्म मा पुषः।
हिंसा आदि दोषों के मूलरूप अर्थ और काम की पुष्टि मत करो।

मनसा चिन्तितं कर्म वचसा न प्रकाशयेत्।
मन में विचारित कार्य को वचन से नहीं प्रकाश करना चाहिये।

मूर्खस्य दिशः शून्याः।
मूर्ख के लिये तमाम दिशाएँ शून्य हैं।

मित्रेण किं व्यसनकालपराङ्मुखेन।
जो दुःख के समय में पराङ्मुख हो उस मित्र से क्या लाभ है।

मणिना वलयं वलयेन मणिः।
मणि से कंकण और कंकण से मणि शोभती है।

मित्रं स्वच्छतया रिपुं नयबलैर्लुब्धं धनैरीश्वरम्,
कार्येण द्विजमादरेण युवतिं प्रेम्णा शमैर्बान्धवान्।
अत्युग्रं स्तुतिभिर्गुरुं प्रणतिभिर्मूर्खं कथाभिर्बुधम्,
विद्याभी रसिकं रसेन सकलं शीलेन कुर्याद्वशम्॥

मित्र को स्वच्छ भाव से वशीभूत करना चाहिये और नीतिबल से शत्रु को और लोभी को धन से, स्वामी को कार्य से और ब्राह्मण को आदर से और युवती को प्रेम से और बन्धु जन को शान्ति से, अत्युग्रस्वभाव पुरुष को स्तुति से, गुरुदेव को प्रणाम से, मूर्ख को कथाओं से, विद्या से विद्वान् को, रससे रसिक पुरुष को और सबको शील से वशीभूत करना चाहिये।

मुग्धेषु कः सत्यमृषाविवेकः।
भोले भाले मनुष्य को सत्य और मिथ्या का विचार नहीं होता है।

मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।
मित और सार वचन जिसका हो वही वाग्मी है।

मनोरथानामतटाः प्रवाहाः।
मनोरथों का प्रवाह विना तट का होता है अर्थात् मनोरथ की सीमा नहीं है!

मित्रं न कश्चिद्विषमस्थितस्य।
आपत्ति में ग्रसित पुरुष का कोई मित्र नहीं है।

मम तु मनो न मनागपैति धर्म्मात्।

मेरा तो मन धर्म से थोड़ा भी नहीं डिगता है।

मद्भाग्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः।

मेरे भाग्योदय से यह सब गुणों का गण अर्थात् समुदाय उदय हुआ है।

मनस्वी कार्य्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्।

कार्य्य करने की इच्छा करनेवाला मनस्वी पुरुष सुख या दुःख की परवाह नहीं करता है।

मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान्विषवत्त्यज।
क्षमार्जवदयातोषसत्यं पीयूषवद्भज॥

हे तात! यदि मुक्ति को चाहता है तो विषयों को विष के समान त्याग दे और क्षमा, सरलता, दया, संतोष और सत्य को अमृत के समान आचरण कर।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः।

मेरा नाथ श्रीजगन्नाथ है और मेरा गुरु श्रीजगद्गुरु है।

य

यः स्तोकेनापि संतोषं कुरुते मन्दधीर्जनः।
तस्य चोत्साहहीनस्य दत्ता श्रीरपि मार्ज्यते॥

जो मन्द बुद्धिवाले मनुष्य अल्प वस्तु से संतोष कर लेते हैं उन निरुत्साहियों की दी हुई लक्ष्मी भी नष्ट हो जाती है।

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।

देव, तीर्थ, ब्राह्मण, मन्त्र, ज्योतिषी, वैद्य और गुरु, इनमें जिसकी जैसी भावना होती है वैसीही सिद्धि होती है।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयसः सिद्धिः स धर्मः।

जिससे इहलौकिक अभ्युदय और पारलौकिक अभ्युदय और मुक्ति होती है उसीको धर्म कहते हैं।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥

जिसकी बुद्धि स्वयं नष्ट है उसके लिये शास्त्र क्या कर सक्ता है। जैसे जिसके आंख नहीं है उसको दर्पण क्या कर सक्ता है।

यस्येश्वरेण यद्लेखि ललाटपट्टे
तत्स्याद्योग्यमपि योग्यमपास्य तस्य।

ईश्वर ने जिसके ललाट में जैसा लिखा है वह अयोग्य भी उसके लिये योग्य होजाता है।

यो यस्य मित्रं नहि तस्य दूरम्।

जो जिसका मित्र है वह उससे दूर नहीं है ।

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम् ।
गुणैः सर्वज्ञकल्पोऽपि सीदत्येको निराश्रयः ॥

यदि पुरुष में गुण हो तो स्वयं प्रकाशित होता है । गुण से शङ्कर के समान होने पर भी यदि निराधार हो तो क्लेश पाता है ।

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।
तथा पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति ॥

जैसे एक चक्र से रथ नहीं चलता है वैसे विना दैव के केवल पुरुषार्थ से सिद्धि नहीं होती है ।

योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत्पिपीलिका ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

पिपीलिका धीरे २ हजार कोस जासक्ती है और गरुड़ भी यदि न चले तो एक पैर भी नहीं जासक्ते ।

यः स्वभावो हि यस्यास्ते स नित्यं दुरतिक्रमः ।

जिसका जो स्वभाव होता है वह अनुल्लङ्घनीय होता है ।

यथा हि मलिनैर्वस्त्रैर्यत्र तत्रोपविश्यते ।
एवं चलितवृत्तस्तु वृत्तशेषं न रक्षति ॥

जैसे मैले वस्त्रवाले जहां तहां बैठ जाते हैं ऐसे ही आचरणहीन पुरुष अपने किसी वृत्त को रक्षित नहीं कर सक्ता ।

या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते ।

जिसकी जो स्वभावोत्पन्न प्रकृति पड़ जाती है वह नहीं छूटती ।

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि ।

जिसके धन है उसके ही मित्र हैं ।

यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।

जिसके धन है उसके कुटुम्ब है ।

यस्यार्थाः स पुमाँल्लोके ।

जिसके धन है वही संसार में पुरुष कहाता है

यस्यार्थाः स च पण्डितः ।

जिसके धन है वह ही पण्डित है ।

याचनान्तं हि गौरवम् ।

याचक का याचना पर्यन्त ही गौरव रहता है ।

यत एवागतो दोषस्तत एव निवर्तते ।

दोष जहां से आता है वहीं से ही निवृत्त होता है।

युद्धे शूरपरीक्षा स्यात्।

वीर की परीक्षा युद्ध में होती है।

या सुन्दरी सा पतिना विहीना
यस्याः पतिः सा वनिता कुरूपा।
यत्र द्वयं तत्र सुतस्य हानि-
र्यत्र त्रयं तत्र दरिद्रता च॥

जो सुन्दरी होती है वह पतिहीना होती है और जिसके पति होता है वह कुरूपा होती है। जहां पति भी है और सौन्दर्य्य भी है वहां लड़का नहीं होता और जहां ये तीनों बातें हैं वहां दरिद्रता होती है।

याच्ञामोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।

गुणवान् पुरुष से यदि याचना निष्फल भी हो तो उत्तम ही है और नीच पुरुष के द्वारा इच्छा पूर्ण भी होजाय तो वह ठीक नहीं है।

यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयो
न वेश्याजाताः शुचयस्तथाङ्गनाः॥

यव बोने से शालिधान्य नहीं जमता है, वैसेही वेश्याकुल में उत्पन्न स्त्रियां पवित्र नहीं होती हैं।

यस्यागमः केवलजीविकायै
तं ज्ञानपण्यं वणिजं वदन्ति।

जिसका शास्त्र केवल जीविका के लिये होता है वह ज्ञानविक्रेता वणिक् कहा जाता है।

यत्नेन सेवितव्यः कुलशीलवान् दरिद्रोपि।

कुलीन और सुशील दरिद्र हो तब भी उसकी सेवा करना चाहिये

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः।

यत्न करने पर भी यदि कार्य्यसिद्धि न हो तो इसमें क्या दोष है

योगः कर्म सुकौशलम्।

सुकौशलपूर्ण कर्म योग अर्थात् कर्मयोग कहा जाता है।

यो बुद्धेः परतस्तु सः।

जो बुद्धि से भी परे है वही आत्मा है।

यतो धर्मस्ततो जयः।

जहां धर्म है वहीं जय होता है।

यतो धर्मस्ततः कृष्णः।

जहां धर्म है वहीं कृष्ण अर्थात् भगवान् विद्यमान हैं ।

या बिभर्ति जगत्सर्व्वमीश्वरेच्छा ह्यलौकिकी ।
सैव धर्म्मो हि सुभगे नेह कश्चन संशयः ॥

जो अलौकिक ईश्वरेच्छा इस सब जगत् को धारण और पोषण करती है वही धर्म है, हे सुभगे ! इसमें कोई संशय नहीं है ।

या निशा सर्व्वभूतानां तस्यां जागर्त्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

सब प्राणियों के लिये जो रात्रि है अर्थात् सब प्राणी जिन वस्तुओं को नहीं देख सके हैं उन वस्तुओं को देखने के लिये संयमी जागता है अर्थात् देखता रहता है । सब प्राणी जिन वस्तुओं को देखते हैं उन वस्तुओं को देखने के लिये देखनेवाला मुनि भी नहीं देखता है । तात्पर्य्य यह कि संयमी के लिये जो रात्रि है प्राणियों के लिये वह दिन है और प्राणियों के लिये जो रात्रि है वह संयमी के लिये दिन है ।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।

चित्तवृत्तियों के रोकने को योग कहते हैं ।

यं पृथग्धर्म्मचरणाः पृथग्धर्म्मफलैषिणः ।
पृथग्धर्म्मैः समर्चन्ति तस्मै धर्मात्मने नमः ॥

पृथक् पृथक् धर्म का आचरण करनेवाले पृथक् पृथक् धर्मफलकी इच्छा करनेवाले पृथक् पृथक् धर्मों के द्वारा जिसकी अर्चना करते हैं उस धर्मात्मा भगवान् को प्रणाम है ।

यागपरः पुरुषधर्म्मः तपःप्रधानो नार्य्याः ।

पुरुषधर्म यज्ञप्रधान है और नारीधर्म तपःप्रधान है ।

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

जहां स्त्री जाति की पूजा होती है वहां देवता रमण करते हैं अर्थात् जिस घर में स्त्रियों की खातिर होती (उनके गुणों की पूजा होती) है उस घर में देवताओं का निवास रहता है ।

यथा हि गृहिणीधर्म्मे प्रवृत्तेः पूर्णता स्थिता ।
तथा निवृत्तिधर्म्मस्य नारीणां विधवाव्रते ॥

जिस प्रकार गृहिणी के धर्म्म में प्रवृत्ति की पूर्णता स्थित है वैसे ही निवृत्ति धर्म्म की पूर्णता विधवा के व्रत में स्थित है ।

र

रतिपुत्रफला नारी ।

स्त्री होने का फल रति (रमण) और पुत्र है ।

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय ।

सब पदार्थ यदि रिक्त हों तो लघु होते हैं, यदि पूर्ण हों तो गौरव के लिये होते हैं

रसनासु च सुकवीनां निवसति सारस्वतं चक्षुः ।

कवियों की जिह्वा में सारस्वत नेत्र (सरस्वतीस्वरूप नेत्र) रहता है ।

राजानमनुवर्त्तन्ते यथा राजा तथा प्रजा ।

प्रजा राजा का अनुवर्त्तन करती है इसी कारण जैसा राजा होता है प्रजा भी वैसी ही होती है ।

राजा कालस्य कारणम् ।

सत्य त्रेतादि युगों के काल का कारण राजा है ।

ल

लक्ष्मीवन्तो न जानन्ति प्रायेण परवेदनाम् ।

लक्ष्मीवान् पुरुष प्रायः दूसरे की पीड़ा को नहीं जानता है ।

लोभात्क्रोधः प्रभवति क्रोधाद्द्रोहः प्रवर्तते ।
द्रोहेण नरकं याति शास्त्रज्ञोऽपि विचक्षणः ॥

लोभ से क्रोध होता है और क्रोध से द्रोह होता है और द्रोह करने से यदि शास्त्रवेत्ता भी हो तो नरक में पड़ता है ।

लोभः पापस्य कारणम् ।

लोभ पाप का कारण है ।

लोभेन बुद्धिश्चलति लोभो जनयते तृषाम् ।
तृषार्तो दुःखमाप्नोति परत्रेह च मानवः ॥

लोभ से बुद्धि चंचल होती है और लोभ से तृष्णा बढ़ती है, तृष्णा-पीडित इह लोक और परलोक में दुःख पाता है ।

लुब्धेन संचितं द्रव्यं समूलं च विनश्यति ।

लोभी के द्वारा संचित द्रव्य मूलसहित नष्ट हो जाता है ।

लज्जातीर्थे कुलयुवतयः पातकं क्षालयन्ति ।

कुलाङ्गनाएँ लज्जारूपी तीर्थ में अपने पाप को धोती हैं ।

लज्जा भूषणं कुलस्त्रीणाम् ।

कुलाङ्गनाओं का लज्जा ही भूषण है ।

लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः ।

भाग्य में लिखित लेखको मिटाने में कौन समर्थ है ?

व

वर्णाश्रमधर्मोपेता आर्य्यजातिः।

वर्ण धर्म और आश्रम धर्म से युक्त जो जाति है वही आर्य्य जाति है।

विद्या हृद्यापि सावद्या विना विनयसंपदम्।

विनय के विना हृदयग्राही विद्या भी दोष से युक्त है।

बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदियानपि गच्छति।

महान् सहायक को पाकर क्षुद्र मनुष्य भी बड़ा कार्य कर सक्ता है।

विद्या रूपं कुरूपाणाम्।

कुरूप पुरुषों को विद्या ही भूषण है।

वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्योपि गरीयसी।

बूढ़े को युवती स्त्री प्राण से भी अधिक प्यारी है।

विकृतिं नैव गच्छन्ति सङ्गदोषेण साधवः।

साधु पुरुष संसर्गदोष से विकृत नहीं होते हैं।

वेपथुर्मलिनं वक्त्रं दीना वाग् गद्गदस्वरः।
मरणे यानि चिह्नानि तानि चिह्नानि याचके॥

मरण के समय जो चिह्न होते हैं वे सब याचक में रहते हैं जैसे कम्प, मुख-मालिन्य और वचन में दीनता और स्खलित वाक् इत्यादि।

विधिलिखिताक्षरमालं फलति कपालं न च भूपालः।

विधि के द्वारा लिखित अपना कपाल ही फलता है राजा नहीं।

विहाय पौरुषं यो हि दैवमेवावलम्बते।
प्रासादसिंहवत्तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः॥

जो पुरुषार्थ को छोड़ कर केवल भाग्य का ही अवलम्बन करता है, राजभवन में बने हुए सिंह के समान उसके मस्तक पर कौवे बैठते हैं।

विद्या विनयोपेता हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य।

विनय से युक्त विद्या किस मनुष्य के मन को नहीं हरण करती है।

वस्त्रपूतं पिबेद्वारि मनः पूतं समाचरेत्।

वस्त्र से छानकर जल पीना चाहिये और मनःपूत अर्थात् सुविचारित आचरण करना चाहिये।

वेश्यानामिव विद्यानां मुखं कैः कैर्न चुम्बितम्।

वेश्या के समान विद्या के मुखको किसने किसने चुम्बन नहीं किया है।

व्याख्यातुमेव केचित्कुशलाः शास्त्रं प्रयोक्तुमलमन्ये।

कोई पुरुष शास्त्र का केवल व्याख्यान ही करसक्ता है और कोई शास्त्र का प्रयोग करने में चतुर होता है।

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥

जङ्गलवासियों के साथ पर्वत तथा दुर्गभूमि में घूमना अच्छा है परन्तु इन्द्र के गृह में यदि मूर्खों का संपर्क हो तो अच्छा नहीं है।

विद्याहीनो नरः प्राज्ञः सभायां नैव शोभते।

विद्या से हीन पुरुष चतुर हो तो भी सभा में नहीं शोभता है।

विद्यया शस्यते लोके पूज्यते चोत्तमैः सदा।

विद्या से मनुष्य प्रशस्त गिना जाता है और उत्तम मनुष्यों से पूजित होता है।

विना परीक्षां नो तत्त्वं प्रसिद्धं ज्ञायते सतः।

विना परीक्षा किये सज्जन पुरुष का प्रसिद्ध तत्त्व नहीं जान पड़ता है।

विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजनः।

सुजन पुरुष अप्रिय सुनकर भी प्रिय वचन को ही बोलते हैं।

विषमगता अपि न बुधाः परिभवमिश्रां श्रियं वाञ्छन्ति।

कठिनावस्था को पाने पर भी विद्वान् पुरुष अनादरयुक्त लक्ष्मी को नहीं चाहते।

वैराग्यमेवाऽभयम्।

एकमात्र वैराग्य में ही कोई भय नहीं है।

विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।

चित्त की वृत्तियां अनेक प्रकार की होती हैं।

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।

जो धर्मोपदेश नहीं देते हैं वे वृद्ध नहीं हैं।

वाणी व्याकरणेन शोभते।

वचन व्याकरण पढ़ने से शोभता है।

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।

विद्या विनय को देती है और विनय आने से मनुष्य पात्र बन जाता है।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्वित्तमायाति याति च।

अपना वृत्त (आचरण) अच्छी तरह रक्षित करना चाहिये, धन तो आता जाता रहता है।

विद्या विप्रस्य भूषणम्।

ब्राह्मण का विद्या ही भूषण है।

विविक्तवर्णाभरणा सुखश्रुतिः।
प्रसादयन्ती हृदयान्यपि द्विषाम्॥

मनोहराक्षरा सुखकरी वाणी शत्रुओं के हृदय को भी प्रसन्न करती है।

विरोधिवचसो मूकान् वागीशानपि कुर्वते ।
जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिना गिरः ॥

विरुद्ध बोलनेवाले यदि बृहस्पति भी हों तो मूक कर दिये जाते हैं और अनुकूल वक्ता जड़ भी हो तो वक्ता समझा जाता है।

वंशभवो गुणवानपि सङ्गविशेषेण पूज्यते पुरुषः ।

कुलीन और गुणवान् भी मनुष्य उत्तम के सङ्ग से शोभता है।

वरमेको गुणीपुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।

गुणवान् एक ही पुत्र अच्छा है और सैकड़ों मूर्ख पुत्र अच्छे नहीं होते।

विद्याविहीना बहवोपि पुत्राः
कल्पायुषः सन्तु पितुः किमेतैः ।

विद्याहीन बहुत से चिरायु पुत्रों के होने पर भी पिता को कुछ प्रयोजन नहीं होता।

विपत्तौ किं विषादेन संपत्तौ हर्षणेन किम् ।
भवितव्यं भवत्येव कर्मणां गतिरीदृशी ॥

विपत्ति में विषाद नहीं करना चाहिये और संपत्ति आनेपर हर्ष नहीं करना चाहिये, जो होनहार है वह होता ही है, कर्मों की ऐसी गति है।

वाणी दरिद्रस्य शुभा हितापि ह्यर्थेन शब्देन च संप्रयुक्ता।
न शोभते वित्तवतः समीपे भेरीनिनादोपहतेव वीणा ॥

दरिद्र का वचन अर्थ और शब्द से युक्त होने पर भी धनी के पास नहीं शोभता, जैसे कि भेरी के नाद के सामने वीणा नहीं शोभती।

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्दानाय भोगाय च रक्षणाय ॥

खल की विद्या केवल विवाद के लिये होती है और धन गर्व के लिये और शक्ति दूसरे को पीड़ित करने के लिये होती है, ये सब साधु की दान और भोग और रक्षण के लिये हैं।

वाणी रसवती यस्य भार्या पुत्रवती सती ।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम् ॥

जिसकी वाणी रसयुक्त है और स्त्री पुत्रवती तथा सती है और लक्ष्मी दानयुक्त है उसका जीवन सफल है।

विपदोभिभवन्त्यविक्रमम् ।

पराक्रमहीन को विपत्तियां घेर लेती हैं।

व्यसनानन्तरं सौख्यं स्वल्पमप्यधिकं भवेत् ।

दुःख के पश्चात् अल्प भी सुख अधिक जान पड़ता है।

वितरति यावद्दाता तावत्सकलोपि भवति कलभाषी।

जबतक दाता दान देता है तबही तक सब कोई मधुर बोलते हैं।

वनेषु दोषाः प्रभवन्ति रागिणाम्।

रागी को वनमें भी दोष हो सक्ते हैं।

विना गोरसं को रसं भोजनानाम्।

विना घृत आदि के भोजन में क्या स्वाद है।

वित्तेन किं वितरणं यदि नास्ति दीने।

यदि दरिद्र को दान न किया जाय तो उस धन से क्या प्रयोजन है।

विद्वान् विभाति पुरुषेषु विचक्षणेषु।

चतुर पुरुषों में विद्वान् शोभता है।

वरं वेश्या पत्नी न पुनरविनीता कुलवधूः।

वेश्या स्त्री होना उत्तम है परन्तु दुःशीला कुलाङ्गना उत्तम नहीं है।

विद्या या पुस्तके वृथा।

जो विद्या केवल पुस्तक में ही है वह व्यर्थ है।

वेश्यानां मोहमस्त्रकम्।

वेश्याओं का मोहित करना ही अस्त्र है।

व्यसने योजयेच्छत्रुम्।

शत्रु के ऊपर व्यसन डालना चाहिये।

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।

परदेश में विद्या मित्र है और घर में स्त्री मित्र है।

विद्यते हि नृशंसेभ्यो भयं गुणवतामपि।

क्रूर मनुष्यों से गुणवान् को भी भय होता है।

विषं सभा दरिद्रस्य।

दरिद्र के लिये सभा विष है।

विद्याभी रसिकं रसेन सकलं शीलेन कुर्याद्वशम्।

रसिक पुरुष को विद्या और रस से वशीभूत करना चाहिये और समस्त पुरुषों को शील से वशीभूत करना चाहिये।

वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः।

फलहीन वृक्ष को पक्षिगण छोड़ देते हैं।

व्यसनं प्राप्य यो मोहात्केवलं परिदेवयेत्।
क्रन्दनं वर्धयत्येव तस्यान्तं नाधिगच्छति॥

जो दुःख पाकर अज्ञान से केवल दुःखी होते हैं वे रोदन को ही बढ़ाते हैं और दुःख के अन्त को नहीं पाते।

वयो गते किं वनिताविलासः ।

अवस्था के बीतजाने पर स्त्रीविलास व्यर्थ है।

विद्वान्न भाति पुरुषेषु निरक्षरेषु ।

मूर्खमण्डल में विद्वान् नहीं शोभता है।

विकसति न वसन्ते मालती कोत्र हेतुः ।

वसन्तऋतु में मालती नहीं खिलती इसमें क्या कारण है।

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः ।

विकार के कारण उपस्थित होने पर भी जिनका चित्त विकार को प्राप्त नहीं होता वेही धीर हैं।

विकसति पतङ्गस्योदये पुण्डरीकम् ।

सूर्य के उदय होने पर कमल खिलता है।

वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः ।

श्मशान के फूल के समान वेश्या का त्याग करना चाहिये।

वामे विधौ न फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।

भाग्य के प्रतिकूल होने पर मनोरथ सिद्ध नहीं होते हैं।

विरहीव विभो प्रियामयं परिपश्यामि भवन्मयं जगत् ।

हे प्रभो ! विरही जैसे जगत् को प्रियमय देखता है ठीक उसी प्रकार मैं जगत् को भवन्मय (शिवमय) देखता हूँ।

विद्यास्समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।

हे देवि ! जगत् में कलाओं के सहित सब विद्याएँ और समस्त स्त्रियां ये सब आपके ही भेद हैं।

वैकुण्ठस्य हि यद्रूपं तस्मै कार्य्यात्मने नमः ।

जो कुण्ठित नहीं होनेवाला रूप है उस कार्य्यात्मा भगवान् को नमस्कार है।

श

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पण्डितः ।
वक्ता दशसहस्रेषु दाता भवति वा न वा ॥

सैकड़ों में एक शूर होता है, सहस्रों में एक पण्डित होता है, दस सहस्रों में एक वक्ता होता है और दाता पैदा होता है कि नहीं यह कह नहीं सके।

शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतो वशित्वम् ।

शास्त्र, युवती (स्त्री) और राजा ये किसी के अधीन नहीं हैं।

शुचि भूषयति श्रुतं वपुः।

शुद्ध शास्त्र शरीर को भूषित करता है।

श्रुतेन किं यो न च धर्ममाचरेत्।

सुनने से क्या हुआ यदि सुनकर धर्म का आचरण न करे?

शास्त्रं सुचिन्तितमपि परिचिन्तनीयम्।

शास्त्र अच्छी तरह विचारित हो तब भी विचार करना चाहिये।

शीलं सर्वस्य भूषणम्।

शील सबका भूषण है।

शीलं परं भूषणम्।

शील ही उत्तम भूषण है।

श्रीपरिचयाज्जडा अपि भवन्त्यभिज्ञा विदग्धचरितानाम्।

लक्ष्मी के सम्बन्ध से मूर्ख भी चतुर पुरुषों का व्यवहार जान जाता है।

शत्रुर्दहति संयोगे वियोगे मित्रमप्यहो।

शत्रु संयोग होने पर जलाता है और मित्र वियोग होने पर जलाता है।

श्रुतं कृतधियां सङ्गात्।

विद्वान् के संसर्ग से शास्त्र आता है।

शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकं
प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति।

शस्त्र केवल पुरुष के शरीर का नाश करता है और बुद्धि कुल, विभव तथा कीर्ति का नाश करती है।

श्रवणसुखसीमा हरिकथा।

श्रवण-सुख की सीमा हरिकथा है।

शाठ्येन धर्मं कपटेन मित्रं परोपतापेन समृद्धिभावम्।
सुखेन विद्यां परुषेण नारीं वाञ्छन्ति ये व्यक्तमपण्डितास्ते॥

शठता से धर्म और कपट से मित्र, दूसरे को कष्ट देकर संपत्ति और सुख से विद्या और क्रूरता से स्त्री जो चाहते हैं वे अवश्य मूर्ख हैं।

शान्तिश्चेद्वचनेन किं किमरिभिः क्रोधोस्ति चेद्देहिनाम्।

यदि शान्ति है तो बोलने से क्या मतलब है और यदि क्रोध है तो शत्रुओं से क्या प्रयोजन है। तात्पर्य्य यह है कि यदि शान्ति है तो बकवाद करना निष्फल है और यदि क्रोध है तो शत्रुओं का होना निष्फल है। क्रोध ही महान् शत्रु है।

शीलेन प्रमदा भाति।

स्त्री उत्तम शील होने से शोभती है।

शश्वदुपभोगे गिरिरपि नश्यति।

सदा उपभोग करने से पहाड़ भी समाप्त हो जाता है।

शशशृङ्गमसंभवम्।

शशक के शृंग (सींग) नहीं होते हैं।

शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति।

जो शस्त्र से रक्षा करनेलायक वस्तु रक्षित नहीं हो सके तो शस्त्रधारी का यश नहीं नष्ट होता है।

शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।

शोक से ग्रस्त होने पर हृदय प्रलापद्वारा धारण किया जाता है।

शूरा रणे विराजन्ते।

वीरलोग युद्ध में शोभते हैं।

शूरा नैव विकत्थना भवेयुः।

वीरलोग आत्मश्लाघा करनेवाले नहीं होते हैं।

शोभते वक्तृताशक्तिः सभायां महतां खलु।

महान् पुरुषों की सभा में वक्तृताशक्ति शोभा देती है।

शर्वरी बहुदोषदा।

रात्रि अधिक दोष देनेवाली है।

शास्त्राभ्यासे सदा यत्नः कर्तव्यो मानवैः सदा।

मनुष्य को विद्याभ्यास में सदा यत्न करना चाहिये।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।

पण्डित अर्थात् ज्ञानीलोग कुत्ते में और चाण्डाल में समदर्शी ही होते हैं अर्थात् दोनों में समानरूप से आत्मा का दर्शन करते हैं।

शक्तिशक्तिमतोर्भेदं तत्त्वज्ञानविवर्जिताः।
बालिशा एव पश्यन्ति न तत्त्वज्ञानिनो जनाः॥

शक्ति और शक्तिमान् में तत्त्वज्ञानविवर्जित बालक ही भेद देखते हैं। तत्त्वज्ञानी महापुरुष तो शक्ति और शक्तिमान् में अभेद ही देखा करते हैं।

ष

षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रश्चतुष्कर्णः स्थिरो भवेत्।

छः कान में जाने से मन्त्र (सलाह) प्रकाशित हो जाता है चार कान में स्थिर रहता है।

षड्गुणाः ब्राह्मणा ज्ञेयाः ।

ब्राह्मण के छः गुण हैं।

षड्गुणाः शक्तयस्तिस्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः ।
ग्रन्थानधीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोप्यलम् ॥

छः गुण और तीन शक्ति, तीन सिद्धियां और तीन उदय, ये ग्रन्थ पढ़कर अल्पबुद्धि भी व्याख्यान कर सक्ता है।

स

सङ्घशक्तिः कलौ युगे ।

कलियुग में सङ्घशक्ति कार्य्यकारिणी हुआ करती है।

सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युतदीपकाः ।

क्रुद्ध पुरुष के सामने शान्ति वचन उसके क्रोध को ही बढ़ाते हैं।

सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ।

अतिथि सबका गुरु है।

सुजनो न याति वैरं परहितनिरतो विनाशकालेपि ।

परोपकार करनेवाला सुजन पुरुष अपने विनाश का समय आने पर भी शत्रुता नहीं करता है।

संपदो महतामेव महतामेव चापदः ।

महान् पुरुष को ही संपत्ति तथा आपत्ति आया करती हैं।

स्वाधीनता च पुंसां महदैश्वर्यं विनाप्यर्थैः ।

पुरुषों का स्वाधीनपना, यह विना द्रव्य का ही महान् ऐश्वर्य्य है।

सुखमास्ते निस्पृहः पुरुषः ।

निस्पृही पुरुष सदा सुखी रहता है।

सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ।

सब गुण सुवर्ण (धन) का आश्रय लेते हैं।

संसर्गाद् भवति हि साधुता खलानाम् ॥

उत्तम पुरुषों के संसर्ग से खल पुरुष में भी साधुता आजाती है।

साधुरेवार्थिभिर्याच्यः क्षीणवित्तोपि सर्वदा ।
सुष्कोपि हि नदीमार्गः खन्यते सलिलार्थिभिः ॥

क्षीण धनवाले भी सज्जन पुरुष से ही याचकलोग प्रार्थना करते हैं जैसे कि जल के इच्छावान् पुरुष सूखे हुए भी नदी के मार्ग को ही खोदते हैं।

सत्यान्नास्ति परो धर्मः ।

सत्य से परे कोई धर्म्म नहीं है।

सहसा विदधीत न क्रियाम्।

विना विचार किये शीघ्र कोई काम नहीं करना चाहिये।

संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम्।

मनुष्य के लिये संतोष ही परम निधि है।

सर्वस्यैव परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः।

सबके स्वभाव की ही परीक्षा करनी चाहिये इतर गुणों की नहीं।

स्वजनोऽपि दरिद्राणां तत्क्षणादुर्जनायते।

पुरुष के दरिद्र होने पर अपना कुटुम्बीजन भी दुर्जन के जैसा हो जाता है।

स्थिरा शैली गुणवतां खलबुद्ध्या न बाधते।

गुणवान् की शैली स्थिर होती है अतः खलों की बुद्धि से बाधित नहीं हो सकी है।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

जो साहित्य और संगीत कला से वर्जित है वह पुच्छ-सींग से रहित साक्षात् पशु है।

संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।

महान् पुरुष संपत्ति तथा विपत्ति आने पर भी एक रूप रहते हैं।

सन्तः स्वतः प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम्।

मनुष्यों में सज्जन अपने गुण को स्वतः प्रकाश करते हैं दूसरे के द्वारा नहीं।

साधवः समदर्शिनः।

साधु लोग समदर्शी हुआ करते हैं।

साधुरेव प्रवीणः स्यात्सद्गुणामृतवर्णने।
नवचूताङ्कुरास्वादकुशलः कोकिलः किल॥

सज्जनों के गुणरूपी अमृत के वर्णन करने में सज्जन पुरुष ही निपुण हैं जैसे कि नवीन आम्रमञ्जरी के आस्वाद लेने में कोकिल ही चतुर होता है।

संपत्तौ कोमलं चित्तं साधोरापदि कर्कशम्।
सुकुमारं मधौ पत्रं तरोः स्यात्कठिनं शुचौ॥

साधुपुरुष का चित्त संपत्ति आने पर कोमल होता है और विपत्ति आनेपर कठिन होता है जैसे बसन्तऋतु में वृक्षों के पत्ते कोमल होते हैं और ग्रीष्म में कठिन हो जाते हैं।

सज्जना एव साधूनां प्रार्थयन्ति गुणोत्करम्।
पुष्पाणां सौरभं प्रायस्तनुते दिक्षु मारुतः॥

सज्जनों के गुणसमूह को सज्जन ही विस्तृत करते हैं जैसे पुष्प की सुगन्धि को वायु ही दिशाओं में फैलाता है।

स्वभावं नैव मुञ्चन्ति सन्तः संसर्गतोऽसताम्।

सज्जन खल के सम्बन्ध से अपना स्वभाव नहीं छोड़ते हैं।

स्वभावं न जहात्येव साधुरापद्गतोपि सन्।

आपत्ति के आने पर भी साधु अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता है।

सज्जन एव हि विद्या शोभायै भवति दुर्जने मोघा।

सज्जन पुरुष ही में विद्या शोभती है और दुर्जन में निष्फलता होती है।

सन्त एव सतां नित्यमापदुद्धरणक्षमाः।
गजानां पङ्कमग्नानां गजा एव धुरंधराः॥

सज्जनों की आपत्ति के हटाने में सज्जन ही समर्थ हैं जैसे कीचड़ में फँसे हुए हाथी को हाथी ही निकाल सकता है।

स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्।

वह कैसा मित्र है जो राजा को अच्छी सलाह नहीं देता है।

सर्वप्राणहराः खलाः।

खल पुरुष सबके प्राण का नाश करनेवाला होता है।

समूलघातमघ्नन्तः परान्नोद्यन्ति मानिनः।

मानी पुरुष यदि शत्रु का समूल नाश न करे तो उदय को नहीं पाता है।

संपदा सुस्थिरं मन्यो भवति स्वल्पयापि यः।
कृतकृत्यो विधिर्मन्ये न वर्धयति तस्य ताम्॥

जो थोड़ी सी ही संपत्ति से अपने को कृतकृत्य समझ लेता है उसकी संपत्ति आगे को नहीं बढ़ती है।

स्वयं तथा न कर्तव्यं स्वगुणाख्यापनं पुनः।

अपने से अपने गुण की ख्याति नहीं करनी चाहिये।

सति शीले गुणा भान्ति पुंसां शौर्यादयो यथा।
यौवने सदलंकाराः शोभां बिभ्रति सुभ्रुवः॥

जैसे स्त्रियों को युवावस्था आने पर भूषण अत्यन्त शोभता है वैसे ही पुरुष को शील रहते शौर्यादिक गुण शोभते हैं।

स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते दन्ता केशा नखा नराः।

दाँत केश तथा नख और मनुष्य स्थानच्युत होने से नहीं शोभते हैं।

संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति।

दोष और गुण संसर्ग से होते हैं।

स बन्धुर्यो विपन्नानामापदुद्धरणक्षमः।

जो दीन पुरुष को आपत्ति से हटाने में समर्थ है वह बन्धु है।

समायाति यदा लक्ष्मीर्नारिकेलफलाम्बुवत्।
विनिर्याति यदा लक्ष्मीर्गजभुक्तकपित्थवत्॥

नारिकेल के जल के समान लक्ष्मी आती है और हाथी से खाए हुए कपित्थ फल के समान जाती है।

सर्वदेवमयो राजा।

राजा सब देवस्वरूप है।

सद्भिरेव सहासीत।

सज्जनों के ही साथ सदा बैठना चाहिये।

सद्भिः कुर्वीत संगतिम्।

सज्जनों के ही साथ संसर्ग करना चाहिये।

सा भार्य्या या प्रियं ब्रूते।

जो प्रिय बोलती है वही भार्या है।

स्थातव्यं पञ्चभिः सह।

पाँच के साथ रहना चाहिये।

स देशो यत्र जीव्यते।

जहां जीवन रहता है वही देश है।

स सुहृद् व्यसने यः स्यात्।

वही मित्र है जो व्यसन (विपत्ति) में काम आवे।

सच्छिद्रनिकटे वासो न कर्तव्यो कदाचन।

दोषयुक्त के पास कभी निवास नहीं करना चाहिये।

संतुष्यत्युत्तमः स्तुत्या।

उत्तम पुरुष स्तुति से प्रसन्न होता है।

सर्वस्यौषधशास्त्रमेव विहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।

सबकी औषध शास्त्र है परन्तु मूर्ख की कोई औषध नहीं है।

संस्थितस्य गुणोत्कर्षः प्रायः प्रस्फुरति स्फुटम्।
दग्धस्यागुरुखण्डस्य स्फारीभवति सौरभम्॥

प्रायः मरे हुए का गुणोत्कर्ष अधिक होता है। जले हुए अगर की ही सुगन्धि अधिक फैलती है।

स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते।

स्वभाव से ही जो सुन्दर वस्तु है वह संस्कार की अपेक्षा नहीं रखती है।

सुपात्रदानाच्च भवेद्धनाढ्यो धनप्रभावेण करोति पुण्यम्।

सुपात्र में दान देने से पुरुष धनवान् होते हैं और धन से धर्म कर सके हैं।

स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा।

स्वदेश में रहनेवाला यदि अधिक गुणी भी हो तो भी लोग अवज्ञा करते हैं।

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते।

दुःख का अनुभव करके सुख शोभता है।

स तापसो यः परितापकर्षणः।

जो खेद को दूर करे वही तपस्वी है।

सुखाच्च यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति।

सुख के पश्चात् जो दरिद्र होवे वह केवल शरीर से ही जीता है।

सकलापि कलावतां कला विकला पुण्यकलां विना खलु।

कलावान् पुरुषों की सभी कलाएँ पुण्यकला के विना विकल होती हैं।

स्तब्धस्य नश्यति यशो विषमस्य मैत्री
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्या फलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य॥

कर्तव्याकर्तव्य में आलसी की कीर्ति, क्रूर की मैत्री, क्रियाहीन का वंश, अर्थ में लोभी का धर्म, व्यसनी का विद्याफल, कृपण का सुख और उन्मत्त मन्त्रीवाले राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

स पुरुषो यः खिद्यते नेन्द्रियैः।

जो इन्द्रियों से खेद को प्राप्त न हो वही पुरुष है।

सर्वस्य जन्तोर्भवति प्रमोदो विरोधिवर्गे परिभूयमाने।

शत्रु के पराभव होने से सब प्राणिमात्र प्रसन्न होते हैं।

सलज्जा गणिका नष्टा।

लज्जावती वेश्या नाश हो जाती है।

स्त्रीपरीक्षा च निर्धने।

दरिद्र होने पर स्त्री की परीक्षा होती है।

सुकुले योजयेत्कन्याम्।

कन्या का विवाह अच्छे कुल में करना चाहिये।

संन्तोषस्त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने।
त्रिषु चैव न कर्तव्यो दाने तपसि पाठने॥

अपनी स्त्री और भोजन तथा धन में संतोष रखना चाहिये और दान, तपस्या और पाठन इनमें संतोष नहीं करना चाहिये।

सर्वशून्या दरिद्रता।

जहां दारिद्रय हो वहां सब शून्य है।

सिंहो विभाति गिरिकन्दरगह्वरासु।

पर्वत की गुफ़ा में सिंह शोभता है।

सा श्रीर्या न मदं करोति।

वही लक्ष्मी है जिससे मद न होवे।

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।

सब प्रकार की पवित्रताओं में अर्थसम्बन्धी पवित्रता प्रधान मानी गई है।

सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणस्य वृत्तयः।

संदेहयुक्त वस्तुओं में सज्जनों के अन्तःकरण ही प्रमाण हैं।

सतां न कामः कलुषीकरोति।

सज्जनों को काम मलिन नहीं कर सक्ता है।

साधने हि नियमोन्यजनानां
योगिनां तु तपसाखिलसिद्धिः।

साधारण मनुष्यों को साधन का नियम होता है, परन्तु योगियों की तपस्या से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं।

स्वाभाविकात्कृत्रिममन्यदेव।

स्वाभाविक की अपेक्षा कृत्रिम औरही है।

सर्वथा परिहर्तव्या दुर्जनैः सह संगतिः।

दुर्जनों का सङ्ग सर्वथा छोड़ना चाहिये।

संधत्ते भृशमरतिं हि सद्वियोगः।

सज्जन पुरुष का विरह अत्यन्त कष्टदायक है।

सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्पति स्वामभिख्याम्।

सूर्य के न रहने पर कमल अपनी शोभा को नहीं धारण करता है।

स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।

स्त्रियों का पति में विलास ही प्रथम प्रेम वचन होता है।

सर्वाशुचिनिधानस्य कृतघ्नस्य विनाशिनः।
शरीरकस्यापि कृते मूढाः पापानि कुर्वते॥

अपवित्रता का निधान और कृतघ्न और विनाशी क्षुद्र शरीर के लिये मूर्ख लोग पाप करते हैं।

स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया।

यदि अन्धे के शिर में माला डाली जावे तो वह सांप की बुद्धि से शिर को कँपाता है।

समुद्रवीचीव चलस्वभावा संध्याभ्रलेखेव मुहूर्तरागा।
स्त्रियो हृतार्था पुरुषं निरर्थं निष्पीडितालक्तकवत्त्यजन्ति॥

समुद्र की तरङ्ग के समान चञ्चल स्वभाववाली, संध्या काल की मेघमाला के समान मुहूर्तमात्र राग रखनेवाली स्त्रियां मतलब निकल जाने के बाद अर्थहीन पुरुष को निचोड़े हुए अलक्तक (महावर) के समान छोड़ देती हैं।

स्त्रियो हि विषयः शुचाम्।

स्त्रियां शोक की विषय हैं।

स्त्रीणां हि साहचर्याद्भवन्ति चेतांसि भर्तृसदृशानि।

पति के साथ रहने से स्त्री का भी चित्त पति के समान हो जाता है।

सकलस्यास्य लोकस्य जातिर्भवति मातृतः।
ऋषीणां तु श्रुतिदृशां पितृतो धर्मनिर्णयः॥

सब जगत् की जाति माता से निर्णीत होती है। वेदद्रष्टा ऋषियों का धर्म-निर्णय पिता से होता है।

स्त्रीधर्म एषः यद्दुष्टस्य दुष्टस्य वा भर्तुरनुगन्तव्यम्।

स्त्री का यही धर्म है कि दुर्जन या सज्जन पति का अनुगमन करना।

सेयमाकृतिर्नव्यभिचरति शीलम्।

वही यह आकृति है जिसमें शील का व्यभिचार नहीं है।

सर्वेषु शास्त्रेषु यत्नः कर्तव्यः।

सब शास्त्रों में यत्न करना चाहिये अर्थात् पढ़ना चाहिये।

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तञ्च जीवितम्॥

सञ्चय का अन्त क्षय है, उन्नति का अन्त पतन है, संयोग का अन्त वियोग है और जीने का अन्त मरण है।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

अपने धर्म्म में रहकर मरना ही श्रेयस्कर है परन्तु पर धर्म में जाना भय-जनक है।

सत्यं भूतहितं प्रोक्तं न यथार्थाभिभाषणम्।

प्राणियों का हित जिससे हो वह सत्य है। ठीक ठीक कहना सत्य नहीं है।

सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति।

दुष्ट पुरुष का सब चरित्र मशक (मच्छर) करता है।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

सब धर्मों को परित्याग करके एकमात्र मेरी शरण ले अर्थात् आत्मसमर्पण-रूप धर्म का आचरण कर।

सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।

सूर्य हजार गुण वापस देने के लिये ही पृथ्वी से जलका आकर्षण करता है।

ह

हालाहलो नैव विषं विषं रमा।

विष विष नहीं है किन्तु लक्ष्मी ही विष है।

हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा।

सुवर्ण की शुद्धि अथवा कालिमा अग्नि में जानी जाती है।

हिमवति दिव्यौषधयः शीर्षे सर्पः समाविष्टः।

शिर पर सांप है और हिमालय में दिव्यौषधि है।

ह्रिया देयं भिया देयं।

लज्जित होकर देना चाहिये, भययुक्त होकर देना चाहिये। तात्पर्य यह है कि दान करते समय यह समझकर कि यह मेरा दान कुछ भी नहीं है ऐसी ही बुद्धि उत्पन्न होनी चाहिये और दान न करने से मैं प्रत्यवाय का भागी होऊँगा इस डर से देना चाहिये।

हतं ज्ञानं क्रियाहीनम्।

क्रिया से हीन ज्ञान किसी काम का नहीं है।

हतं पुत्रमपण्डितम्।

मूर्ख पुत्र किसी काम का नहीं है।

हंसो विभाति नलिनीदलपुञ्जमध्ये।

कमलवृक्ष के पत्रपुञ्ज में हंस शोभता है।

हेया दुर्जनसंगतिः।

दुर्जनों का संग छोड़ना चाहिये।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

हितकारक और मनोहर वचन दुर्लभ होता है।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके सभ्यगण और मुखपत्र।

हिन्दू जाति की अद्वितीय विराट् धर्म्मसभा श्रीमहामण्डलके पांच श्रेणीके सभ्य होते हैं, यथाः—स्वाधीन नरपति और प्रधान प्रधान धर्म्माचार्य्यगण संरक्षक होते हैं। भारतवर्षके सब प्रान्तोंके बड़े बड़े ज़मींदार, सेठ, साहूकार आदि सामाजिक नेतागण उस उस प्रान्त के चुनावके द्वारा प्रतिनिधि सभ्य चुने जाते हैं। प्रत्येक प्रान्तके अध्यापक ब्राह्मणगणमेंसे उस उस प्रान्तीय मण्डलके द्वारा चुने जाकर धर्मव्यवस्थापक सभ्य बनाये जाते हैं। भारतवर्षके सब प्रान्तोंसे पांच प्रकारके सहायक सभ्य लिये जाते हैं, विद्यासम्बन्धी कार्य करनेवाले सहायक सभ्य, धर्मकार्य्य करनेवाले सहायक सभ्य, महामण्डल, प्रान्तीयमण्डल और शाखासभाओंको धनदान करनेवाले सहायक सभ्य, विद्यादान करनेवाले विद्वान् ब्राह्मण सहायक सभ्य और धर्मप्रचार करनेवाले साधु संन्यासी सहायक सभ्य। पाँचवीं श्रेणीके सभ्य साधारण सभ्य होते हैं जो हिन्दुमात्र हो सकते हैं। हिन्दुकुलकामिनीगण केवल प्रथम तीन श्रेणीकी सहायक सभ्या और साधारण सभ्या हो सकती हैं। श्रीभारतधर्म्म-महामण्डल प्रधान कार्य्यालय काशीसे एक हिन्दी भाषाका और दूसरा अंग्रेजी भाषाका, इस प्रकार सम्मिलित दो मासिक पत्र प्रकाशित होते हैं। इन सब प्रकारके सभ्यों और श्रीमहामण्डलके प्रान्तीयमण्डल, शाखा-सभा और संयुक्त सभाओंको श्रीमहामण्डलका हिन्दी और अंग्रेजी भाषाका मासिकपत्र दिया जाता है। नियमितरूपसे नियत वार्षिक चन्दा २॥) दो रुपये आठ आने देने पर हिन्दू नर-नारी साधारण सभ्य हो सकते हैं। साधारण सभ्योंको विना मूल्य मासिकपत्रिकाके अतिरिक्त उनके उत्तराधिकारियोंको तथा कन्या पुत्र आत्मीय आदि को समाजहितकारीकोषके द्वारा विशेष लाभ मिलता है।

प्रधानाध्यक्ष, श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल, प्रधानकार्य्यालय।

जगत्गंज, बनारस।

श्रीमहामण्डलस्थ उपदेशक महाविद्यालय।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल प्रधानकार्यालय काशीमें साधु और गृहस्थ धर्मवक्ता प्रस्तुत करनेके अर्थ श्रीमहामण्डल उपदेशक महाविद्यालय नामक विद्यालय स्थापित हुआ है। जो साधुगण दार्शनिक और धर्मसम्बन्धी ज्ञान लाभ करके अपने साधु जीवनको कृतकृत्य करना चाहें और जो विद्वान् गृहस्थ धार्मिक शिक्षालाभ करके धर्मप्रचार द्वारा देशकी सेवा करते हुए अपना जीवन निर्वाह करना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र भेजें।

प्रधानाध्यक्ष, श्रीभारतधर्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय,

जगत्गंज, बनारस (छावनी)।

श्रीमहामण्डलका शास्त्रप्रकाशविभाग।

यह विभाग बहुत विस्तृत है। अपूर्व संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजीकी पुस्तकें काशी प्रधान कार्य्यालय (जगत्गंज) में मिलती हैं। दस लाख मूलधन से भारतधर्म सिण्डिकेट नामक लिमिटेड कम्पनी खोलकर इस विभागका बृहत् आयोजन किया गया है।

सेक्रेटरी

श्रीभारतधर्म-महामण्डल,

जगत्गंज, बनारस।

धार्मिक और सामाजिक पुस्तकें

(भारतधर्म्म सिण्डिकेट द्वारा प्रकाशित ।)

नियम और सूचनायें ।

(१) पुस्तकें उधार, घर पर देखने या वापस लेनेका नियम नहीं है । १) रु० से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती । इससे कमके लिये टिकट भेजना चाहिये, टिकट मिलने पर पुस्तक तुरन्त बुकपोस्टसे भेज दी जाती है, राहमें गुम हो जानेकी जिम्मेवारी हमारी नहीं है।

(२) पता और पुस्तकोंका नाम बहुत साफ़ और पूरा लिखा जाना चाहिये ।

(३) एक ही नामकी कई विषयोंकी या कई लखकोंकी लिखी पुस्तकें रहती हैं । इसलिये मांग लिखते समय पुस्तकका विषय या लेखकका नाम अवश्य लिखना चाहिये ।

(४) पुस्तक रेलसे मँगानेवाले सज्जन अपने पासके रेलवेस्टेशनका नाम अवश्य लिखें।

(५) सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकविक्रेताओं तथा थोक ख़रीदारोंको २५) से ऊपर की पुस्तकों पर उचित कमीशन दिया जाता है । पुस्तकोंके नाम मालूम होने पर कमीशन भी बतलाई जा सकती है । डाकव्यय बढ़ जानेसे अधिक पुस्तक रेल द्वारा मंगाने ही में सुभीता है । अधिक पुस्तक मँगाते समय कमसे कम १०) पेशगी अवश्य भेजना चाहिये, बिना पेशगी के रेल द्वारा कोई पार्सल नहीं भेजा जाता ।

(६) किसी वी० पी० में भूल जान पड़े, तो लौटाना नहीं चाहिये । लिखने पर भूल सुधार दी जाती है ।

(७) पुस्तकोंका मूल्य प्रकाशककी आज्ञाके अनुसार घट बढ़ भी जाया करता है ।

निवेदन-पत्र ।

समस्त सनातनधर्मावलम्बी सज्जनोंसे सविनय निवेदन है कि हम लोगोंने बड़े उत्साह के साथ बड़े बड़े धुरन्धर विद्वानोंकी बनाई हुई धार्मिक पुस्तकोंके प्रकाशनका कार्य आरम्भ किया है, इस सत्कार्यका महत्त्व बतलानेकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि धार्मिक साहित्यके अभावमें धर्मका यथेष्ट प्रचार होना असम्भव है, इस अभावको दूर करनेके लिये ही दो साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित किये जाने लगे हैं "महाशक्ति" अंग्रेज़ीमें तथा "भारतधर्म" हिन्दी भाषामें ।

सर्वसाधारणकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये हमने अपने प्रकाशनविभागको बिलकुल समयानुकूल बना दिया है और इस बातकी निरन्तर चेष्टा की जा रही है कि सब प्रकार की धार्मिक पुस्तकोंका अच्छा संग्रह रहे।

आशा है आपको जिन पुस्तकोंकी आवश्यकता होगी लिखकर अनुगृहीत करेंगे ।

स्थिर ग्राहकोंके नियम ।

(१) इनमेंसे जो कमसे कम ४) मूल्यकी पुस्तकें पूरे मूल्यमें ख़रीदेंगे अथवा स्थिर ग्राहक होनेका चन्दा १) भेज देंगे, उन्हें शेष और आगे प्रकाशित होनेवाली सब पुस्तकें ¾ मूल्यमें दी जायँगी ।

---

(२) स्थिर ग्राहकोंको इस ग्रन्थ मालामें प्रकाशित होनेवाली हर एक पुस्तक ख़रीदनी होगी। जो पुस्तक इस विभाग द्वारा छापी जायगी, वह एक विद्वानोंकी कमेटी द्वारा पसन्द करा ली जायगी।

(३) हर एक ग्राहक अपना नम्बर लिखकर या दिखाकर हमारे कार्यालयसे अथवा जहां वह रहता हो वहां हमारी शाखा हो, तो वहांसे स्वल्प मूल्य पर पुस्तकें ख़रीद सकेगा।

(४) जो धर्मसभा इस धर्मकार्य्यमें सहायता करना चाहें और जो सज्जन इस ग्रंथमाला के स्थायी ग्राहक होना चाहें, वे नीचे पते पर पत्र भेजने की कृपा करें।

धर्मकल्पद्रुम।

श्रीस्वामी दयानन्द-विरचित।

यह हिन्दूधर्मका अद्वितीय और परमावश्यक ग्रन्थ है। हिन्दू जातिकी पुनरुन्नति के लिये जिन जिन आवश्यकीय विषयोंकी ज़रूरत है, उनमेंसे सबसे बड़ी भारी ज़रूरत एक ऐसे धर्मग्रन्थ की थी कि जिसके अध्ययन अध्यापनके द्वारा सनातनधर्म का रहस्य और उसका विस्तृत स्वरूप तथा उसके अंग उपांगोंका यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सके और साथ ही साथ वेदों और सब शास्त्रोंका आशय तथा वेदों और सब शास्त्रोंमें कहे हुए विज्ञानोंका यथाक्रम स्वरूप जिज्ञासुको भली भांति विदित हो सके। इसी गुरुतर अभावको दूर करनेके लिये भारतके प्रसिद्ध धर्मवक्ता और श्रीभारतधर्म-महामण्डलस्थ उपदेशक महाविद्यालयके दर्शनशास्त्र के अध्यापक श्रीमान् स्वामी दयानंदजी महाराजने इस ग्रन्थ का प्रणयन करना प्रारम्भ किया है। इसमें वर्तमान समयके आलोच्य सभी विषय विस्तृतरूपसे दिये जायँगे। अब तक इसके छः खण्डोंमें जो अध्याय प्रकाशित हुए हैं, वे ये हैं:—धर्म, दानधर्म, तपोधर्म, कर्मयज्ञ, उपासनायज्ञ, ज्ञानयज्ञ, महायज्ञ, वेद, वेदांग, दर्शनशास्त्र (वेदोपांग), स्मृतिशास्त्र, पुराणशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, उपवेद ऋषि और पुस्तक, साधारणधर्म और विशेषधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, नारीधर्म (पुरुषधर्म से नारीधर्म की विशेषता), आर्यजाति, समाज और नेता, राजा और प्रजाधर्म, प्रवृत्तिधर्म और निवृत्तिधर्म, आपद्धर्म, भक्ति और योग, मन्त्रयोग, हठयोग, लययोग, राजयोग, गुरु और दीक्षा, वैराग्य और साधन, आत्मतत्त्व, जीवतत्त्व, प्राण और पीठतत्त्व, सृष्टिस्थितिप्रलय-तत्त्व, ऋषि, देवता और पितृतत्त्व, अवतारतत्त्व, मायातत्त्व, त्रिगुणतत्त्व, त्रिभावतत्त्व, कर्मतत्त्व, मुक्तितत्त्व, पुरुषार्थ और वर्णाश्रमसमीक्षा, दर्शनसमीक्षा, धर्मसम्प्रदायसमीक्षा, धर्म-पन्थसमीक्षा और धर्ममतसमीक्षा। इस ग्रंथ से आजकल अशास्त्रीय और विज्ञानरहित धर्मग्रंथों और धर्मप्रचारके द्वारा जो हानि हो रही है, वह सब दूर होकर यथार्थरूप से सनातन वैदिक धर्म का प्रचार होगा। इस ग्रन्थरत्न में साम्प्रदायिक पक्षपात का लेशमात्र भी नहीं है और निष्पक्षरूपसे सब विषय प्रतिपादित किये गये हैं, जिससे सकलप्रकार के अधिकारी कल्याण प्राप्त कर सकें। इसमें और भी एक विशेषता यह है कि हिन्दूशास्त्र के सभी विज्ञान शास्त्रीय प्रमाणों और युक्तियोंके सिवाय आजकल की पदार्थ विद्या (Science) के द्वारा भी प्रतिपादित किये गये हैं; जिससे आजकल के नवशिक्षित पुरुष भी इससे लाभ उठा सकें। इसके सात खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम खण्डका मूल्य २), द्वितीयका १॥), तृतीयका २), चतुर्थका २), पंचमका

२), षष्ठका १॥) और सप्तम खण्डका २) है। इसके प्रथम दो खण्ड बढ़िया काग़ज़ पर भी छापे गये हैं और दोनों ही एक बहुत सुन्दर जिल्दमें बाँधे गये हैं। मूल्य ५) है।

प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत।

श्रीस्वामी दयानन्द-सम्पादित।

इस ग्रंथमें आर्य्यजाति का आदिका वासस्थान, उन्नतिका आदर्श निरूपण, शिक्षा-दर्श, आर्यजीवन, वर्णधर्म, आश्रमधर्म आदि विषय वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणों के साथ वर्णन किये गये हैं। यह ग्रन्थ धर्मशिक्षाके अर्थ बी० ए० क्लास का पाठ्य है। मूल्य प्रथम खण्डका २), द्वितीय खण्डका २)

नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत।

श्रीस्वामी दयानन्द-सम्पादित।

भारत का प्राचीन गौरव और आर्यजातिका महत्त्व जानने के लिये यह एक ही पुस्तक है। इसका द्वितीय संस्करण, परिवर्द्धित और सुन्दर होकर छप चुका है। यह ग्रन्थ भी बी० ए० क्लासका पाठ्य है। मूल्य १)

साधनचन्द्रिका।

श्रीस्वामी दयानन्द-विरचित।

इसमें मंत्रयोग, हठयोग, लययोग और राजयोग इन चारों योगों का संक्षेप में अति सुंदर वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ प्रथम वार्षिक एफ्० ए० क्लास का पाठ्य है। मूल्य १॥)

शास्त्रचन्द्रिका।

अज्ञाननाशिनी और ज्ञानजननीको विद्या कहते हैं। विद्या दो भागमें विभक्त है, एक परा विद्या और दूसरी अपरा विद्या। गुरुमुखसे प्राप्त होनेवाली ब्रह्मविद्या पराविद्या कहलाती है। परा विद्या ग्रंथोंसे नहीं प्रकाशित होती, परन्तु ग्रंथोंसे प्रकाशित होनेवाली विद्या को अपरा-विद्या कहते हैं। अपरा विद्या भी पुनः दो भागोंमें विभक्त है, यथा लौकिक विद्या और पार-लौकिक विद्या। शिल्प, कला, वाणिज्य, पदार्थविद्या, साइंस, राजनीति, समाजनीति, युद्ध-विद्या, चिकित्साविद्या आदि सब लौकिक विद्याके अन्तर्गत हैं और वेद और वेदसम्मत दर्शन पुराणादि शास्त्र सब पारलौकिक विद्या के अन्तर्गत माने गये हैं। पारलौकिक विद्याके दिग्दर्शनार्थ यह ग्रंथ इस विचारसे बनाया गया है कि जिससे विद्यार्थियोंको धर्मशिक्षा प्राप्त करनेमें सहायता प्राप्त हो सके। स्कूल कालेज पाठशाला आदिके विद्या-र्थियोंको तथा गृहमें बालकों को धर्मशिक्षाके निमित्त हिन्दूजातिकी विराट् धर्मसभा श्रीभारतधर्ममहामंडलके साधु तथा विद्वानोंकी सहायतासे अनेक ग्रंथ प्रणीत होकर प्रकाशित हुये हैं यथा—सदाचार सोपान, धर्मप्रश्नोत्तरी, धर्मसोपान, चरित्रचंद्रिका, नीतिचंद्रिका, आचारचंद्रिका, नवीनदृष्टिमें प्रवीण भारत, साधनचंद्रिका, प्रवीणदृष्टिमें नवीन भारत इत्यादि। उसी धर्मशिक्षा लक्ष्यको सामने रखकर यह ग्रंथ भी प्रणीत हुआ है। इसके द्वारा स्कूल, कालेज, पाठशालाओंके कार्यकर्त्तागण तथा बालकोंके मातापितागण बालकोंको धर्मशिक्षा देकर लाभवान् होंगे। मूल्य १॥)

धर्मचंद्रिका ।

श्रीस्वामी दयानन्द-विरचित ।

एन्ट्रेंस क्लासके बालकों के पाठनोपयोगी उत्तम धर्मपुस्तक है। इसमें सनातनधर्म का उदार सार्वभौम स्वरूप वर्णन, यज्ञ, दान, तप आदि धर्माङ्गोंका विस्तृत वर्णन, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, नारीधर्म, आर्यधर्म, राजधर्म तथा प्रजाधर्मके विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। कर्मविज्ञान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ आदि नित्य कर्मोंका वर्णन, षोडश संस्कारोंके पृथक्-पृथक् वर्णन और संस्कारशुद्धि तथा क्रियाशुद्धि द्वारा मोक्षका यथार्थ मार्ग निर्देश किया गया है। इस ग्रंथके पाठसे छात्रगण धर्मतत्त्व अवश्य ही अच्छी तरहसे जान सकेंगे। मूल्य १)

आर्य-गौरव ।

श्रीस्वामी दयानंद-विरचित ।

आर्य जातिका महत्त्व जाननेके लिये यह एक ही पुस्तक है। यह ग्रंथ स्कूली ९वीं तथा १०वीं कक्षाका पाठ्य है। मूल्य ॥)

आचारचंद्रिका ।

श्रीस्वामी दयानंद-विरचित ।

यह भी स्कूल पाठ्य सदाचार संबंधीय धर्मपुस्तक है। इसमें प्रातःकालसे लेकर रात्रि में निद्रा के पहले तक क्या क्या सदाचार किस लिये प्रत्येक हिंदू संतानको अवश्य ही पालने चाहिये, इसका रहस्य उत्तम रीतिसे बताया गया है और आधुनिक समयके विचारसे प्रत्येक आचार पालनका वैज्ञानिक कारण भी दिखाया गया है। यह ग्रंथ बालकोंके लिये अवश्य ही पाठ करने योग्य है। यह स्कूलकी ८वीं कक्षाका पाठ्य है। मूल्य ॥)

नीतिचंद्रिका ।

श्रीस्वामी दयानंद-विरचित ।

मानवीय जीवनका उन्नत होना नीतिशिक्षा पर ही अवलम्बित होता है। कोमलमति बालकोंके हृदयों पर नीतितत्त्व खचित करनेके उद्देश्यसे यह पुस्तिका लिखी गई है। इसमें नीतिकी सब बातें ऐसी सरलतासे समझाई गई हैं कि इस एक के ही पाठ से नीति शास्त्रका ज्ञान हो सकता है। यह स्कूलकी ७वीं कक्षाका पाठ्य है। मूल्य ॥)

चरित्रचन्द्रिका ।

सम्पादक पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर ।

इस ग्रंथ में पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक महापुरुषों के सुन्दर मनोहर विचित्र चरित्र वर्णित हैं। यह ग्रंथ स्कूल की ६ठीं कक्षा का पाठ्य है। प्रथम भाग का मूल्य १) और दूसरे भाग का १।)

धर्मप्रश्नोत्तरी ।

श्रीस्वामी दयानन्द-विरचित ।

सनातनधर्म के प्राय: सभी सिद्धान्त अतिसंक्षिप्त रूप से इस पुस्तिका में लिखे गये हैं । प्रश्नोत्तरी की प्रणाली ऐसी सुन्दर रक्खी गई है कि छोटे बच्चे भी धर्मतत्त्वों को भली भांति हृदयङ्गम कर सकेंगे । भाषा भी अतिसरल है । यह ग्रन्थ स्कूल की ४थी कक्षा का पाठ्य है । काग़ज़ और छपाई बढ़िया होने पर भी मूल्य केवल ।) मात्र है ।

परलोकरहस्य ।

श्रीमान् स्वामी दयानन्द-विरचित ।

मनुष्य मरकर कहां जाता है, उसकी क्या गति होती है, इस विषय पर वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणों के साथ विस्तृत रूप से वर्णन है । मूल्य ।)

चतुर्दशलोकरहस्य ।

श्रीमान् स्वामी दयानन्द-विरचित ।

स्वर्ग और नरक कहां और क्या वस्तु है, उनके साथ हमारे इस मृत्युलोक का क्या सम्बन्ध है इत्यादि विषय शास्त्र और युक्ति के साथ वर्णन किये गये हैं । आजकल स्वर्ग नरक आदि लोकों के विषय में बहुत संशय फैल रहा है । श्रीमान् स्वामीजी महाराज ने अपनी स्वाभाविक सरल युक्तियों के द्वारा चतुर्दश लोकों का रहस्य वर्णन करते हुए उस सन्देह का अच्छा समाधान किया है । मूल्य ।)

सती-चरित्र-चन्द्रिका ।

श्रीमान् पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर सम्पादित ।

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी आदि ४४ सती स्त्रियों के जीवनचरित्र लिखे गये हैं । मूल्य २)

नित्यकर्मचन्द्रिका ।

इस ग्रंथ में प्रातःकाल से लेकर रात्रिपर्यन्त हिन्दू मात्र के अनुष्ठान करने योग्य नित्य कर्म वैदिक तांत्रिक मन्त्रों के साथ भली भांति वर्णित किये गये हैं । मूल्य ।)

धर्मसोपान ।

यह धर्मशिक्षा विषयक बड़ी उत्तम पुस्तक है । बालकों को इससे धर्म का साधारण ज्ञान भली भांति हो जाता है । यह पुस्तक क्या बालक बालिका, क्या वृद्ध स्त्री पुरुष, सबके लिये बहुत ही उपकारी है । धर्मशिक्षा पाने की इच्छा करनेवाले सज्जन अवश्य इस पुस्तक को मंगावें । यह स्कूल की ५वीं कक्षा का पाठ्य है । मूल्य ।) आना ।

धर्म-कर्म-दीपिका ।

इस पुस्तक में कर्म का स्वरूप, कर्म के भेद, संस्कार के लक्षण और भेद, वैदिक संस्कारों का रहस्य, विविध कर्म का वैज्ञानिक स्वरूप, कर्म सम्बन्ध से मुक्ति, कर्म के साथ धर्मका मिश्र सम्बन्ध, धर्मरूप कल्पद्रुम का विस्तृत वर्णन, वर्णाश्रम धर्म की महिमा और विज्ञान, उपासना रहस्य, उपासना की मूलभित्ति रूप पीठ रहस्य, धर्म, कर्म और यज्ञ

शब्दों का वैज्ञानिक रहस्य और सदाचार का विज्ञान और महत्त्व प्रतिपादन किया गया है। यह ग्रंथ मूल और सुस्पष्ट हिन्दी अनुवाद सहित शास्त्रीय प्रमाण देकर छापा गया है, यह ग्रंथरत्न प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बी के लिये उपादेय है। मूल्य ॥)

सदाचारसोपान।

यह पुस्तक कोमलमति बालक-बालिकाओं की धर्मशिक्षा के लिये प्रथम पुस्तक है। यह स्कूल की तीसरी कक्षा का पाठ्य है। मूल्य -) एक आना।

कन्याशिक्षासोपान।

कोमलमति कन्याओंको धर्मशिक्षा देनेके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य-)

ब्रह्मचर्यसोपान।

ब्रह्मचर्यव्रतकी शिक्षाके लिये यह ग्रंथ बहुत उपयोगी है। सब ब्रह्मचारी आश्रम, पाठशाला और स्कूलोंमें इस ग्रंथकी पढ़ाई होनी चाहिये। मूल्य ।) आना।

राजशिक्षासोपान।

राजा महाराजा और उनके कुमारोंको धार्मिक शिक्षा देनेके लिये यह ग्रंथ बनाया गया है परन्तु सर्वसाधारणकी धर्मशिक्षाके लिये भी यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है, इसमें सनातनधर्मके अंग और उसके तत्त्व अच्छी तरह बताये गये हैं। मूल्य ≡) तीन आना।

साधनसोपान।

यह पुस्तक उपासना और साधनशैलीकी शिक्षा प्राप्त करनेमें बहुत ही उपयोगी है। इसका बँगला अनुवाद भी छप चुका है। बालक बालिकाओंको पहलेसे ही इस पुस्तक को पढ़ाना चाहिये। यह पुस्तक ऐसी उपकारी है कि बालक और वृद्ध समान-रूपसे इस-से साधन विषयक शिक्षा लाभ कर सकते हैं। मूल्य ।) चार आना।

शास्त्रसोपान।

सनातनधर्मके शास्त्रों का संक्षेप सारांश इस ग्रंथ में वर्णित है। सब शास्त्रोंका कुछ विवरण समझनेके लिये प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बीके लिये यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ।) चार आना।

धर्मप्रचारसोपान।

यह ग्रंथ धर्मोपदेश देनेवाले उपदेशक और पौराणिक पंडितोंके लिये बहुत ही हित-कारी है। मूल्य ≡) आना।

उपदेशपारिजात।

यह संस्कृत गद्यात्मक अपूर्व ग्रंथ है। सनातनधर्म क्या है, धर्मोपदेश किसको कहते हैं, सनातनधर्मके सब शास्त्रोंमें क्या २ विषय हैं, धर्मवक्ता होनेके लिये किन २ योग्यताओं के होनेकी आवश्यकता है, इत्यादि अनेक विषय इस ग्रंथमें हैं। संस्कृत विद्वान् मात्रको पढ़ना उचित है और धर्मवक्ता, धर्मोपदेशक, पौराणिक, पण्डित आदिके लिये तो यह ग्रंथ सब समय साथ रखने योग्य है। मूल्य ॥) आना।

कल्किपुराण।

कल्कि पुराणका नाम किसने नहीं सुना है ? इस कलियुगमें कल्कि महाराज अवतार धारणकर दुष्टोंका संहार करेंगे, उसका पूर्ण वृत्तान्त है। विशुद्ध हिंदी अनुवाद और विस्तृत भूमिका सहित यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। धर्मजिज्ञासुमात्रको इस ग्रंथको पढ़ना उचित है। मूल्य १॥)

योगदर्शन।

हिन्दी भाष्य सहित। इस प्रकारका हिन्दी भाष्य और कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। सब दर्शनोंमें योगदर्शन सर्ववादिसम्मत दर्शन है और इसमें साधनके द्वारा अन्तर्जगत्के सब विषयोंका प्रत्यक्ष अनुभव करा देनेकी प्रणाली रहनेके कारण इसका पाठन और भाष्य एवं टीका निर्माण वही सुचारु रूपसे कर सकता है, जो योगके क्रिया सिद्धांश का पारगामी हो। इस भाष्यके निर्माणमें पाठक उक्त विषयकी पूर्णता देखेंगे। प्रत्येक सूत्रका भाष्य प्रत्येक सूत्रके आदिमें भूमिका देकर ऐसा क्रमबद्ध बना दिया गया है कि जिससे पाठकों को मनोनिवेशपूर्वक पढ़ने पर कोई असम्बद्धता नहीं मालूम होगी और ऐसा प्रतीत होगा कि महर्षि सूत्रकार ने जीवोंके क्रमाभ्युदय और निःश्रेयसके लिये मानो एक महान् राजपथ निर्माण कर दिया है। इसका द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है, इसमें इस भाष्य को और भी अधिक सुस्पष्ट, परिवर्द्धित और सरल किया गया है। मूल्य २) दो रुपया।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलरहस्य।

इस ग्रंथमें सात अध्याय हैं। यथा—आर्य्यजातिकी दशाका परिवर्त्तन, चिंताका कारण, व्याधिनिर्णय, औषधिप्रयोग, सुपथ्यसेवन, बीजरक्षा और महायज्ञसाधन। यह ग्रंथरत्न हिंदूजातिकी उन्नतिके विषयका असाधारण ग्रंथ है। प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बी को इस ग्रंथ को पढ़ना चाहिये। द्वितीयावृत्ति छप चुकी है, इसमें बहुत सा विषय बढ़ाया गया है। इस ग्रंथ का आदर सारे भारतवर्ष में समान रूप से हुआ है। धर्मके गूढ़तत्त्व भी इसमें बहुत अच्छी तरहसे बताये गये हैं। इसका बँगला अनुवाद भी छप चुका है। मूल्य १)

निगमागमचन्द्रिका।

प्रथम, द्वितीय, पञ्चम और षष्ठ भाग धर्मानुरागी सज्जनों को मिल सकते हैं। इन भागों में सनातनधर्मके अनेक गूढ़ रहस्यसम्बन्धी ऐसे ऐसे प्रबंध प्रकाशित हुए हैं कि आजतक वैसे धर्मसम्बन्धी प्रबंध और कहीं भी प्रकाशित नहीं हुए हैं। जो धर्म के अनेक रहस्य जानकर तृप्त होना चाहें, वे इन पुस्तकों को मँगावें। प्रत्येक का मूल्य १)

भक्तिदर्शन।

श्रीशाण्डिल्य सूत्रों पर बहुत विस्तृत हिन्दी भाष्यसहित और एक अतिविस्तृत भूमिका सहित यह ग्रन्थ प्रणीत हुआ है। हिंदी का यह एक असाधारण ग्रन्थ है। ऐसा भक्ति-सम्बन्धी ग्रन्थ हिंदी में पहले प्रकाशित नहीं हुआ था। भगवद् भक्तिके विस्तृत रहस्यों का ज्ञान इस ग्रन्थके पाठ करने से होता है भक्तिशास्त्रके समझनेकी इच्छा रखनेवाले और श्रीभगवान् में भक्ति करनेवाले धार्मिकमात्र को इस ग्रन्थ को पढ़ना उचित है। मूल्य १) एक रुपया।

मंत्रयोगसंहिता ।

भाषानुवादसहित । योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है । इसमें मन्त्रयोगके १६ अङ्ग और क्रमशः उनके लक्षण, साधनप्रणाली आदि सब अच्छी तरह से वर्णन किये गये हैं । इनमें मन्त्रोंका स्वरूप और उपास्यनिर्णय बहुत अच्छा किया गया है और अनर्थकारी साम्प्रदायिक विरोधके दूर करनेके लिये यह एकमात्र ग्रंन्थ है, इसमें नास्तिकोंके मूर्तिपूजा, मन्त्रसिद्धि आदि विषयों में जो प्रश्न होते हैं, उनका अच्छा समाधान है । मूल्य १)

हठयोगसंहिता ।

भाषानुवादसहित । योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है । इसमें हठयोगके ७ अंग और क्रमशः उनके लक्षण साधनप्रणाली आदि सब अच्छी तरह से वर्णन किये गये हैं । गुरु और शिष्य दोनों ही इससे पूरा लाभ उठा सकते हैं । मूल्य ।॥)

तत्त्वबोध ।

भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणीसहित । यह मूल वेदान्त ग्रन्थ श्रीशंकराचार्य्यकृत है। इसका बँगलानुवाद भी प्रकाशित हो चुका है । मूल्य =)

स्तोत्र कुसुमाञ्जलि ।

इसमें पंचदेवता, अवतार और ब्रह्मकी स्तुतियों के साथ साथ आजकलकी आवश्यकतानुसार धर्मस्तुति, गंगादि पवित्र तीर्थों की स्तुति, वेदान्तप्रतिपादक स्तुतियाँ और काशी के प्रधान देवता श्रीविश्वनाथादिकी स्तुतियाँ हैं । मूल्य ।) आना ।

दैवीमीमांसादर्शन प्रथम भाग ।

वेदके तीन काण्ड हैं । यथाः—कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड । ज्ञानकाण्ड का वेदान्तदर्शन, कर्मकाण्डका जैमिनीयदर्शन तथा भरद्वाजदर्शन और उपासनाकाण्ड का यह अङ्गिरादर्शन है । इसका नाम दैवीमीमांसादर्शन है । यह ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ था । इसके चार पाद हैं, यथाः—प्रथम रसपाद, इस पाद में भक्तिका विस्तारित विज्ञान वर्णित है । दूसरा सृष्टिपाद, तीसरा स्थितिपाद और चौथा लयपाद, इन तीनों पादों में दैवीमाया, देवताओं के भेद, उपासना से मुक्तिकी प्राप्तिका सब कुछ विज्ञान वर्णित है, इस प्रथम भागमें इस दर्शनशास्त्रके प्रथम दो पाद हिन्दी अनुवाद और हिन्दी भाष्य सहित प्रकाशित हुए हैं । मूल्य १॥) डेढ़ रुपया ।

श्रीमद्भगवद्गीता प्रथम खण्ड ।

श्रीगीताजीका अपूर्व हिन्दी भाष्य। यह प्रकाशित हो रहा है, जिसका प्रथम खण्ड, जिसमें प्रथम अध्याय और द्वितीय अध्याय का कुछ हिस्सा है, प्रकाशित हुआ है । आज तक श्रीगीताजी पर अनेक संस्कृत और हिन्दी-भाष्य प्रकाशित हुए हैं। परन्तु इस प्रकार का भाष्य आज तक किसी भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ है। गीता का अध्यात्म, अधिदैव,अधिभूतरूपी त्रिविध स्वरूप, प्रत्येक श्लोकका त्रिविध अर्थ और सब प्रकारके अधिकारियों के समझने योग्य गीताविज्ञानका विस्तारित विवरण इस भाष्य में मौजूद है । मूल्य १)

सप्त गीताएँ।

पञ्चोपासना के अनुसार पाँच प्रकारके उपासकोंके लिये पाँच गीताएँ—श्रीविष्णुगीता, श्रीसूर्यगीता, श्रीशक्तिगीता, श्रीधीशगीता और श्रीशम्भुगीता एवं संन्यासियों के लिये संन्यासगीता और साधकों के लिये गुरुगीता भाषानुवाद सहित छप चुकी हैं। श्रीभारतधर्ममहामण्डलने इन सात गीताओंका प्रकाशन निम्नलिखित उद्देश्योंसे किया है:—१म, जिस साम्प्रदायिक विरोधने उपासकों को धर्मके नामसे अधर्म सञ्चित करने की अवस्थामें पहुँचा दिया है, जिस साम्प्रदायिक विरोधने उपासकोंको अहंकारत्यागी होनेके स्थान में घोर साम्प्रदायिक अहंकारसम्पन्न बना दिया है, भारतकी वर्तमान दुर्दशा जिस साम्प्रदायिक विरोधका प्रत्यक्ष फल है, और जिस साम्प्रदायिक विरोधने साकार उपासकोंमें घोर द्वेष-दावानल प्रज्वलित कर दिया है, उस साम्प्रदायिक विरोधका समूल उन्मूलन करना और २य, उपासनाके नामसे जो अनेक इंद्रियासक्तिकी चरितार्थताके घोर अनर्थकारी कार्य होते हैं उनका समाजमें अस्तित्व न रहने देना तथा ३य, समाज में यथार्थ भगवद्भक्तिके प्रचार द्वारा इहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय तथा निःश्रेयस प्राप्ति में अनेक सुविधाओं का प्रचार करना। इन सातों गीताओं में अनेक दार्शनिक तत्त्व, अनेक उपासनाकाण्डके रहस्य और प्रत्येक उपास्यदेवकी उपासना से संबंध रखनेवाले विषय सुचारुरूपसे प्रतिपादित किये गये हैं। ये सातों गीताएँ उपनिषद्रूप हैं। प्रत्येक उपासक अपने उपास्यदेवकी गीता से तो लाभ उठावेगा ही, किन्तु अन्य चार गीताओंके पाठ करने से भी वह अनेक उपासनातत्त्वों को तथा अनेक वैज्ञानिक रहस्योंको जान सकेगा और उसके अन्तःकरणमें प्रचलित साम्प्रदायिक ग्रंथोंसे जैसा विरोध उदय होता है वैसा नहीं होगा, वह परम शांतिका अधिकारी हो सकेगा। संन्यासगीता में सब सम्प्रदायोंके साधु और संन्यासियोंके लिये सब जानने योग्य विषय सन्निविष्ट हैं। संन्यासिगण इसके पाठ करनेसे विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। गृहस्थोंके लिये भी यह ग्रन्थ धर्मज्ञानका भण्डार है। श्रीमहामण्डल प्रकाशित गुरुगीताके सदृश ग्रंथ आज तक किसी भाषा में प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें गुरु-शिष्य-लक्षण, उपासनाका रहस्य और भेद, मंत्र हठ लय और राजयोगोंके लक्षण और अङ्ग एवं गुरु माहात्म्य, शिष्यकर्तव्य, परम तत्त्वका स्वरूप और गुरुशब्दार्थ आदि सब विषय स्पष्टरूपसे हैं। मूल, स्पष्ट सरल और सुमधुर भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित यह ग्रंथ छपा है। गुरु और शिष्य दोनोंके लिये यह उपकारी ग्रंथ है। इसका अनुवाद बँगला भाषा में भी छप चुका है। पाठक इन सातों गीताओं को मँगाकर देख सकते हैं यह छप चुकी हैं। विष्णुगीता का मूल्य १) सूर्यगीता का मूल्य ॥) शक्ति गीता का मूल्य १) धीशगीता का मूल्य ॥) शंभुगीता का मूल्य १) संन्यासगीताका मूल्य ॥) और गुरुगीताका मूल्य ।) है। इनमें से पञ्चोपासनाकी पाँच गीताओं में एक एक तीनरंगा विष्णुदेव, सूर्यदेव, भगवती और गणपतिदेव तथा शिवजीका चित्र भी दिया गयाहै। शम्भुगीतामें वर्णाश्रमबंध नामक चित्र भी देखने योग्य है।

कर्म्ममीमांसादर्शन।

यह लुप्तप्राय दर्शनग्रन्थ श्रीभारतधर्ममहामण्डलके अनुसन्धान विभाग द्वारा उद्धृत हुआ है। ज्ञानकी सप्त भूमिकाओंके अनुसार पञ्चम भूमिका का यह दर्शन है। महर्षि जैमिनि-

कृत जो बृहत् कर्ममीमांसादर्शन उपलब्ध होता है वह केवल वैदिक कर्मकाण्डके विज्ञानका प्रतिपादक है। वैदिक यज्ञों का प्रचार आजकल बहुत कम होनेके कारण जैमिनि दर्शन का उपयोग बिलकुल नहीं होता है यही कहना युक्तियुक्त होगा। महर्षि भरद्वाजकृत उपर्युक्त दर्शन ग्रंथ कर्मके सब अंगों के विज्ञानका प्रतिपादक और धर्मविज्ञानके रहस्यका वर्णन करनेवाला है। इसके चार पाद हैं—धर्मपाद, संस्कारपाद, क्रियापाद और मोक्षपाद। धर्मपाद में धर्म और धर्माङ्गोंका विस्तृत वर्णन, पुरुषधर्म, नारीधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, आपद्धर्म, प्रायश्चित्त प्रकरण आदि अनेक विषयों वा विज्ञान वर्णित हुआ है। संस्कारशुद्धि से क्रियाशुद्धि कैसे होती है तथा उसके द्वारा मोक्षप्राप्ति किस प्रकार हो सकती है इत्यादि विषयों का विज्ञान संस्कारपाद, क्रियापाद और मोक्षपाद में वर्णित हुआ है इस ग्रंथरत्न का दो तीन खंडों में प्रकाशित होना संभव है इसका प्रथम खंड प्रकाशित हो गया है।

श्रीरामगीता।

श्रीमहर्षि वशिष्ठकृत तत्त्वसारायण में कथित यह श्रीरामगीता है। परमधार्मिक विद्वान् स्वर्गवासी भारतधर्म सुधाकर श्रीमहारावलजी साहब सर विजयसिंहजी बहादुर के० सी० आई० ई० डूँगरपुर राज्याधिपति के पुरुषार्थ द्वारा इसका सुललित हिंदी भाषा में अनुवाद हुआ है और विस्तृत वैज्ञानिक टिप्पणियों के द्वारा इसके दुरूह विषयों का स्पष्टीकरण किया गया है। इन टिप्पणियों के महत्त्व को सब दर्शनों का ज्ञाता और सब योगों का अभ्यासी समझ कर आनंदित हो सकता है क्योंकि इसमें सब तरह के विषय आए हैं। इसके आदि में श्रीरामचंद्रजी के मर्यादा पुरुषोत्तम अवतार की लीलाओं का विशद रहस्य प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक में श्रीरामचंद्र, सीता और हनुमान् आदि के कई त्रैवर्णिक चित्र भी दिए गए हैं। काग़ज़, छपाई तथा जिल्द आदि उत्कृष्ट हैं। श्रीमहामंडल के शास्त्र-प्रकाश-विभाग के संपादकत्व में यह ग्रंथरत्न प्रकाशित हुआ है इसमें अयोध्यामंडपादिवर्णन, प्रमाणसारविवरण, ज्ञानयोगनिरूपण, जीवन्मुक्तिनिरूपण विदेहमुक्ति निरूपण, वासना क्षयादिनिरूपण, सप्तभूमिका निरूपण, समाधिनिरूपण, वर्णाश्रम व्यवस्थापन, कर्मविभागयोगनिरूपण, गुणत्रयविभागयोगनिरूपण, विश्वरूप-निरूपण, तारकप्रणवविभागयोग, महावाक्यार्थविवरण, नवचक्रविवेक योगनिरूपण, अणिमादि सिद्धि दूषण, विद्या संतति गुरुतत्त्व निरूपण और सर्वाध्याय संगति निरूपण इत्यादि विषय हैं। प्रस्तुत पुस्तक का मूल्य केवल २॥) है।

श्रीगोस्वामीतुलसीदासजी का रामायण।

श्रीगोस्वामीजी की हस्तलिखित पुस्तक के साथ मिलाकर संपूर्ण विशुद्ध रूपसे छपाया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इसके मुक़ाबिले की पुस्तक बाज़ार में नहीं मिलेगी। इसमें कठिन कठिन शब्दों का अर्थ इस तरह से दिया गया है कि, बिना किसी के सहारेसे—औरतें, बालक, बुड्ढे आदि सभी कोई अच्छी तरह कठिन कठिन भावों को समझ ले सकते हैं और भी इसकी विशेषता यह है कि इस तरहकी टिप्पणियाँ इसमें दी गई हैं कि जिनको पढ़ने से सनातनधर्मकी सब बातें समझमें आजावेंगी। धर्म-संबंधीय सब तरहकी शंकाओं का समाधान भली भाँति हो जायगा। इसकी छपाई,

काग़ज़ वग़ैरह बहुतही उत्तम और सुदृश्य है और केवल प्रचार के लिये ही मूल्य भी स्वल्पमात्र रक्खा गया है।

गीतार्थचन्द्रिका

प्रथम खंड

श्रीस्वामी दयानन्द-विरचित।

श्रीस्वामीजीकी विद्वत्ता किसी से छिपी नहीं है। उन्होंने बहुत ही परिश्रमके साथ गीता पर यह अपूर्व टीका लिखी है। केवल हिन्दी भाषा के जाननेवाले भी इसके द्वारा गीताके गूढ़ रहस्य को जान सकें इसी लक्ष्यसे यह टीका लिखी गई है। इसमें श्लोकके प्रत्येक शब्दका हिन्दी अनुवाद, समस्त श्लोकका सरल अर्थ और अंतमें एक अति मधुर चन्द्रिका द्वारा श्लोकका गूढ़ तात्पर्य बतलाया गया है। इसमें किसी का आश्रय न लेकर ज्ञान, कर्म और उपासना तीनोंका सामञ्जस्य किया गया है। भाषा अति सरल तथा मधुर है। इस ग्रंथके पाठ करनेसे गीताके विषयमें कुछ भी जाननेको बाक़ी नहीं रह जाता। हिन्दी भाषामें ऐसी अपूर्व गीता अबतक निकली ही नहीं है। केवल १।) मूल्य देकर पद्मनाभमुखनिःसृत गीतामृतका अवश्य पान कीजिये। द्वितियखंड यन्त्रस्थ है।

सनातनधर्म-दीपिका।

श्रीस्वामी दयानन्द-विरचित।

इसमें १ धर्म, २ नित्यकर्म, ३ उपासना, ४ अवतार, ५ श्राद्धतर्पण, ६ यज्ञोपवीत-संस्कार, ७ वेद और पुराण, ८ वर्णधर्म, ९ नारीधर्म, १० शिक्षादर्श और ११ उपसंहार-शीर्षक निबंध लिखकर श्रीस्वामीजीने बड़ी ही सरल भाषामें सनातनधर्म के मौलिक सिद्धान्त समझा दिये हैं। यह पुस्तक अंगरेज़ी स्कूलोंकी दशम श्रेणीके विद्यार्थियोंके धर्मशिक्षा देनेके उपयोगी बनाई गई है। मूल्य केवल ।॥) बारह आने।

आदर्श-जीवन-संग्रह।

महापुरुषों के जीवनचरित्रसे भावी सन्तान के चरित्रसंगठन पर बहुत ही प्रभाव पड़ता है। अतः बालकोंको आदर्श महापुरुषोंका जीवनचरित्र अवश्य पढ़ाना चाहिए। प्रस्तुत पुस्तकमें श्रीभगवान् शंकराचार्य, ईसामसीह, गो० स्वा० तुलसीदास, महाराज युधिष्ठिर, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, महारानी अहल्या बाई, आदि ३२ महानुभावों तथा महादेवियोंके जीवनचरित्रका संग्रह किया गया है। इस प्रकार यह अनेक आदर्शोंकी पुष्पमाला है। बालकोंके लिये अत्युपयोगी है। ऐसी पुस्तकका मूल्य १॥) मात्र है।

वीर बाला अथवा अपूर्व नारी रत्न।

यह एक अत्युपयोगी तथा शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास है। राज-मद, धन-मद, यौवन-मदसे युक्त मनुष्यके पतन तथा राज-धन-यौवन-पूर्ण विवेकयुक्त पुरुषके उत्थानका अति सरल एवं सुललित भाषामें दिग्दर्शन तो कराया ही गया है, इसके साथ ही विपत्ति-ग्रस्त भारतीय नारियोंके साहस, धैर्य, पराक्रम, कर्त्तव्य और प्रेमका अत्युत्तम चित्र खींचा गया है। इसके अतिरिक्त लेखकने जगत्-विख्यात शेक्सपियरके "Two Gentlemen of Verora" तथा "Twelfth Night" के पात्रोंसे भी अधिक इसकी नायिकाको

कौशलपूर्ण दिखला कर अपनी कौशलताका परिचय दिया है। उपन्यासके आरम्भ करने पर बिना समाप्त किये उसे छोड़नेका जी नहीं चाहता। १७०पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल ॥।) मात्र है।

कल्पलतिका बाल चिकित्सा।

आजकल बच्चे कमज़ोर तो होते ही हैं, अनेकों रोगोंसे सदैव ग्रसित रहते हैं। निपढ़ माताओंके होनेसे उनकी औषधि भी ठीक ठीक नहीं होती। परिव्राजक मैथिल स्वामीकी रचित प्रस्तुत पुस्तक में प्रायः हर प्रकारके बाल-रोगोंकी विवेचना की गई है और साथ ही बहुत ही कम क़ीमत जड़ी बूटीके नुसख़े भी बतला एगये हैं। बिना गुरुके थोड़ी भी हिन्दी जाननेवाले इसके द्वारा बच्चोंकी चिकित्सा कर सकते हैं। प्रत्येक माता पिताको यह पुस्तक अपने पास रखनी चाहिए। मूल्य ।)मात्र है।

मैनेजर,

निगमागम बुकडिपो सिंडिकेट भवन,

स्टेशन रोड बनारस (शहर.)

भारत-धर्म

विश्व-बंधुत्व का उपदेशक, स्वराज्य का प्रतिपादक, हिंदू-संघटन का समर्थक, वर्णाश्रम-संघ का सहायक, हिंदू-धर्म और हिंदू-जीवन में जागृति पैदा करनेवाला राष्ट्रीय सप्ताहिक पत्र। वार्षिक चंदा ३) रुपया।

मैनेजर भारत-धर्म

सिंडिकेट-भवन,

स्टेशन-रोड बनारस (शहर)

सूर्योदय

एक-मात्र पाक्षिक संस्कृत-पत्र, जिसको भारत के अनेक प्रांतीय गवर्नमेंटों तथा देशी रजवाड़ों ने उत्साह प्रदान किया है। श्रीवाराणसी विद्या-परिषद् के मुखपत्र-रूप से प्रकाशित होता है। संरक्षकों के लिये पांच रुपया साल और विद्यार्थियों के लिये केवल बारह आना साल।

मैनेजर सूर्योदय,

महामंडल-भवन, जगतगंज,

बनारस (छावनी)

"THE WORLDS ETERNAL RELIGION."

A Unique work on Hinduism in one volume, containing 24 chapters with tricolour illustrations, glossary, etc. No work has hitherto appeared in English that gives in a suggestive manner the real exposition of the Hindu religion in all its phases. The book has perfectly supplied this long-felt want. Names of the chapters are as follows:—1. Foreword, 2. Universal Religion, 3. Classification of Religion, 4. Law of Karma, 5. Worship in all its phases, 6. Practice of Yoga through Mantras, 7. Practice of Yoga through physical exercise, 8. Practice of Yoga through finer forces of Nature, 9. Yoga through power of reasoning, 10. The Mystic Circle, 11. Love, and Devotion, 12. Planes of knowledge, 13. Time, space, creation, 14. the Occult world, 15. Evolution and Reincarnation, 16. Hindu philosophy, 17. The System of Castes and Stages of Life, 18. Woman's Dharma, 19. Image Worship, 20. The great Sacrifices, 21. Hindu Scriptures, 22. Liberation, 23. Education, 24. Reconciliation of all Religions.

The followers of all religions in the world will profit by the light the work is intended to give. Price cloth bound, Superior edition Rs. 5, Ordinary edition Rs. 3, Postage extra.

THE BHAGAVAD-GITA.

Sanskrit Text & English Translation with a Critical & Concise Commentary.

☞ A DISTINCT DEPARTURE FROM EXISTING ANNOTATIONS—BECAUSE IT

(1) Deals with the **Triple significance** of adhyatmic, adhidaivic and adhibhoutic **aspects.**

(2) Gives Practical **Guidance** in **Yogic System** of the Orient.

(3) Weilds together the **Eastern & the Western systems** of philosophical thought.

(4) Deals with the **Spiritualism** and **Spiritism** of the occident.

(5) **Contains copious Foot-Notes** for comparative study in a **scientific** spirit.

A BOOK FOR ONE AND ALL.

The Bhagavad-Gita is a book not only for the pious and the philosopher, but also for the politician and the patriot. All our leaders from Lokemanya to Mahatma owe their inspiration to this **Holy Book.** As existing works on Gita are either voluminous or uniuterestingly abstruse or dialectic, a handy book expounding in one place the essentials of Gita is a long felt want to remove which **The Hall of All Religions** has undertaken the present publication,—for the use of the Savant and Scholar of comparative religions and for ordinary readers alike.

In order to reach a wide-reading public, the *price of the book is purposely kept low; and a concession rate is offered for all orders registered before its publication.*

Register your name to avoid disappointment—

Manager Nigamagam Book Depôt.

SYNDICATE BUILDINGS,

Station Road, **BENARES CITY.**

Life after Death.

The Promoters of the Scheme of the Hall of all Religions at Benares have undertaken the publication of the above work which will be a comprehensive treatise for the comparative study of the Eastern and Western thought on life after death. The work also treats other allied subjects such as spiritualism of the west and Pith Vigyan that is the science of the mysite circle of the Hindus including all necessary information about the occult world as given in Hindu scriptures. All communications regarding this work should be made to

Secretary Hall of all
RELIGIONS MAHAMANDAL
Buildings, Jagatganj, BENARES.

THE

Mahamandal Directory.

PUBLISHED BY THE

Bharat Dharma Syndicate, Ltd.,

STATION ROAD, BENARES CITY, (INDIA.)

VERY IMPORTANT TO

Exporters, Importers, Commercial and Industrial Men.

PUBLISHED ANNUALLY IN HINDI LANGUAGE–

The Lingua-Franca of the Indian Continent.

Translation of advertisements in Hindi being free of cost.

Advertisement in English may be inserted.

FOR THE USE OF

ALL PROVINCES OF INDIA

Containing useful informations, Astronomical, Religious, Social, Domestic, Postal, Railway, Legal, Commercial, Industrial, and other everyday-important matter.

IT REACHES ALL TEMPORAL AND RELIGIOUS HEADS

Ruling-chiefs, Nobles, Gentries, Commercial and Industrial men and common people of all grades and sects throughout the Country.

MOST USEFUL MEDIUM FOR ADVERTISEMENT.

RATES MODERATE.

आर्य-महिला ।

अखिल भारतवर्षीय हिंदू-महिलाओं की महासभा, जिसका नाम श्रीआर्य-महिला हितकारिणी महापरिषद् है, उसकी यह मुखपत्रिका है । आर्य-महिलाओं को इस परिषद् की सभ्या होने से यह पत्रिका विना मूल्य मिलती है । यह स्त्रियों के पढ़नेयोग्य सचित्र मासिक पत्रिका है । विस्तारित जानने के लिये निम्न-लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें ।

मैनेजर आर्य-महिला,

महामंडल-भवन, जगतगंज,

बनारस ।

The "Mahashakti"

The organ of the All-India Varnashram League. A leading weekly for the comparative study of Hindu Philosophy and theology and for reading matters on upto date subjects; subscription, Rs. 4. only. Apply to,

The Manager, The Mahashakti,
SYNDICATE BUILDINGS,
Station Raad, **BENARES CITY.**

The Aryan Bureau
of
Seers and Savants,
Established under the distinguished,
patronage of the leaders and saints,
of

Shri Bharat Dharma Mahamandal.

A committee (Bureau) has been formed with the object, amongst others, to establish a connecting link through the vehicle of correspondences with those scholars and literary societies to take interest in the questions of theology, spiritualism, Hindu Philosophy and Sanskrit literature all over the enlightened world.

All correspondence to be addressed to.

SECRETARY,
BUREAU OF SEERS AND SAVANTS,
Mahamandal Buildings,
Jagatganj, **BENARES.**

The Bharat Dharma Syndicate Ltd.

Syndicate Buildings,
Station Road, Benares City.

Authorised capital ten lacs.

Established as a Hindu national concern for establishing a national publishing house, a National Central Bank Depository and publication of National mouth pieces &c. &c. It will be a useful nucleus for the support of the Hall of all Religious and deserves universal encouragement.

Shares still available, for prospectus &c. please apply to—

The **GOVERNING DIRECTOR,**
The Bharat Dharma Syndicate Ltd.
Station Road, **BENARES City.**